साहित्य-सुजस

भाग–1

(राजस्थानी गद्य–पद्य संग्रै)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर कांनी सूं कक्षा 11 रै राजस्थानी साहित्य विसय सारू स्वीकृत पाठ्यपोथी

संयोजक अर सम्पादक

डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत

अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग

राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर

सम्पादक–मण्डल

डॉ. लक्ष्मीकान्त व्यास

व्याख्याता, राजस्थानी विभाग

सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय

अजमेर

डॉ. माधोसिंह इन्दा

व्याख्याता

राजकीय महाविद्यालय

बाली (पाली)

विजय कुमार पारीक

प्रधानाचार्य

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

काम्बा (जालोर)

डॉ. शिवराज भारतीय

व्याख्याता राजस्थानी

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

बिरकाळी (हनुमानगढ़)

नरसिंह सोढ़ा

व्याख्याता

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

बज्जू (बीकानेर)

2017–2018

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

पाठ्यक्रम समिति

संयोजक

डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत

सह–संयोजक

डॉ. लक्ष्मीकान्त व्यास

सदस्य

विजय कुमार पारीक

डॉ. शिवराज भारतीय

नरसिंह सोढ़ा

आखड़ी

भारत म्हारौ देस छै। सगळा भारतवासी म्हारा भाई–बैन छै। म्हनै म्हारा देस सूं गाढौ हेत अर म्हनै इणरी अखूट हेमांणी माथै अणूंतौ गुमेज छै।

म्हैं म्हारा माईत, गरू अर सगळा बडेरां रौ आघ–मांन करूंला अर अेकूका मिनख सागै मिनखीचारा रौ वैवार करूंला।

म्हैं म्हारा देस अर देसवासियां वास्तै गाढौ नेह राखण री आखड़ी लेवूं। म्हारौ हरख–उमाव फगत वांरै कल्यांण अर आसूदाई में छै।

© प्रकासक रै हित मांय सगळा अधिकार सुरक्षित

संस्करण : 2017–18

पड़तां :

मोल (अंकां मांय) :

(सबदां मांय) :

प्रमाणित करयौ जावै कै इण पोथी री छपाई मांय बोर्ड कांनी सूं दिरीज्यै अेच.पी.सी. रौ 58 जी.अेस.अेम. वाटर मार्क क्रीम वॉव अर 130 जी.अेस.अेम. पूठै रौ कागद बरतीज्यौ है।

छापाखांनौ :

दो सबद

पढेसरी सारू पाठ्यपोथी विगतवार अध्ययन, साखीणी, पारखा अर अगाऊ अध्ययन रौ आधार होया करै। विसय–वस्तु अर भणाई री दीठ सूं इस्कूली पाठ्यपोथी रौ स्तर घणौ महताऊ होय जावै। पाठ्यपोथ्यां नै कदैई जड़ कै महिमामंडित करण वाळी नीं बणावणी चाईजै। पाठ्यपोथी आज ई भणाई, उणरी विधि अर प्रक्रिया रौ अेक जरूरी साधन बण्योड़ौ है, जिण री आपां अणदेखी नीं कर सकां।

लारलै केई बरसां मांय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान रै पाठ्यक्रम मांय राजस्थान री भासाऊ अर सांस्क्रतिक थितियां री नुमाइंदगी रौ अभाव लखावै हौ। इण नै दीठगत राखतां थकां राज्य सरकार कांनी सूं कक्षा 9 सूं 12 तांई रा पढेसरयां सारू माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर रै मारफत पाठ्यक्रम लागू करण रौ निरणै लिरीज्यौ है। इणी निरणै मुजब बोर्ड कांनी सूं भणाई–सत्र 2017–2018 सूं कक्षा 9 अर 11 री पाठ्यपोथ्यां बोर्ड रै तेवड़ीज्योड़ै पाठ्यक्रम रै आधार माथै त्यार कराईजी है। भरोसौ है कै अै पोथ्यां पढेसरयां मांय सफींटवै सोच, चिंतन अर अभिव्यक्ति रौ अवसर देवैला।

प्रो. बी.एल. चौधरी
अध्यक्ष
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

संयोजकीय

राजस्थानी री ओळखाण मुलकां चावी है। आ अेक स्वतंत्र भासा है। घणा मोटा पसरयोड़ा भूखेत्र में इणनै बोलण वाळां री गिणती आठ करोड़ सूं बेसी होवैला। दो लाख नैड़ा सबदां रौ सबदकोस, अखूट साहित्य भंडार, इणरी लिपियां (मुडिया अर आज रै बगत में देवनागरी), व्याकरण री इधकाई रै सागै मारवाड़ी, मेवाड़ी, हाड़ोती, ढूंढाड़ी, वागड़ी, मालवी, मेवाती, सेखावाटी, तोरावाटी, गोढवाड़ी जैड़ी इणरी बोलियां अर उपबोलियां इणनै अेक स्वतंत्र अर सबळ भासा रौ दरजौ देवै। भारत री दूजी भासावां सूं राजस्थानी री आपरी निकेवळी विसेसता रै पाण आ निस्चै ई अेक सिमरथ भासा है। इणमें अेक अरथ रा अनेक सबद (पर्याय) अर अेक सबद रा अनेक अरथ वाळा सबदां री माठ है। इणरै लोक–साहित्य में लोकजीवण रा सगळा रंग निजर आवै, तौ अभिजात्य साहित्य री लूंठी बपौती इण भासा नै सुघड़–सबळ बणावै। 1300 बरसां रै राजस्थानी साहित्य रै इतिहास नै अध्ययन री दीठ सूं प्राचीन, मध्यकाल अर आधुनिक काल रै रूप में बांटीज्यौ है। कक्षा 11वीं रै पाठ्यक्रम में आधुनिक काल री 28 नैड़ी रचनावां लिरीजी है। पाठ्यक्रम नै सुगम सरल बणावण रा ध्येय नै राखतां अै रचनावां लिरीजी है। इण सूं विद्यार्थी राजस्थानी भासा रै सरल–सरूप सूं रूबरू होसी।

साहित्य–सुजस (भाग–1) नांव री इण पोथी में आधुनिक गद्य री खास विधावां अर काव्य री केई प्रवृत्तियां नै सामल करीजी है। आं रचनावां में सामाजिक सरोकार, जीवन–मूल्यां, जीवन–आदर्शां नै उकेरीज्यौ है। जीवन रै हरेक पख नै आपरै ढाळै कैवती अै रचनावां जुगबोध करावै, सावचेती री सीख देवै।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर रै सैयोग अर अपणायत सारू सम्पादक मंडल उणां रौ आभारी है। आ अंजस री बात है कै बोर्ड में राजस्थानी साहित्य ऐच्छिक विसय रै रूप में पढायौ जा रैयौ है। बोर्ड रै इण मतै (निरणै) सारू घणा रंग। इण पोथी नै पढनै विद्यार्थी साहित्य रौ ग्यान अर आछा संस्कारां नै अंगेज'र सन्मार्ग माथै चालैला, इणीज आस अर विस्वास रै साथै, मंगळ कामनावां।

–डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत

⌘

विगत

भूमिका

पोथीमाळ रा पुहुप	*डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत*	7

गद्य खण्ड

इकाई : अेक

कहाणी

बरसगांठ	*मुरलीधर व्यास*	11
उडीक	*डॉ. नृसिंह राजपुरोहित*	16
कांचळी	*रामेश्वरदयाल श्रीमाळी*	23
थे बारै जावौ	*करणीदान बारहठ*	29

इकाई : दो

निबन्ध

चाटू	*सौभाग्यसिंह शेखावत*	34
भेळप, सैंणप अर भाईचारौ	*मूळदान देपावत*	39
राजस्थान री लोककलावां	*डॉ. महेन्द्र भानावत*	45
पर्यावरण रा पागोथिया	*डॉ. कृष्णलाल विश्नोई*	51

इकाई : तीन

अेकांकी

आपणौ खास आदमी	*बैजनाथ पंवार*	58
देसभगत भामासा	*डॉ. आज्ञाचंद भंडारी*	65

इकाई : चार

संस्मरण

सुरजो नायक	*डॉ. नेमनारायण जोशी*	71

इकाई : पांच

रेखाचितरांम

मक्खणसा	*श्रीलाल नथमल जोशी*	80

इकाई : छः

यात्रा–संस्मरण

म्हारी जापान–यात्रा	*राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत*	89

इकाई : सात

रिपोर्ताज

अेक दिन आपरौ	*विनोद सोमानी 'हंस'*	97

पद्य खंड

इकाई : आठ

दूहा अर सोरठा

वीर सतसई	*सूर्यमल्ल मीसण*	102
चेतावणी रा चूंगट्या	*केसरीसिंह बारहठ*	105
द्रौपदी विनय	*रामनाथ कविया*	109
चतुर चिन्तामणी	*बावजी चतुरसिंह*	113

इकाई : नौ

कविता

जुद्ध	*सत्यप्रकाश जोशी*	116
मानखौ	*गिरधारी सिंह पड़िहार*	120
'जुगवांणी' अर 'हेत चाईजै'	*गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद'*	125
'ईश्वर!', 'राम–नाम' 'साच'र झूठ!', 'निराकार!'	*कन्हैयालाल सेठिया*	130
सैनाणी	*मेघराज 'मुकुल'*	134
'लू' अर 'बादळी'	*चन्द्रसिंह*	139
दुर्गादास	*डॉ. नारायण सिंह भाटी*	143

इकाई : दस

गीत

सीखड़ली	*कानदान 'कल्पित'*	147

इकाई : इग्यारा

लोकगीत

बधावौ		152

परिशिष्ट

राजस्थानी साहित्य रौ इतियास : कूंकूं पगल्यां सूं आभै तांई	158
राजस्थानी व्याकरण–रचना– समानारथी अर विलोम सबद, मुहावरा अर ओखांणा, उल्थौ	176
राजस्थानी छंद अर अलंकार– दूहा छंद, वैणसगाई अलंकार	186

भूमिका

पोथीमाळ रा पुहुप

राजस्थानी साहित्य जुगां जूनौ नै मुलकां चावौ। सूरां, सतवादियां, सापुरुसां अर सन्तां री इण भोम रौ साहित्य इण बात री साख भरै। राजस्थानी साहित्य री आ मोटी विसेसता कै अठै रौ साहित्यकार गढ–कोटां सूं लेय'र झूंपड़ियां में रैवण वाळा वीरां, सामधरमी सूरमावां रौ जस आखरां अमर कियौ है। मायड़ भासा राजस्थानी नै मान देवणियौ तौ राजस्थानी साहित्यकार ई है। इण पोथी में अखूट साहित्य भंडार री बात 'परिशिष्ट' में करीजी है। इणरै जूनै काळ सूं लेय'र आज तांई री साहित्य सिरजणा माथै केई–केई ग्रन्थ लिखिया जाय सकै। सूरापै रा तेज सूं राती–माती इण भोम रा असल रुखाळा तौ कलम रा धणी कवेसर हा। उणां री लेखणी री धार, बोलां रा बाण सस्त्रां सूं कमती नीं हा। मारग भूल्योड़ा नै सन्मारग लावणौ, कर्तव्य रौ पाठ पढावणौ, भड़खाणी ओज भरी वाणी में कविता कर वीरता नै पोखणै रौ सुकाज आं कवेसरां कर्‌यौ।

राजस्थानी कवि आं सबदां तणी साख कविता नै लेय'र हरेक बगत में जूझ्यौ है। बगत रा बायरा सागै उणरी कविता पण नूंवा मारग सोधती रैयी। कवि आपरी सोच अर ऊंडी दीठ सूं सबदां री कोरणी मांडै। पोरैदार बण'र आखरां रा परकोटा बिचाळै मानखै रा म्हैल अखी राखण रा जतन करै। दुरसा आढा अर पृथ्वीराज राठौड़ रणांगण सूं लेय'र अंतरजामी री अरदास करता वीरता, भगती अर सिणगार रौ काव्य रच्यौ। मीरां री भगती रा अमरफळ आज लग उणां रा पदां रै रूप में मानखै रै कंठां नै सरस करै। बांकीदास जी आसिया रौ ओज भर्‌यौ आजादी रौ संखनाद करतौ 'डिंगळ गीत', सूर्यमल्ल मीसण री 'वीर सतसई' रा दूहा तौ कापुरुसां री भूंड, सापुरुसां री बडाई, वीर नारी री मनगत रा ओजस्वी बोल, कायरां उर सालण वाळा है। रामनाथ कविया री 'करुण बहत्तरी' में आज रै जुग री नारी री दसा–दिसा, उणरी हूंस, उणरी सगती अर आपै री बात करै। क्रान्तिकारी कवि केसरीसिंह बारहठ रा काळजै छेकला करण वाळा आकरा बोलां सूं मेवाड़ रौ हिन्दुवा सूरज गरीजतौ रैयग्यौ तौ उणी'ज मेवाड़ी राजघराणा रा बावजी चतुरसिंह री सादगी ग्यान, बैराग, धरम, नीति, उपदेस वाळा चतुराई रा बोल हियै मंडग्या। ऊमरदान लाळस रौ वौ खरोपण अर संकरदान सामौर रा गोळी हंदा गीतड़ा। आजादी रा रुखाळा, स्वतन्त्रता सेनानियां में जयनारायण व्यास, माणिक्यलाल वर्मा, हीरालाल सास्त्री, भैरवलाल 'काळा बादळ', विजयसिंह 'पथिक' रा लोकमानस में चावा लोकगीतां री तरज माथै बण्योड़ा चेतावणी रा गीत मानखै नै सावचेत करता। गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' अर रेवतदान चारण रौ वौ ओज अर चेतना रा अमर सुर आज लग गाईजै। रेवतदान चारण रा बोल कै 'चेत मानखा चेत, जमानौ चेतण रौ आयौ', उस्ताद अेकर तौ कैवै 'मुलक नै मोट्यारां माथा देणा पड़सी' अर दूजी बार कैवै कै 'मिनखां मर जावौ हासल मत दीजौ' औ कांई? बगत अर जन री पीड़ सूं सरोकार साजता कवि री मनगत अळूझाड़ अर छटपटाट ई तौ है। वौ ईज उस्ताद जनकवि बण साची बात कैवण में चूक नीं करै अर जन–जन रै मन हेत–अपणायत री बात करै। कन्हैयालाल सेठिया 'धरती धोरां री' रच'र राजस्थानी जीवण–दरसण रै साथै मानखै नै अध्यात्म ग्यान दियौ– आपरी नूंवी कविता सैली

में, नूंवै भावबोध साथै ईस्वर अर संसार री लौकिक व्याख्या सरल सबदां में करै। मेघराज मुकुल 'सैनाणी' रै रूप में उणीज वीर परम्परा रै त्याग अर बलिदान नै याद करावै। राजस्थानी वीरांगना रौ अलायदौ रूप इण मांय चित्रित होयौ है। आपरौ सीस बाढ'र सैनाणी देवण वाळी नारी (हाडी राणी) अेक राजस्थानी वीरांगना ई होय सकै।

सत्यप्रकाश जोशी री कवितावां सांस्क्रतिक रचाव, बसाव अर बणगट री दीठ सूं आज अर काल नै जोड़ती लागै। 'जुद्ध' कविता में कवि 'राधा' नै लोकनायिका बणाय मानखै नै सांति रौ संदेस देवै। कवि गिरधारी सिंह पड़िहार 'मानखौ' लिख'र मिनखपणै नै उबारणी चावै। सुभद्रा री दया, मया अर वीरता रै साथै विणासकारी जुद्ध सूं होवण वाळी हाण नै अेकर फेर ढाबण रा जतन कवि करै।

'सैनाणी' री वीर नारी आपरौ माथौ बाढ'र कर्तव्य री सीख देवै। जुद्ध कविता री राधा प्रेम री डोर में कृष्ण नै बांध'र फौजां नै पाछी मोड़ण री खैचल करै। 'मानखौ' री सुभद्रा वीरोचित भावां सूं मानखै नै उबारण रौ, उणरी रिछ्या रौ प्रण लेवै। नारायण सिंह भाटी रचित 'दुर्गादास' सूरवीरता, सामधरम अर आन–मान–मरजाद रौ रूखाळौ बण आपरौ जस आखरां अमर करै। कु. चन्द्रसिंह प्रकृति प्रेमी रैया। राजस्थानी प्रकृति काव्य में घणोई सिरजण होयौ, उणमें चन्द्रसिंह री 'बादळी' मरुधरा माथै बरसै तौ मरुवासी उणरा विध–विध वारणा लेवै। बादळी बरस नै जीवण देवण वाळी है, पण राजस्थान रौ वासी तौ 'लूवां' रा आकरा सभाव नै ई हंसतौ–हंसतौ अंगेजै। बसंत रुत री सगळी प्राकृतिक सोभा 'लूवां' नै भेंट चढावतां उणां रौ स्वागत करै– आ है राजस्थानी संस्क्रति री ओळखाण। राजस्थानी संस्क्रति री बात जद आवै तौ राजस्थानी लोकगीतां नै कियां भूलीजै। मरुधर रा चावा गीतकार कानदान 'कल्पित' री 'सीखड़ली' रा मरमपरसी भाव लोकगीतां री परम्परा नै जींवती राखै, तौ लोकगीत 'बधावौ' कुळ मरजादा में बंध्योड़ी सीलवंती, लजवंती कुळबहुवां रा मनोभावां नै उजागर करै। गीत में दिरीजण वाळी ओपमावां में मरजादा री लिछमण रेखा निजर आवै, वा ई राजस्थानी संस्क्रति री माठ है।

साहित्य री खास बात है मांयली पकड़ अर राजस्थानी रचनाकारां में आ हथोटी भरपूर रैयी है। जठै कठैई मिनखीचारै री साख जावती दीखै तौ अठै रौ साहित्यकार कलम नै हथियार बणाय'र मानखा रूपी करसण रौ निदाण करै। राजस्थानी रचनाकार काळजा बायरा मिनखां में हेत–अपणायत रौ रूंखड़ौ हरियल बण लैरावतौ रैवै, इणरा सदीव जतन करतौ रैयौ है।

मुरलीधर व्यास री कहाणी 'बरसगांठ' में हेठलै तबकै री जीवाजूण रौ मारमिक चित्राम उकेरीज्यौ है। ब्याजखोरी री सामाजिक बैमारी जैड़ी केई अबखायां इण समाज में देखीजै, केई कुरीतां परम्परावां बण'र मानखै नै चींथती निजर आवै। सगळी विसंगतियां रौ वरणन राजस्थानी साहित्य में होयौ है। नृसिंह राजपुरोहित री कहाणी 'उडीक' मां रै वास्तै टाबर रै अछेह हेत री बानगी है। 'मां कैयां मूंडौ भरीजै' उणीज मां री जगै खाली होवै तौ उण टाबर रौ जीवण कित्तौ दोरौ होवै, पछै उडीक तौ मिनख रै धीरज री पारख करावै। 'उडीक' री मारमिकता रै पछै रामेश्वर दयाल श्रीमाळी री 'कांचळी' में कित्ती मानवी संवेदना है, आपणी संस्क्रति रा अेक पख नै उकेरती 'कांचळी' कहाणी रिपियां रौ समाज में जोर अर आपणचार नै निबळौ बतावै। 'कांचळी' रौ बटकौ समधा रै वास्तै घणमोलौ हौ, उणरी कीमत प्रेम हौ, अपणायत ही, पण पुसबा री निजरां में साव सस्तौ। करणीदान बारठ री कहाणी 'थे बारै जावौ' दो पीढियां अर

दो न्यारी–न्यारी अवस्थावां रौ चित्राम है जिणमें अेक ई मिनख बगत रै साथै कित्तो असहाय, लाचार होय जावै जिकौ कदैई घर रौ मालिक हौ। खुद रा गोडा चालै जित्तै सब कोई पूछै, पछै टाबर ई बूढा माइतां नै बोझ समझण लागै। टाबरां रौ माइतां रै वास्तै अैड़ौ भाव संस्कारां रौ नास करतौ दीखै। बूढापौ तौ सब नै आवणौ ई है। सासू वाळी ठीकरी बहू रै त्यार रैवै। आपां रै पारिवारिक ढांचै माथै करारी चोट है। साहित्यकार री कलम में जोर है, वो लिख छूटै। दारोमदार तौ मानण वाळां माथै है।

कृष्णलाल विश्नोई पर्यावरण माथै लेख लिख प्रकृति संचेतना री सीख देवै तौ महेन्द्र भानावत राजस्थानी लोककलावां मूरत्यां, मांडणा, फड़ां, भांत–भांतीला रमतिया भलांई माटी रा होवौ कै लकड़ी रा बणायोड़ा, कसीदा कारीगरी, मैंदी–गूदणां रौ नामी वरणन कर आं रै पेटै होवण वाळा घरेलू उद्योगां नै बधावण री बात करै। कला–संस्क्रति रौ सोना अर सवागा वाळौ मेळ है। अै कलावां आपणी सांस्क्रतिक थाती है। उणां नै रुखाळणी घणी जरूरी है। मूळदान देपावत रौ निबन्ध अेकर फेर आपणी संस्क्रति रा रुखाळा संस्कारां री बात करै। भेळप सूं रैय’र भाईचारै री ओळखाण करावै। भेळा रैयां रा मोह उपजै। मोह सूं प्रेम बधै, हेत सूं मानखौ पोखीजै। सरसीज्योड़ा मानखा सूं समाज आगै बधै। सौभाग्यसिंह शेखावत ‘चाटू’ निबन्ध में मिनख रौ अैड़ौ फोटू खैंचै कै पढणियां नै चाव तौ आवै, पण कठैई–कठैई खुद माथै संकौ होवण लागै। मिनखां री झूठी बडायां कर चाटू हरेक ठौड़ आपरी ठौड़ बणाय ई लेवै। निबन्ध जथारथ रै घणौ नैड़ौ है। नाटक अर अेकांकी रै मिस साहित्यकार साची बातां री पैरवी करतौ समाज नै सांपरतेक निजरां देखावणी चावै। सुणणा अर देखणा में घणौ फरक होवै। गांवां में होवण वाळी रम्मतां अर रामलीला नै आपां कित्ता चाव सूं देखता, सूर्यकरण पारीक रौ ‘बोळावण’ नाटक रौ छोटौ रूप है। इणमें वचनां रौ पालण, सरणै आया री रिछ्या रौ भाव है। अै आपणी संस्क्रति रा थांबा है। वचनां रौ बंधियौ अर सरणै आयोड़ां री रिछ्या रौ प्रण लेय’र अठै रौ वीर सपूत जुगां–जुगां लग जीवण सूं जूझतौ रैयौ है। उणां रै त्याग–बळिदान रौ जस इण अेकांकी में है। ‘देसभगत भामासा’ अेकांकी डॉ. आज्ञाचन्द भंडारी री है। ‘भामासा’ रौ नांव कुंण नीं जाणै जकौ महाराणा प्रताप नै आपरौ धन देय’र उणां री अबखी पुळ में मदत करी ही। आज ई देस में दानदातावां नै ‘भामासा’ री उपमा दिरीजै। ‘भामासा’ योजनावां प्रदेस अर देस में चालै, जिणरै पेटै जरूतमंद मानखै री आर्थिक मदत करीजै। साहित्यकार तौ देखै वौ ईज मांडै। आपरै जीवण री मूंघमोली घड़ियां में मैसूस करयोड़ी आछी–भूंडी सगळी बातां उणरै अंतस में रैवै। आखरां उकेरीज’र वै संस्मरण बण जावै। नेमनारायण जोशी रौ ‘सुरजो नायक’ जित्तौ उरजावान है बित्तौ ई नसेड़ी है। नसौ करण सूं कांई नुकसाण होवै, मिनख रा सगळा गुण नसौ खाय जावै, आ बात सांम्ही आवै। आज री युवा पीढी नै आ बात समझण री घणी दरकार है। श्रीलाल नथमल जोशी रौ रेखाचित्राम ‘मक्खणसा’ व्यक्तिगत गुणां रौ खुलासौ है। औ पाठक नै मनोरंजक लागै, पढतां–पढतां मक्खणसा रौ दीठाव अंतस री निजरां में होयां बिना नीं रैवै। राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रौ जात्रा संस्मरण ‘म्हारी जापान जात्रा’ पढणजोग है। मानवी संवेदना जगावण वाळौ औ जात्रा संस्मरण हिरोसिमा री विणासकारी लीला साथै सांति मार्च री रंगीली छिब उकेरण वाळौ है। रिपोर्ताज जैड़ी गद्य विधावां ई राजस्थानी में लिखीजी है। इणरी ओळखाण करावै विनोद सोमानी ‘हंस’ रौ ‘अेक दिन आपरौ’। अेक नौकरीपेसा आदमी रौ छुट्टी रौ दिन कीकर बीतै, उणरौ पूरौ लेखौ–जोखौ अेक रिपोट रै रूप में रोचक ढंग सूं

बताईज्यौ है। बात नै राखण रौ अेक ढब होवणौ चाईजै। दिन री सरुआत सूं लेय'र आखिर तांई आपरै साथै कांई–कांई घटित होयौ उणरौ वरणन ई रिपोर्ताज है। राजस्थानी गद्य री विधावां मांय सूं कीं टाळवी रचनावां पाठ्यक्रम में राखीजी है।

राजस्थानी पद्य अर गद्य री अै रचनावां राजस्थानी साहित्य री दीठ सूं अर भासा री दीठ सूं तौ विद्यार्थियां वास्तै लाभकारी है ई, इणरै साथै उणां रै व्यावहारिक ग्यान में बधोतरी करैला।

इण पोथी रै सम्पादन में म्हारै साथै काम करणिया सम्पादक मंडल रौ आभार मानूं कै टैमसर आपौ–आपरौ काम म्हनै सूंपियौ। म्हारा पति महिपालसिंह अमरावत नै घणा रंग कै वै इण काम सारू पूरौ सैयोग कर म्हारी हूंस बधाई। म्हारा विद्यार्थी डॉ. नमामीशंकर आचार्य अर डॉ. गौरीशंकर कुलचन्द्र रौ ई सैयोग सारू आभार। आगै ई आप सगळां रौ सैयोग मिळतौ रैवैला। आ पोथी विद्यार्थियां रै ग्यान नै पोखै, इणी आस अर भरोसै रै साथै।

डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत
अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर

कहाणी
बरसगांठ

मुरलीधर व्यास

कहाणीकार–परिचै

मुरलीधर व्यास रौ जनम संवत् 1955 री चैत सुदी बारस नै बीकानेर में हुयौ। राजस्थानी सिरजण रा समरपित दसकत हा। आप राजस्थानी री केई विधावां मांय रचाव कियौ। छप्योड़ी पोथ्यां– बरसगांठ, इक्कैवाळौ, जूना जीवता चितराम, उज्ज्वल, घूमरे, राजस्थानी कहावतां (दो भाग) सरावण जोग रैयी है। आपरी राजस्थानी री सांतरी सेवा रौ मोल आंकता थकां विद्वानां आपनै राजस्थानी रा शरत्चन्द्र अर राजस्थानी कहाणी रा भीष्म पितामह रौ आघमांन दियौ। आप धुन रा धणी, सफल नाटककार, समाज–सुधारक अर प्रगतिसील विचारधारा रा हिमायती हा।

पाठ–परिचै

संकलित कहाणी में नान्है मोती री बरसगांठ रै दिन कळपतै घीसू री दीन–दसा रौ दरसाव है। कमठाणै सूं धाकौ नीं धकै जणां आवळ–कावळ सरतां माथै रुपिया उधार लेवण री लाचारी, घर में थड़ी करतै ऊंदरां रा दरसाव अर ऊपर सूं खंधी चुकावण रा तकादा.... करै तौ कांई करै? अठीनै तौ जियां–तियां रुपिया उधार लेय'र मोती री बरसगांठ मनावै अर बठीनै अैन बगत माथै खंधी ऊगावण सारू चोटा घुमावता मींडा महाराज आय पूगै। धणी–लुगाई घणा ई गिड़गिड़ावै, पग पकड़ै, पण जम रै दूतां नै भलांई दया आय जावै, मींडा महाराज नै दया नीं आवै। जद घर में कीं भी चीज–बस्त नीं मिळै तौ आखर मोती रै हाथां रा कड़िया खोस लेवै। कहाणी रौ अंत घणौ मारमिक है।

बरसगांठ

मेह–अंधारी रात। डांफर चालै। कोढियौ सियाळै रौ मास। रात री आठ ई बजी कोयनी, पण किसौ कोई मिनख रौ जायौ गळी में दीस जाय। घीसू धूजतौ–धूजतौ राम–राम करतौ घर में बड़ियौ। मोती री मां बोली– ''आ ई कोई आवण री बेळा है? ओढण नै सरीर माथै पोळियो'र आ सरदी! टैमसर घर में आय जाया करौ। मोती रोंवतौ–रोंवतौ, काका–काका करतौ, हणां ई सूतौ है।''

घीसू बोल्यौ– ''कमठाणै सूं तौ टैमसर ई छुट्टी हुयगी ही। पण अेक–दो जागां पईसड़ा लावण नै गयौ परौ। रोजीना आजकल–आजकल करै। पईसड़ा हाथ आय जावै तौ मोती रै रूईदार कोट–सूथण कराय दूं अर ओढणै सारू सिरख बणावण रौ कपड़ौ आपणै वास्तै ई लाऊं। अबकै तौ सियाळै रौ काम खराखरी है। औ फिकर छोड'र पैली रोटी–पाणी भेळा तौ हुवौ'' –आ कै'र मोती री मां उठी अर बाजरी रा दो मोटा–मोटा सोगरा अर अेक कटोरी में लूण–मिरचां री चटणी ला'र आगै मेल दी। घासफूस बाळ'र थोड़ो–सेक जगाय दियौ। लाई खड़खड़ीज्योड़ौ तौ आयौ ई हौ,

सेक लागौ जद जी में जी आयौ। रोटी खावतौ–खावतौ बोल्यौ– ''सियाळै कोढियै मास नै कण मांग्यौ हौ? औ तौ भगवानां रै ई काम रौ है। कैवत में ई कैवै है– सियाळौ सेभागियां, दो'रौ दोजखियां।''

रोटी खा'र घीसू गूदड़ां में बड़ग्यौ। मोती री मां जागां–जागां सूं रूई भेळी हुयोड़ी, जाळी–झरोखां वाळी झरझरकंथा ऊपर सूं न्हाख दी। गोडा गळै में घाल'र घीसू पड़ रयौ।

मोती री मां अेक फाटौ–सो पूर ओढ'र सेक कनै बैठी–बैठी ऊन कतरण लागी। भाग री बात, चिमनी नै अबार ई बैर काढणौ हौ। घीसू बोल्यौ– ''चिमनी में दिन थकां तेल भरा लांवती...।''

''भरा कठै सूं लांवती। गट्टा महाराज बोल्या कै आगला पईसा दे जावौ अर तेल ले जावौ।''

''तौ मीठै तेल रौ दियौ ई कर लेती।''

''मीठै तेल री तौ काल पूड़ी बणाय ली।''

घीसू दुखी होय'र बोल्यौ– ''कांई करां, कांई नीं करां? कनै फूटी कोडी कोयनी।''

मोती री मां कैयौ– ''मींडा महाराज कनै सूं खंधी कढायलौ।''

''जाणती–बूझती कियां अणसमझ बणै है? गैली बातां करै है? माराज री आगली खंधी तौ चूकी ई कोयनी। पचास रै पेटै पांच–पांच री सगळी पांच खंध्यां अबार तांई पूगी है।''

''तौ चीठी फोराय लो। पाछी पचास री लिख दौ।''

''पण पल्लै कांई पड़सी? लारली वेळा 40/– देय'र 50/– री चीठी लिखायी ही। अबकै भळै 50/– ऊपर 10/– काट लेसी। रुपिया तौ गिणती रा 15/– ई हाथ आसी।''

''परसूं मोतीड़ै री बरसगांठ है। कांई घी–गुड़ तौ लावणौ ई पड़सी। माताजी री पूजा हुसी। जतनां रौ काम है।''

''गरीबां रा जतन रामजी करसी। तनै तौ पूजा री चिंता है पर म्हनै औ फिकर है। कठैई माराज छाती माथै आय चढिया तौ कांई करसूं।

(2)

अठीनै सी दिन दूणौ चमकण लागौ, बठीनै घीसू नै सी–रखै रै कपड़ां री चिंता चौगणी लागी, कनै अखत रा बीज ई नहीं। आज कमठाणै री छुट्टी हुयी जद रामूड़ै कारीगर नै सागै ले'र मनजी माराज रै घरै गयौ अर खंधी ऊपर रुपिया मांग्या। मनजी माराज गोमुखी में हाथ घालियां बैठा जप कर रैया हा अर सागै–सागै खंधीवाळां सूं रोड़–झोड़ करता जांवता हा। माळा रा मिणिया ई सागै–सागै गुड़कता हा। घीसू री बात सुण'र बोल्या– ''ना रे भाई! थां सूं कुण पानौ घालै! थांरा रुपिया आवणा बडा चीढा है।''

आखर रामूड़ै री सिफारस माथै कंईक ढळ'र बोल्या– ''देख भाई! गोथळी खोलाई रा, कबूतरां रै दाणै रा अर चीठी लिखाई रा लागैला। इस्टाम रा पईसा न्यारा है।''

घीसू बोल्यौ– ''माराज! गरीब हूं, म्हनै इण तरै तौ पोसा...।''

''जणै दौड़ जा सीधी ई नाक री डांडी। किण तनै पीळा चावळ भेज्या हा। अरे रांड रा काचा! धरम री जड़ सदा हरी रैवै है। धरम रा पईसा काढतां जी ऊपर कियां आवै है? डूबग्यौ सनातन धरम!''

''ठीक माराज! आप फरमावौ ज्यूं–ई मंजूर है।''

''पण हूं तौ तनै जाणूं कोयनी। जामनी घलावणी पड़ैला।''

''जामनी, रामूजी घाल देसी।''

25/– री चीठी लिखीजी जिकै में 5/– काटै रा, 1/– गोथळी खोलाई रौ, आठ आना कबूतरां रै दाणै रा, अर चार आना चीठी लिखाई र अर इस्टाम रा पईसा काट'र कुल जमा 18/– घीसू रै पल्लै पड़िया।

(३)

घीसू घणौ ई सोच–विचार'र खरच कस्यौ पण तोई कपड़ां–लत्तां रा 15/– खरच हुयग्या। बाकी मोती री बरसगांठ खातर गुड़–घी लावण में लागग्या। पाछा हुयग्या बाबैजी री जात।

मोती री मां माताजी बणाया, पखाळ करायौ, छांटौ घालियौ, नारेळ बधारियौ, धूप–दीप कर'र लापसी रौ भोग धरियौ। हाथ जोड़'र अरदास करी– ''मां! मिनखां कुसळ राखै, छोरै नै सो'रौ राखै, अबकळै आयी जकै सूं सवायी आयै।'' मोती रै लिलाड़ में टीकौ काढियौ अर घीसू नै जीमण रौ कयौ।

घीसू बोल्यौ– ''म्हनै तौ अबार सी–कंपा लागै है। गुदड़ी न्हाख दै। थे जीमलौ। म्हारै तौ ताव उतरियां बात।''

मोती री मां घणी कैवा–सुणी करी जद माताजी नै छांटौ घाल'र मूंडौ अैंठण नै बैठौ ई हौ कै इत्तै में मींडा माराज आय'र घोटौ घुमायौ ई। गरजना करी– ''ला रे घीसूड़ा! खंधी रा रुपिया ला!''

घीसू रै हाथ रौ कवौ हाथ में ई रैयग्यौ। लाचारी सूं बोल्यौ– ''अबकळै माफी दौ माराज! अगलै महीनै दोनूं खंधियां सागै ई दे देसूं।''

''देसी कठै सूं? बाप रै सिर सूं! ठाकरद्वारौ चवड़ौ घणौ! आगलौ–फागलौ तौ हूं जाणूं कोयनी। दावौ ठरकाय दूंला। पछै माथै हाथ देय'र रोवैला। झख मार'र काकोजी–काकोजी कै'र रुपिया धरणा पड़ैला।''

मोती री मां बोली– ''माराज! हाथ जोड़ू हूं, अबकळै माफी बगसौ। आज टाबर री बरसगांठ...।''

''बळगी रांड बरसगांठ! बेटा माल उडावै अर लैणायतां नै अंगूठौ बतावै है।''

''माराज! माल कठै पड़िया है। टुकड़ा मिळ जासी तौ ई घणा है।''

''ना भाई! कुंई होवौ, हूं तौ आज लाखां हाथां ई टळूं कोयनी। रुपिया लेय'र ई जासूं।''

''घीसू, माराज रा पग झाल'र बोल्यौ– माराज! अबकळी बार माफी बगसाय दौ। आगलै महीनै...''

''माफ कुण करै कुट्टण! म्हारै तौ आयां–गयां ई काम चालै है। रांझट मत कर! बेगा रुपिया दै।''

''कनै होंवता माराज तौ आपरा अबार तांई कांयनै राखता? कनै तौ फूटी कोडी ई कोयनी।''

''तौ कांई चीज झलाय दै। रुपिया देय'र पाछी ले जाईजै।'' इयां कैय'र माराज तीनां नै सिर सूं पगां तांई देख्या पण किणी रै सरीर माथै चांदी री तीब ई को देखी नीं। मोती रै हाथां में दो कड़िया चांदी रा देखिया।

''ला ला! बस, अब मोड़ौ मत कर!''

''म्हारै कनै तौ चीज न बस्त। आ काया पड़ी है, ले जावौ। आगलै महीनै आप रा कांई भाव ई रुपिया राखूं कोयनी? अबकळी बार माफ करौ, फेर...''

''फेर म्हारै करमां रा, जद ई तौ तैं–सूं पानौ पड़ियौ। बेटौ उलटौ रंग जमावै है। चीज–बस्त कियां कोयनी? साळै री नीयत ई तांबौ है। देवै कठै सूं!'' आ कैय'र झट मोती रा हाथ पकड़िया ईज। मोती मां–बाप सांम्ही देख'र रोवण लाग्यौ– ''मां! मां! काका! काका!.. औ... म्हारा कड़िया... औ... कड़िया... कड़िया रे... ओ मां... ओयरे...!''

घीसू बैठौ–बैठौ देखतौ रयौ। मां मूंधौ माथौ कियां जमीं माथै पड़ी ही।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

डॉंफर=तेज ठंडी हवा। कोढ़ियो=पीड़ादायक। धूजता=कांपता। बड़ियो=भीतर आयौ, मांय आयौ। पोळियो=पतळौ कपड़ौ। हणां=अबार। खराखरी=कठिनाई, उचित। सोगरा=बाजरै री रोटी। सेक=ताप। लाई=बिचारौ, लाचार। खड़खड़ीजियोडी=ठंड सूं कांपती। दोरो=अबखौ, मुसकल। सेभागीयां=भागवाळा। दोजखियां=नरक जैड़ौ जीवण जीवणिया। झरझरकंथा=जूनी फाटियोड़ी, लीरालीर। पूर=बोदा गाभा। आगला=पैलां रा। खंधी=किस्त। अबार तांई=आज तांई। चिठी=उधारी रौ कागद। पाछी=फेर। अखत रा बीज=कनै कीं नीं होवणौ। रौड़–झोड़=वाद–विवाद। पानी घालै=संबध बणावै। चीडा=दौरा है। पोसा=निभना। जामनी=गारण्टी। बाबैजी री जात=कुछ भी न बचना। पखाळ कराई=प्रक्षलन। सीकंपा=सियाळै री धूजणी। ताव=बुखार। मूंडौ अैठण=जीमण नै बैठणौ। घोटो घुमायो=आय धमक्या। कवौ=कौर। अगला=आगै रा। लाखां हाथां ई टळू नईं=किणी तरै नीं मानूं। तीब=तुस जित्तौ गैणौ। मोड़ौ=अबेळो। पानो पड़ियौ=साबको पड़्यौ। उल्टौ रंग जमावै=उलटी धौंस दिखावणौ। नीयत ई तांबो=खोटी नीयत। मूंधो=ऊंधौ। डांफर=सियाळै री ठंडी हवा। कोढियौ=दुख देवण वाळौ। धूजता=कांपता। हणां=अबार, इण घड़ी। खराखरी=पक्की बात, साची। सेक=ताप। जतन=रिछ्या, सांभ'र राखणौ।

सवाल

विकळपाऊ पडू़त्तर वाळा सवाल

1. मोती री मा चिमनी में तेल क्यूं नी भरा सकी–
   (अ) घर में तेल नीं हौ (ब) दुकान बंद ही
   (स) पैली रा पईसा देवणा हा (द) खुद कनै पईसा नीं हा
   ( )

2.मनजी माराज गोमुखी में हाथ घालियां कांई कर रैया हा–
   (अ) माळा फेर रैया हा (ब) जप कर रैया हा
   (स) भजन कर रैया हा (द) सुमरण कर रैया हा
   ( )

3. मींडा माराज घीसू सूं कांई मांग्यौ–
   (अ) पईसा (ब) गहणा
   (स) खंधी (द) परसाद
   ( )

4. मां! मां! काका! कैवतौ मोती क्यूं रोय रैयौ हौ–
   (अ) पीड़ सूं (ब) मार सूं
   (स) कड़िया खौसणै सूं (द) कड़िया गुमणै सूं
   ( )

साव छोटा पडू़त्तर वाळा सवाल

1. घीसू घर में बड़ियौ जणै कांई चालै ही?
2. घीसू कमठाणै सूं घरां मोड़ौ क्यूं आयौ?

3. चीठी लिखियां पछै घीसू रै कितरा रिपिया पल्लै पड़िया?
4. मोती री कड़िया खोसता देख मोती अर घरवाळी री कांई दसा हुई?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. मजूरी रा पईसा हाथ आयां घीसूं कांई लावणी चावतौ?
2. 'धरम री जड़ सदा हरी रैवे।' आ बात कुण किणनै अर कद कैयी?
4. मोती री मां हाथ–जोड़ मां सूं कांई अरदास करी?
5. मनजी गरीबां नै उधार देय'र किण तरै वसूल करता?
6. मोती मां–बाप सांम्ही देख'र क्यूं रोवण लागौ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1 कहाणी रा मूळ–तत्त्वां रै आधार माथै 'बरसगांठ' कहाणी री समीक्षा करौ।
2. 'घीसू री जूंण गरीब री जूंण रौ साचो चितराम है।' कहाणी रै कथ रै आधार माथै वरणन करौ।
3. 'बरसगांठ' आधुनिक कहाणी री सरुआती कहाणी है। आधुनिक कहाणी सूं इणरौ आंतरौ सपस्ट करौ।
4. कहाणी 'बरसगांठ' संवेदना सूं भरपूर कहाणी है।' कथन नै ध्यान में राखता थंका कहाणी रै मकसद रौ खुलासौ करौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) ''जाणती–बूझती कियां अणसमझ बणै है। गैली बातां करै है। माराज री आगली खंधी तौ चुकी ई कोयनी। पचास रै पेटै पांच–पांच री सगळी पांच खंध्यां अबार जाई पूगी है।'' तौ चीठी फोरायलौ। पाछी पचास री लिखवाय देवौ।

(ब) मनजी माराज गोमुखी में हाथ घालिया बैठा जप कर रैया हा अर सागै–सागै खंधीवाळा सूं रोड़–झोड़ करता जावता हा। बोलिया–''ना रे भाई। थां सूं कुण पानो घालै। थां रा रिपिया आवणा बडा चीढा है।''

(स) आ कैय'र झट मोती रा हाथ पकड़िया ईज। मोती मां–बाप सांम्ही देखर रोवण लागौ– ''मा! मा! काका! काका!–ओ–म्हारा कड़िया–ओ–कड़िया–कड़िया रे–ओ मां–ओय रे।'' घीसू बैठौ–बैठौ देखतौ रैयौ! मां मूंधौ माथौ कियां जमीं माथै पड.ी ही।

कहाणी
उडीक

डॉ. नृसिंह राजपुरोहित

कहाणीकार परिचै
डॉ. नृसिंह राजपुरोहित रौ जनम संवत् 1981 में बाड़मेर जिलै रै खांडप गांव में हुयौ। आप राजस्थानी रा चावा–ठावा अर लूंठा कथाकार हा। आपरी कहाणियां आज रै जनजीवण अर राजस्थानी संस्कृति री छिब रै सागै ग्रामीण परिवेस नै दरसावै। आपरा प्रकासित कहाणी–संग्रै है– 'पुन्न रौ काम', 'रातवासौ', 'अमर चूनड़ी', 'प्रभातियौ तारौ', 'मऊ चाली माळवै' अर 'अधूरा सुपना'। इणरै टाळ आप केई पोथ्यां रौ राजस्थानी में अनुवाद करियौ। आप राजस्थानी री मासिक पत्रिका 'माणक' में बरसां लग उप संपादक रैया। कहाणी–संग्रै 'अधूरा सुपना' माथै आपनै साहित्य अकादमी, नई दिल्ली रौ राजस्थानी पुरस्कार मिळ्यौ। इणरै अलावा ई आपनै मोकळा पुरस्कार मिळ्या अर केई साहित्यिक संस्थावां सूं सम्मानित हुया।

पाठ–परिचै
डॉ. नृसिंह राजपुरोहित री 'उडीक' घणी मरम वाळी कहाणी है। छोटा टाबरां नै बिलखता छोड'र मां रौ बेटैम मरण मिनख रा कांधा भांग देवै। छोटै टाबर किसनू रै विस्वास नै नीं टूटण देवण मांय मामोसा–भईसा–बैन रौ जीव चौबीसूं घड़ी आकळ–वाकळ रैवै। मां मांदी है, अेक दिन वा जरूर आवैला, उणरी उडीक मांय नित रोज गांव रै धोरै माथै बस री टैम जाय'र ऊभ जावणौ, मां रा जूना गाभां में लपेटीज नै मां रै ओरणै सागै अंगूठौ चूंघतै किसनू रै सोवण रौ चितराम इतरौ मरमाळू है कै पाठक रौ हियौ भरीज जावै, आंख्यां डबडबाईज जावै। आ कहाणीकार री सै सूं बडी सफळता है। आ राजस्थानी री सिरै कहाणियां मांय सूं अेक है।

उडीक

यूं रामगढ़ बीसूं बार आयौ गयौ हूं, पण अबकाळै उठै जावणौ घणौ आंझौ लाग्यौ। मन जाणै कियांई होवण लाग्यौ। पै'ली जद कदैई रामगढ़ जावण रौ मौकौ मिळतौ, मन में घणी हूंस रैवती, च्यार दिनां पैली'ज अेक अणबोलणी खुसी मन में भरीज जावती अर मन हर बखत भरियौ रैवतौ। मोटर में बैठतौ तद तौ मोटर री चाल रै सागै वा खुसी पण तरतर बधतीज जावती अर मोटर रा हच्चीड़ा रै सागै उणमें पण उछाळा आवता रैवता। पण आज री हालत सफा उल्टी ही। गाडी सूं उतरनै मोटर कांनी रवांनै व्हियौ तौ पग इसा भारी लाग्या जाणै मण–मण वजन बंध्यौ व्है। उदास मन सूं वांनै कियां ई ठिरड़तौ–ठिरड़तौ मोटर में आयनै बैठ्यौ तौ बैठता पांण अेक जोर रा हचीड़ा सागै वा स्टाट व्हैगी। जांणै उणनै वैम हौ कै म्हैं आळांणौ नीं कर दूं अर पाछौ रवांनै नीं व्है जाऊं।

काचा मारग पर धूड़ रा गोट उठता रह्या अर हच्चीड़ा रै सागै नैना–नैना गांव लारै

छूटता रह्या। अबै तर–तर रामगढ़ ढूकड़ौ आवण लाग्यौ। पै'ली पनजी चव्हाण रौ बेरौ आवैला अर पछै अरणां वाळौ सेरियौ। लांबा सेरिया रै दोनूं कांनी कोरा अरणा इज अरणा। सेरिया बारै निकळतां ई तौ रामगढ़ रा झाड़का दीखण लाग जावैला अर पछै तौ पूगतां अेक चिलम भरै जितरी जेज लागैला। मोटर ऊभी रैवै उठै खासी भीड़ व्हैला। कोई रै मोटर में बैठनै आगै जावणौ व्हैला तौ कोई किणी रै सांम्ही आयौ व्हैला। पाछली साल म्हैं आयौ जद धापू अर किसनू दोन्यूं बैन–भाई म्हारै सांम्हा आया हा। किसनू तौ म्हनैं देखतां पांण ताळियां बजाय–बजायनै नाचण लागग्यौ हौ– मामोसा आया रे... मामोसा आया...। अर धापू तौ पकड़ धाबळियौ हाथ में अर दड़ीछंट घरां दौड़गी ही– बाई नैं बधाई देवण नै कै उणरौ वीरौ आयग्यौ है।

खद्दीड़... खद्दीड़... हब्बीड़... हब्बीड़। मोटर रा छाजला में मिनखां रा छोटा–मोटा दाणा उछळ–उछळनै नीचा पड़ता हा। जितरै तौ अेक जोर रौ हच्चीड़ौ लाग्यौ अर म्हारी झेर टूटी। रामगढ़ आयग्यौ हौ। मोटर ठमतां ई लोग–बाग चढण–उतरण लाग्या। म्हैं ई नीचै उतरियौ अर बेग उठायनै रवांनै व्हियौ। भीड़ सूं बारै निकळ्यौ तौ धड़ा माथै ऊभा अेक टाबर माथै निजर पड़ी। मन में वैम व्हियौ किसनू तौ नीं है कठैई? ना–ना, औ किसनू हरगिज नीं व्है सकै। बाल बिखर्‍योड़ा, हाथां–पगां पर मैल रा धारड़ा जम्योड़ा अर सरीर माथै फगत अेक मैलौ–सीक कुड़तियौ। मूंढै में हाथ रौ अंगूठौ घाल्यां वौ खरी मीट सूं मोटर कांनी देखै हौ। म्हैं थोड़ौ नैड़ौ गयौ। अरे! औ तौ सागण किसनू ईज दीसै। म्हारै अचूंभा रौ तौ ठिकाणौ ई नीं रह्यौ। म्हैं उणनै धीरै–सीक बतळायौ– किसनू? पण उण ध्यांन इज नीं दियौ। वौ तौ अंगूठौ चूसतौ, आंख्यां फाड़–फाड़नै मोटर कांनी देखै हौ।

म्हैं फेरूं जोर सूं कह्यौ– ''भाणूं!'' अबकै वौ म्हारै कांनी देख्यौ। मोटी–मोटी आंख्यां, सफेद–सफेद कोयां में नैनी–नैनी कीकियां, गालां माथै आंसुवां रा टेरा सूखोड़ा। छिन–भर तौ वौ देखतौ ईज रह्यौ। पछै अेकदम मुळकनै बोल्यौ– ''मामोसा, थे आयग्या! म्हैं तौ रोज थांरै सांम्ही मोटर माथै आवूं।''

''जणै ईज तौ म्हैं थनैं मिळण नै आयौ हूं भाणूं।''

''पण म्हारी बाई कठै मामोसा? भाईसा तौ रोज कैवै कै अबै उणनैं सफाखाना सूं छुट्टी मिळ जावैला अर थारा मामोसा उणनै लेयनै आवैला।'' वौ अठी–उठी देखनै विलखौ पड़ग्यौ अर म्हनै जबाब देवणौ भारी पड़ग्यौ। म्हैं अबै उण भोळा कमेड़ा नै कांई जबाब देवतौ। उण रा विस्वास नै कियां खंडत करतौ। जिण उम्मेद री डोर माथै वौ जीवै हौ उणनै कियां तोड़तौ। जिण वरत रै सहारै वौ वेरा में उतरियोड़ौ हौ, उणनै कियां बाढतौ। म्हैं थोड़ौ संभळनै कह्यौ– ''बाई हाल मांदी है भाई, वा सफा ठीक नीं व्है जितरै उणनै सफाखाना सूं छुट्टी मिळै कोनी। म्हैं उणनै गोदी में ऊंचाय लियौ।

''कदै छुट्टी मिळैला? थे सेंग कूड़ा बोलौ हौ, म्हनै चिगावौ।'' वौ आंती आयनै रोवण लागग्यौ। म्हैं उणनै छाती रै चेप नै बुचकारण लागग्यौ हौ तौ हूचकै भरीजग्यौ। म्हैं नीठ पोटाय–पुटूय नै छांनौ राखियौ।

''देख थूं तौ समझणौ है भाणूं। बाई कितरा दिन घरै मांदी पड़ी री, अबै दवा नीं करावै तौ सावळ कीकर व्है बता? ठीक व्हैतां ई म्हैं उणनै लेयनै आवूंला। अेक देख, थारै वास्तै वा थैली भरनै रमेकड़ा भेज्या है अर केवायौ है कै इणां मेंसूं धापू नै अेक ई मत दीजै।''

अबै जावतौ उणनै थोड़ौ थावस बाधौ। वौ आंख्यां पूंछतौ बोल्यौ, ''म्हनै ई बाई कनै ले चालौ नीं मामोसा। म्हैं उणनै कोई दुख नीं दूंला। बाई बिना म्हनै कीं चोखौ नीं लागै। अठै म्हनै भाईसा लड़ै अर धापूड़ी रांड म्हनै

रोज कूटै। बाई तौ म्हारै हाथ ई नीं लगावती।''

''थूं नानीजी कनै चालैला किसनूं? वै थारौ घणौ लाड राखैला अर उठै थनै कोई नीं कूटैला।''

म्हारी बात उणनै जची कोनी। थोड़ी ताळ वौ ठैरनै बोल्यौ– ''म्हारै तौ बाई कनै जावणौ है, नानीजी कनै नीं जावणौ।'' पछै म्हारौ हाथ पकड़नै फेर बोल्यौ, ''मामोसा, छोरा म्हनै कैवै कै थारी बाई तौ मरगी।''

मन में अेक धक्कौ–सो लाग्यौ, तौ ई म्हैं कह्यौ– ''सफा कूड़ बोलै नकटा, वै थनै यूं ई चिड़ावै।''

घरां आयनै उणनै नीचौ आंगणै उतार दियौ। पण हे राम! इण घर री आ हालत। कठै तौ वौ बुहारियौ–झाड़ियौ, नीपियौ– गूंपियौ देवता रमै जिसौ कूंपळी व्है जिसौ घर अर कठै औ भूतखानौ। ठौड़–ठौड़ कचरा रा ढिगला, आंगणा रा नीबड़ा हेटै बींटां रा थोकड़ा, अेंठवाड़ा वासण, उघाड़ौ पणेरौ अर भरणाट करती माखियां। सगळा घर माथै अेक अजाणी उदासी, अेक अणबोली छियां।

म्हैं धापू नै हाकौ कियौ तौ वा पाड़ौस रा घर सूं दौड़ी आई। पण सदेई का ज्यूं आयनै पगां में बाथ नीं घाली। दस बरस री छोरी छः महीना में ईज जाणै डोकरी व्हैगी ही। सूक्योड़ौ मूंडौ, मैला–मैला गाभा, माथौ जाणै सूगणियां रौ माळौ। म्हैं माथै हाथ फेरियौ तौ वा छिबरां–छिबरां रोवण लागी। नीठ बोली राखी।

हाथौहाथ घर री सफाई करनै नींबड़ा री छियां में मांचा माथै बैठ्यौ तौ मन जाणै कियांई व्हैग्यौ। घर रा खूणा–खूणा सूं बाई री याद जुड़ियोड़ी ही। यूं लाग्यौ जाणै वा रसोड़ा में बैठी रसोई बणाय री है अर अबार म्हनै बुलाय लेला। जाणै वा गवाड़ी में बैठी गाय दूय री है अर अबार किसनू नै गिलास लावण रौ हाकौ कर दैला। जाणै ढाळिया में बैठी घरटी फेर री है अर अबार वीरौ गावणौ सरू कर दैला।

म्हनै वीरौ सुणण रौ अर बाई नै वीरौ गावण रौ कितरौ कोड हौ, जिणरौ कोई पार नीं। म्हैं आवतौ जितरी वार लारै पड़ जावतौ– ''बाई, अेकर तौ वीरौ सुणाय दे।'' अर वा झीणा कंठ सूं सरू कर देवती; आज ई इण अळस दोपार री पौर में यूं लाग्यौ जाणै वा सांम्ही बैठी वीरौ गावै है–

बागां में बाज्या जंगी ढोल
शहरां में बाजी सुरणाई जी
आयौ म्हारौ जामण जायौ वीर
चूनड़ तौ ल्यायौ रेसमी जी

... ...

मेलूं तौ छाब भरीजै
तोलूं तौ तोळा तीस जी
ओढूं तौ हीरा खिर जाय
भरूं तौ हाथ पचास जी

... ...

बागां में बाज्या जंगी ढोल
शहरां में बाजी सहनाई जी
आयौ म्हारौ जामण जायौ वीर
चूनड़ तौ ल्यायौ रेशमी जी

... ...

लारली साल म्हैं आयौ जद बैठौ–बैठौ वीरौ सुणतौ हौ अर बाई गावती ही, उण बखत न जाणै गावतां–गावतां कांई व्हियौ सो उणरौ कंठ धूजण लाग्यौ अर आंख्यां भरीजगी। म्हैं उणरौ हाथ पकड़नै कह्यौ– ''ओ क्यूं बाई?'' तौ बोली–''कांई नीं रे वीरा, मन जाणै यूं ई कियां ई व्हैग्यौ। सोच्यौ थूं रोज वीरौ गवावै पण कुण जाणै, सागण काम पड़सी जद म्हैं रैस्यूं कै नीं?''

''थूं इसौ खराब सोचै ईज क्यूं?'' म्हैं कह्यौ।

''यूं ई रे भाई, इण काची काया रौ कांई भरोसौ, आज है अर काल नीं। दूजौ जिणनै जिण चीज री हूंस घणी व्है, वा पूरी नीं व्हिया करै।''

गळा में कांटा–सा अटकण लाग्या अर नींबड़ा माथै डोड कागला बोलण लाग्या– क्रां... क्रां... क्रां। किसनू कठी गयौ? रसोड़ा

में धापू अेकली बैठी साग वंदारती ही, उणनै पूछ्यौ तौ जाण पड़ी कै कनला कमरा में सूतौ व्हैला। जायनै देख्यौ, आंगणा माथै फाटा–तूटा गाभा बिछायनै सूतौ हौ अर बाथ में अेक ओरणौ भस्योड़ौ हौ। म्हैं खासी ताळ ऊभौ–ऊभौ उण रा भोळा–ढाळा चेहरा नै देखतौ रह्यौ। वौ रैय–रैयनै आपरा नैना–नैना होठां नै भेळा करनै ऊंघ में ई बोबौ चूंघतौ व्है ज्यूं बसड़–बसड़ करतौ हौ।

धापू बोली, ''औ रात रा यूं ईज सोवै मामोसा। जे बाई रा कपड़ा इणनै ओढण–बिछावण नै नीं देवां तौ इणनै ऊंघ ई नीं आवै। अेक रात औ भाईसा साथै सूतौ तौ सगळी रात जगियौ। औ कैवै कै इण कपड़ां में म्हनै बाई री बास आवै, जिण सूं ऊंघ झट आय जावै। इण वास्तै ईज भाईसा अै कपड़ा धुपावै कोनी।

म्हनै म्हारी पीळकी गाय रौ वौ लवारियौ याद आयग्यौ जिकौ फगत बीसेक दिन रौ हौ कै उणरी मा मरगी। तीन दिन तांई वौ ठाण सूंघतौ रह्यौ, जठै उणरी मा बांधीजती। छेवट चौथै दिन डेंडाड़ करतै प्राण छोड दिया। अर औ लवारिया जिसौ ईज अबोध किसनू जो फगत पांच बरस रौ है अर इणरी जामण मरगी, उणनै जे मायड़ रा परसेवा री बास सूंघ्यां बिना ऊंघ नीं आवै तौ इणमें इचरज री बात ई कांई?

थोड़ी ताळ में वौ जाग्यौ तौ म्हैं उणनै कह्यौ– ''चाल भाणूं, थनैं सिनान कराय दूं। देख थारै डील माथै कितरौ मैल जमग्यौ है अर कुड़तौ किसौक मैलौ घाण व्हैग्यौ है। थनैं सूग ई नीं आवै भोळा? पै'ली तौ थूं कितरौ साफ–सुथरौ अर फूटरौ फर्रौ रैवतौ। अबै थारै कांई व्हैग्यौ है?'' वौ अेक सबद ई नीं बोल्यौ, चुपचाप म्हारै लारै आयग्यौ। पण म्हैं उणरौ कुरतौ उतरावण लाग्यौ तौ वौ अेकदम रीसां बळतौ बोल्यौ– ''पै'ली माथौ मत काढौ नै पै'ली बांयां उतारौ– यूं।'' वौ आपरौ नैनौ–सीक हाथ ऊंचौ करनै बोल्यौ। म्हैं वौ कह्यौ ज्यूं पै'ली बांयां में सूं हाथ काढनै पछै उणनै बाल्टी रै कनै बिठायनै लोटौ भरनै उणरै माथा पर कूढण लाग्यौ, तौ अेक दम लोटौ म्हारै हाथ सूं झड़पनै फेंकतौ थकौ बोल्यौ– ''पै'ली हाथां पगां रै मैल उतारै कै पै'ली माथा माथै पांणी नाखै? इतरा मोटा व्हैग्या तौ ई सिनान करावणौ ई नीं आवै। बाई तौ सब सूं पै'ली म्हारा हाथ–पग भिगोयनै धीरै–धीरै मैल करती। पछै मूंढौ धोयनै लाड करती अर पछै माथा माथै पाणी नाखती, अै तौ ले पाणी नै धड़ ड़ ड़ ड़। आ धापूड़ी ई रांड रोज यूं ईज करै, जरै ईज तौ म्हैं सिनान नीं करूं।''

म्हनै दुख में ई हंसणौ आयग्यौ। म्हैं कह्यौ– ''ले भाई, बाई करावै ज्यूं ईज सिनान करावूंला थनै पछै तौ कांई नीं? म्हैं उण रा हाथ–पग भिगोयनै डरतौ–डरतौ धीरै–धीरै मैल काढण लाग्यौ। कांई भरोसौ, रीसां बळतौ अबकै लोटौ लेयनै म्हारा माथा में नीं ठरकाय दे। पण इसी कोई बात नीं व्ही। काम उणरी मरजी रै माफक होवण सूं वौ बातां करण लाग्यौ– ''बाई तौ म्हनै खोळा में बिठायनै धीरै–धीरै दूध पावती। गरम व्हैतौ तौ पै'ली आंगळी घालनै देख लेवती। फीकौ व्हैतौ तौ चाखनै खांड थोड़ी फेर नांखती। अर अे भाईसा तौ सांम्ही बैठनै माडांणी पाव। दूध में घी नांख देवै अर पछै जोर कर–करनै कैवै– 'पीऽ पीऽऽ।' अर आ धापूड़ी रांड लारै री लारै 'पीवै क्यूं नीं रे! पीवै क्यूं नीं रे... है ईज किसी रांड, डाकण व्हे जिसी। रीस तौ इसी आवै कै रांड रा लटिया तोड़नै नांख दूं। म्हनै दूध में तारा देखनै ऊबका आवै। अेक दिन तौ उल्टी व्है जाती। पण नीं पीऊं तौ भाईसा कूटै। मामोसा बाई आवै जितरै थे अठै ईज रहीजौ, जाईजौ मती भलौ!''

म्हैं उणनै थावस देवतां कह्यौ– ''अबै थूं खासौ मोटौ व्हैग्यौ है गैला, कोई बोबौ चूंघतौ नैनौ टाबर तौ है कोनी। आखौ दिन बाई–बाई कांई करै?''

उणनै फेर रीस आयगी। वौ मूंडौ चढायनै बोल्यौ– ''नैनौ नीं तौ कोई थांरै जितरौ मोटौ हूं? बाई तौ अबै ई म्हनै रोज बोबौ चूंघायनै जावै।''

उण रा हाथ धोवती बखत उणरै चूस–चूसनै आलै कियोड़ै अंगूठै री म्हनै याद आयगी। हरदम मूंडै में राखण सूं अंगूठौ फोगीजनै धवळौ फट्ट पड़ग्यौ हौ। पै'ली तौ आ आदत नीं ही उणरी। म्हैं उणनै पूछ्यौ– ''थनै बाई किण बखत बोबौ चूंघावण नै आवै रे किसनू?''

''किण बखत कांई, रोज रात रा आवै। घणी ताळ आंगणै रा नींबड़ा नीचै ऊभी रैवै। पछै होळै–होळै चालती म्हारै कनै आवै, म्हारौ लाड करै अर पछै गोदी में ऊंचायनै म्हनै बोबौ चूंघावै।''

''नित रोज आवै?''

''नित रोज।''

''कदैई गळती नीं करै?''

''अेकर म्हैं भाईसा रै सागै सूतौ हौ, उण रात बाई कोनी आई। नीं तौ रोज आवै।''

म्हैं उणनै सिनान करायनै कपड़ा पैराय दिया। बाल ठीक करनै आंख्यां में काजळ घाल्यौ तौ खासौ ठीक दीखण लाग्यौ। म्हैं कह्यौ– ''देख भाणूं, यूं सफाई सूं रैवणौ, जिण सूं बाई थारौ घणौ लाड राखैला। अर यूं मैलौ–कुचैलौ घाण व्हे ज्यूं रह्यौ तौ वा आवैला ई नीं।''

म्हारी बात उणरै हियै ढूकगी। घांटकी हिलावतौ बोल्यौ– ''अबै रोज सिनान करूंला, कपड़ा ई नवा पैरूंला।''

धीरै–धीरै दिन ढळग्यौ। आंगणा रौ तावड़ौ रसोई रा नेवां माथै पूगग्यौ, नींबड़ा माथै पंखेरू किचकिचाट करण लागा। गवाड़ी में ऊभी टोगड़ी तांबाड़ण लागी अर जीजाजी रै घरै आवण री वेळा व्हैगी।

बाई रामसरण हुयां पछै वांरी कांई हालत ही, म्हैं सगळा समाचार सुण लिया हा। जे इण टाबरियां रौ बंधण नीं व्हैतौ तौ वै कदैई औ घरबार छोडनै नाठ गया व्हैता। पण आ अेक इसी बेड़ी ही जो काटियां नीं कटती ही। इण वास्तै नीं चावतां थकां ई वांनै दुकान माथै बैठणौ पड़तौ अर दोन्यूं बखत काया नैं पण भाड़ौ ई देवणौ पड़तौ।

टगू–मगू दिन रह्यां वै घरां आया अर म्हनै मिळनै काम में लागग्या। दिन आथमियां गाय दूय नै धापू रै हाथ रा काचा–पाका टुकड़ा खायां पछै बातां होवण लागी। बाई री चरचा आवतां ई वांरी आंख्यां जळजळी व्हैगी। वै बोल्या– ''म्हारी चिंता नै म्हैं सहन कर सकूं हूं, पण आं टाबरियां रौ दुख सहन करणौ म्हारै हिम्मत रै आगै री बात है। धापू नै तौ फेर कियां ई थावस देय सकां, समझाय सकां, उण रा दुख नै थोड़ौ हळकौ ई कर सकां, पण इण पसुड़ा नै कियां समझावां, इणनै कांई कैयनै धीरज बंधावां? इणरै दुख रौ तौ नीं दिन रा पांतरी पड़ै अर नीं रात रा। जिण विस्वास री डोर माथै औ जीवै है, वा जे आज टूट जावै तौ इणरौ जीवणौ कठण है, आ पक्की बात है।

जिण दिन सूं म्हैं इणरी मां नै खांधै चढाय पूगायनै आयौ हूं, उण दिन सूं लगायनै आज दिन तांई औ नितरोज मोटर माथै जावै अर उणरै आवण री बाट उडीकै। मोटर पांच–दस मिनट लेट भलांई व्हौ पण इणरै जावण में जेज नीं व्है।

बोलतां–बोलतां फेर वांरौ गळौ भरीजग्यौ अर म्हारी आंख्यां पण जळजळी व्हैगी।

रामगढ म्हैं पूरा सात दिन ठहरियौ अर आठमै दिन रात री मोटर सूं रवांनै व्हियौ तौ किसनू उण बखत गैरी नींद में सूतौ हौ। म्हैं उणनै जगावण रौ विचार कियौ तौ दिमाग में अेक झटकौ–सो लाग्यौ। कुण जाणै बाई नींबड़ा रै नीचै ऊभी व्हैला कै गोदी में ऊंचायनै उणनै चूंघावणौ सरू कर दियौ व्हैला। सो सूतोड़ा रै ईज हळकौ–सीक वाल्हौ देयनै म्हैं रवांनै व्हैग्यौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

उडीक=बाट जोवणी। अबकाळै=अबकी बार। आंझो=अबखौ, दोरौ। हूंम=उमंग। बैम=भरम, बहम। आळाणौ=टाळणौ, रद्द करणौ। गोट=भतूळिया, आंधी रौ बवंडर। लारै=पाछौ। ढूकड़ौ=नैड़ौ, नजदीक। बैरो=कूवौ। अरणा=अेक तरै रौ रूंख, जिणरा पानां ऊंट घणै चाव सूं खावै। जेज=देर, मोड़ौ। वीरौ=भाई। छाजळा=सूपड़ौ। झेर=ऊंघ। घड़ा=ऊंची जगा। भांणू=भांणजा। कमेड़ा=अेक तरै रौ पंछी। वरत=रस्सी, लाव। मांदी=बीमार। छांनौ=लुक्योड़ौ, चुप। रमेकड़ा=रामतिया। थावस=धीरज। अैठवाड़ा=जूठा। वासण=बरतन, ठामड़ा। हाको=जोर री आवाज। माळौ=आळणौ, घोंसलौ। वीरौ=ब्याव रै टाणै गाईजण वाळौ भाई सारू गाईजतौ गीत। कोड=चाव, उत्साह। बाई=बैन। जामण=मां। लवारियौ=बछड़ौ। परसेवा=पसीनौ, पसेवौ। खोळा=गोद। लटिया=केस, बाल। तारा=घी रा तरवरा। ऊबका=उल्टी। घांटकी=गाबड़, गरदन। टोगड़ी=गाय री बाछड़ी, केरड़ी। टगू–मगू=थोड़ौ–सोक, चिन्हौ–सोक। वाल्हौ=प्यारौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''अबकाळै उठै जावणौ घणौ आंझौ लाग्यौ।'' इणरौ कारण हौ–
   (अ) बाई घणी मांदी ही (ब) मन री हूंस खतम हुयगी।
   (स) बाई री मौत सूं मन उदास हौ (द) रामगढ़ अळगौ घणौ हौ
   ( )
2. ''अबै जावतौ उणनै थोड़ौ थावस बाधौ।'' किसनू रै थावस बंधण रौ कारण हौ–
   (अ) उणरै मामोसा आयगा हा (ब) थैली भरिया रमेकड.ा लाया हा
   (स) बाई रै आवण री आस बंधगी (द) बाई री तबियत ठीक हुयगी।
   ( )
3. ''किसनू नैं बाई रा ओढ़णा–बिछावणा मांय ही नींद आवती।'' कांई कारण हौ–
   (अ) उण री आदत पड़गी ही (ब) अै कपड़ा उणनै आछा लागता
   (स) उणरै जीव नै नेहचौ रैवतौ (द) आं कपड़ा में बाई री बास आवती
   ( )
4. ''जिण उम्मेद री डोर माथै वो जीवै हो उणनै कियां तोड़तौ।'' वा किसी उम्मेद ही–
   (अ) मामोसा आवणा री (ब) बाई रै घरां आवण री
   (स) थैली भरा रमेकड़ा पावण री (द) नानी रै घरां जावण री
   ( )

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. किसनू रै सुपना में आय'र बाई कांई करती?
2. किसनू रै नानीसा कन्नै चालण री बात क्यूं दाय कोनी आई?
3. ''दस बरस री छोरी छह महीनां में ईज जाणै डोकरी व्हैगी ही।'' धापू री इण हालात रौ कांई कारण हौ?
4. ''म्हारी चिंता नै म्हैं सहन कर सकूं हूं पण टाबरिया।'' आ बात कुण, किणनै अर क्यूं कही?

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. किसनू रोज किणरै सांम्ही मोटर माथै आवतौ?
2. किसनू नै छोरा कांई कैवता?
3. बाई नै किसौ गीत गावण रौ कोड हौ?
4. किसनू धापू रै हाथां सिनांन क्यूं नी करतौ?
5. मामोसा रवाना व्हिया जद किसनू कांई करतौ हौ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. इण कहाणी रौ नांव (शीर्षक) कठै तांई वाजब है। खुलासौ करौ।
2. बिना मां रा टाबरां री कांई हालत होवै। खुलासौ करौ।
3. कहाणीकार री भासा–सैली पाठकां सांम्ही मारमिक चितराम उकेरिया है। स्पष्ट करौ।
4. किसनू रै जीवण में बाई रै जींवतां अर मरियां पछै आया फरक नै दाखला देय'र समझावौ।
5. उडीक कहाणी री मूळ–संवेदना नै आपरै सबदां मांय उजागर करौ।
6. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) अबै जावतां उणनै थोड़ौ थावस बाधौ। वौ आंख्यां पूंछतौ बोल्यौ– ''म्हनै ई बाई खनै ले चालौ नीं मामोसा। म्हैं उणनैं कोई दुख नीं दूंला। बाई बिना म्हनै कांई चोखौ नीं लागै। अठै म्हनै भाईसा लड़ै अर धापूडी रांड म्हनै रोज कूटै। बाई तौ म्हारै हाथ ई नीं लगावती।

(ब) वै बोल्या– ''म्हारी चिंता नै म्हैं सहन कर सकूं हूं, पण इण टाबरियां रा दुख नै सहन करणौ म्हारै हिम्मत रै आगै री बात है। धापू नै तो फेर कियां ई थावस देय सकां, उणरै दुख नै थोड़ौ हळकौ ई कर सकां। पण इण पसुड़ा नै कियां समझावां, इणनै कांई कैयनै धीरज बंधावां?

कहाणी
कांचळी

रामेश्वरदयाल श्रीमाळी

कहाणीकार–परिचै

राजस्थानी रा सिरै कवि, कहाणीकार अर समीक्षक रामेश्वरदयाल श्रीमाळी बरसां लग राजस्थानी भासा रै लेखण अर आंदोलन सूं जुड़ियोड़ा हा। 1977 में उणां नै कहाणी–संग्रै 'सळवटां' माथै राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर रौ राजस्थानी साहित्य पुरस्कार मिळ्यौ। 1980 में कविता–संग्रै 'म्हारौ गांव' माथै साहित्य अकादमी, नई दिल्ली अर बरस 1995–96 में राजस्थानी भासा, साहित्य एवं संस्क्रति अकादमी, बीकानेर रौ 'गणेशीलाल व्यास उस्ताद राजस्थानी पद्य पुरस्कार मिळ्यौ। श्रीमाळी री मोकळी कहाणियां रौ अंग्रेजी, हिन्दी अर बांग्ला भासा में उल्थौ होयौ। उणां री कहाणी 'जसोदा' टी.वी. माथै संसार री श्रेष्ठ कहाणियां कार्यक्रम सारू प्रदरसित करीजी। जाळोर जिलै रै मांय साक्षरता अभियान मांय सांतरौ काम करण सारू महामहिम राष्ट्रपति रै कर–कमलां सूं पुरस्कृत होया।

पाठ–परिचै

रामेश्वरदयाल श्रीमाळी री आ कहाणी मध्यम वरग री आरथिक स्थिति नै साम्हैं परतख पेस करै। समधा लाचार है, डोकरी है, फटेहाल गरीबणी है। मां विहूणी पुसबा री पाळणहार है। पुसबा रौ ब्याव करणवाळी है। पुसबा रौ ब्यांव भलां ई ढळती उमर वाळै सूं होयौ होवै, पण है पईसां वाळौ। बगत–बगत री बात। आज पुसबा रा दिन फुरियां वा सो'री–सुखी है। राजस्थानी रीत–पांत री पाळणा करती डोकरी आपरी गाढी पूंजी जंवार देय'र कांचळी रौ बटकौ लावै। बा मन मांय घणी राजी होवती हरख सूं पुष्बा रै घरै जाय वौ बटकौ नेग रै रूप में देवणौ चावै, पण उण कपड़ै नै देख पुसबा री प्रतिक्रिया सूं डोकरी झिंझोड़ीज जावै। डोकरी रै कोड नै धनबावळी पुसबा समझ नीं सकै अर वा कैवै कै म्हारै घरै अैड़ै कपड़ै नै कुण पैरै है धा! अर वा डोकरी री बिना गिनर करियां व्हीर होय जावै। कहाणी रौ अंत घणौ मारमिक है।

कांचळी

गाडरां जैड़ा धोळा केसां री बिखर्‌योड़ी लट सूं झूंपै रौ उळझ्योड़ौ खींपड़ै रौ तिरणौ पोपली आंगळ्यां सूं काढ, हाथ में अंगरेजी बांवळियै रौ बांकौ चिटियौ लेय, खाड़का पैर'र डोकरी समधा बारै निकळी। झूंपै रौ फळौ बीड़'र भंडारियां री दुकान सांम्ही चाली। झीर–झीर हुयोड़ौ गोडां लग रौ घाघरौ अर लीर–झाण हुयोड़ौ ओढणौ। ओढणौ घणौ मैलौ नै जूनौ, जिकौ रंग रौ ई कीं ठाह पड़ै नीं। अेक पल्लै संभाळ'र राख्योड़ा जुंवार रा दाणा।

झूंपै सूं बीसेक पग माथै हड़मानजी रौ थान। कीड़ी री चाल डोकरी चिटियौ हिलाती थान तक पूगी। थान कनै जाय'र धोक दी।

जुंवार रा च्यारेक दाणा पेड़लै माथै बिखेर'र डोकरी पाछी झूंपै सांम्ही वळी। बेरणौ उघाड़्यौ। खाड़का उतास्या। चिटियौ खूंणै में ऊभौ कियौ। धान संभाळ'र पाछौ मटकै में घाल्यौ। मटकै माथै ढक देय'र झूंपै बारै नीसर गवाड़ी में छोटी–सीक नीमड़ी री नाजोगी छियां में बैठगी।

ऊनाळै री रुत। हवा बंद। तपत घणी। नीमड़ी रै नीचै अेक लांबौ–लड़ाक कुत्तौ पड़्यौ जोर–जोर सूं सांस लेवै। कूतरै नै धुतकार'र चिटियौ सांम्हौ कियौ, पण कूतरौ किणी रिश्वतखोर बाबू ज्यूं निसरड़ौ हुय, जिकौ डोकरी री धुतकार नै धास्यां बिना ई चुपचाप आंख्यां मींच'र पड़्यौ रैयौ। डोकरी में घणौ सत कठै? वा पण अेक कांनी पसरगी।

समधा मन नै समझायौ– म्हारै कांई बाई! म्हारै तौ कोई धियौ न कोई पूतौ। म्हारै अठै कुण है जिकौ वै पाछौ देवै। कदैई करमां छाछ रै छांटै रौ काम पड़ै, जिकौ ई दो'रौ घालै। ...नै लारै जुंवार रही ई कठै बाई। अैड़ौ माणौ भरी हुवैली तौ दस–पंदरै दिन नीठ चालैली। पछै किणरै मूंडै सांम्ही जोवणौ? पोपली मूंडौ कर'र किणरै सांम्ही हाथ पसारां बाई! जिण पांतर तौ पुसबाड़ी नै बैंत कांचळी रौ कपड़ौ नईं दियौ, नै सात सुख! समधा अेक निरासा भस्यौ सैरकौ नांख्यौ।

समधा सूती पण मन नै जक कठै? कांई ठाह छोरी हेजाळी है, लाण माथै हाथ फेरावण नै आई तौ कांई हुवैलौ? जे खाली हाथ फेरूं तौ भूंडौ नीं लागै? भूंडौ तौ बाई लागै ईज! समधा रांड तौ कांई हुयौ? घर में कोई कमाऊ कोनी पण रोट्यां रौ देवाळ तौ द्वारका रौ नाथ है। दाणै–दाणै माथै खाणै वाळै री छाप उण लगाई है। मन तौ लोभ करै ईज! मन रौ कांई– मन लोभी मन लालची, मन चंचळ, मन चोर! पण मन रै मतै थोड़ौ ईज चालीजै।

चिटियै रौ सहारौ लेय'र समधा उठी। रेत झटकण घाघरै माथै हाथ झटक्यौ। झूंपै में गई। फाट्योड़ै ओढणै रै पल्लै में घणै जतन सूं जुंवार भरी। च्यार–छह दाणा बिखरग्या हा, उणां नै अेक–अेक कर चुग्या। अन्न देवता है। देवता नै पगां में कियां बिखेरां बाई! सूझतौ थोड़ौ हौ जिकौ जमीं माथै हाथ फेर–फेरनै सावळ जोयौ। दो–च्यार कांकरां नै ई जुंवार रै भरोसै घाल्या। मूण माथै ढक दीनौ। फळौ ढक'र दुकान कांनी जावण बारै नीकळी जद संतोख रौ अेक टुकड़ौ मूंडै माथै उतस्यौ– लाण पुसबा नै बैंत कांचळी तौ देवणी'ज चाईजै।

जोग री बात, डोकरी री आंख्यां डबडबायगी। अठै चाईजै जिकौ बठै ई चाईजै। नींतर नरबदा रै कोई जावण रा दिन हा? कितरी भली ही लाण! बोलती जरै फूल खिरता। जेठाणी–जेठाणी कैवती जीभ सुखावती ही लाण! अंग में आळस रत्ती–भर ई कोनी हौ। आखै दिन घोड़ै दांई दौड़ती फिरती। फगर–फगर काम करती। सगळां सूं बणाय'र चालती। फूटरीफरी! गीत–गाळ में हुंसियार! पण इसा मिनख ओछा दिन लिखायनै लावै! अेक दिन ताव आयौ, नै जाणै ही–क ही ई कोनी! सपनै वाळी बात बणनै रहगी। उण दिनां पुसबाड़ी पांचेक बरसां री हुवैली। हरनाथ म्हारै खोळै में नैनकड़ी लट नांख नै कैयौ हौ– ''भाभी, बापड़ी अबोली जिनवार है, हमैं थे जाणौ। म्हैं तौ थांनै सूंप'र...। कह परौ गळगळौ हुय'र रोवण लाग्यौ।

सळ भस्योड़ै पोपलै मूंडै माथै मुळक री अेक रेख बिखरी। कैड़ी म्हारी छाती रै चिप'र छानी रही ही। जाणै सागी ई मां होवूं। औ ई कोई आगोतर रौ लैणियौ हुवै है। म्हारै साथळ नईं फाटी तौ कांई, सांवरियै रै औरतौ पूरौ करवावणौ हुवै तौ... चेहरै माथै उदासी री अेक बादळी ऊमटी अर बिना बरस्यां ई मारगै

बुही। निपूती हुवण री बात सूळ हुवै ज्यूं चुभी। बाळ–विधवा ही लाण!

अबै पुसबा कैड़ी फूटरी दीसै। कपड़ौ–लत्तौ कैड़ौ ओपै, जाणै इन्दर री अपछरा! गाल कैड़ा गुलाबी पड़्या है, लोही जाणै हमैं टपकै कै हमैं टपकै! चेहरै माथै नूर आयग्यौ! मूंडौ जाणै देखौ तौ देखता ईज रैवौ। च्यार दिनां पैली लटां में जुंवां रा माळा टिरता हा। म्हैं कह–कह नै थाकगी– अे पुसबाड़ी रांड, थारै इतरी–इतरी जुंवां टिरै। आव, माथौ परौ धोवूं। कैड़ौ मैलौ चिकार हुयौ है। कपड़ा पैरती तौ जाणै खूंटै रै परा टेरिया हुवै ज्यूं। पग री ब्याउवां सूं लोही बैवतौ। पण हमैं? ..बगत–बगत री बात है।

पायली जुंवार देय'र डोकरी समधा बैंत भर्‌यो तापेटै रौ टुकड़ौ लाई। कांई करां बाई? बाणियै रौ बेटौ, लेतां ई खायनै देतां ई खाय। नींतर पायली धान रौ रोकड़ी सैकड़ौ रिपियौ हुवै, अर आगलै जमानै में रिपियै रौ तौ घाघरौ आवतौ– पूरौ अस्सी कळी रौ! पण इण जमानै रौ कांई करणौ? मिनखां मांयलौ तौ राम ईज परौ निकळ्यौ है। पण राम तौ लेखौ राखै है। आगलै भव में...।

तावड़ौ कीं मोळौ पड़्यौ। पुसबा हाल नीं आई। नैना टाबरां री मां है लाण, बगत ई कोनी मिळ्यौ हुवै। नींतर उणरौ जीव तौ अठैई पड़्यौ हुवैला। छोरी लाण लायकी वाळी है। कांई ठाह औ विचारनै ई नईं आई हुवै कै धा रौ अणूतौ ई रिपियौ खरच परौ हुवैलौ; कै कांई ठाह माथै हाथ फेरावण जावूं तौ डोकरी खाली हाथ पाछी मेलण सूं लाज मरैली। डोकरी रै अठै कमावण वाळौ कुण है? अणूता ई फोड़ा घालणा! भला मिनखां रा अै ईज लक्खण है। मिलण नै तौ अठै आई जरै मिळी'ज ही क! खिणेक रौ ई मिळणौ अर दिनां रौ ई मिळणौ। जावूं, कांचळी बैंत बटका जोगी तौ वा ई है परी' क! थो–थो, रामजी मा'राज, मां जिसी ई लायक हुवै। सुहागभाग अमर रैवै। पीळौ ओढै, मीठौ जीमै। पेट ठरै लाण रौ। रामजी माराज, घणौ ई दुख देख्यौ है। सैंग दिन किसा सीरखा रैवै बाई! अबै रामजी भला दिन देवै। लाल तापेटै रै पाव गज कपड़ै नै सामट–संभाळनै डोकरी पुसबा रै घर कांनी चाली। तांगिया खाती, आपरी जाण खाताई में।

मिनखां नै तौ किणरौ ई सुख सुहावै ई कोनी बाई! हरनाथ रै गरीब घर नै देखतां किणनै ठाह हौ कै छोरी नै अैड़ौ घर–वर मिळैलौ। पण रामजी सगळां रा ई दिन फेरै। मिनख भूंडियां कर–कर'र जात रौ ई मैल धोवै। जान आई जरै ई कच–कच सरू। मोटौ जोयौ बाई। तीजियांत है बाई। पचास बारै ऊमर है बाई। मिच–मिचियाती आंख्यां, थुलथुलौ डील है बाई। गाबड़ धूजै बाई। कोरौ धन ईज देख्यौ है बाई। सुवाग कोनी देख्यौ। बाप आपरौ घर भर्‌यौ बाई। बेटी रौ सुख कोनी जोयौ। मूंडै जितरी ई बातां! म्हैं कैवूं, आपौ–आपरा नसीब है। छोरी लाण आखी ऊमर में हमैं ईज सुख देख्यौ है। इणसूं बत्तौ घर–वर कांई देखै बाई। चोखी घर–गुवाड़ी। भण्यौ–लिख्यौ बींद। गांव में लेण–देण रौ धंधौ। च्यार–च्यार गायां–भैंस्यां दूझै। ताकड़ियां सोनौ तुलै। इणसूं बत्तौ पछै कांई देखै? सुवाग–भाग तौ भगवान रै हाथ में हुवै। मिनख बापड़ै रौ कांई इख्तियार? ऊमर तौ भगवान री घाल्योड़ी हुवै, नींतर सूरजड़ी नै देखौ क्यूं नीं, परणी नै डेढ महीनौ ई कोनी हुयौ, नै नसीब फूटग्या। मां–बाप जोध–जवान हीरौ हुवै जैड़ौ वर जोयौ; जाणै राजकंवर! पण भाग में नीं लिख्योड़ौ हुवै जद कांई हुवै अर आ पुसबाड़ी, मिनख बूढौ–बूढौ कैवता पण आंगणै दो–दो रतन रमै। चींधड़ हुवै जिसी ही पण राज करै!

डोकरी हरनाथ रै घर रै नेड़ी पूगी। आसरै सूं जंवाई नै नेड़ौ जाण घूंघटौ काढ्यौ। ओरणै री च्यार आंगळ पट्टी आंख्यां रै माथै टिरगी। फाट्योड़ी माथावटी सूं चिट्टा बांध्योड़ा धोळा केस ऊघड़ग्या।

पुसबा सासरै सारू बहीर हुवै ही। अेकण पसवाड़ै पावणा ऊभा। पचास बारै ऊमर पण शौकीनाई में अव्वल! परमसुख धोतियौ, टेरेलिन रौ झब्बौ। सोनै रा बटण लाग्योड़ा। काची मीमरी थकी आंख्यां माथै काळौ चश्मौ। हाथ में राजवियां वाळै दांई काम कियोड़ी चन्नण री छड़ी। आपौ–आपरा नसीब! डोकरी आपरै साद नै थोड़ौ ताबै कर होळै–सीक कैयौ– ''बेटी, पुसबा बेटी!''

पुसबा आपरौ सामान बैळकी में रखवावती ही। उणनै डोकरी रौ हेलौ गिनारण री फुरसत ईज कठै? सगळा नग अेक–अेक कर'र सावचेती सूं गिणै। जे कोई सामान लारै रहग्यौ तौ इणां रौ सुभाव ईज बाळणजोगौ है। पैरण–ओढण में, खावण–पीवण में कितरौ ई खूटौ, मूंडै मांय सूं हरफ ई कोनी काढै, पण नुकसाण अेक रत्ती रौ ई दाय कोनी आवै। अेक–अेक सामान घोख–घोखनै याद करै।

डोकरी थोड़ी ऊतावळी थकी बोली– ''पुसबाड़ी! हां अे बाला, सुणै ई कोनी अे!''

पुसबा रौ च्यार बरस रौ छोरौ डोकरी नै `देख'र चमक'र रोवण लाग्यौ। छोरै नै रोतां देख'र पुसबा डोकरी रै सांम्हौ जोयौ। मन में विचार्‌यौ– डोकरी कीं रिपिया–पईसा मांगण नै आई हुसी। घर–धणी घणा दो'रा कमावै। रिपिया किसा रस्ता में पड़्या लाधै है, बाई! सुर में थोड़ी खीज भर'र कैयौ– ''कांई कैवै है, धा!''

समधा चिटियै रै सहारै ऊभौ हुय'र हाथ हिलाय ओळभौ देती थकी बोली– ''हां अे बाला, थूं तौ माथै हाथ फेरावण नै ई कोनी आई अे! सासरै जाती नै मिजाज आयौ बाई थनै तौ।'' कैवतां–कैवतां सुर गळगळौ हुयग्यौ। आंख्यां रा कोयां में कोड सूं आलास छायग्यौ। पोपलै मूंढै सूं हंसती–हंसती घणै कोड सूं लायोड़ौ बटकौ सांम्हौ कियौ।

पुसबा देख्यौ, लाल तापेटै रौ बैंत भर्‌यौ बटकौ। औ अैड़ौ हळकौ कपड़ौ फेर कुण पैरैली? आज रै सुख में लारला दुख रा दिन किणनै याद रैवै? डोकरी रै कोड नै धन बावळी पुसबा कोनी परख सकी। उणरौ दोस ई कांई, पीसावाळां री दीठ में हर अेक बसत रौ मोल पीसां सूं आंकीजै। पुसबा री दीठ में बैंत कपड़ै री कीमत आठ आनां सूं बेसी अेक पीसौ ई कोनी ही अर माथै मण भर्‌यौ पहाड़– हरनाथा! थारी छोरी नै आवै जितरी ई बार कांचळी देयनै भेजूं!

रूखै सुर सूं कैयौ– ''हमैं इणनै लायनै क्यूं तकलीफ देखी धा! म्हारै अठै औ तापेटौ कुण पैरैलौ?''

डोकरी रै कानां में जाणै उकळतौ तेल पड़्यौ! भावना रै गिगनां सूं हेठी ठोकीज बा चितबंगी हुवै ज्यूं हुयगी। उणनै अैसास हुयौ, वा गरीब है, उणनै सावजोग कपड़ौ कोनी जुड़ै। पुसबा जैड़ी अमीर घर री बहू नै बैंत कांचळी देवण रौ उणनै कोई हक कोनी!

समधा रा पग चिपग्या। पाखाण–पूतळी हुवै ज्यूं वा बठै ईज ऊभी रही, ईश्वर रै मांड्योड़ै व्यंग्य चितराम ज्यूं!

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

गाडरां=भेड़ां, लरड़ियां। बांकौ=टेढौ। ठा=ध्यान, पतौ। वळी=मुड़ी। धिया=बेटी। भूंडौ=खराब। लाण=बेचारी। फूटरी=सुन्दर। आगोतर=पूर्व जन्म। अपछरा=अप्सरा। तावड़ौ=धूप। बहीर=रवाना। मिजाज=घमण्ड। धनबावळी=धन में गैली। हक=अधिकार। पूत=बेटौ। नेड़ौ=कनै, नजीक। नसीब=भाग। लक्खण=गुण। सगळां=सैंग। निसरड़ौ=जकै माथै असर नीं हुवै। पायली=धान मापण रौ बरतन। खाड़का=जूनी पगरखी। तापेटौ=टूल रौ हळकौ कपड़ौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. समधा अर नरबदा आपस में ही–
   (अ) जेठाणी–देराणी (ब) नणद–भाभी
   (स) सासू–बहू (द) भुआ–भतीजी
   ( )
2. नरबदा री मौत रै बखत पुसबा ही–
   (अ) पांचेक बरसां री (ब) तीनेक बरसां री
   (स) दसेक बरसां री (द) सातेक बरसां री
   ( )
3. हरनाथ पुसबा रौ सासरै में कांई देखनै ब्याव कर्‌यौ–
   (अ) चौखो घराणौ (ब) सासरै मांय धन
   (स) नेड़ौ सासरौ (द) जोड़ी रौ वर
   ( )
4. डोकरी नै देख'र पुसबा रै मन में कांई विचार आयौ–
   अ) मिळण आई होसी (ब) रिपिया–पईसा मांगण आई होसी
   (स) ओळबौ देवण आई होसी (द) सीख देवण आई होसी
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. समधा किणरै थान जाय'र धोक दीवी?
2. पायली जंवार देय'र डोकरी कांई लाई?
3. डोकरी नै देख'र कुण रोवण लागौ?
4. समधा किणरै माथै हाथ फेरण नै गयी?
5. कांचळी रै कपड़ै नै तापेटौ कुण कैयौ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. पाठ रै आधार माथै समधा रौ चितराम आपरै सबदां मांय प्रकट करौ।
2. नरबदा रौ चरित्र–चित्रण करौ।
3. पुसबा रै घरधणी रै पेरवास रौ बखाण करौ।
4. 'समधा रा पग चिपग्या' इण कथन रौ खुलासौ करौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''कहाणी 'कांचळी' सामाजिक संबंधां नैं उघाड़नै राख दिया है।'' इण कथन री समीक्षा करौ।
2. कहाणी रा कला अर भाव पख री दीठ सूं इण कहाणी री विवेचना करौ।
3. ''कहाणी 'कांचळी'' बूढा–बडेरां रै पेटै घटतै सम्मान नै उजागर करै।'' इण कथन सारू आपरी सहमति–असहमति नै उजागर करौ।
4. 'कांचळी' कहाणी मांय कहाणीकार आपरै उद्देस्य में कठै तांई सफळ रैयौ है। खुलासौ करौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) पायली जुंवार देय'र डोकरी समधा बैंत तापेटै रौ टूकड़ौ लाई। कांई करां बाई? बाणियै रौ बेटौ लेतां ई खाय नै देतां ई खाय। नींतर पायली धान रौ रोकड़ौ रिपियौ हुवै अर आगलै जमानै में रिपियै रौ तौ घाघरौ आवतौ–पूरौ अस्सी कळी रौ। पण–इण जमानै रौ कांई करणौ रियौ?

(ब) डोकरी रै कानां में जाणै उकळतौ तेल पड़ियौ। भावना रै गिगना सूं हेठी ठोकी'ज वा चितबंगी हुवै ज्यूं होयगी। उणनै अहसास होयौ कै वा गरीब है उणनै सावजोग कपड़ौ को जुड़ै नीं। पुसबा जैड़ी अमीर घर री बहू नै बैंत कांचळी देवण रौ उणनै कोई हक कोनी।

कहाणी
थे बारै जावौ

करणीदान बारहठ

कहाणीकार—परिचै

करणीदान बारहठ रौ जनम सन् 1925 में फेफाणा (श्रीगंगानगर) में होयौ। श्री बारहठ रौ राजस्थानी कहाणीकारां मांय अेक लूंठौ नांव। कहाणियां साथै उपन्यास, नाटक अर कवितावां री रचना भी करी। अध्यापन रै साथै—साथै साहित्य—सिरजण री साधना करी। आपरी गिणावण जोग कृतियां है— मंत्री री बेटी (उपन्यास), राणी सती, शकुन्तला (नाटक), झरझर कंथा (काव्य), आदमी रौ सींग, माटी री महक (कहाणी—संग्रै), दायजौ, झिंडियौ (बाल—साहित्य) है। इणरै अलावा हिन्दी मांय कुहरा और किरणें, प्रेमलता, चाय के धब्बे, कलाई का धागा, खुरदरा आदमी इत्याद आपरा चर्चित उपन्यास रैया। बारहठ जी नै वांरै कहाणी—संग्रै 'माटी री महक' सारू साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रौ राजस्थानी पुरस्कार मिळ्यौ।

पाठ—परिचै

'थे बारै जावौ' करणीदान बारहठ री घणी सांतरी अर यथार्थवादी कहाणी है। इण में हर घर रै मोट्यार सूं बूढै होवतै आदमी री जीवण—दसा रौ लेखौ—जोखौ है। माईत कितरै हरख—कोड सूं बेटै नै परणावै अर नूंवी बीनणी घर मांय लावै। सासू—सुसरा कितरा राजी होवै। वा ईज बीनणी जद टाबरां री मां बणै तो उणरै पैरण—ओढण रै परिवेस में तौ बदळाव आवै ई, व्यवहार में ई काठी बदळ जावै। अर अठीनै सासू—सुसरा रै बुढापौ आवै जद वांनै खुद रै बणायोड़ै घर में ई उणां नै ठौड़ नीं मिळै। रात नै ब्याळू बिना भूखौ सोवणौ पड़ै। 'थे बारै जावौ' संसार री हकीकत नै चौड़ै—धाड़ै करती पाठक रै मन माथै सांतरौ प्रभाव छोडै।

थे बारै जावौ

म्हारै घरै जिकै दिन बीनणी आई वौ दिन म्हांनै आज भी याद है। उण दिन नै स्यात बीस साल रै नेड़ै—तेड़ै हुयग्या। म्हारी घरवाळी पदमा नै तौ इत्तौ कोड चढ्यौ कै वा तौ पूरै घर में ई कोनी नावड़ै ही— ''छोरयां, जावौ अे, लुगायां नै बुलावौ। बारात आयगी। बीनणी आयगी। अे छोरी, तूं जा! थाळी ल्या... रोळी—मोळी ल्या... बीनणी नै बधावां।'' लुगायां आयगी। थाळी आयगी। रोळी—मोळी आयगी। लुगायां गीत उगेरयौ— म्हारै आंगणै बाजा बाज्या...। गीत गाईज्या। नेगचार हुया। फेर बीनणी घर में बड़ी।

बीनणी जद म्हारै घर रै आंगणै में काम करती, बीं रा छैलकड़ियां रा घूघरिया छमछम बाजता जणा म्हारौ जी—सोरौ हुवतौ। म्हैं उण छमछम नै सुणतौ। वा छमछम कानां रै जरियै म्हारै काळजै तांई पूगती जणां भगवान रै मिंदर री मधरी—मधरी घंट्यां बाजै अैड़ी लागती।

म्हैं आंगणै में बैठ्यौ रैवतौ। बठैई चाय पीवतौ। बठैई रोटी मांग लेवतौ। बठैई गपशप

करतौ रैवतौ। म्हारी घरवाळी कैरी–कैरी आंख्यां सूं म्हारै कांनी देखती। स्यात म्हैं उणनै सुहावतौ कोनी। पैली तौ वा टोकती संकती, पण छेवट उणनै कैवणौ ई पड़्यौ– ''थे बारै जावौ, अठै बीनणी फिरै। थांरै थकां इणनै घूंघटौ काढणौ पड़ै। कदै ठोकर खायां पड़ जावै, टाबर तौ है ई। थे बूढा सारा अठै करौ कांई हौ?

जिकै दिन म्हनै लखायौ कै म्हैं बूढौ हुयग्यौ। म्हारौ हक आंगणै सूं उठग्यौ। घर आदमी रौ कोनी, लुगाई रौ हुवै। उण दिन सूं म्हैं बारलै कमरै में गयौ परौ। बारली बारी खोलली। गळी में आवतै–जावतै नै देखण लागग्यौ।

टैम टिपतां जेज कोनी लागै। म्हारी घरवाळी जिकै दिन म्हनै बूढौ बतायौ, म्हैं बूढौ कोनी हौ। म्हारै डील में जवानी वाळी सागी कड़क ही। म्हैं सावळ घूमतौ–फिरतौ, खेत में काम करतौ। बुढापौ तौ इत्तौ ई हौ कै म्हारौ छोरौ परणीजग्यौ।

दिन आयां बीनणी रै टाबर हुयग्या। जद उण आपरै छैलकड़ियां नै संभाळ'र बक्सै में मेल दिया। नूंवा गाभा पैरणा छोड दिया, बोदां में ई टोपा टिपाण लागगी। औ तौ जिंदगी में टैम आवै ई है। अबै पैरै भी कियां, वा कदैई टाबर संभाळती, कदैई घर रौ काम। उणनै काम सूं ई ओसाण कोनी मिळतौ। धीमै बोलण वाळौ बहम ई उण छोड दियौ। पोसावै ई कियां, टाबर जक कोनी लेवण दै। वै लड़ै तौ डांट लगावणी पड़ै। वा होळै बोलणै सूं पार पड़ै कोनी। घूंघटौ भी अबै नेम तोड़ण लागग्यौ। कदै राखती तौ कदै मूंडौ उघाड़ौ हुय जावतौ। मूंडै पर जिकी भोर में खिलतै फूलां री लावणी ही बा कीं तौ टाबर चूंघग्या, कीं बगत बुहार परौ लेयग्यौ। पण जिकौ मोटौ फरक आयौ वौ औ कै उण इण घर नै आपरी मुट्ठी में लेय लियौ। टैम री सूई वा घुमावै बठीनै ई घूमै। म्हारली बूढली कदैई उणनै हुकम देवती, पण अबै वा हुकम सारू उणरै मूंडै कानी ताकती– ''बीनणी, म्हारै पीहर वाळां रौ कागद आयौ है। तूं कैवै तौ जावूं, नींतर टाळ करूं, है तौ ब्याव।''

जद बीनणी आपरै अफसरी लहजै में कैंवती– ''थांरौ जावणौ जरूरी है तौ जावौ। थांरै सागी भाई रौ तौ ब्याव कोनी। क्यूं भाड़ौ लगावौ। थांरै गयां अै टाबर म्हारी जान नै रोवैला। सगळा थांरै हाड हिळ रैया है। कुण राखैला आंनै?''

म्हारी घरवाळी बीनणी रौ आदेस न मिलणै पर टाळ कर देवती, पण खुद नै जावणौ हुवतौ जणां वा आपरी सासू रौ आदेस कोनी चावती। फकत सूचना देय देवती– ''म्हैं म्हारै पीहरै जावूं। आप डांगरां नै नीर दीज्यौ। गावड़ी दूध देवै है, दूध काढ लीज्यौ। बिलोवणौ हुवै तौ बिलोय लीज्यो, नीं टाळ कर दीज्यौ। अर आपरै टाबरां सागै बहीर हुय जावती।

टाबर जणै इण धरती पर उतरै, बेल बधै। उण रा टाबर ई बडा हुवणा ई हा। अर म्हैं जाणै अबै बुढापै कांनी बेगौ–बेगौ भाग रैयौ हौ, इयां लागै हौ।

दिनूगै उठूं। पाणी म्हारै सिराणै रैवै, पी लेवूं। आ म्हारी सदां री आदत है। कदैई होकौ भर लेवूं तौ कदैई बीड़ी सिळगा लेवूं। बीड़ी–होकौ पीवतां धांसी आवै, जिकी आवै ई। सागै बलगम आवै। हिम्मत कोनी रैयी कै उठ'र बारै थूंकूं। बठैई थूक देवूं। म्हनै म्हारै सूं ई घिरणा हुवण लागगी। बीनणी अर टाबरां नै तौ हुवणी'ज ही। अेक दिन बीनणी म्हांनै बोलती सुणीजी– ''अबै बापसा, इण कमरै में रैवण जोगा कोनी रैया। आंरौ मांचौ बारली चूंतरी पर घाल दिया करौ, बठैई थूकता रैसी। कमरै रौ सत्यानास हुय रैयौ है। औ

कोई ढंग है!'' तौ कमरौ तौ म्हारौ बणायोड़ौ हौ, पण धणी और हुयग्या। पण उणरी बात साची ही। म्हारौ बणायोड़ौ कमरौ म्हारै हाथां नास हुवै हौ। अबै म्हारी घरवाळी रौ ई सत कोनी रैयौ। उण रा ई गोडा दूखण लागग्या। वा लाठी रै सहारै चालण लागगी। लोग कैंवता– ''इण बुढापै रौ कोई धणी–धोरी कोनी। इणरौ कीं नीं बटै। लोग इणनै मोल कांई, उधार ई कोनी लेवै। वौ बुढापौ म्हारै सिराणै–पगाणै आय'र ऊभौ हुयग्यौ।

पैली तौ म्हारै पैलै हेलै रौ असर हुवतौ। अबै पांच हेला ई अकारथ जावै। छोरा मूंडौ मंचकोड'र भाग जावै। बीनणी बांनै ललकारै जद कीं सुणै।

म्हैं रोज बारली चूंतरी पर सोवूं। बठैई छोरा म्हनै होकौ भर'र ला देवै। बठै ई पाणी पकड़ा देवै अर बठैई रोटी।

घरवाळा पैली म्हनै पूछ'र सब्जी बणाया करता, फेर वां वौ बैम ई छोड दियौ। पैली म्हैं ई रोटी में काण–कसर काढ दिया करतौ; म्हैं ई वौ बैम छोड दियौ। जैड़ी भी लूखी–सूखी आवती, खा लिया करतौ। काया नै भाड़ौ देवणौ हौ, दे दिया करतौ। ऊपर पाणी पी लिया करतौ। जवानी री बात और ही, बुढापै री बात और। बुढापै री खुराक ई बदळ जावै। दिनूगै कोई री सब्जी सूं रंजै कोनी। कीं छाछ–राबड़ी हुवै तौ पेट भस्योड़ौ लागै। काया तिरपत हुवै तौ हुवै, नीं हुवै तौ नीं हुवै। पाणी पी'र जी नै टिका लेवै। और जोर ई कांई चालै? बुढापौ सोचै– टैम टिप जावै तौ सही है। रात नै कीं दूध–खीचड़ी मिळ जावै, धान हळकौ हुवै तौ ठीक रैवै। नींद सावळ आवै। नीं तौ कदैई ऊदस उठै, कदैई जी दो'रौ हुवै, कदैई सांस उठै, कदैई नींद नीं आवै, पण टैम तौ टिपाणौ है, टिपावै। उपाव ई कांई?

अेक रात पतौ नीं कांई बात हुई कै रोटी आई'ज कोनी। म्हैं हेला ई मास्या, पण सुण्या कोनी। राम जाणै कांई हुयौ कै सगळै ई सून्याड़ हुयगी, जाणै च्यारूं कांनी सोपौ हुयग्यौ। पैली तौ भूख हेला मास्या, पण वा ई जपगी। म्हनै नींद रौ अेक गुटकौ आयग्यौ। भूख ई नींद मांगै, पण मांगै कद तांई? म्हैं जाग्यौ जणा भूख सागै जागगी। म्हैं दुखी हुयौ, मन में पछतावौ आयौ। सोचण लाग्यौ कै इण सूं तौ मौत आछी है। म्हैं रोटी सूं ई मूंघौ हुयग्यौ!

म्हैं हिम्मत कर परौ उठ्यौ। घर च्यारूं कांनी बंद हुय राख्यौ हौ। स्यात सगळां रै ऊपराकर नींद फिरगी। आसै–पासै कुतिया जागता रैवता, वै ई सोयग्या। म्हैं फेरूं मांची पर आय'र आडौ हुयग्यौ। आज कांई होयौ? घरवाळा म्हारी रोटी ई भूलग्या। म्हारी बूढली कठैई पड़ी हुवैली भेळी हुयोड़ी। उणनै सुणीजै नीं, सूझै नीं। उणरौ आपरौ बोझ ई कोनी संभै, म्हारली कुण सुणै? मन में विचार कस्यौ– छोरा भूलग्या दीसै। पण छोरा गया कठै? स्यात रामलीला घलै है गांव में, बठै गया दीसै। म्हैं आडौ होवूं। फेरूं बैठ जावूं। भूख नै नींद कठै? म्हैं फेरूं अेक गुटकौ पाणी पीयौ। फेरूं अेक बीड़ी सिळगाई।

इतै में दूर टाबर बोलता सुणीज्या। स्यात रामलीला खिंडगी। छोरा आवता हुवैला। बात साची निकळी। छोरा नैड़ा आयग्या। म्हैं हेलौ मास्यौ– ''अरे कुण है? घोटियौ है कांई?''

''हां दादा।''

साचाणी घोटियौ हौ।

''अरे घोटिया, म्हैं तौ भूखौ ई हूं।''

''अरे दादा, म्हैं तौ भूल ई गियौ।''

''वाह भाई, वाह!''

घोटियौ अर पूरणियौ मांयनै गया अर मां नै जगाई।

''मां, ओ मां! आज दादौ भूखौ ई है।''

''अरे मर मरज्याणा, म्हनै तूं काची नींद सूं जगा दी। तेरौ हिंयौ फूटेड़ौ हौ?''

वा बरड़ायां जावै ही। कैयां जावै ही। हुकम दियां जावै ही। बा फेरूं बोली– ''अरे बीं हांडी में देख। कीं खुरचण पड़ी हुवैला, घाल दै। दूध रौ अेक पळियौ घालदै। गिट लेसी।''

म्हनै वा बरड़ावती सुणीजै ही। बोलती सुणीजै ही। हुकम देवती सुणीजै ही।

रात ठंडी ही, पण काया गरम ही, बोल गरम हा। म्हैं ना बोल सकै हौ, ना चाल सकै हौ, ना कीं कर सकै हौ।

छेवट उण अेक बात कही जिकी रा बोल काळजै गडग्या। बा बोली– ''गांव रा सगळा बूढिया–बूढली मरग्या। आपां वाळां बूढियां नै मौत ई कोनी आवै। पतौ नीं, अै गळै रा हाड कद निकळसी?''

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

छेवट=आखिर। छैलकड़ियां=पाजेब, पायल। धणी=स्वामी, मालिक। उदस उठणौ=गळै में बळत लागणी। टिपतां=निकळतां। चूंतरी=चबूतरी, चौकी। बरड़ावणौ=चिरळावणौ। गिटणौ=माडांणी खावणौ। औसाण=अवसर, फुरसत। लावणी=फूठरापौ, सुंदरता। सिराणौ=सिरांथियै। पगाणै=पगां कांनी, पगांथियै। सुन्याड़=सुनसान। खिंडणौ=बिखरणौ, खतम होवणौ। काळजौ=हियौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''थे बारै जावौ'' औ कुण कैयौ?
   (अ) बीनणी (ब) बेटौ
   (स) छोरयां (द) घरवाळी
   ( )
2. ''म्हैं हेलौ मारयौ– अरे कुण है?'' अठै हेलै रौ संकेत किण सारू है?
   (अ) घरवाळी (ब) बीनणी
   (स) पोतौ घोटियौ (द) बेटौ ( )
3. फगत सूचना देय देवती– म्हैं म्हारै पीहरै जावूं। आप औ काम कर दीजौ। किसौ काम?
   (अ) आप डांगरां नै नीर दीज्यौ। (ब) खाणौ बणा लीज्यौ।
   (स) घरां फूस काढ लीज्यौ। (द) थेपड़ी थाप लीज्यौ।
   ( )
4. 'थे बारै जावौ' कहाणी रौ कहाणीकार कुण है?
   अ) विजयदान देथा (ब) मीठेस निर्मोही
   (स) करणीदान बारहठ (द) मालचन्द तिवाड़ी
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''बीनणी आई वौ दिन म्हांनै आज भी याद है।'' वीं दिन नै कित्ता साल होयग्या?
2. अबै बापसा, आप अठै रैवण जोगा कोनी रह्या।'' कुण किणनै कैवै?
3. घोटियौ रात नै कांई देखण नै गयोड़ौ हौ।
4. ''म्हैं दुखी हुयौ, मन में पछतावौ आयौ।'' अै विचार किणरै मन में आया?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. आप इण कहाणी रौ नायक किणनै मानौ अर क्यूं?
2. 'थे बारै जावौ' कहाणी रौ कांई संदेस है?
3. ''पतौ नीं अै गळै रा हाड कद निकळसी?'' अै सबद कुण किण सारू कैया?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. इण कहाणी रौ कांई संदेस है? खुलासैवार लिखौ।
2. 'थे बारै जावौ' कहाणी मांय कथ्य, संवेदना अर सिल्प रौ अनूठौ मेळ है।'' दाखला देय'र समझावौ।
3. ''आ कहाणी बूढापै री पीड़ नै सांगोपांग ढंग सूं उजागर करै।'' कथन रौ दाखला देय'र खुलासौ करौ।
4. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) टैम टिपतां जेज कोनी लागै। म्हारी घरवाळी जिकै दिन म्हनै बूढौ बतायौ, म्हैं बूढौ कोनी हौ। म्हारै डील में जवानी वाळी सागी कड़क ही। म्हैं सावळ घूमतौ–फिरतौ, खेत में काम करतौ। बुढापौ तौ इत्तौ ई हौ कै म्हारौ छोरौ परणीजग्यौ।

(ब) म्हैं हिम्मत कर परौ उठ्यौ। घर च्यारूं कांनी बंद हुय राख्यौ हौ। स्यात सगळां रै ऊपराकर नींद फिरगी। आसै–पासै कुतिया जागता रैवता, वै ई सोयग्या। म्हैं फेरूं मांची पर आय'र आडौ हुयग्यौ। आज कांई होयौ? घरवाळा म्हारी रोटी ई भूलग्या।

निबन्ध
चाटू

सौभाग्यसिंह शेखावत

निबन्धकार–परिचै

सौभाग्यसिंह शेखावत रौ जनम भगतपुरा (सीकर) में 22 जुलाई, 1924 में होयौ। आप राजस्थानी साहित्य–जगत में प्राचीन साहित्य रा सोधवेता रै रूप में आपरी अलायदी ओळखाण राखै। आप राजस्थानी शोध–संस्थान, चौपासनी (जोधपुर) मांय नौकरी करता थकां केई प्राचीन पांडुलिपियां रौ संपादन करियौ। आप राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रा दो बार अध्यक्ष रैया अर राज्य सरकार कांनी सूं गठित राजस्थानी भाषा उन्नयन समिति रा ई अध्यक्ष रैया।

आपरी छपियोड़ी पोथियां है– राजस्थानी निबन्ध संग्रह, राजस्थानी साहित्य सम्पदा, पूजां पांव कवीसरां, जीण माता, ईसरदास नामक विभिन्न चारण कवि, राजस्थानी साहित्य–संस्कृति और इतिहास। आप 'जाडा मेहड़ू ग्रन्थावली', 'डूंगरसी रतनू ग्रन्थावली' (भाग : 1 व 2), 'राजस्थानी वीर गीत संग्रह' (भाग 1 सूं 4), 'राजस्थानी बातां' (भाग 3,4,5 अर 7), 'विन्है रासौ', 'बलवद विलास', 'शेखावाटी के वीर गीत', 'ऐतिहासिक रुक्के–परवाने' आद केई महताऊ ग्रन्थां रौ सम्पादन करियौ। आपरौ काव्य–संग्रै 'रणरोळ' ई चरचा में रैयौ।

पाठ–परिचै

संकलित निबन्ध 'चाटू' जथारथवादी है। लोंकी रा लख मारग ज्यूं चाटू हर जुग, हर वातावरण अर हर परिस्थिति में रैवै। उणरी माया नै कोई नीं समझ सकै। चाटू रै आगै मोटा–मोटा गजमान गजपतियां रै सीयौ चढ जावै। चाटू रै पांण राजनीत, समाजनीत, साहित्यनीत सैंग नीतियां पुळै। सो चाटू सूं डरणै में ईज खेम–कुसळ है। आंख उघाड़ नै चाटू री आरती उतारौ, इणी में है सगळां रौ निस्तारौ। सबद–चयन घणौ उम्दा अर भासा घणी सांतरी अर रळयावणी है।

चाटू

घणा लोग चाटू नै कोरौ लाकड़ी रौ टुचकलौ, रूंख रौ छांग्यौ–छाल्यौ ठूंठियौ, खाती रा रंदा सूं रांद काटियोड़ौ रसोवड़ा रौ राछ, तरकारी–तींवण रौ रमतियौ, हांडी रौ हम्मीर, चूल्हा रौ चांद नै बांठ–बोझा, खेजड़ी, कैर रौ जलम्यौ–जायौ ईज मानै उण रा आपांण ऊरमां नै नीं ओळखै, जद ही चाटू रा चमत्कारां सूं अणजांण घणा अक्कल रा उजीर, बुध रा वेदव्यास, ग्यान रा गणेश, गोबर–गणेश बणिया थकां आपरी आवड़दा पूरी कर नांखै, रोही रा त्रिसा म्रिगला ज्यूं पद–पांणी रा खोज काढता भंभाभोळी खावता फिरै। फेर भी उणां अेक हिरणियांरी हक त्रिखा नीं बुझै। उणां री हकां रा बादळा बणै नै थोथा ललूससा मिट जावै। सियाळा रा सीकोट री भांत प्रभात रा वणै नै दोपैर रा गळ जावै, काचा–कळवा

ज्यूं छाऊं–म्याऊं व्है जावै। भोळा मिनख कांई जाणै चाटू कांई है। चाटू किण भांत संसार रा आखा सुख मांणै। बिना चून लूण री रोटी पोवै नै सुख सूं खूंटी तांण सोवै। चाटू रै धकै ठग री ठगाई, बाजीगर री हाथ सफाई, झगड़ायतां में संप करावणियां री रखाई री विद्या नै अड़कसी री आजार मिटाई, मेळ मिळाई सगळी बातां पाणी भरै। चाटू जीभ री लड़ाई री कमाई खावै। उण री जीभ री करामात आगै मोटा–मोटा माणसां री सकळाई री बाजती झालरां ठम जावै। किस्तूरी री सौरम नै हींग उडा नांखै; कपूर री सुवास लसण रै सांम्है न्हास जावै, उणी रीत चाटू रै आगै सगळां री अकल रा पैड़ा जाम व्है जावै।

सीधा स्याणां मिनख आ जाणै कै चाटू खाली माटी री हांडी रौ मांटी ईज हुवै, रंधीण रौ राईवर ईज हुवै, भाजी–भुगती रौ भरतार ईज हुवै, खीचड़ी रौ खावद ई हुवै, राबड़ी रौ रसियौ ईज हुवै, पण इत्ती'ज वात नीं है। चाटू रसोवड़ा रौ मोटौ ताजदार ताजीमी उमराव हुवै। उणरै आगै देस–दीवाण ऊभा दांत तिड़कावै, पंच हजारी पग पंपोळै। चाटू री ओळग चाकरी में, टैल–बंदगी में ठाडा–ठाडा ठाकर ऊभा थड़ी करै। चाटू री चाकरी में बिना धेल–टक्कै घणा सबळा–निबळा लखटकिया, मैफलिया, बातां रा बालम, खटपटिया खुमाण, फंफोड़, मूंढां रा मांटी, मटैड़ा रै चाक रै थापा रै अणगार रा आदमी अठपौर ऊभा रैवै।

चाटू नीं चाकी चलावै, नीं खेत कमावण जावै, नीं माटी भरी काठड़ी उठावै, नीं पाळौ पग उठावै, नीं लूखौ खावै। आखै दिन काम रै नांव सूं फळी ईज नीं फोड़ै। बस बातां रा बिणज बिणजै नै लाखां रा वारा–न्यारा करै। मोटा मिनखां री थळी पर जा मुजरौ करै। साच नै कूड़, कूड़ नै साच कैयनै उणां रा मन भरमावै। बस, फेर छत्तीस बिजनां रा भोग भोगै, नचीत मल्हार गावै। पण आ करामात कांई कम हुवै। इण रा बळ सूं तौ लूंठा–लूंठां रौ धूंवौ काढ नांखै। उणां नै चाटू नीं घर रा छोडै, नीं घाट रा। जिण बखत चाटू चढनै चाकरी पर चालै, उण बखत धरा धूजै, मेघ घड़ूकै, देवराज रौ सिंघासण डुलै। कुण जाणै चाटू किण समै कांई कुबध कर नांखै। कांई बात किण बखत पैरासूट कर दै! किण भोळा भूतनाथ रा चित्त नै चकरी चढा देवै!

चाटू परवार रौ धणी हुवै। चाटू रौ जुवराज चामचौ, रायकंवरी चमची, परधान पलटौ, कोटवाळ कुड़छौ, फौजदार झरौ, प्रांतपाळ टीपरियौ, तन–दीवांण मिरियौ, पौसाकी पळौ, खवास खुरचणौ नै तोबची ताकळौ हुवै। चाटू चालै जद अै सारा रांण–खुमांण उणनै विदा करै। अै सारा अेक खांदा री माटी रा बासण हुवै अर समै पड़ै चाटू री बात नै हेठै नीं पड़बा देवे, ऊपर री ऊपर झेल लेवै। अै पांणी पैली पाळ बांधै। उळझी–सुळझी नै सांधै। चाटू जद आपरा लवाजमा रै साथै चाकरी माथै बहीर हुवै, जणां जाणै पांख आयोड़ी कीड़ी ज्यूं उडतौ लखावै। गुरड़ री गति, भूत री माया नै बादळ री छाया ज्यूं छिण–पलक में झबकौ नांखनै अलोप व्है जावै।

चमचौ तौ चाटू सूं भी दोय पग आघा काढै। टणका–टणका भारीखम बुध रा भाखर गिणीजणियां नै हांडी री खुरचण ज्यूं खुरच नै ठौड़–ठाणै लगा देवै। चमचौ राजपुरखां रै असवाड़ै–पसवाड़ै इयां बुवै, जियां दीवटियां रै साथै–साथै अंधारौ चालै। चमचा रै मूंडै में जीभ इण रीत पळेटा मारै जाणै हळाबोळ रै कड़ाव में पलटौ पळेटा खावै, हरी दूब कांनी हिरणी माल्है, भाखर री ढळांत कांनी बरसाळा रौ बाहळौ चालै, कराड़ां चढी नदी रौ नीर चालै, डूंगरां रा खाळां धकै धूड़ चालै, अैड़ी चाटू री असवारी चालै।

लोग कैवै कै चाटू रौ कोई मिनख जमारा

में जमारौ है! चाटू री पूठ पाछै सगळा उण री चह्चै–पह्चै करै, पण मूंडागै सैंग उण सूं डरै। इण में डर–भय री कांई बात है। ऊंदरा रौ जायौ तौ बिल ईज खोदसी। पछै चाटू आपरी चाटूगिरी सूं टाबर–टींगरां नै 'सैंटपाल' में भणावै तौ किणी रौ हकनाक पेट क्यूं दूखै। आप आपरी करामात नै आप–आपरा कार है। चाटू रौ धंधौ चाटूगिरी। चमचा रौ काम चमचागिरी। पण, चमचागिरी सूं ईज चमचम मिल जावै तौ सगळा चमचा नीं बण जावै! चोंच तौ कबूतर ई चलावै, पण आवभगत कोयल री वाणी री ईज हुवै। कोरी जीभां री लपालोळ सूं ईज पार नीं पड़ै। चाटू री भणाई बी.अेड. अेम.अेड. नै आई.सी.अेस. सूं भी मुंहगी पड़ै है। चमचां री पोसाळ न्यारी ईज हुवै। चमचा री मुहारणी नै घोखियां ईज काम नीं सधै। खाली बारहखड़ी रा बारह कक्का नै लोहड़ौ कु, वडौ कू रटबा सूं ईज कारज सिध नीं हुवै। रटायोड़ौ सूवटौ गोविंद, गोपाल नै नारायण तौ बोल लै, पण कांई वौ गोविंद नारायण रा चरित्रां नै तोल लै, गीता रा ग्यान री घुळगांठां खोल लै!

बोलबा में तौ पंखेरुवां में कागलौ ईज कक्का बोलै, मोल्यौ ईज किक्की कैवै, कूकड़ौ ईज कूं चवै, कोयल ईज कौक्कउ बोलै, तूती ईज तूंई तूंई भणै अनै घणा जानवर कुंई नै कुंई आखर धुन बोलै ईज है, पण इण सूं कांई? उणनै कदै लाख–पसाव मिळतौ दीठौ है? चाटू री भणाई री पोसाळ बीजी ईज हुवै। चाटू रौ 'कोर्स' न्यारो ईज हुवै। चाटू री 'डिग्री' चाटू नै ईज मिळै। चाटू री पढाई में विख री बीजगणित भणाईजै। संसार रौ सनेह रौ खोगाळ नै बिणास रा बीज चाटू री वचन विदग्धता हुवै। बासग नाग रौ फण, आग री झाळ ईज चाटू रौ सुभाव हुवै। बोलण में गूंदगिरी रा सांटा जैड़ौ मीठौ हुवै, पण करतूतां में पीळिया गोयरा नै ई परै बैठावै। अैड़ौ डंक मारै कै आगलौ पाणी ईज नीं मांगै। जमराज रा डंडिया सूं डंडिया गेहर रमणौ नै चाटू सूं अड़कसी करणौ बरोबर। चाटू सूं तौ डंडियौ मिळायौ राखै सो ईज भलौ। जिण री अकल उधारी लियोड़ी हुवै, वौ ईज चाटू री बात नै उथेळै। नींतर तौ उण काळ–जीभा सूं होठांजोड़ी कुण करै।

चाटू नै चाटू कैवणौ नै ऊजड़ बैवणौ बरोबर। अंवळी री संवळी नै संवळी री अंवळी करणी चाटू रै डांवळै हाथ रौ खेल गिणीजै। कोई चाटू री करणी माथै रीसां बळै तौ लाख बळौ, औ तौ चाटू रौ सुभाव है कै इण तरफ रा भाखर उण तरफ नै उण तरफ रा डूंगर इण तरफ धर देवणा।

चाटू री कोई बंधी–बंधाई पगार नीं हुवै। उणरी पैदा ऊपर–छाळा री हुवै। कणां महीनां री हजार ई पटक लेवै नै कणाई सौ–दोय सौ माथै ईज सरमोख लेवणी पड़ै। चाटू री चाकरी नै घणा लोग हिकारत री आंख सूं जोवै। पण इण जुग री जीवाजूंण में थणकढ दूध सारखौ साव निरमळ कुण है? चांद नै इमरत–बरसी कैवै है। इंदर नै धरापत कैवै है। संकर नै महादेव कैवै है, पण उणां नै कळंकी, रुळैट नै मसाणियौ भी तौ कैवै है। मूंडकी–मूंडकी री मत न्यारी हुवै। जितरा मूंडा, उतरी बात। लोग–बागां रा मूंढा रै छींकी थोड़ी ई जड़ीजै। पछै चाटू नै चमचौ चमचागिरी नीं करसी तौ कांई खेत में हळ हांकसी, ऊंट लादसी, कमठां माथै काठड़ी ढोसी, रेवाड़ री मींगण्यां सोरसी, भाखरी रा भाठा भांगसी! अैड़ा काम–धंधा करसी जणां इत्तौ भण–गुण नै कांई कियौ? कांई जुबान री जबा–जोड़ी, बात बणावणी काम नीं गिणीजै! अबोलां री मोती दाणां–सी जंवार पड़ी रैवै अर समै माथै बोलै उणां रा बूंभळा सरै बजार धोळै दिन छै पंसेरी री ठौड़ दो रिपियां किलो बिकै। पराया पेट में आपरै हित री बात उतार देवणौ, आंगळ्यां धरम करणौ कांई ल्होड़ी कळा गिणीजै। ससि कळा–सी सुपेत, संख–सी

धवळ, हिम–सी अमळ नै दूध–सी धोळी हार रै मणकां री भांत पोयोड़ी साव सही, मेह रा जळ री भांत कूड़ धूड़ सूं, आंधी–अरड़ां री खेह सूं अछूती बात नै लुहार रै आरण रा लियाळा बणावण री करामात लागै तौ रगत्या भैरूं तांई बकरां रा कान कुण काटै! कोरी जीभां री लपालोळ सूं ईज नाकौ नीं झळै। जीभ री करामात रै साथै चौसठ घड़ी पगां माथै थड़ी–सी करणी पड़ै।

चाटू रै डर सूं लूंठा–लूंठा धींग धजधारी इण भांत धूजै, जिण भांत थोड़ी–सीक पवन रै हिलोर सूं पीपळ रौ पत्तौ कांपै। चाटू रै आगै मोटा–मोटा गजगात गजपतियां नै सीयौ चढ जावै। चाटू री बात रौ असर तीजारा रा डोडिया, धतूरा रा रस, कपिल रा कोप नै रावण रा रढ सूं घणौ जादा हुवै। चाटू जिण रात जलमियौ, जिण पुळ घड़ीजियौ वा पुळ वाहुड़ नै पाछी नीं आई। चाटू रै पांण राजनीत, समाज नीत, साहित्य नीत सैंग नीतियां पुळै। जिकी जीभ गुलांचिया कबूतरां री भांत जठां–कठीनै लुळती रैवै, वौ ईज खरौ चाटू कहीजै। लोटण कबूतरां री रीत आपरा डील नै नीं मोड़ सकै, वौ साच रा लाख टाका कोथळी में घालियां फिरौ, उणनै पूछणै–बतळावणै खातर बोलणौ बखत किण कनै पड़ियौ है अर कुण लोभ री लाय में बळता आज रा इण दौड़ता–भागता जुग में दुहागण रा गुणवान डावड़ा नै बुचकारण रौ, हिमळास सूं बतळावण रौ साहस कर आपरौ नांव 'ब्लैक लिस्ट' में मंडावै।

चाटू रै भस्मी कड़ा सूं संकर खुद ईज डरतौ लुकतौ फिस्यौ, सो चाटू सूं डरणै मं ईज खेमकुसळ है। आंख ऊघाड़ नै चाटू री आरती उतारौ, इणी में है सगळां रौ निस्तारौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

तरकारी–तीवण=साग–सब्जी, लगावण। भंभाभोळी=चकरावणौ। ललूलसा=चापलूसी। सरमोख=संतोख। ऊपरछाळा=ऊपरा–ऊपरी। राछ=औजार। त्रिसां=तिरसौ। दोपैर–दोफारौ। आखा=सगळौ। संप=मेळ। ठम जावै=रुक जावै। सुवास=सुगंध, सौरम। माटी=चीकणी माटी। मांटी=धणी। पैड़ा=चक्का। भरतार=धणी। नचीत=चिंताविहूण, नचींतौ। वासण=ठांम। सांधौ=जोड़ै। पांख=पंख। पूठ पाछै=लारै, परपूठ। डांवळै=डावै। अंवळी=आंटी, आंकी=बांकी। संवळी=सीधी। धरापत=धरतीपति। चौसठ घड़ी=दिन रात। सीयो चढ़ जावै=सरदी लाग'र ताव आवणौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा

1 किस्तुरी री सौरभ नै भी उड़ाय नाखै–

(अ) हींग (ब) लसण

(स) कपूर (द) चंदन

( )

2. 'दीवटिया रै साथै–साथै अंधेरै ज्यूं' राज पुरखां रै साथै चालै–

(अ) परधान (ब) कोटवाळ

(स) फोजदार (द) चमचौ

( )

3. चाटू किण भांत रौ निबंध है–

(अ) काल्पनिक (ब) विचारात्मक

(स) भावनात्मक (द) ललित

( )

4. महादेव भस्मी कड़ौ किणनै राजी हुय'र दियौ–

(अ) भस्मासुर नै (ब) बाणासुर नै

(स) रावण नै (द) कंस नै

( )

साव छोटा पडूतर वाळा

1. भोळा मिनख किणरै बारै में कोनी जांणै?
2. मोटा मिनखा री थळी जाय मुजरौ कुण करै?
3. दीवटिया रै साथै–साथै कांई चालै?
3. कोयल री इज आव–भगत क्यूं होवै?
4. भस्मी रा कड़ा सूं डरतां कुण लुकतां फिस्यां?

छोटा पडूतर वाळा सवाल

1. चाटू चालै जद कुण मिल'र उठानै विदा करै?
2. 'पांणी पैळी पाळ बांधणौ' मुहावरै रौ अरथ लिख'र वाक्य में प्रयोग करौ।
3. 'जितरा मूंडा उतरी बात।' ओळी रै अरथ रौ खुलासौ करौ।
4. लेखक मुजब खरौ चाटू कुण कहीजै?

लेखरूप पडूतर वाळा सवाल

1. चाटू बाबत आम लोगां री कांई धारणा है? निबन्ध रै आधार माथै खुलासौ करौ।
2. लेखक चाटू रै सुभाव अर वचन मांय कांई फरक बतायौ है? बतावौ।
3. ''चाटू कर्म सूं नी वचन सूं जीवा–जूंण पूरी करै।'' आप इण कथन सूं कठै तांई सैमत हौ?
4. 'चाटू' निबन्ध री भासा–सैली री विसेसतावां नै दाखला देय'र उजागर करौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) चाटू नीं चाकी चलावै, नीं खेत कमावण जावै, नीं माटी भरी काठड़ी उठावै, नीं पाळौ पग उठावै, नीं लूखौ खावै। आखै दिन काम रै नांव सूं फळी ईज नीं फोड़ै। बस बातां रा बिणज बिणजै नै लाखां रा वारा–न्यारा करै। मोटा मिनखां री थळी पर जा मुजरौ करै। साच नै कूड़, कूड़ नै साच कैयनै उणां रा मन भरमावै। बस, फेर छत्तीस बिजनां रा भोग भोगै, नचीत मल्हार गावै।

(ब) चाटू नै चाटू कैवणौ नै ऊजड़ बैवणौ बरोबर। अंवळी री संवळी नै संवळी री अंवळी करणी चाटू रै डांवळै हाथ रौ खेल गिणीजै। कोई चाटू री करणी माथै रीसां बळै तौ लाख बळौ, औ तौ चाटू रौ सुभाव है कै इण तरफ रा भाखर उण तरफ नै उण तरफ रा डूंगर इण तरफ धर देवणा।

निबन्ध
भेळप, सैंणप अर भाईचारौ

मूळदान देपावत

निबन्धकार–परिचै

मूळदान देपावत रौ जनम बीकानेर रियासत में करणी माता रै जगचावै मिंदर वाळै तीरथ देशनोक (बीकानेर) में 2 फरवरी, 1943 में होयौ। साहित्य–सेवा रा संस्कार वांनै परिवार सूं मिळ्या अर राजस्थानी साहित्य रचना रौ चाव बाळपणै सूं ई रैयौ। वै राजस्थान शिक्षा विभाग में वरिष्ठ अध्यापक हा। आपरी रचनावां सिरजण, कूंपळ, हिवड़ै रौ उजास, माणक–चौक, मोती–मणिया, ओळखाण आद संकलनां में छपी। मरुभारती, माणक, जागती जोत अर दूजी पत्र–पत्रिकावां मांय आपरा राजस्थानी निबन्ध लगोलग छपता। आपरा दो निबन्ध–संग्रै 'बुगचो' अर 'बळिहारी उण देसड़ै' राजस्थानी निबन्ध साहित्य री धरोड़ मानीजै। आपरै निबन्ध–संग्रै माथै राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रौ गद्य पुरस्कार मिळ्यौ। आप 'मां करणी' अर 'बीकानेर पंच शताब्दी स्मारिका' रा सह–सम्पादक रैया।

पाठ–परिचै

मूळदान देपावत री निबन्धां री पोथी 'बुगचौ' मांय संकलित निबन्ध 'भेळप, सैंणप अर भाईचारौ' मांय आपणी आदू भारतीय संस्क्रति रौ बखाण करीज्यौ है। अठै री संस्क्रति आत्मसात करण री संस्क्रति है। जठै अेक–दूजै रै धरम नै आदरीजै। अठै सत्य, ईमान, परोपकार नै धरम बतावै अर झूठ, निंदा, दुराचरण, बुराई नै अधरम मानै छुआछूत भारतीय समाज–व्यवस्था माथै कळंक है। भगवान राम सबरी रै अैंठोड़ा बोरिया अर सांवरियै केळा रा छूतका खाधा। वै भी भेदभाव नीं राख्यौ तौ पछै आपां क्यूं बरतां। इण समाज में शिक्षा रै प्रभाव सूं कोजी कुरीतां कम तौ होय रैयी है, पण दूजी कुरीतां आपरा पग पसार रैयी है। अठै सगळा अेक–दूजै रा तिंवार सागै रळ नै मनावै। लोगां री भावना, साम्प्रदायिक सद्भाव, अंजसजोग अर बखाणै जिसौ है। आज री युवा पीढी मांय बापस्योड़ी नसै री कोजी लतां वांनै कुमारग माथै ले जा रैयी है। आम आदमी धरम–सम्प्रदाय रै रगड़ा–झगड़ा सूं अलायदा हुय'र प्रेम, सौहार्द, आदर, सद्भाव सूं रैवै अर अेक–दूजै री अड़ी में आडा आवै। आज आपां अेकमन होय'र चालां तौ देस निस्चै ई उन्नति करैला। इण कारण साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय अेकता अर अनुसासन रै साथै आ भावना जरूरी है कै 'हम सब भारतीय हैं' अर 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'।

भेळप, सैंणप अर भाईचारौ

मिनखां सूं समाज बणै। मानव रै संबंधां, समाज री मानतावां, रूढियां अर परंपरावां री पाळणा में कुटुम्ब–कबीला, जाति–व्यवस्था अर रीत–पांत बणी। गांव करै ज्यूं गैली नै भी करणौ पड़ै। सदियां सूं चालती परंपरावां दौरी छूटै, पण बखत रै साथै बदळाव भी आवण लागै। आज दुनिया में आपसी भाईचारै अर सद्भाव री घणी जरूरत है। इण आरथिक जुग में आपाधापी, सुवारथ, होड, होय धन हाय धन री बुराइयां रै कारण सद्भाव रै सुंदर महल रै खंजण री चिंता समझवानां नै सतावै। आपणै बडेरां रै हेतप्रेम सूं सींच्योड़ौ भलपण रौ वटवृक्ष आपसी मतभेद, ओछी मानसिकता अर छोटा–छोटा सुवारथां री उदेवळ सूं खोखलौ नीं हुवै, निंगै राखणी जरूरी है।

आपणी आदू भारतीय संस्कृति भांत–भंतीली संस्कृतियां रौ मेळ है। आपणी संस्कृति आत्मसात री संस्कृति है। अठै जो भी आयौ, अठै रौ बणग्यौ। आयोड़ा, जायोड़ां सूं बत्ता लागै। भारत री फुलवाड़ी में भांत–भांत रै फूलां सूं सोभा है। अठै अनेकता में अेकता है। इणरै मूळ में वर्ण–व्यवस्था अर जातिप्रथा रौ प्रभाव सांपरतेक लखावै। न्यारी–न्यारी जातियां रा धरम, करम अर रीति–रिवाज न्यारा–न्यारा। अेक दूजै रै धरम रौ आदरभाव बडी बात है। इण सूं जात– बिरादरी, धरम रै नाम माथै भींतां नीं खंचै। भेळप अर भाईचारौ बणियौ रैवै। सगळा धरमां री आछी बातां नै मानणी। सगळा संत, महात्मा, औलिया पुरुष मिनख रै भलै री ही शिक्षा देवै। वै सत्य, ईमान, परोपकार नै धरम बतावै अर झूठ, निंदा, दुराचरण, बुराई नै अधरम मानै मिनखां में कोई ऊंचौ–नीचौ नीं हुवै। विचारां, आचरण सूं मिनख री पहचाण हुवै। भलै री बात सोचै, विचारै वौ भलौ आदमी अर ओछा विचार राखै, हळका काम करै, दूजां नै पीड़ा पौंचावै वौ माड़ौ आदमी।

छुआछूत भारतीय समाज–व्यवस्था माथै कळंक है। मिनख, मिनख में इतरौ भेदभाव? अेकै कांनी उपदेस दिरीजै कै काम रौ कांई हळकौ, काम री कांई सरम? अर दूजै कांनी हळका काम करणै वाळां री जातियां नै हळकी बतावै। वै नीची मानीजै, वांरी बस्ती अलायदी बसै। वांनै पांणी भी ऊपर सूं पाईजै। भेळौ हुयां गंगाजळ रा छांटा लिरीजै। वै भगवान रा दरसण नीं कर सकै। आ प्रथा कुण चलाई? मिनख ईज तो चलाई, नींतर भगवान राम तौ सबरी रै अैंठोड़ा बोरिया खाधा। भाव रै भूखै सांवरियै केळां रा छूतका जीम लीना। जगत रै भलै सारू महादेव हळाहळ पी लीनौ। थे वां रै पग री होड कर सकौ? पछै आ भेदभाव क्यूं? सबां रौ खून अेक सरीखौ, सब उण परमपिता री संतान, मिनख–मिनख सब अेक है। जलम रै संजोग कोई नै आछौ जमारौ मिळग्यौ, वौ सुख पावै। कोई रै आखी ऊमर पचणौ पांती आयौ। पण इण सूं कांई? बडौ तौ बडा काम करियां ईज बणै। बाल्मीकि, कबीर, रैदास, नामदेव रा लोग गुणगान करै। हिरणाकुस, कंस, रावण घणाई राजा हा नीं, वांनै कोई पूजै? इण वास्तै पापी सूं नीं, पाप सूं घिरणा करौ। भेदभाव मत राखौ, छुआछूत घोर अपराध है, पाप है। जद राज अर समाज दोनूं इण बात नै समझैला, शिक्षा री जोत जगैला, ज्ञान रौ चांनणौ पसरैला तद भेदभाव, छुआछूत जड़ामूळ सूं जावैला।

शिक्षा रै प्रसार सूं बाळविवाह, पड़दा प्रथा, विधवा–बिखी, औसरप्रथा, नाता वगैरह कुरीतां तौ कम हो रैयी है, पण दूजै कांनी दहेजप्रथा रा पग पसरण लाग्या है। इण डाकी दायजै सूं कीकर पार लंघीजै? मुद्दो, टीको, दायजो

मांगतां लोगां नै ओळज ही नीं आवै। कन्यावां री भणाई–पढाई सूं जरूर थोड़ौ–घणौ आंकस लाग्यौ है। शिक्षा अर समाज रै प्रभाव सूं अंतरजातीय विवाह भी हुवण लागा है। जागृति री जरूरत है, कोई अबढौ काम नीं है। करणै सूं सब हुवै। आज सतीप्रथा, बहुपत्नीप्रथा उठगी का नहीं, पड़दा प्रथा भी मौळी पड़गी है, पछै अै दूजा लपचेड़ा भळै क्यूं राखौ, पापौ काटौ नीं। आपणै अठै बखांण दिरीजै कै परहित सरस धरम नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई। मन, वचन अर करम सूं प्राणीमात्र नै ठेस पहुंचाणी पाप है। गरीब, भूखै, दीन–दुखी री सेवा में सुख मिळै। मिनख रौ धरम है मिनखपणौ अर मिनखपणौ वौ है जिकै सूं मांनखै रौ भलौ भरीजै। प्रवचन, उपदेस रै सर में आ ईज शिक्षा आम आदमी रै हिंयै ढूकै जणै वौ सोचै अर समझै। आम आदमी धरम भीरू व्है, आपरै इष्ट रौ नाम सिंवरै, पूजा पाठ करै, नमाज पढै, व्रत–उपवास करै, रोजा राखै। सगळा उण मोटै मालक रा गुणगान करै। सूरदास, मीरां, रसखान, रहीम रा पद–भजन जन–जन में चावा है। सगळा आपरा भजन, कीर्तन, सबदपाठ, मिलाद करै। कबीर री बाणियां गावै, भक्तिभाव खास राखै। रामदेवजी, गोगैजी नै मुसळमान पीर मान'र धोकै, ध्यावना राखै। ख्वाजा साहब रै दरबार हिंदू हाजरी बजावै जियारत करै। सगळा पीरजी री मजार आगै सूं नीसरता झुकै, सिलाम करै अर मिंदर आगै सूं हाथजोड़ नीसरै। होळी–दियाळी रामा–स्यामा करै, ईद मुबारकबाद देवै। हांती–पौळी भेजै, परसादी पावै। अेक–दूजै नै जैमाताजी री, सलाम वालेकुम, सतश्री अकाल अभिवादन करीजै। आपस में सुख–दुख रा सीरी बणै। लोगां री भावना, सांप्रदायिक सद्भाव अंजसजोग अर बखांणै जिसौ है।

समाज में सगळा धरम, समुदाय, जातियां रा लोग भेळा बसै। अेक–दूजै रै काम पड़ियां मददगार बणै। सभी लोगां रा अेक ठौड़ रा रीति–रिवाज अेक जैड़ा, पैरावौ, खानपान अेक जैड़ौ। निरा लोगां में तौ जातियां, उपजातियां रा नाम भी अेक जिसा। गीत अेक जैड़ा, गाळ अेक जैड़ी। गीतां री ढाळ अर संवेदना में कठैई फरक नीं। गांवां में नुंई बीनणी नै दूजै समुदाय रै खोळै घालण रौ दस्तूर करीजै। बठै उणनै पीहर रौ लाड–प्यार, वातावरण मिळै। बाळविवाह समाज री बुराई है, हिंदू, मुसळमान सबां में है। सामाजिक रूप सूं पिछड़ां में घणी है। काचा सूत पळेटीजै, छोटा थकां रा निकाह पढीजै। पाप रा भारा बांधै, गुनाह करै। रमण–खेलण री औस्था में घूंघटौ काढीजै। पड़दै रौ रोग भी सबां रै है। बेमेळ विवाह अर दूजी अबखायां पैदा हुवै। बेटी परायौ धन मानीजै, धोरै चाढीजै। टाबरां रा हाथ पीळा करण री चिंता अर पोतै–पड़पोतै रौ मूंडौ देखणै री चावना में आखातीज रै सावै हजारूं चंवरी मंडै। शिक्षा में पिछड़ैपणै, धार्मिक रूढिवादिता, कृषि प्रधानता, संयुक्त कुटुम्ब प्रणाली अर दूजा आर्थिक सामाजिक कारणां सूं आ प्रथा जीवित है। जाबक टाबरां नै थाळी में बैठांण परणावै। भगवान ना करै, काई किसी हुय जावै तौ आखी ऊमर रंडापौ भुगतणौ पड़ै। सामाजिक रूप सूं पिछड़ी जातियां में नाताप्रथा, रीत अर अट्टौ–सट्टौ चालै। समाज में चेतना बिना कानून–कायदा सौ कीं फिजूल है। पिछड़ैपणै रौ अेक कारण औसर–मौसर अर नुक्तौ है। टाबरां रौ मूंडौ ऊजळौ करण में घर धोय धोळौ कर नांखै, करजै सूं कळीजै जकौ अलायदौ। जीवतां भरपेट राबड़ी मत मिळौ, पण अेक दिन रै जीमण में आखी ऊमर रौ कचूमर काढ नांखै। आथूणै राजस्थान में मरणै–परणै अमल घणौ ऊपड़ै। सीमाई इलाकां रै चुणावी उम्मीदवारां रै मनवारां– मनवारां में

कूंटळ अमल लागण री खबरां छापां में छपै। आजकालै नसौ करणौ भी फैसन बणग्यौ है, सगळी जातियां रा लोग करै। नसौ च्यारूंमेर फिरग्यौ। युवा पीढी में हैरोइन, चरस, गांजा, मैंड्रेक्स अर दूजी नसै री गोळियां रौ चलन बधग्यौ। बीयर पीवणौ पईसां वाळां रौ सगल, जनाना सिगरेटां भळै बापरगी बतावै। देखादेखी साजै सौख, छीजै काया, बधै रोग। अबै किसै खाडै में पड़ां? मरै बापड़ौ गरीब, उणरी कोई जात–पांत, धरम नीं हुवै। मिनख, मिनख व्है। भेदभाव री जड़ां है कठै?

आम आदमी खेतीखड़, मजूर, करसौ है। वौ मतभेद, धरम–संप्रदाय रै रगड़ां–झगड़ां में नीं समझै। वौ जीमण री थाळी न्यारी भलां ई राखौ, मन न्यारा नीं राखै। मन मिळियां तौ प्रेम, सौहार्द्र, आदर, सद्भाव बधै। मेळा, कतारां सगळा लोग साथै जावै। भेळौ भोजन बणै, भेळा ही जीमै। पग में छोटौ व्है वौ थाळी मांजै। खेत खळां में अड़सी–बड़सी करै। अड़ी–बड़ी में ओधारौ साजै, सुख–दुख रा सीरी बणै। नादारगी, नैनप, थाकेलौ कोई रै भी हो सकै। हळसोड़ै में हळ बावण री मदद करै, ल्हास में आपरौ काम खोटी कर परा'र भी जरूर जावै। सगळी जात–बिरादरी रा लोग सैयोग करै। तीज–तिंवारां, गणगौर, उर्स माथै उछाव सरावणजोग है। भेदभाव, झगड़ै री बातां आम आदमी नीं करै। बियां तौ देखौ मा जाया भाई भी लड़ै पण राजनीति रै रगड़ां, दंगाफसाद में बापड़ौ गरीब मरै, उणरा टाबर रुळै। इणरी चिंता किणनै है? कांई साचांणी लोग इयां लड़ै–भिड़ै? अैड़ी खबर माथै पतियारो नीं हुवै। अठै तौ खेत ढांणी भी जावै तौ लारै संदूक–पेवटी पड़ौसी नै संभळा'र जावै। गांव–गांवतरै जावै तौ गाय भैंस दुहारी, टाबरां री भौळावण देय जावै। आ तौ कदैई नीं बिचारै कै पड़ौसी किण जात रौ है? किसै धरम रौ है? वै तौ उणनै भाई–बंधु, काका–बाबा ई जाणै। सब अेकल हां, पछै भेदभाव है कठै? दुभांत है कांयरी? बांटणौ कांई है? कीं समझ में नीं आवै।

आज रै हालात माथै विचार करां तौ अमूझणी आवै। सामाजिक अर नैतिक मूल्यां में गिरावट अर संकीर्ण विचारधारा रै ओछापणै सूं आव–आदर घटै। अेकै कुटुम्ब रा ईज जद भेळा नीं खटै तौ पछै दूजै कबीलै वाळां सूं कांई आस राखीजै। धड़ौ–कड़ूंबौ, जात–बिरादरी, समाज री तौ पछै चींतीजै। अेक दूजै में फरक समझै जणै मनां में फरक पड़ै। मनां में फरक आयां फंटवाड़ौ पड़ै अर फंटवाड़ौ हुयां विरोध पनपै। देस रौ हांण हुवै, प्रगति थम जावै, विकास रुक जावै। संपत हुयां सुख सोमती रहै, घर फाटां उजाड़ हुवै। जाति, धरम, भासा रै नाम माथै पाळा मंड जावै। विरोध बधण लागै अर घृणा पनपै। इणनै ओछै सुवारथ री हवा लागै। देस अर समाज री नीं सोचै जणै बिगाड़ हुवै। बोल बिगाड़ा लोग हवा बिगाड़ देवे, कोई दुसमी जगतौ पूळौ नांख दै। लाय में आला–सूका सैंग बळै। समाचार सुणीजै– फलांणी ठौड़ झगड़ौ–दंगौ हुवौ है, सरकारी अर निजी संपत्ति नै नुकसाण पूग्यौ है, कर्फ्यू लाग्यौ है। कानून व्यवस्था वास्तै पुलिस, सेना री टुकड़ियां तैनात करीजी है। अबै सोचौ कै आं बातां सूं देस रौ कितरौ हरजानौ हुवै, कितरौ धन लागै, कितरा विकास रा काम प्रभावित हुवै? हड़तालां, बंद वगैरह सूं कितरा गरीब मजूरी बिना रहै, हिंसा में कितरा लोग अनाघात मारीजै, कितरा परिवार तबाह हुवै, इणरौ जबाब किण कनै है? राज या समाज कोई इणरी पूर्ति कर सकै? जठै बीतै अर जिकै में बीतै वौ ईज जाण सकै है। इण चिंता री चिंता करणी जरूरी है।

आपां इण देस रा जिम्मेदार नागरिक हां, आ बात हिंयै में उतारौ तौ बात बणै घाई–घुत्ती,

फिरका–परस्ती सूं तौ भलौ भरीजै नहीं। वैर, विरोध, भेदभाव देस री तरक्की वास्तै घातक है। देस सूं बडौ कोई नीं है, देस नै सबसूं ऊंचौ समझौ। जे देस अर आजादी माथै आंच आई तौ पछै औ जलम अकारथ ईज जाणौ। आपणौ जीवण आपणै देस खातर है। आज सद्भाव, सैयोग अर ओकता री जरूरत है। इतिहास साखी है कै जद–जद इण देस रै वासिंदां में फूट पड़ी है, फांटौ पड़ियौ है तौ पराधीनता भुगती है। जद ओकजुट होय आगै बधिया है तौ देस आगै बधियौ है। आजादी री लड़ाई में भारत माता रै सपूतां जद ओकता धारली तौ पछै देस नै आजादी मिलतां जेज कांई लागी? इण घणमोली आजादी नै आपां नै संभाळ'र राखणी है। अनेकता में ओकता इण देस री महान परंपरा रैयी है, अठै सगळा रळ मिळ'र बसै। सरवधरम समभव अठै री खासियत है। आम आदमी में सद्भाव अंजसजोग है। आपां नै इण सद्भाव नै कायम राखणौ है अर इण सद्भाव नै मिटावण वाळी कुचेस्टावां नै पाछी नांखणी है। देस री उन्नति में ईज आपणी उन्नति है। देस आपणौ है अर सगळा देसवासी आपणा भाई है। इण भाईचारै नै कायम राखणौ है। साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय ओकता अर अनुशासन रै साथै आ भावना जरूरी है कै 'हम सब भारतीय हैं' अर 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

बडेरा=पूर्वज। निगै=ध्यान, रुखाळी। भींतां=दीवारां। अलायदी=दूर, ओक तरफ। अैंठोड़ा=झूठा। छूंतका=छिलका। हळाहळ=ज्हैर, विस। चानणौ=उजाळौ, उजास। ओळज=लाज,सरम। आंकस=अंकुस, अनुसासन। मौळी=कमजोर। सीरी=भागीदार, बेली। भेळा=साथै। कूंटल=क्विंटल। अमूझणी–जी घबरावणौ, रोसीजणौ। हांण=नुकसाण। दुसमी=सत्रु, बैरी। अनाघात=बेमौत। वासिंदा=रैवासी, वासी। जेज=मोड़ौ, अबेळौ। अंजसजोग=गुमेज करणजोग। जहां=जगत, दुनिया।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. आज रै जुग मांय किसी कुरीत घणा पग पसारण लागी है–
   (अ) दहेज प्रथा (ब) औसर प्रथा
   (स) पड़दा प्रथा (द) बाल ब्यांव
   ( )

2. निबन्धकार मूळदान देपावत री जलमभोम है–
   (अ) देसनोक (ब) मथानिया
   (स) बिराई (द) देवगढ़
   ( )

3. निबन्धकार दुभांत नै कांई बतायौ है–
   (अ) बहादुरी (ब) कायरी
   (स) वीरता (द) सैणप
   ( )

4. भारत री संस्क्रति किण भांत री संस्क्रति है?
   (अ) रंग–रंगीली (ब) भांत–भंतीली
   (स) आत्मसात वाळी (द) ऊपरला तीनूं

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. युवा पीढ़ी में किण बात रौ चलण बधग्यौ है?
2. ''हाथ पीळा करणा'' मुहावरै रौ कांई अरथ है?
3. महापुरुसां रा आज भी लोग गुणगान क्यूं करै?
4. कांई ''बेटी नै परायौ धन'' केवणौ वाजब है?
5. आपणै देस री कांई जबरी परंपरा रैयी है?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. आज दुनिया में किण तरै री भावना घणी जरूरी है?
2. शिक्षा रै प्रसार सूं किण–किण सामाजिक कुरीतां रौ निवारण कस्यौ जाय सकै है?
3. ''बडौ तौ बडा काम कस्यां ईज बणै।'' इण कथन रौ खुलासौ करौ?
4. ल्हास में आपरौ कांम खोटी कर परा'र भी क्यूं जावै?

लेखरूप पडूतर वाळा सवाल

1. ''समाज में चेतना बिना कानून कायदा सब फिजूल है।'' निबन्ध रै आधार माथै इण कथन री व्याख्या करौ?
2. ''देस री उन्नति में ही आपणी उन्नति है।'' इण कथन नैं ध्यान में राखता थकां जिम्मेवार नागरिक रै फरज रौ बखाण करौ?
3. ''आज रै हालात माथै विचार करां तौ अमूझणी आवै।'' निबन्ध रै आधार माथै इण ओळी री विरोळ करौ।
4. लेखक 'भेळप, सैणप अर भाईचारौ' निबन्ध में आपणी संस्क्रति नै किण भांत उजागर करी है?
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) आपणी आदू भारतीय संस्क्रति भांत–भंतीली संस्क्रतियां रौ मेळ है। आपणी संस्कृति आत्मसात करण री संस्क्रति है। अठै जो भी आयौ, अठै रौ बणग्यौ। आयोड़ा, जायोड़ां सूं बत्ता लागै। भारत री फुलवाड़ी में भांत–भांत रै फूलां सूं सोभा है। अठै अनेकता में अेकता है।

(ब) परहित सरस धरम नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई। मन, वचन अर करम सूं प्राणीमात्र नै ठेस पहुंचाणी पाप है। गरीब, भूखै, दीन–दुखी री सेवा में सुख मिळै। मिनख रौ धरम है मिनखपणौ अर मिनखपणौ वौ है जिकै सूं मांनखै रौ भलौ करीजै।

(स) आपां इण देस रा जिम्मेदार नागरिक हां, आ बात हिंयै में उतारौ तौ बात बणै घाई–घुत्ती, फिरका–परस्ती सूं तौ भलौ भरीजै नहीं। वैर, विरोध, भेदभाव देस री तरक्की वास्तै घातक है। देस सूं बडौ कोई नीं है, देस नै सबसूं ऊंचौ समझौ। जे देस अर आजादी माथै आंच आई तौ पछै औ जलम अकारथ ईज जाणौ।

निबन्ध
राजस्थान री लोककलावां

डॉ. महेन्द्र भानावत

लेखक–परिचै

डॉ. महेन्द्र भानावत रौ जनम उदयपुर जिलै रै कानोड गांव में होयौ। जद आप टाबर हा, आपरा पिता श्री प्रतापमलजी सुरगवासी होयग्या। आपरी माता श्रीमती डेलूबाई घणी हिम्मत राख'र आपरौ लालन–पाळन कर आपनै पढाया–लिखाया। आपरी सरूआत री शिक्षा जवाहर विद्यापीठ, कानोड अर जैन गुरुकुल, छोटी सादड़ी में होयी। पछै आप बीकानेर रै सेठिया जैन छात्रावास में रैय'र बी. ए. करी अर बाद में नौकरी करता थकां महाराणा भूपाल कॉलेज उदयपुर सूं एम. ए. हिन्दी अर उदयपुर विश्वविद्यालय सूं 'राजस्थानी लोकनाट्य परंपरा में मेवाड़ रो गवरी–नाट्य अर उणरौ साहित्य' विषय पर पीएच.डी. री उपाधि हासल करी। आप भारतीय लोककला मंडल, उदयपुर में उप निदेशक रैया। लेखक लोक–साहित्य अर लोककलावां रा मानीजता विद्वान अर गवेषक है। सरू में आपनै लिखण री प्रेरणा आपरा बडा भाई डॉ. नरेन्द्र भानावत सूं मिळी। अबार तांई देस री केई पत्र–पत्रिकावां में आपरा 300 सूं बेसी आलेख छप चुक्या है। क्षेत्रीय अनुसंधान अर संपादन में भी आपरी खास रुचि रैयी है। आप मासिक पत्रिका 'रंगायन' अर छमाही शोध–पत्रिका 'लोककला' रा संपादक है। डॉ. भानावत री केई पोथ्यां छप चुकी है, जिणां में प्रमुख है– लोकनाट्य परंपरा और प्रव्रत्तियां, लोकरंग, लोकनाट्य गवरी, देवनारायण रौ भारत, लोकदेवता तेजाजी, मेवाड़ के रासधारी, ताखा अंबाव रो भारत, राजस्थान के तुररा–कलंगी, रामदळा की पड़, काळा–गोरा रौ भारत, राजस्थान के रावळ, राजस्थान की भवाई लोककला : मूल्य और संदर्भ, मेहंदी रंग राची, राजस्थान की रम्मतें, ब्रजराज काव्य माधुरी, राजस्थान स्वर लहरी आद।

पाठ–परिचै

पोथी रा निबंध राजस्थान री लोककलावां री आछी ओळखाण करावै। लोककलावां री दीठ सूं राजस्थान केई मायनै में दूजा प्रांतां सूं हरावळ है। अठै री देव मूरतां, पड़ां अर कावड़ां तौ परदेसां में भी जबरौ नांव कमायौ। अठै री सांझी कला आपरौ न्यारौ ई कलात्मक सरूप राखै। वार–तिंवार माथै तौ ढांडा–ढोर तक अठै कलामयी जीवण जीवै। अठै रौ गरीब सूं गरीब आदमी ई आपरै घर–आंगणै नै कोरयां–सिणगारयां बिनां नीं रैवै। इण कला रै छेत्र में अमीर–गरीब रौ कोई भेद नीं है। आ कला कठैई भेद रेखा नीं खींचै। आ अंतस सूं अंतस जोड़ै, हिवड़ा खोलै। इण कलावां रै पाछै सुभाग, आस्था अर रिद्धि–सिद्धि रा जबरदस्त भाव जम्योड़ा है। इण खातर हरेक आप–आपरै मतै सूं आंनै पूजै सरावै अर सम्मान देवै।

राजस्थान री लोककलावां

सूरां अर संतां रै देस सरूप राजस्थान घणो नामी अर जोगो कहीजै। पण लोगां नै आ ठा कोनीं कै लोककलावां री दीठ सूं भी ओ उत्तो ईज रूड़ौ–रंगीलौ, लूमौ–झूमौ अर रिद्ध–सिद्ध रो रंगरेज है। लोककलावां उत्ती ही पुराणी है जित्ती पुराणी मिनख री सभ्यता। घणाई पुराणा जमाना सूं मिनख आपरै हिरदै रै उमावां नै रंग–रोगन सूं कोर'र तरै–तरै रा भांत–भंतावण अर रूप–रूपावण देवतौ रैयौ है। टाबरां रा टपरा अर घरौंदा सूं लेय'र बडा–बूढां रा घा–कोठा तक में लोककलावां रा लाला–मोती देख्या जाय सकै। आं लोककलावां रो वरगीकरण इण भांत सूं कर्‌यौ जाय सकै–

1. वास्तुकला, 2. चित्रकला, 3. मूर्तिकला, 4. मांडणा, 5. थापा, 6. पड़कला, 7. गूदणां, 8. मैंदी, 9. काष्ठकला, 10. भांत–भांतीली कलावां।

वास्तुकला

राजस्थानी लोकजीवण में लोकदेवता री मानमनौती अर आस्था घणी जबरी है। इण वास्तै आं रा देव मन्दिर भी केई तरै री कारीगरी सूं बणाया जावै। बेंतरा छाजा, अगर री लकड़ी रा चौगटा अर चंदन रा किंवाड़ अर वांरी बणगट अर कारीगरी असी करी जावै कै जिणरौ कोई मोल नीं आंक्यो जाय सकै। देवळ–मिंदर ई क्यूं, आपणै रैवा आळा बंगला भी घणाई कलात्मक ढंग सूं बणाया जावै। लांबा–लांबा बांसड़ा नै चीर'र बेंत रा चिकणा अर पतळा भाग सूं आंनै बांध्या जावै अर पान'र आत रा माना सूं उणरौ छपर छवायौ जावै। मोटा लोग बजर कंवाड़ां री मेड्यां बणवाय'र लकड़ी रा केई तरै रा बारीक काम रा गोखड़ा बणवावै। मेवाड़ी ख्यालां में भी राणीजी सारू बांस–बल्यां रौ बंगलौ त्यार कर्‌यौ जावै, जिण मांय सूं टेरा देवता थका राणीजी नीचै उतरै। तुर्राकलंगी ख्यालां में अट्टालीनुमो आलीसान मंच बणायौ जावै। मंच माथै बीस–बीस फुट तांई ऊंची अट्टलिका बांधै ज्यांनै रंग–बिरंगी फरियां, कोर किनार्‌यां अर कपड़ा–लत्तां सूं सिणगारी जावै। आं अट्टालिकां नै झरोखा अथवा म्हैल भी कैवै। राणी पात्र अणी अट्टालिकावां बणाई जावै।

चित्रकला

चित्रकला में खास तौर सूं भींता परला चित्रां रौ घणौ महत्त्व है। सबसूं घणा चितराम ब्याव–शादियां पर मांड्या जावै। आं चित्रां में तोरणद्वारे हाथी, घोड़ा, ऊंठ, छड़ीदार, चंवर ढोळती अर आरती करती लुगायां, घर में भींतां पर लिछमीजी, गणेसजी, पतंग उडावतौ थकौ छोरौ, भौजाई रै डावा पग रौ कांटौ काडतौ थकौ देवर, घट्टी फेरतौ थकौ व्याई अर मूसळ चलावती व्याण, मुगदर घुमावतौ पैलवान, पाणी में न्हावती गोपियां अर उणां रा गाभा चुरावणिया बांसरी बजावता किसनजी जस्यां रौ जाणै कमेरौ उमड़ पड़ै। इण चित्र पांडउ पूती भींतां पर नारेळ री काचल्यां या गायां रा सरावाळ्या में भांत–भांत रा रंग त्यार कर खजूर री डाळी री कूंची सूं कोर्‌या जावै। रंगां में रचका नै पीस'र लीलौ, हळदी में नींबू न्हाख'र रातौ, डाडम रा छोंतरां नै उकाळ'र पीळौ, हीराकसी अर काजळ सूं काळौ, थपड़्या में डाडम रो छोंतरा भेळा अर मूंगीयौ रंग त्यार कर्‌यौ जावै। अै रंग इस्या पक्का अर गैरा होवै कै केई बरसां तक नीं तौ भींतां सूं ऊतरै अर ना मगसा पड़ै। अबै तौ केई रंग अर केई ब्रुश सब बणावणिया मिल जावै, इणी वास्तै चितारै (चित्रकार) नै किणी बात री माथाफोड़ी नीं करणी पड़ै।

मूर्तिकला

लोक कलाकार मूर्तियां बणावां में बडो

चतर होवै। लकड़ी, पत्थर, माटी अर धातुवां री केई तरै री देवी–देवता अर दूजा जीवां री मूर्तियां अर खेल–खिलोणा घणाई मन लुभावणा लागै। आं में माटी री मूर्तियां री कला घणी सरावण जोग है। काळागोरा सूं लगाय'र ताखाजी, धपरमपाज, लालांफूलां, आमजमाता, रंबारीदेव, नारंसिघी खाकल, सांडमाता, खेतरपाळ, पीपळाज, कूकड़ामाता अर काळका माता री हिंगाणा गांव–गांवां रै देवरा–देवरा में थरपी जावै। केई लोग देवी–देवतावां रा नांव बणा'र आपरै गळा में बांधै।

मांडणा

आंगणै पर जिका चितराम मांड्या जावै वै मांडणा कहीजै। मांडणा मांडवा पैली आंगणा नै गोबर–पीळी सूं लींपी–चूंपी नै साफ–सुथरी बणायलै पछै आधा सूख्या अर आधा आला आंगणा पर लुगायां रूई रा फोया नै पांडू रै पाणी में बोल नै आपणी देवळ पूजणी आंगळी सूं मूंडै बोलता मांडणा मांडै। कोई वार–तिंवार हुवौ, मांडणा तौ अवस करनै मंडीजैला। बिगर मांडणा आंगणौ भूंडौ लागै अर खावा नै दौड़ै। आं मांडणां में दीवाळी माथै सोळा दीवा, चोक, बीजणी, पान, डाका, पगल्या, फूल, हीड, ताकड़ी, सांठा, पावडी सात्या, रथ, जळेबी, मुरकी नै गायां रा खुर, होळी रा चंग, खांडा, घेवर, ढोलकी नै कंवळ रौ फूल, तीज्यां गणगोर्‍यां पर चौपड़, गौर रो बेसर नै गुणां, मांडा–सादी पर सीतळा माता, गळीचौ अर फूलड़्यां अर ब्याव पछै पैलीपोर, लाडी जद आपणा पीयर सूं सासरै आवै तो वीं दिन भी सुभ सकून रा चौक, फळ, सात्या अर आंरै आजू–बाजू नाना–नाना दीवा, कुलड़्यां, झाड़, वाटका, चीडा–चरकला नै जळेब्यां मांडी जावै। कैवत में कैवै कै कंवळ सूं ज्यूं पाणी री, फूल सूं ज्यूं धरणी री अर बरात्यां सूं ज्यूं ब्याव री सोभा व्है ज्यूं ई मांडणां सूं घर–आंगण री सोभा अर सुवाग गिण्यौ जावै।

थापा

हाथ री आंगळ्यां रौ थापौ देईनै उपरै जो चित्र कोर्‍या जावै वांनै थापा कैवै। अै थापा कंकू, काजळ, हरद, हिंदूर, गेरू अर अेपण सूं बणाया जावै। लुगायां उणां थापा नै कोरनै आपरा वरत पूरा करै। करवा चौथ, चूरमा चौथ, राखी, नागपांचम, सीतळा सातम, होई आठम, दीयाड़ी नम, गणगौर अर दसा माता पर तरै–तरै रा थापा कोर नै वरत कथावां कहीजै। सरदा रै पूरै पखवाड़ै छोर्‍यां आपणा बारणां माथै रौ दीवार अथवा हडमची री गोरी ऊपर गोबर सूं नित हमेस नुंवी–नुंवी संज्या कोरे अर बन्ने कनेर, कोलौ, हजारी नै छोर्‍यां गुल रै फूलां सूं सिणगारै। अेकम सूं अेकताहरा सूं सरू हुयनै ई सज्या दसम तांई पांव–पछेटा, चांद–सूरज, वांदरवाळ, चौपड़, बीजणी, तिबारी, जनेऊ, निसरणी, वयाटका, खजूर, मोर, छाबड़ी अर पंखी रै भांत री संज्या मांडै। ग्यारस नै संज्या रो मोटो कोट गाळ्यो जावै जीं में संज्या री बरात अर नीचै जाडी जोधा, पातळी पेमा, गुजराणी, ढोली, भंगी अर उंदे माथै लटकतो थको खापरियौ चोर मांड्यो जावै।

पड़कळा

कपड़ा ऊपर चितराम मांडवा री अठारी भी जगजाहिर है। लोक जीवण में जे सूरवीर आपणा नेकी रै काम सूं देवळ रै रूप में थरपीजग्या वणा री जीवण लीला कापड़ा माथै मांडी जावै। आं देवां में पाबूजी, देवनारायणजी, रामदेवजी नै राम–लिछमण मुख्य है। कपड़ा रा ईज चितराम पडचितर कहीजै। साहपुरा–भीलवाड़ा रा जोसी लोग ई पडां बणावै अर आं पडां रा भोपा गांमा–गांमा गीत गाता अर नाच री संगत सूं रात–रात भर जगैरौ करनै आं में कोर्‍या मुजब अेक–अेक चित्र रो उलथावणी करै। लोगां नै विस्वास है कै पड़ बंचायां पछै कोई भी पिराणी मांद मौत रौ सिकार नीं हुवै। अै पड़ां पचास–पचास हाथ तांई लांबी व्है। कपड़ा पर पछवायां कोरवा रौ

भी अठै जोरदार काम है। अै पछवायां वैष्णव मिंदरां में भगवान री मूरत पिछाड़ी लगाई जावै। पछवायां वणावां में नाथद्वारा रा कारीगरां री कोई होड नीं करी सकै।

गूदणां–मैंदी

सरीर ऊपरला मांडणा में गूदणां अर मैंदी मांडणा खासमखास है। आदमी रै मर्‌यां पछै वीं रै सागै कोई धन–संपदा नीं जावै। अस्यौ विस्वास है कै गूदणा अर मैंदी ईज वीं रै सागै जावै। औ ईज कारण है कै हर आदिवासी लुगाई आपणा सरीर पर तरै–तरै रा गूदणां गूदावणौ आपणौ पैलौ धन–धरम समझै। गूदणां अर मैंदी दोई सुवाग रा चित्र है। चावै कोई वार–तिंवार अर मंगळ ओछब व्हौ, लुगायां मैंदी रा हाथ अवस रचावै। मैंदी रा गीत भी केई अर भांतां भी केई भांत–भांत री मैंदी अर भांत–भांत रा गीत। चावै गरीब घराणा री व्हौ चावै अमीर घराणा री, मैंदी सब रै ई हिवड़ा री हांसज कहीजै। मैंदी हाथां री कळाई सूं लेय'र पगां री पींड्यां तक देवण रौ रिवाज है। इणरी भांतां में मोरकलास, छैलभंवर री भांत, चौकड़ी चटाई, सोपारी, ओछाड, गुणा, फीण्या–फूल, चूंदड़ी, केरी रौ झाड़, भमरौ घेवर, चंग, कुंभकळस, रुपया भांत, बाजोट, तारा, पतासा, बीजणी नै मैंदी रौ झाड़ सबां सूं ज्यादा सरायौ अर मांड्यौ जावै।

काष्ठ–कला

लकड़ी री बणी चीजां परली कारीगरी भी देखतां ई बणै। भांत–भांत री पूतळ्यां सूं लेईनै गणगौर, ईसर, तोरण, बाजोट, कावड़, हिंगळाट, ढोलिया, लंगुर्‌या, देवी–देवता, चौपड़ां, खांडा, देवदास्यां, वेवाण, मुखौटा, जंतरबाजा, कठपूतळ्यां नै गीगला रा गाडौ, घोड़ा कोर्‌या–चितर्‌या अस्या लागै जाणै आंनै बणावा वाळौ तौ कोई भगवान री दरगा रौ ईज आदमी व्है सकै।

भांत–भांतीली कलावां

होळी माथै छोर्‌यां होळी माता रै खातर गोबर रा वड़ल्या अर चूड़ी, रखड़ी, नेवर्‌यां, टणका तमण्या, हथपान, सिंघाड़ा, कापडा, सोपारी, कांगसी, जीभ नै नारेळ रै रूप में गैणला बणा'र आंरी माळा कर होळी नै पैरावै अर गीत गोठां करै। सकरांत नै भी तरै–तरै रा सकरांतड़ा बणाया जावै। लुगायां गोबर ले'र आपणी चूड़्या–बींट्यां रा निसांण पाड़ै। दोई हाथां री मुठियां भेळी कर गाय, बळद अर छारी रा खुर मांड, अंगोठा सूं सात्या, पान नै बारीक–बारीक थापा बणावै अर आं सबनै पूज्यां पछैई घरलिछम्यां अपणौ वरत खोलै। रंग्यथका चांवळां रा भी मिंदरां में तरै–तरै रा चौक पूर्‌या जावै। केई जात्यां में मिनख रै मर्‌यां पछै संखाढाळ में चांवळा रौ वैकुंठ, रामदे रा पगल्या, काळा–गोरा भैरूं, रूपांदे, तोळांदे, सुगना, डाळी, हड़मान, अंबाव, तरसुळ नै वासग बणाया जावै। दिन भर काम कर्‌यां पछै रात नै सुवा नै खाट रौ आसरौ लेणौ पड़ै। पण आ वात कदी सोची कै खाट री बुणावट भी अेक ऊंची कळा है। मैंदी अर मांडणां री तरै सूं खाट भी लेरिया, चौपड़, डाबा, पुतळी चौकड़ी, जसी भांतां में बुणी जावै। अेक भांत बेवजो तो अतरी बारीक व्है कै अणी पर जवार रा दाणा बखेर दो तोई अेक दाणी नीचै नीं पड़ सकै। केई बडाबूढां री जबान सूं आ बात भी सुणवा नै मिलै कै अेक सांप री अकरती री बुणाई भी व्है। असी बुणाई री खाट ऊपर कदैई सांप नीं चढै। मिठायां में भी लोककलावां रा केई रूप देख्या जाय सकै। लोककलावां रौ औ पसार तरै–तरै री धातुवां अर हाथी दांत री बणी चीजां, रंगाई, छपाई, सिलाई, सलमा–सितारा, गोटा–किनारी आदि सैकड़ां रूपां में देखण नै मिळै। आं कलावां रै पिछाड़ी आपणी संस्कृति रौ लंबौ इतिहास जुड़्यौ है। परिवार, समाज अर देस रा सगळा धरम–करम, रैण–सैण, खांण–पांण, राग–रंग अर जीवण रा केई आदर्श आं कलावां में घणी चतराई अर बारीकी सूं कोरीजग्या है। अै कलावां देस री भावनात्मक अेकता अर सुख समरिध री सांची साख देवै है।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

रूड़ौ=रूपाळौ, सुनहरौ। चौगटा=चौखट, मुखौटा। सणगारी=श्रृंगारित। चितराम=चित्र। मुगदर=घोटौ, पैलवानी सारू। गोखड़ा=गवाक्ष। कंवाड़=किंवाड़, आडौ, दरवाजौ। गाबा=कपड़ा, वस्त्र। चितारौ=चित्रकार। थरप्योड़ी=थापित, थाप्योड़ी। लींपी–चूंपी नै=लीपणौ–पोतणौ। कंवळ रौ फूल=कमल रौ पुष्प। कैवत=कहावत। तिबारी=घर में तीन बारणा री खुली साळ। ओछब=उत्सव। सात्या=साखिया। सुवाग=सुहाग। संज्या=सिंझ्या, आथण। सराद=श्राद्ध।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थान नै रंगरेज कैवण सूं इण प्रदेस री कांई विसेसता परगट होवै ?
   (अ) सूरां अर संतां रौ देस। (ब) पदमणी स्त्रियां रौ देस।
   (स) रंगरेजां री बस्ती रौ देस। (द) भांत–भांत री लोककलावां रौ देस।
   ( )

2. 'जका सूरवीर आपणा नेकी रै काम सूं देवळ रै रूप में थरपीजग्या, वांरी जीवण–लीला कपड़ा माथै मांडी जावै' इण कला नै कांई कैवै ?
   (अ) पड़। (ब) थापा।
   (स) मांडणा। (द) गूदणां।
   ( )

3. 'दोई सुवाग रा चित्र है।' अै दो चित्र किसा है ?
   (अ) मैंदी अर थापा। (ब) मांडणा अर पड़।
   (स) मांडणा अर पड़। (द) गूदणां अर मैंदी।
   ( )

4. लोककलावां में 'थापा' मांडणै सूं आशय है–
   (अ) गोबर थापणै सूं। (ब) हाथ री आंगळ्यां रौ थापौ मांडणौ।
   (स) मांडणा मांडण वाळी नै थापी देवणी। (द) थापी सूं आंगणौ जमावणौ।
   ( )

5. आदिवासी लुगायां आपरौ पैलौ धरम समझै–
   (अ) हरैक तिंवार पर वरत राखणौ। (ब) शरीर पर गूदणां गुदावणौ।
   (स) हाथां में मैंदी रचावणौ। (द) गैंणा–गांठा धारण करणौ।
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. लोककलावां रै पाछै किण तरै रौ भाव जुड़्योड़ौ है?
2. हळदी में नींबू मिलायनै किसौ रंग बणाईजै?
3. होळी माथै छोरयां किणरी माळा बणाय नै होळी माता नै पैरावै?
4. डॉ. महेन्द्र भानावत री लिख्योड़ी किणी दो पोथ्यां रा नांव बतावौ।

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'पड़' कुण बांचै अर किंयां बांचीजै?
2. मांडणा मांडण सूं पैलां लुगायां नै कांई–कांई करणौ पड़ै?
3. तीज–तिंवार माथै किण भांत रा मांडणा मांडण रौ रिवाज है?
4. नीचै लिख्योड़ा सबदां रा तत्सम रूप लिखौ–
   सात्या, सुवाग, सराद, संज्या, घरलिछमी
5. इण पाठ में छप्योड़ी किणी पांच लोककलावां रा नांव लिखौ।

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. ''देस री भावनात्मक अेकता अर लोककला'' विसय माथै सौ सबदां में अेक लेख लिखौ।
2. गूदणां अर मैंदी मांडण री लोककला नै विगतवार समझावो।
3. राजस्थान में भित्ति–चित्र उकेरण री लूंठी परंपरा रैयी है। इण कला री खासियतां विगतवार सूं उजागर करौ।
4. ''लोककला री दीठ सूं राजस्थान घणौ रूड़ौ–रंगीलौ है।'' खुलासौ करौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) आंगणै पर जिका चितराम मांड्या जावै वै मांडणा कहीजै। मांडणा मांडवा पैली आंगणा नै गोबर–पीळी सूं लींपी–चूंपी नै सापसूप बणायलै पछै आधा सूख्या अर आधा आला आंगणा पर लुगायां रूई रा फोया नै पांडू रै पाणी में बोल नै आपणी देवळ पूजणी आंगळी सूं मूंडै बोलता मांडणा मांडै।

(ब) लकड़ी री बणी चीजां परली कारीगरी भी देखतां ई बणै। भांत–भांत री पूतळ्यां सूं लेईनै गणगौर, ईसर, तोरण, बाजोट, कावड़, हिंगळाट, ढोलिया, लंगुरया, देवी–देवता, चौपड़ां, खांडा, देवदास्यां, वेवाण, मुखौटा, जंतरबाजा, कठपूतळ्यां नै गीगला रा गाडोलिया, घोड़ा कोरया चितरया अस्या लागै जाणै आंनै बणावा वाळौ तौ कोई भगवान री दरगा रौ ईज आदमी व्है सकै।

निबन्ध
पर्यावरण रा पागोथिया

डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई

निबन्धकार–परिचै

अबूबशहर, सिरसा (हरियाणा) में जनम। अेम. अे. (इतिहास), पीअेच.डी., पी. जी., डिप्लोमा इन जर्नलिज्म, अेलअेल. बी. तांई शिक्षा। नाथियै रा सोरठा, तीतर पंखी बादळी, राजस्थानी रामायण, विलोजी की वाणी, विश्नोई संतों के हरजस, कवि गंग के कवित्त, पंचशती स्मारिका, गुरु जांभोजी एवम् विश्नोई पंथ का इतिहास, महात्मा सुरजनजी के हरजस आद छप्योड़ी पोथ्यां। प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ, शिलालेख, पट्टा–परवाणा पढण में महारथ हासल। 'तीतर पंखी बादळी' पोथी माथै राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रौ 'पैली पोथी पुरस्कार'। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान में वरिष्ठ सोध अधिकारी अर प्रभारी पद सूं सेवानिवृत्त।

पाठ–परिचै

जंभेश्वर महाराज कैयौ है–

आकास, वायु, तेज, जल, धरणी।
तामें सकल सिस्टी री करणी।।

मतलब कै आं पांच तत्वां रै जोग सूं ई सगळी स्रस्टि बणी है। अठै तेज रौ अरथ अगनी है। आ बात बिसवाबीस ई सही है। 'पिंडै सो ई बिरमंडै।' आं पांचूं तत्वां रै मेळ सूं बिरमांड बण्यौ है। आं तत्वां मांय घाट–बाध हुवतां ई स्रस्टि रौ संतुलन बिगड़ जावै, अठीनै काया तौ काची माटी रौ कुंभ है, सो इण घाट–बाध सूं स्रस्टि में दोस वापरै। वौ दोस ही छेवट विणास रौ कारण बणै। स्रस्टि रै इण दोस सूं दूसित हुवणौ ई प्रदूसण है। स्रस्टि रौ सही संतुलन ई पर्यावरण रौ सुद्ध रूप है। बणराय नै बणाई राखणी ई पर्यावरण री सुद्धता है। डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई आपरै निबंध 'पर्यावरण रा पागोथिया' में पर्यावरण री संक्षेप ओळखाण करावतां थकां पर्यावरण री रुखाळी सारू जंभेश्वर महाराज री सीख उजागर करी है अर साथै ही इण घण महताऊ यज्ञ मांय बिश्नोई समाज रै अनुपम योगदान री जाणकारी करवाई है। आज वन्य–जीव अर बणराय दोनूं बिखै मांय है। अैड़ी बिखमी वेळा मांय विद्यार्थियां सारू सरल अर सहज भासा मांय इण भांत री अजरी–ओपती ओळखाण री पूरी दरकार है।

पर्यावरण रा पागोथिया

पर्यावरण सबद आपणै च्यारूंमेर रै वातावरण रौ जीवण सूं संतुलन बणायौ राखण रै कांनी संकेत करै। प्रकृति रा पांच तत्त्व है– पवन, पाणी, आभौ, आग अर माटी। आं पांच तत्त्वां सूं मिनख री काया बणै। आं तत्त्वां री घटत–बढत सूं पर्यावरण मांय बिगाड़ आवै अर औ बिगाड़ मिनखां, पंखेरुआं अर जीव–जिनावरां रै जीवण मांय बिगाड़ लावै। आं तत्त्वां रै बराबरी रै जोग सूं सुद्ध प्राकृतिक पर्यावरण रौ निर्माण हुवै। सुद्ध पर्यावरण बणायौ राखण सारू आपणा संत–महात्मा, रिसी–मुनियां अर बूढा–बडेरां आपां नै घणी–घणी बातां बताई, जिणां रौ आपणै जीवण मांय घणौ मैतव है। मोटै रूप सूं पर्यावरण तीन तरां रौ मान्यौ गयौ है– अंदरूणी, बाहरी अर सामाजिक। आपणै अठै सतजुग मांय 'कळप–बिरछ' अर 'कामधेनु' रौ उल्लेख मिळै। अै दोनूं ई मिनख री सैं कामनावां पूरण करणिया मान्या जावता। जिण तरां आज रै समै मिनख नै रोटी, कपड़ै अर मकान री जरूरत है अर आंरी पूरती अेकै सागै बिरछ कर सकै तौ वौ बिरछ कलप बिरछ ईज तौ है। दिखणादै भारत मांय आज ई लोग नारेळ रै बिरछ नै कळप–बिरछ मानै वौ अेकै साथै वांनै दूध, पाणी, गाभौ–लत्तौ, झूंपा–झूंपड़ी, आहार–विहार देवै। मरुथळ मांय लोग खेजड़ी रै रूंख नै कळप–बिरछ मानै खेजड़ी री छिंयां सारू लोगां आपरा माथा ई कटा नांख्या। इणी तरां 'कामधेनु' दूध देवण आळी पसुवां री जाति रौ संकेत करै। मिनख रै जीवण मांय रूंखां अर दुधारू पसुवां रौ महताऊ योग रैयौ।

पर्यावरण रौ अरथ भोत बडौ है। आप इणनै हर समै मैसूस कर सकौ। पवन–पाणी, जीव–जिनावर, पेड़–पौधा आद सै जीव अर निरजीव मिळ'र पर्यावरण बणावै। पर्यावरण मांय धरती री सै भौतिक, रासायनिक अर जैविक अवस्थावां शामिल है। इणनै जीव–विग्यान, भौतिक–विग्यान, रसायन–विग्यान, भू–विग्यान, समाज–सास्त्र, मानव–सास्त्र अर इतिहास सूं समझ्यो जाय सकै। आपां बीजा सबदां मांय कैय सकां हां कै जिण वातावरण मांय आपां रैवां हां, जिण माटी मांय खेलां हा, जिण पवन मांय सांस लेवां हां अर जठै रौ पाणी पीवां हां, प्रकृति रै आं कामां रौ नांव ईज तौ पर्यावरण है।

पर्यावरण मांय वै सै बातां आवै जकी सजीवां सूं न्यारी है अर जकी किणी न किणी रूप मांय रूंखां रै जीवण माथै असर न्हांखै। वातावरण रै जीवतै भाग मांय मिनख अर बणराय है अर अणजीवतै मांय पवन, पाणी, प्रकाश, ताप अर माटी सामल है। आं कारकां मांय असुंतलन होवण सूं पर्यावरण रै संरक्षण रौ खतरौ पैदा होयग्यौ है।

मिनखां नै आहार–पाणी माटी मांय ऊग्या हरिया रूंखां सूं मिळै। अै पौधा सूरज री किरणां नै रासायनिक क्रिया सूं प्रकास मांय बदळै। मिनख जकौ सांस लेवै वौ इणी रूंखां री छोड्योड़ी ऑक्सीजन है। इण तरां पेड़–पौधा, जीव–जंतु पर्यावरण रा जैविक तत्त्व है अर अै पारिस्थितिकी यंत्रस्वना करै। इण तरां सगळा जीव–जंतु पिरथवी रै प्राकृतिक स्रोतां माथै निर्भर है। पर्यावरण रै किणी तत्त्व में किणी भांत रौ खतरौ है तौ वौ खतरौ है मिनख नै आपरै जीवण रौ।

भोजन रै बिना मिनख केई दिन जी सकै, पाणी रै बिना भी उणरी सांसां कीं समै चाल सकै, पण पवन रै बिना मिनख अेक मिनट ई नीं जी सकै। मिनख पवन मांय सांस लेवै,

जळ पीवै अर आखर माटी मांय मिळ जावै। माटी सूं सगळां नै भोजन मिलै। माटी री उर्वरता इण मांय मिळण वाळा कोटि–कोटि अणदेख्या जीवां सूं है, जका माटी रै बणावण अर उणरी उर्वरता बधावण में हाथ बटावै। जे अै जीव नीं होवता तौ धरती बंजर होवती अर फसलां भी नीं होवती।

भारत री संस्कृति वनां री संस्कृति है। इणसूं आपणै इतियास, दरसण अर परंपरा रौ जलम होयो। बडा संत–महात्मा, रिसी–मुनि, तपसी अर जति–जोगेसर वनां मांय ई रैया। वै आपरौ ग्यान अठां ई लियौ अर भारत रै जन–गण नै प्रभावित कर्‌यौ। आपणां जूना ग्रंथ– वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आद आं वनां मांय रचीज्या जिणां मांय ग्यान, दरसण अर विग्यान है।

विष्णु–पुराण मांय अेक कथा है, जिणसूं पतौ चालै कै राजा वेन रै अत्याचारां सूं तंग आय'र रिसियां उणनै मार नांख्यौ। उणरै शरीर सूं पिरथु रौ जलम होयौ। पिरथु नै राज मिलतां ई काळ पड़्‌यौ। पिरथवी अन्न देवणौ बंद कर दियौ। पिरथु पिरथवी नै मारण चाल्यौ। पिरथवी अन्न देवणो सरू कर दियो अर आपरै दूध सूं वनस्पतियां नै सींची। इण कारण ई पिरथवी रौ अेक नांव शाकंभरी है। पिरथवी री पूजा सूं भारत देवी री पूजा सरू हुई। सिंधु घाटी री सभ्यता रै समै री अेक मुद्रा मिली है, जिणमें लुगाई रै गरभ सूं अेक ऊगतै रूंख रौ चितराम है। इणसूं पतौ चालै कै पिरथवी बनराय री देवी है।

भास्कर गृह्य सूत्र मांय सीता रौ उल्लेख करसण री देवी रै रूप मांय होयौ है अर राम रौ उल्लेख अेक किसान रै रूप मांय हळ जोततां होयौ है। इणसूं औ पतौ चालै कै आपां रा देवी–देवता बनराय नै कित्तौ प्यार करता हा।

बिरज रा लोग पैला इंदर री पूजा करता हा। क्रिसण बठै गोवर्धन री पूजा सरू करी। वै गो–धन नै मैतव दियौ। खेतां सूं आगै वन है अर वनां सूं आगै भाखर। म्हारी गति भाखरां तांई है।

भगवान राम रौ वनवास जगचावौ है, जको वै पंचवटी वन मांय काट्यौ। भगवान क्रिसण वन मांय गायां चराई। पांडवां आपरौ अज्ञातवास वनां मांय काट्यौ। गौतम बुद्ध अर महावीर स्वामी नै ग्यान वनां रै रूंखां हेठै ई मिल्यौ। रूंखां रै बिना अै सगळी बातां पूरी नीं होय सकै। औ ईज कारण है कै किणी बात नै जे धरम सूं जोड़ दियौ जावै तौ वा घणी असरदार बणै। इणी कारण पुराणां लोगां रूंखां नै धरम रौ अेक अंग बणायौ अर वांरी पूजा सरू करी। रूंखां नै संरक्षण दियौ। इणी कारण अठै रा लोग पींपळ, बड़, खेजड़ी, तुळसी आद री पूजा करै अर वांनै काटणौ पाप समझै। रूंख आरोग्य री ओखद है, धरती रौ धणी है, गुणां रौ गुड़ है अर मिनख रौ मान है। राजस्थान मांय बड़ रै रूंख मांय वासुदेव, पींपळ मांय विष्णु अर आकड़ै मांय महादेव रौ वासौ मान्यौ है। अठै री लुगायां पींपळ पूजती गावै–

पींपळ पूजण म्हैं गई कुळ आपणै री लाज।
पींपळ पूज्यां हर मिल्यौ, अेक पंथ दो काज।।

भारत मांय नदी–नाळा अर भाखरां माथै बण्योड़ा, तीरथ, मंदिर अध्यात्म अर संस्कृति रा केंद्र अर भौगोलिक चेतना रा वाहक है। जळ रात–दिन बैवै। वौ काया मांय प्राण घालै, माटी सूं मिळ'र वनस्पतियां नै उगावै। वां सूं अन्न मिळै। बठैई पसुवां सूं दूध मिळै, दूध सूं खून बणै, खून सूं जीवण चालै। मिनख नै बळ मिळै। पैलां री टैम गांवां मांय पसुवां रै चरण खातर कीं जमीं खाली छोडता, जिण माथै खेती नीं खड़ी जावती, अैड़ी जमीं नै गोचर भूमि कैवता अर जकी जमीं देवी–देवतावां रै नांव छोडता उणनै ओरण कैवता। ओरण मांय किणी भांत रै रूंख नै काटण री मनाई होवती। राजस्थान मांय पाबूजी

री ओरण, करणीजी री ओरण, जांभैजी री ओरण चावी है। इण तरां जंगळां नै अबोट राखण रौ औ अेक उमदा तरीकौ हौ। इणसूं पसु–पंखियां नै आसरौ मिळतौ अर मिनखां नै फळ–फूल मिळता।

अशोक सम्राट पसुवां रै संरक्षण सारू आपरै पैलै आदेस मांय लिख्यो है कै जानवरां नै मारणौ बंद कर्‌यौ जावै। इण मांय घणी बुराई है। वै रूंखां रै संरक्षण सारू आपरै दूजै आदेस मांय लिख्यौ है कै पिरथवी रै सगळै राजावां नै सड़क रै किनारै रूंख लगावणा चाईजै, कुआं खोदणा चाईजै अर तरकारी बोवणी चाईजै। अेक विद्वान इदरीस इग्यारवीं सदी रै बारै में लिख्यौ है कै भारत मांय मांस खातर कोई भी जानवर नीं मार्‌यो जावतौ हौ अर अैड़ौ कोई बूढौ बैल नीं हौ जकै नै चारौ नीं मिळतौ हौ।

गुजरात मांय तौ रूंख नै बचावण सारू उण माथै फाट्योड़ा गाभा न्हाख देंवता। अैड़ै रूंख नै वै चिथड़िया मामा कैवता। राजस्थान मांय भी खेजड़ी नै चूनड़ी ओढावण रौ ऊजळौ धारौ है। भाखर नै संरक्षण देवण खातर अठै भाठां पर सिंदूर रौ टीकौ काढ देवै। पर्यावरण रै संतुलन खातर पेड़ नीं काटण रै साथै–साथै नूंवां पेड़ लगावण में भी लोग रुचि राखता। मरुखेतर री रियासतां रा जूना पोथी–पानड़ां मांय आ जाणकारी हासिल हुवै कै किसानां नै धोरां वाळी धरती मांय खेती करण सारू प्रोत्साहन दियौ जावतौ। राज री आ मनसा रैवती कै करसा जिका अैड़ी धरती नै खड़सी तौ धोरां रौ फैलाव घटसी। जोधपुर अर बीकानेर रै राज मांय तौ हरी खेजड़ी नै काटण पर राज कांनी सूं जुरमानै रौ प्रावधान हो।

पर्यावरण रै इतिहास मांय 15वीं सदी रौ कीं खास मैतव है। उण टैम सन् 1451 मांय गुरु जांभोजी रौ जलम मरुभोम रै नागौर परगनै रै पीपासर गांव मांय लोहटजी पंवार राजपूत रै घर होयौ। वांरी माता रौ नांव हांसादेवी हौ। वांनै पर्यावरण नै सुद्ध राखण री सीख आपरै मां–बाप सूं ई मिळी। वै बालपणै में माटी रा धोरां पर रमता, गायां चरावता अर पेड़ लगावता। इण तरां वै पर्यावरण संरक्षण री अेक मुहिम छेड़ दी। सन् 1485 मांय वै विश्नोई पंथ री थापना करी, जिणरा गुणतीस धारमिक नियम है। आं नियमां मांय पर्यावरण रै संरक्षण रा नियम इण भांत है :– दिनूगै सिनान कर'र होम करणो, हर्‌या रूंख नीं काटणा अर नीं काटण देवणा, जीवां पर दया राखणी अर मांस नीं खावणौ, था अमर राखणी अर बैलां नै बधिया नीं करवावणौ, पाणी अर दूध नै छाण'र लेवणौ अर ईंधण नै झाड़'र काम में लेवणौ, वाणी साच बोलणी आद। वै कैयौ– 'जीव दया पाळणी, रूंख लीलौ नीं घावै।'

गुरु जांभोजी आपरौ पैलो परचौ राव दूदैजी मेड़तियै नै पीपासर रै कुअै कनै खेजड़ी रै हेठै दियौ। वै आपरौ पैलौ सबद होम करतां अेक बामण नै कैयौ। वै आपरा घणकरा सबद समराथळ रै धोरै माथै हरि कंकेड़ी रै पेड़ हेठै दिया। वै कैयौ– 'हरि कंकेड़ी मंडप मैड़ी, तहां हमारा बासा।' वै पेड़ काटण वाळां नै कैयौ– 'सोम अमावस आदितवारी, कांय काटी वणरायौ।' गुरु जांभोजी विश्नोई पंथ री थापना भी अेक हरि कंकेड़ी रै पेड़ हेठै बैठ'र करी ही। जद गुरु जांभोजी नौरंगी रौ भात भरण नै रोटू (नागौर) पधार्‌या तौ वै अेक खेजड़ियां रौ बाग लगायौ हौ, जकौ आज तांई है। सुरजीबाई रै बुलावै पर गुरु जांभोजी जद मुरादाबाद पधार्‌या तद वै अेक खेजड़ी रौ पेड़ लोदीपुर मांय लगायौ जिकौ आज भी उणां री साख भरै। जोधपुर रै

राजा मालदेव नै गुरु जांभोजी लोहावट रै जंगळ मांय अेक खेजड़ी हेठै उपदेस दियौ हौ। जद जांभोजी जैसलमेर गया तद वै रावळ जैतसी सूं दोय वचन लिया– 1. आपरै राज में लीला रूंख नीं काट्या जावै, अर 2. अबोला जीवां नै नी मार्‌या जावै। इण तरां वै जैसलमेर राज मांय रूंखां अर अबोला जिनावरां नै संरक्षण रौ पट्टौ दिरायौ। गुरु जांभोजी आपरौ सरीर मिगसर बदी नवमी, वि. सं. 1593 मांय लालसर री साथरी रै अेक हरि कंकेड़ी रै पेड़ नीचै छोड्यो। आं सगळी बातां सूं वांरौ बिरछां री खातर हेत रौ पतौ लागै।

जे मिनख हिंसा नीं करसी तौ वौ मांस नीं खावैलौ। मांस नीं खावण सूं साकाहार नै बधापौ मिळै। मिनख मांय सात्त्विक गुणां री बधोतरी हुवै। जद हिंसा नीं हुवैली तद वन्य प्राणियां नै संरक्षण मिळसी। वन्य प्राणियां रै संरक्षण सूं प्रकृति रै मांय संतुलन बणैला। प्रकृति रै मांय संतुलन सूं ई पर्यावरण री सुद्धि है। औ योगदान अपणै आप मांय उल्लेखजोग है। गुरु जांभोजी मुसलमान नै जीव हिंसा नीं करण रौ उपदेस देंवता कैयौ–

चरि फिरि आवै सहजि दुहावै,
तिहकी खीर हलाली।
तिहकै गळै करद क्यूं सारौ,
थे पढ गुण रहिया खाली।।

गुरु जांभोजी रै पर्यावरण आंदोलन नै विश्नोई पंथ रा लोगां आगै बधायौ। वांरै चेलै वील्होजी रूंख लगावण अर पाणी छाण'र पीवण सारू जोर दियौ। वां कैयो– ''बिरछ काटण वाळै मिनख नै तो नरक मांय भी जाग्यां नीं मिळैला। रूंखां री रुखाळी सारू सै सूं पैलां वि. सं. 1661 मांय दो सगी बैनां करमां अर गोरां आपरा माथा कटाया। इण बात रौ पतौ वील्होजी री साखी 'करमां अर गोरां' सूं चालै। वांरी अेक दूजी साखी 'तिलवासणी' सूं पतौ चालै कै तिलवासणी गांव री खिवणी नेतू अर मोटू भी आपरा पिराण बिरछां री रिछ्या सारू दिया। इणी तरां वि. सं. 1700 मांय पोलावास (मेड़ता) गांव रा बूचोजी अेचरा आपरौ बळिदान रूंखां खातर दियौ। विश्नोइयां रौ नारौ है– ''सिर सूंपां रूंखां सटै, तौ भी सस्तौ जाण।''

बिरछां री रिछ्या सारू सै सूं बडौ बळिदान सन् 1730 मांय जोधपुर राज रै खेजड़ली कलां गांव मांय होयौ। उण टैम जोधपुर रौ राजा अभयसिंघ हौ। अठै रै किलै रै निरमाण वास्तै चूनौ पकावण सारू लकड़ियां री जरूरत ही। अठै रै दीवाण गिरधर भंडारी कनै रै गांव खेजड़ली सूं खेजड़ी रा रूंख काटण रौ आदेस दियौ। खेजड़ियां री रिछ्या सारू 363 विश्नोई आपरौ बळिदान दियौ, जिण मांय मिनख, लुगायां अर बाळक भी हा। देस जाति अर धरम खातर तौ घणा साका होया है, पण खेजड़ियां खातर अैड़ौ खड़ाणौ आखी दुनियां मांय नीं होयौ। आं 363 मांय सै सूं पैलां बळिदान इमरता देवी दियौ। विश्नोई पंथ रा लोग इणी तरां ई वन्य जीवां री रिछ्या सारू भी आपरौ बळिदान देंवता आया है। पर्यावरण आंदोलन नै आगै बधावण सारू आज बीजा लोग भी आगै आ रैया है। वै भी आपरौ माथौ बिरछां अर वन्य प्राणियां सारू देवण नै त्यार है। आज रै 'चिपको आंदोलन' री जड़ां मांय गुरु जांभोजी रै उपदेसां रौ ईज हाथ है।

भारत रा वनस्पति वैग्यानिक जगदीशचंद्र बसु औ सिद्ध कर्‌यौ कै पेड़–पौधां मांय भी जीव हुवै। वै सियाळौ–उन्हाळौ जाणै। पण आ बात विश्नोई पंथ री थापना करण वाळा गुरु जांभोजी 15वीं सताब्दी मांय बतायदी ही। इण बात सूं औ पतौ चालै है कै गुरु जांभोजी पैला पर्यावरण मिनख हा। भारत रै संविधान रै मूळ अधिकारां अर कर्तव्यां मांय पर्यावरण रै संरक्षण अर संवर्धन रौ, वन अर वन्य प्राणियां री रिछ्या रौ प्रचार करैलौ। प्राकृतिक पर्यावरण

मांय केई वन–झील–नदी अर वन्य जीव है। राज वांरी रिछ्या करै, वांरौ संवर्धन करै अर प्राणी मात्र पर दया राखै।

आज पर्यावरण नै लेय'र सगळी दुनिया चिंतित है। इण माथै चरचावां चाल रैयी है। पवन, पाणी अर माटी प्रदूसित होय चुकी है, पर्यावरण रै जाणकारां रौ कैवणौ है कै जे इण तरां मिनख चालतौ रैयौ तौ मिनख रौ इण धरती माथै सांस लेवणौ दो'रौ होय जावैलौ। वायुमंडळ मांय कारखानां रै धुंवै री जहरीली गैसां फैलती जावै, जळ प्रदूसित होवतौ जावै, रासायनिक खादां घालण सूं धरती बंजर होवती जावै। प्रकृति सूं मिनख री आ अणूंती छेड़खानी आछी कोनी। आज वैग्यानिक चिंतित है कै वायुमंडळ री ओजोन परत मांय ठींडो होयग्यो है। फेरूं आपां नै सूरज री जैरीली किरणां सूं कुण बचावैलौ? इणनै बचावण वाळौ देव है– पर्यावरण। पर्यावरण रा पागोथिया चढ'र ई मिनख प्रकृति रै डागळै चढ सकै। जे मिनख प्रकृति रौ सही उपभोग करणौ चावै है तौ उणनै सुध पर्यावरण रौ निरमाण करणौ चाईजै।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

भांत=तरै–तरै, बहुत। समै=बगत, समय। घावै=प्रहार करणौ। खडाणौ=बळिदान रौ उछाव। बिरछ–रूंख, पेड़। ओरण=अरण्य (वा गोचर भूमि जिण मांय पेड़–पौधा व्है अर वांनै काट्या नीं जावै।)। आभौ=आकास। बणराय=वनस्पति। ठींडौ=छेद। लाज=इज्जत।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. बिरज रा लोग क्रिसण सूं पैलां पूजा करता हा–

   (अ) विष्णु री — (ब) इन्दर री

   (स) शंकर री — (द) देवी री

   ( )

2. जानवरां नै मारणौ बंद करण रौ आदेस जारी करियौ–

   (अ) चंद्रगुप्त विक्रमादित्य — (ब) राजा भोज

   (स) हर्षवर्धन — (द) सम्राट अशोक

   ( )

3. हरी खेजड़ी काटण पर जुरमानै रौ प्रावधान हौ–

   (अ) जोधपुर अर बीकानेर राज में — (ब) जैसलमेर अर सिरोही राज में

   (स) जयपुर अर अलवर राज में — (द) किशनगढ़ अर जोधपुर राज में

   ( )

4. गुरु जांभोजी विश्नोई पंथ री थापना करी ही–
   (अ) खेजड़ी रै रूंख हेठै (ब) बोरड़ी रै रूंख हेठै
   (स) कंकेड़ी रै रूंख हेठै (द) पींपळ रै रूंख हेठै
( )
5. जोधपुर राजा रै किण दीवान खेजड़ली सूं खेजड़ी काटण रौ हुकम दियौ–
   (अ) अभयसिंघ (ब) गिरधर भंडारी
   (स) इन्द्रचंद सिंघवी (द) सवाईसिंह चांपावत
( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल
1. गुरु जांभोजी रै मा–बाप रा नांव लिखौ।
2. पीपासर मांय किसा महात्मा जलमिया?
3. जांभोजी री बगत मेड़ता रौ शासक कुण हौ?
4. 'ओरण' रौ तत्सम रूप लिखौ।
5. 'गोचर' किण भूमि रौ नांव है?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल
1. जैसलमेर रै रावळ जैतसी नै जांभोजी किसा दोय वचन पाळण रौ आदेस दियौ?
2. पर्यावरण रै संतुलन सारू किसै पांच तत्वां रौ संरक्षण जरूरी है?
3. पर्यावरण बाबत जांभोजी रा कोई दोय महताऊ नियमां रा नांव लिखौ।
4. खेजड़ी री रुखाळी सारू जोधपुर राज रै किण गांव मांय सै सूं पैली कुण आहुती दीवी?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल
1. पर्यावरण नै सुध राखण सारू कांई–कांई उपाव है ?
2. वन्य जीव अर वणराय रै विणास सूं कांई नुकसाण हुवै ?
3. खेजड़ियां री रुखाळी सारू हुयोड़ा खास–खास खड़ाणां रा नांव लिखतां थकां किणी दोय खड़ाणा रो वरणाव करौ।
4. 'पर्यावरण रा पागोथिया' निबंध सूं कांई सीख मिळै? उजागर करौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) भारत री संस्क्रति वनां री संस्क्रति है। इणसूं आपणै इतियास, दरसण अर परंपरा रौ जलम होयो। बडा संत–महात्मा, रिसी–मुनि, तपसी अर जति–जोगेसर वनां मांय ई रैया। वै आपरौ ग्यान अठां ई लियौ अर भारत रै जन–गण नै प्रभावित कर्‌यौ।

(ब) भारत रा वनस्पति वैग्यानिक जगदीशचंद्र बसु औ सिद्ध कर्‌यौ कै पेड़–पौधां मांय भी जीव हुवै। वै सियाळौ–उन्हाळौ जाणै। पण आ बात विश्नोई पंथ री थापना करण वाळा गुरु जांभोजी 15वां सईका मांय बतायदी ही। इण बात सूं औ पतौ चालै है कै गुरु जांभोजी पैला पर्यावरण मिनख हा।

अेकांकी
आपणौ खास आदमी

बैजनाथ पंवार

लेखक–परिचै

बैजनाथ पंवार रौ जनम वि. सं. 1981, सावण बदि 7 नै रतननगर (चूरू) में हुयौ। आप इंटरमीडिएट री शिक्षा पास करी अर 'साहित्य रत्न' री उपाधि लीवी। आप महाराणा प्रताप विद्यापीठ संस्थान, श्रीडूंगरगढ़ रा व्यवस्थापक रैया। आप लगोलग राजस्थानी अर हिन्दी में साहित्य साधना करता रैया। आपरी छप्योड़ी कृतियां में 'अकल बिना ऊँट ऊभाणौ', 'लाडेसर' अर 'नैणां खूट्यौ नीर' अर 'खुलौ चरै, बंध्यौ मरै' (कहाणी–संग्रै) खास रूप सूं गिणी जा सकै। इणरै अलावा हिन्दी रचनावां में 'नींव के पत्थर', 'पारीक जाति का संक्षिप्त इतिहास' प्रमुख है। आप केई स्मारिकावां अर पत्रिकावां रौ ई संपादन कर्‌यौ। आपरी केई रचनावां रौ प्रसारण आकाशवाणी सूं हुयौ। इण साहित्य–साधना रै वास्तै आपनै केई पुरस्कार अर सम्मान मिळ्या।

पाठ–परिचै

'आपणौ खास आदमी' राजस्थानी अेकांकी परम्परा री महताऊ रचना है। इण अेकांकी में आज री प्रशासनिक व्यवस्था माथै व्यंग्य करीज्यौ है, जठै हरेक आदमी आपरौ काम कढावण रै वास्तै न्यारी–न्यारी सिफारिसां करावै अर लोग सिफारिस करै। सिफारिस रै दबाव सूं सही काम नीं हुवै अर गलत आदमी फायदौ उठाय लेवै। काम करणवाळा अफसरां अर लोगां रै वास्तै काम नै पार लगावणौ घणौ मुस्किल हुय जावै अर नीं चावतां भी गलत काम करणौ पड़ै। इण अेकांकी में इण व्यवस्था रौ दरसाव तौ हुयौ है, पण अेकांकीकार आ बात सिद्ध करणी चावै कै जे कोई हिम्मत करै तौ इण व्यवस्था में सुधार हुय सकै अर सिफारिस नीं मान्यां, न्याय मिळ सकै अर सही आदमी नै न्याय मिळ सकै। इण अेकांकी में हेम बाबू कनै अेक पद री भरती सारू न्यारा–न्यारा लोगां री सिफारिस आवै जिण में उणरी लुगाई भी है, पण वौ हिम्मत दिखावतां सही उम्मीदवार री भरती करै अर आपरी ईमानदारी नै बणायी राखै। अेकांकीकार इण बात नै इज सिद्ध करणी चावै कै लोग आपरौ आत्मविस्वास बणायौ राखै अर साच रौ साथ देवै, जिणसूं अव्यवस्था नै मिटायी जा सकै है।

आपणौ खास आदमी

पात्र

हेम बाबू : काम दिराऊ मैकमै रा अेक अफसर
सरोज : हेम बाबू री लुगाई
बाबूराम : हेम बाबू रौ संगळियौ
चौखटानंद : अेक नेता
रामू : अेक बी.अे. पास बेकार
(चपड़ासी, उम्मेदवार वगैरा)

पैलौ दरसाव

(सुबै री टैम हेम बाबू आपरै घर में बैठा रेडियौ सुणै है। अेक पसवाड़ै वांरौ अेक टाबर मिनकी सूं किलोळां करै है। दूजी कांनी सरोज पोथी रा पानड़ा उथेळै। इत्तै में फोन री घंटी बाजै। हेम बाबू रिसीवर उठा'र कान सूं लगावै।)

हेम बाबू : हां, हां, म्हैं हेम बाबू बोलूं हूं। कुण बाबू राम? अरे भाई, कांई हाल–चाल है? ....? ....हां, वौ तौ है ई। बोलौ कीकर याद फरमाई? म्हारै लायक कोई सेवा–चाकरी हुवै तौ बोलौ। (सुण नै) हां, हां, बोल भाई! थारौ काम तौ करणौ ई पड़सी। भेळा रमियोड़ा लंगोटिया यार हां। हं हं हं (हंसै पछै ध्यान सूं सुण नै) हां.... ठीक–ठीक.... नहीं, नहीं, भूल कीकर (जाऽऊं) भाई! म्हनै याद है। अच्छा, नमस्ते (रिसीवर धर दै।)

सरोज : कांई बात है?

हेम : बात कांई होवै, आ'ई सिफारस री बात है। आज इंस्पैक्टर री इंटरव्यू है क? कैवै कै सोवन नै भेजूं हूं जकौ ध्यान राखजौ। म्हारौ खास आदमी है। हमै म्हैं किणरौ ध्यान राखूं। रावळी घोड़ी अर सौ असवार।

सरोज : तौ कांई व्है? मोटा अफसर हौ। आपरै आदमी रौ मतळब पूरौ करणौ ई चाईजै।

हेम : पण म्हैं अब किणनै राजी राखूं नै किणनै बेराजी? अेक पैठौ, नौ लगवाळ वाळी बात व्है रैयी है। जगा तौ अेक अर खसम सौ। (भळै फोन री घंटी बाजै। रिसीवर उठावै नै बात करै) हलौ! हां, म्हैं हेम बोल रैयौ हूं। ....अच्छा विमल! बोल भाई, कांई बात है? आज यूं सुदियौ–सुदियौ कीकर है? हैं? अरे, इसी कांई बात व्हैगी? (फेर सुणै) हां.... हां.... पण भाई विमल! बात आ है कै जगा तौ है अेक नै उम्मेदवार है घणा। हमै म्हैं किणनै लूं नै किणनै छोडूं? थूं ई बता। (सुण नै) है?....खैर, देखूंला। (रिसीवर धर देवै)

सरोज : औ किणरै वास्तै कैवै है?

हेम : अरे बाबा, वो पेसगार रौ छोरौ है क? उणरै वास्तै कै रैयौ है। कैवै कै दो दिनां सूं म्हारा कान खा रैयौ है कै म्हारी सिफारस कर दौ।

सरोज : आई तौ कैऊं कै इंटरव्यू कांई औ तौ जीव रौ अेक जंजाळ हूयगौ। आं सिफारस्यां रै आगै तौ जान री ध्यारी मंडगी। (ऊठनै) लौ हमै निपट लूं नीं तौ मोड़ौ हुय जासी। (जावै)।

(पड़दौ पड़ै)

दूजौ दरसाव

(हेम बाबू आपरै दफ्तर में बैठा उम्मेदवारां री दरखास्तां फरैळै है। इत्तै में चपड़ासी अेक पुरजी लाय'र देवै। पुरजी बांचै। चपड़ासी नै बारै ऊभै मिनख नै भीतर बुलावण री सैन करै। अेक खद्दरधारी हाथ में झोळौ लियां मांय बड़ै।)

हेम बाबू : (ऊभौ व्हैनै) औ हौ! आप! पधारौ सा, नेताजी! आज धिन घड़ी धिन भाग जिकौ घरै बैठां ई

दरसण व्हैगा। फरमावौ, कीकर पधारणौ हुवौ (कुरसी कांनी सैन कर'र) बिराजौ सा।

चौखटा : (कुरसी पर बैठनै) म्हैं तौ अठै नैड़ै वाळै दफ्तर में आयौ हौ। सोच्यौ चालतौ बाबूजी री हाजरी भी बजातौ चालूं। हौ तौ मजै में?

हेम : हां सा। नेतावां री किरपा चाईजै। पछै किण बात रौ डर? पांचूं घी में अर सिर कड़ाई में।

चोखटा : हां तौ साब, अेक इंटरव्यू सुणियौ हौ। कद तांई हुवैला?

हेम : वौ तौ आगली पैली तारीख नै हुसी। क्यूं कांई बात है?

चौखटा : औई थोड़ौ खयाल राखजौ। म्हारै साळै रौ बेटौ मोवनौ भी इंटरव्यू में आवैला। आप घर रा ई आदमी हौ, आपनै कांई कैवां। थोड़ौ ध्यान राखजौ। आपणौ खास आदमी है।

हेम : ठीक सा। और कोई हुकम चाकरी?

चौखटा : बस मौज है। तौ सीख करूं? अेक मीटिंग में जावणौ है। हां तौ आप भूल मत जाइजौ। आपणौ खास आदमी है। (कैवतो–कैवतौ जावै)।

हेम : (अपणै आप) औ इंटरव्यू कांई हुवौ, जान रौ झगड़ौ मंडग्यौ। म्हैं अबै कूवै में पडूं कै खाड में? कंथौ अेक, परदेस घणा वाळी बात होय रैयी है। (इत्तै में फोन री घंटी बाजै नै हेम बाबू रिसीवर उठायनै कान सूं लगावै।)

हेम : हलौ! हां... हां... म्हैं ई हेम बाबू हूं। फरमावौ। कुण? मंत्रीजी रा पी.अे. साब? हां.... हां.... फरमावौ कांई हुकम है? ....इंटरव्यू तौ पैली तारीख नै हुवैला। बोलौ कांई करणौ है?

हेम : (बात सुणनै) ठीक है सा। ध्यान राखसूं.... पण साब जगा तौ अेक है अर उम्मेदवार.... हां, हां.... वा तौ है ई सा.... म्हारौ मतळब औ नहीं है। मिनिस्टर साब रौ हुकम सिर आंख्यां माथै। ....हां हां.... हां, इत्तौ तौ म्हैं ई समझूं हूं सा। पण आप भी ओखाणौ नामी सुणायौ कै ध्यान नीं राखियौ तौ घर घोसियां रा बळैला पण सुखी तौ ऊंदरा ई कोनी हुवै। ठीक सा, ऊंदरां नै जीवणौ हुसी तौ मिनिस्टर साब रौ खास आदमी ईज लिरीजसी। (रिसीवर धरै)।

(पड़दौ पड़ै)

तीजौ दरसाव

(हेम बाबू री रसोई। हेम बाबू रौ मूंडौ उतरियोड़ौ है। अळसायोड़ी आंख्यां, थाकोड़ौ सरीर। होळै–होळै रोटी रा कौर उगाळै है। सरोज कनै बैठी जिमावै। हेम बाबू री उदासी देख'र सरोज कैवै।)

सरोज : आज कांई बात है? इत्ती उदासी कीकर? दफ्तर में घणौ काम रैवै है कांई? यूं जान दे'र कमाई कियोड़ी किण काम री?

हेम : खैर अै तौ जीवतै जी रै यूं ई झगड़ा लाग्या रैसी। आज थारै पी'र सूं कागद आयौ जिण में कांई लिखियौ है?

सरोज : काकोजी लिखियौ है कै पैली तारीख नै जकौ इंटरव्यू हौ रैयौ है, उण में आपणै अेक खास आदमी नै भूजूं हूं, सो लै लीजौ।

बौत भलौ अर हुंस्यार आदमी है।

हेम : पण जगा तौ अेक ई है। थूं कांई जाणै कोनी। कित्ता आदमी लारै पड़ रैया है।

सरोज : जकौ कांई व्है, बैठा रैई दूजा। पैली घरका नै लौ। घर रा पूत कंवारा डोलै, पाड़ोसी रा फेरा। आ कठै री रीत है? काकोजी कांई थांनै बार–बार लिखैला? औ तौ कोई इस्योई मौकौ आयग्यौ है।

हेम : थूं गैली बात कीकर करै? म्हैं मिनिस्टर साब री बात राखूं कै थारै काकोजी री?

सरोज : (रीस में आ'र) तौ मिनिस्टर कोई म्हासूं लांठौ है? दूजा सारा बैठा रैवैला। काकोजी रौ आदमी पैली लागणौ चाईजै।

हेम : तौ थे म्हनै डरा'र काम बणावणौ चावौ हौ कांई?

सरोज : (ठरकै सूं) हां, औ काम होणौ ईज चाईजै। म्हारै पी'र में मां–बाप नीं, भाई–बैन नीं। अेक बापड़ा काकोजी म्हनै पाळ–पोस'र परणाई मुकळाई; अर आज उणां रौ अेक जरा सो काम नीं करौला तौ म्हैं वांनै भळै कीकर मूंडौ दिखाऊंला।

(चपड़ासी आवै)

चपड़ासी : बारै अेक छोरौ ऊभौ आपरी बाट जोवै है। कांई कैऊं?

हेम : जा कैयदै कै अबार जीम'र आऊं हूं। ठा'नीं बापड़ौ कोई कित्ता सुगन साज'र आयौ हुवैला। (चपड़ासी जावै)

सरोज : हां, तौ म्हैं काकोजी नै कांई लिखूं? कांई कैवौ हौ?

हेम : (जावतां–जावतां) ठीक है। म्हैं विचार करूंला। अेकर वांनै कीं मत लिख। भळै म्हैं लिख दूंला। (आपै ई बरड़ावतौ जावै) और तौ बैरी हुवा सो हुवा, अब तौ घरवाळी ई स्यान लेवण नै त्यार हूगी। खैर, देखी जावैला।

चौथौ दरसाव

(हेम बाबू री बारली बैठक। रात रा आठ बजियां री टैम। बैठक रै अेक खूणै में भेळौ हुयोड़ौ ओळा मास्योड़ी कमेड़ी रै दांई रामू बैठौ है। मूंडै पर अेक'र आसा री चिमक दीखै तौ बीजै खण निरासा री काळस। हेम बाबू नै आवतां देख'र ऊभौ हुवै।)

रामू : नमस्कार! बाबूजी।

हेम : आव भाई! कांई काम आवणौ हुवौ? कांई नाम थारौ?

रामू : सा, म्हारौ नाम रामलाल है। पैली तारीख नै होवण वाळै इंटरव्यू रौ उम्मेदवार हूं। बी.अे. पास हूं। पण किणी री सिफारस नीं हुवण सूं आज तांई बेकार फिरूं हूं। म्हारै तौ आप री ई सिफारस है। (कैवतौ–कैवतौ गळगळौ हू जावै)

हेम : तौ भाई, किणी लांठै मिनख री सिफारस कोनी कांई?

रामू : नीं साब।

हेम : (गैरी निसांस न्हाक नै) ठीक है, ध्यान में राखसूं। और कांई काम है? हां, म्हैं तौ पूछणौ ई भूलग्यौ, तूं जीम्यौ कै नहीं?

रामू : (सरमावतौ–सरमावतौ) नहीं सा।

हेम : (चपड़ासी नै हेलौ पाड़ै) अरे भई, ई लड़कै नै जिमायनै सुवा देई।

चपड़ासी : ठीक सा।

(हेम बाबू घर में जावणौ चावै। इतै में अेक डैण लाठी टेकतौ–टेकतौ–टैकतौ आ'र कागद देवै। हेम बाबू डैण नै ध्यान सूं देखता–देखता कागद खोल'र बांचै।)

हेम : (कागद सूं) चिरू हेम, सेती लिखी चाड़वास सूं भूवाजी री आसीस बांचजौ। अपरंच कागद लावण वाळौ औ आपणौ खास आदमी है। इण रौ बेटौ बी.अे. पास है। थां घणा मोटा अफसर हौ सौ इणरै बेटै री कोई ऊंचै ओहदै पर नौकरी लगा देवोला। औ आपणौ खास आदमी है अर हूं थांनै बरियां–बरियां को लिखूंला नीं।

(कागद बांचतां–बांचतां हाथ सूं छूट जावै।)

पांचवौ दरसाव

(हेम बाबू रौ दफ्तर। दिन री दो बजियां री टैम। दफ्तर रै आगै इंटरव्यू होवणै रै बाद उम्मेदवारां री भीड़ परिणाम सुणण रै खातर खड़ी है। दफ्तर में हेम बाबू अर्जियां रौ ढिग लियां बैठा है। दरवाजै कनै चपड़ासी ऊभौ है।)

हेम : (अपणै आप) औ आपणौ खास आदमी है। आखा लोग सिफारस करै– औ आपणौ खास आदमी है। (तेजी सूं आय'र) तौ म्हैं भी खास आदमी हूं। म्हैं किणी री सिफारस नीं मानूंला। जे दूजां री सिफारस मानूं तौ म्हैं मर जाऊंला। म्हारी आतमा मर जावैला। दूजा म्हारै माथै छा जावैला। नहीं; म्हैं मरणौ नहीं, जीवणौ चावूं हूं। बिना किणी रै डर अर दबाव रै म्हैं अपणी आतमा रौ फैसलौ देऊंला। आज म्हनै कीं रौ भी डर नहीं है। आज म्हारी आतमा आजाद है। नीं तौ म्हैं सत्ता सूं डरूंला, नीं सगा–संबंधियां सूं। साचै अधिकारी नै मौकौ दूंला। चायै म्हारी नौकरी रैवै चायै जावै। (घंटी बजा'र)

हेम : चपड़ासी!

चपड़ासी : (आवै) हुकम सा'ब।

हेम : जा'र बारै बैठा सरदार बोधासिंह, भीखाराम, डूंगरसिंह और रामलाल उम्मेदवारां नै बुला ला।

(सारा सिफारसी 5 उम्मेदवार आवै)

हेम : (अरजियां लेय–लेयनै अेक कांनी न्हाखता थकां) सिफारसी टट्टूवां री अरजी खारज! नेताजी अर मिनिस्टरां री सिफारस खारज! भाई–भतीजां री सिफारस खारज! साचौ ईमानदार रामलाल इंटरव्यू में पास। जावौ, भाग जावौ।

(उम्मेदवार बारै जावता–जावता बोलै)

एक उम्मे. : रिस्वत खाग्यौ।

दूजौ : बेईमान है।

तीजौ : अब देखसां ईं कुरसी माथै कित्ता दिन रैवै?

चौथौ : अरे म्हैं इणनै बरखास्त करायनै छोडूंला।

(सगळा मिळनै नारौ लगावै– ''रिस्वतखोर अफसर रौ, नास हौ'', ''हेम बाबू, मुड़दाबाद!'')

(दफ्तर रै अंदर सूं हंसणै री आवाज आवै।)

(पड़दौ पड़ै)

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

किलोळा=रम्मत। याद फरमाई=याद करणौ। खसम=धणी। ओखाणौ=कहावत, लोकोक्ति। घरकां=घरवाळा। लांठौ=ताकतवर। बरियां–बरियां=केई बार। खारज=रद्द।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. हेम बाबू किस्यै मैकमै रौ अफसर है?
   (अ) फौज रौ (ब) रेलवै रौ
   (स) काम दिराऊ मैकमै रौ (द) वित्त विभाग रौ
   ( )

2. अेकांकी में आया नेताजी रौ कांई नाम है?
   (अ) राम बाबू (ब) चौखटानंद
   (स) हेम बाबू (द) रामू
   ( )

3. सरोज रै पी'र सूं कागद कुण लिख्यौ?
   (अ) मामोजी (ब) बाबूजी
   (स) काकोजी (द) फूंफोजी
   ( )

4. 'इंटरव्यू' में पास कुण हुयौ?
   (अ) मोहन (ब) भीखाराम
   (स) डूंगरसिंह (द) रामलाल
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. हेम बाबू किस्यै मैकमै रौ अफसर हौ?
2. हेम बाबू किस्यै पद री भरती करी?
3. चौखटानंद किणरी सिफारिस करी?
4. रामलाल कित्तौ पढ्योड़ौ हौ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. इण अेकांकी में किस्यै मैकमै रौ वरणाव है?
2. हेम बाबू रै कनै किण–किण री सिफारिस आयी?
3. सरोज आपरा काकोजी री सिफारस मानण री बात क्यूं कैयी?
4. हेम बाबू किणनै अर क्यूं नौकरी दीन्ही।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'आपणौ खास आदमी' अेकांकी रै उद्देस्य नै विगतवार समझावौ।
2. 'आपणौ खास आदमी' अेकांकी री अेकांकी रा तत्त्वां माथै समीक्षा करौ।
3. 'आपणौ खास आदमी' अेकांकी रै मुख्य पात्र हेम बाबू रै चरित्र री विसेसतावां नै समझावौ।
4. 'नाटक' अर 'अेकांकी' विधा रौ अरथ समझावतां थकां आं दोन्यां रौ आंतरौ समझावौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

   ''म्हैं किणी री सिफारस नीं मानूंला। जे दूजां री सिफारस मानूं तौ म्हैं मर जाऊंला। म्हारी आतमा मर जावैला। दूजा म्हारै माथै छा जावैला। नहीं; म्हैं मरणौ नहीं, जीवणौ चावूं हूं। बिना किणी रै डर अर दबाव रै म्हैं अपणी आतमा रौ फैसलौ देऊंला। आज म्हनै कीं रौ भी डर नहीं है। आज म्हारी आतमा आजाद है। नीं तौ म्हैं सत्ता सूं डरूंला, नीं सगा–संबंधियां सूं। साचै अधिकारी नै मौकौ दूंला। चायै म्हारी नौकरी रैवै चायै जावै।''

अेकांकी
देसभगत भामासा

डॉ. आज्ञाचंद भंडारी

लेखक–परिचै

डॉ. आज्ञाचंद भंडारी रौ जनम वि. संवत् 1978 नै जोधपुर में होयौ। मैट्रिक परीक्षा पास करनै आप रेलवे में नौकरी करली। नौकरी करता थकां आप लेखण सूं लगोलग जुड़िया रैया। आप इणी लगन अर मैणत रै बळ हिन्दी अर अंग्रेजी में अेम. अे. करी। सोध रै खेतर में आपरी गैरी रुचि रैयी जिणरै त्हैत आप जोधपुर विश्वविद्यालय सूं 'राजस्थान का सगुण भक्तिकाव्य' विसय माथै पीअेच.डी. री उपाधि हासल करी। भंडारी हिन्दी, राजस्थानी अर अंग्रेजी रा कुसल लिखारा हा। राजस्थानी रै नाटक अर अेकांकी खेतर नै आपरी विसेस देन रैयी। 'पन्नाधाय' नांव सूं आपरौ अेक राजस्थानी नाटक प्रकासित हुयौ। 'देस रै वास्तै' आपरौ अेक अेकांकी–संग्रै ई छपियौ, जिणमें पांच अेकांकियां है। अंग्रेजी में ई आपरी दो पोथ्यां छप्योड़ी है।

पाठ–परिचै

औ अेकांकी 'राजस्थानी अेकांकी' संग्रै सूं लियोड़ौ है। इणमें लेखक महाराणा प्रताप रै दीवाण भामासा री देसभगती अर त्याग रौ प्रेरणादायी चित्र अंकित करियौ है। महाराणा प्रताप आपरै कनै धन अर सिपाही कम व्हैण रै कारण मेवाड़ छोड'र सिंध परदेस कांनी जावण रौ निस्चै करै। मेवाड़ रा दीवान भामासा आपरौ खजानौ मेवाड़ री रिछ्या खातर महाराणा प्रताप नै सूंप देवै, जिणसूं महाराणा आपरी सेना रौ गठन कर मुगलां सूं जुद्ध जारी राखै अर मेवाड़ नै आजीवण आजाद राखै। प्रताप रै त्याग अर बळिदान रै साथै देसभगत भामासा रै चरित्त नै इण अेकांकी में उजागर करीज्यौ है।

देसभगत भामासा

पात्र

महाराणा प्रताप
अमरसिंघ
भील सिरदार
भामासा
चार सिरदार

जग्यां : भाखरां रै बीच में
समै : परभात
मियाद : बीस मिनट
साधन : तलवार, तीर–कबाण, सोनै चांदी सूं भरियोड़ी चार रख्खियां
सैटिंग : जंगळ नै भाखर

पैलौ दरसाव

(भाखरां रै बीच में महाराणा प्रताप मूंडौ उतारयां बैठा है। पाखती बाळक अमरसिंघ बैठौ–बैठौ आंसू पाड़ै है।)

प्रताप : अमर...!
अमर : हुकम दाता!
प्रताप : यूं आंसू क्यूं ढाळै बेटा?
अमर : काठी भूख लागी है दाता! अबै तौ भूख नीं सैयीजै।
प्रताप : चित्तौड़ रौ मेवाड़ी राजकंवर, यूं भूख सूं डरै?
अमर : नीं दाता! म्हैं भूख सूं नीं डरूं, पण...
प्रताप : कालै रात रा थारा बूसा अेक रोटी ढकनै राखी ही, वा कठै गई?
अमर : वा रोटी तौ मिनकौ लेग्यौ दाता! म्हैं नै बूसा मिनका नै काढण री घणी कोसीस करी, पण सेवट रोटी उठानै ले ईज गयौ।
प्रताप : (गंभीर बणनै) हूं...
अमर : हां, जरै ई तौ हाल तक म्हैं भूखौ हूं।
प्रताप : खैर, कीं बात नीं बेटा! कालै रात रा तौ रोटी खाईज ही कै?
अमर : हां दाता! कालै तौ म्हैं आधी रोटी तौ खाई ही।
प्रताप : जैड़ी इकलिंग जी री मरजी। थूं कालै आधी रोटी तौ खाई ही, पण म्हैं नै थारा बू'सा कितरा दिनां रा भूखा हां। ठा है थनै?
अमर : हां दाता! म्हनै सैंग ठा है। आप चार दिनां रा भूखा हौ। (थोडी देर चुप रैवै) दाता! आखती–पाखती जायनै सोधूं, कठैई फळ–फूल कै कंदमूळ मिळ जावै तौ?
प्रताप : जा बेटा, जा.. भाग भरोसै... (अमरसिंघ जावै। प्रताप उदास मन, मूंडौ लटकायां विचार करता हुवै ज्यूं बैठा है। थोड़ी देर पछै)
प्रताप : हे भगवान! कैड़ो बिखौ न्हाखियौ है? टाबर भूखां मरै। औ म्हासूं कीकर देखीजै? (थोड़ी देर चुप रैवै) तुरकां रौ अबार सामनौ कर सकूं जकी जचै कोनी। जे म्हैं अठै ईज रैऊं तौ उणरा सिरदार म्हनै अठै जक नीं लेवण दै।... किणी तरै सूं जे म्हैं अकबर रै राज री सींव सूं बारै निकळ जाऊं तौ थोड़ीक चैन मिळै नै जुद्ध रौ सावळ बिचार कर भी सकूं। पण... पण कठै जाऊं? (लिलाड़ माथै हाथ फेरै नै विचार करै) अरे! हां, ठीक याद आयौ। सिंध नदी रै कांठै सिंधियां रै राज में जाऊं परौ। (भील सरदार नै सेरू भील आवै)
सिरदार : जै हो मेवाड़ रा धणी री।
प्रताप : ओ! भील सिरदार, आवौ–आवौ!
सिरदार : महाराणा! आज आप किण विचार में उळझियोड़ा बिराजिया हौ?
प्रताप : दूजौ कंई विचारूं? अबै म्हारौ अठै घणौ ठैरणौ दोरौ ई है।
सिरदार : क्यूं? बस... हिम्मत हरा दिरावोला कंई, महाराणा?
प्रताप : हिम्मत हारण रौ सवाल नहीं है, सिरदार! अठै रैयनै इण बखत मुगलां रौ सामनौ कर सकूं, अैड़ी औकात अबार म्हारी नीं है।

सेरू : बात तौ साची फुरमावौ हौ, महाराणा।

प्रताप : नै फेर इण नैना–सा बाळकिया नै दो–दो दिन तक भूखौ रैवणौ पड़ै।

सिरदार : आप भी तौ चार दिनां सूं कीं नीं अरोगिया हौ, अन्नदाता!

प्रताप : (बात टाळनै) सिरदार! अैड़ी सुरगां जैड़ी जलमभोम छोडतां म्हारौ हिवड़ौ फाटै। जिकी जलमभोम म्हारी पाळण पोसण कियौ, जिणरी सुतंतरता रै खातर म्हैं इतरौ लड़ियौ, इतरा दुख भोगिया, उण जलमभोम नै अैड़ा दुखां में छोडनै जावतां म्हारौ काळजौ टुकड़ा–टुकड़ा हुवै। (आंसू टपकै)

सिरदार : पण कियौ कंई जावै, अन्नदाता! इण सिवाय कोई दूजौ उपाय भी तौ नीं दीसै।

सेरू : महाराणा! म्हैं आपनै अेकला नीं जावण दूं। म्हैं भी आपरै साथै चालूंला।

प्रताप : नीं बीरा, नीं। जे थूं म्हारै साथै चालैला परौ, तौ पछै अठारा संदेसा म्हनै कुण भेजैला?

सेरू : क्यूं? सिरदार तौ अठै ईज है।

प्रताप : भाई! माडांणी दुख क्यूं झेलै? थूं सिरदार रै साथै ईज रै, सिरदार नै मदद मिळैला।

सिरदार : अन्नदाता! म्हारै किणी तरै री मदद नीं चाईजै। औ आपरै साथै रैवैला तौ सा'रौ ईज लागैला।

सेरू : सिरदार ठीक कैवै, अन्नदाता।

प्रताप : वा जणै, यूं ईज करौ कै औ म्हारै साथै चालै नै...

सिरदार : म्हैं अठै ईज रैऊं।

प्रताप : हां। जलमभोम! मां, थनै छेहला प्रणाम! (हाथ जोड़ै) मां! थांनै अैड़ा बिखा में छोडतां म्हारौ काळजौ चीरीजै है। पण कंई करूं मां! थनै इण विपदा सूं छुटकारौ दिरावण रै खातर ईज जाऊं हूं। मां! थनै बंदवूं, लाख–लाख प्रणाम! (आंख्यां मांय सूं आंसू री लड़ियां बैवै।)

सेरू : (अेकदम, लिलाड़ माथै हाथ धरनै आघी आती चीज देखतौ व्है ज्यूं) महाराणा! वौ उठीनै आघौ थकौ कोई घुड़सवार आवतौ दीखै।

सिरदार : (देखनै) हां महाराणा, घोड़ौ अठीनै ईज सरपट आवतौ दीखै।

सेरू : अबै तौ असवार साव नैड़ौ आयग्यौ है।

प्रताप : अरे! अै तौ भामासा है। सागै चार सिरदार भी है। (भामासा चार सिरदारां रै साथै आवै। चारां रै खंवां माथै चार भारी भरकम रिख्खियां लटकै है।)

प्रताप : आवौ, भामासा! आवौ (भामासा हाथ जोड़ै।)

भामासा : घणी खम्मा, अन्दाता! जै इकलिंग जी री! जै हौ मेवाड़ रा धणी री!

प्रताप : जै इकलिंग जी री! अबार इण बखत नै अठै कीकर आवणौ हुवौ साह जी?

भामासा : आपरै चरणां में ईज हाजर हुवौ हूं, बापजी!

प्रताप : बोलौ, बोलौ, म्हारै लायक...

भामासा : महाराणा! म्हैं सुणियौ है कै आप मेवाड़ छोडनै पधार रया हौ! कंई आ बात साची है?

प्रताप : हां भामासा! आ बात साव साची है। अबै म्हनै मेवाड़ रौ त्याग करणौ ईज पड़ैला।

भामासा : पण क्यूं? इण में मेवाड़ री नाक जावै, महाराणा!

प्रताप : साह जी! आज तक म्हैं घणी ई हिम्मत राखी। अबै पण म्हारै कनै नीं तौ धन है नै नीं सिपाही...

भामासा : आपरै बिना मेवाड़ अनाथ व्है जावैला, अन्दाता!

प्रताप : भामासा! उण अकबर नै तौ बापा रावळ रै वंस री इज्जत लेवण सूं मतलब है। थांनै इणमें कंई? थे तौ आणंद सूं रैवौ।

भामासा : कैड़ी कड़वी बात फुरमायदी, अन्नदाता। रूंख री जड़ काटियां पछै डाळ साबती रैवै? आप तौ यूं दुख भोगनै फिरता फिरौ नै म्हे आणंद री बंसी बजावां? औ आछौ लागै? म्हे कि'या मूंडा सूं सुख भोगां?

प्रताप : पण इणमें अेतराज कांई है, भामासा?

भामासा : अेतराज? इण सूं मोटौ अेतराज फेर कंई हू सकै, कै मेवाड़ री आन, मान नै मरजाद रौ रूखाळौ घर छोडनै दर–दर भटकै नै म्हे अठै तुरकां री पगथळियां चाटनै जिन्दगी बितावां? अैड़ा जीवणा बिचै तौ मरणौ चोखौ। म्हारी अेक अरज मानोला, म्हारा धणी!

प्रताप : आ कंई को साहजी? थांरी कोई भी बात म्हैं आज तक टाळी है?

भामासा : (रख्खियां धरनै) तौ महाराणा! औ धन आपरै चरणां में अरपण करूं, इणनै अंगेजौ।

प्रताप : आ कीकर हू सकै, दीवाणां? थांरी सेवा रै बदळै म्हारै हाथ सूं ईज दियोड़ौ धन इणी'ज हाथ सूं पाछौ लेऊं? आ नीं हू सकै।

भामासा : महाराणा! मेवाड़ री धरती आपरी अेकलां री नीं है, म्हारी भी जलमभोम है। औ धन आपनै नीं, जलमभोम नै अरपण करूं हूं। जलमभोम री मुगती नै रिच्छा रै खातर जे म्हारौ धन काम में नहीं आवै तौ अैड़ा धन नै राखनै म्हैं कंई करूं? धूड़ बराबर है।

प्रताप : (आंख्यां गळगळी करता) भामासा! म्हारा व्हाला दीवाण...

भामासा : नीं महाराणा जी! आप अबै ना नीं कर सकौ। आप वचन दियौ है। यां रख्खियां में इतरौ धन है कै पचीस हजार सिपायां रौ खरचौ बारह बरस तक चाल सकै। आपनै लेवणौ ईज पड़ैला।

प्रताप : भामासा! थे नीं मानौ। म्हनै औ धन साचमाच लेवणौ ईज पड़ैला। धिन है उण कोख नै जिणमें थे जलम लियौ। थांरौ औ त्याग जगत में अमर रैवैला। (ऊभा हुय'र बाथ भरनै भेंटै।)

भामासा : इणनै आप त्याग कैवौ अन्दाता? हरगिज नीं! औ त्याग बिल्कुल नीं है। अैड़ौ कपूत नै नीच इण संसार में कुण हुवैला जिकौ मां जलमभोम री रिच्छा रै खातर, मुगती रै खातर भी धन नीं देवै नै दौलत नै सैंठी करनै राखै?

प्रताप : (गळगळौ व्हेनै) म्हारै कनै कीं नीं है; दो बोल भी नीं है। किण विध थांरै गुणां रौ बखाण करूं?

भामासा : म्हारा मालक! अबै पाछा मुड़ौ नै म्हारी मां री बेड़ियां तोड़ण रा सरतन करावौ।

सरदार : महाराणा! पाछा मुड़ौ! भामासा रा इण त्याग सूं मेवाड़ जीत नै दिखावौ।

सगळा : धिन है भामासा! थांरी छाती नै धिन है।

सिरदार : महाराणा! जठै तक भारत री धरती माथै अैड़ा नर–रतन ऊभा पगां है, उठै तक अपांणी सुतन्तरता सांम्ही कोई करड़ी निजर सूं देख भी नीं सकै।

प्रताप : खरी बात है।

सगळा : धिन है देस–भगत भामासा नै! धिन है त्यागी भामासा!

(पड़दौ पड़ै)

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

भाखर=पहाड़। पाखती=नैड़ौ, कनै बू'सा=माता। ठा=खबर। सोधूं=खोजूं। मूंडौ लटकायां=उदास होय'र। बिखो=दुख, विपत्ति। जक=चैन, आराम। सींव=सीमा, हद। कांठै=किनारे। औकात=बिसात, हिम्मत, सामरथ। माडांणी=जबरन। सा'रौ=सहारौ। छेहला=अंतिम, आखरी। कोथळी=थैली। नाक=इज्जत, प्रतिष्ठा। पगथळियां चाट चाटनै=गुलामी कर–करनै अंगैजो=अंगीकार करौ। वाल्हा–प्रिय। दीवाण=प्रधानमंत्री। सैंठी कर नै राखै=मजबूती सूं पकड़ राखै, खरच नीं करै। सरतन=उपाय, जतन। उभा पगां=पगां पर खड़ा है, हाजर है।

सवाल

विकळपाऊ पडूतर वाळा सवाल

1. 'अबार सामनौ कर सकूं, जकी जचै कोनी।' नीं जचण रौ कारण हौ–
   (अ) अमर नै भूखौ देख वै निरास हुयग्या
   (ब) सत्रु रा सैनिक उणानै चैन नीं लेवण देवता
   (स) सत्रु नै जबरौ देख वै हिम्मत हारग्या
   (द) परताप कनै नीं धन हौ अर नीं सिपाही

( )

2. प्रताप जलमभोम नै छोड'र क्यूं जावणौ चावता?
   (अ) लड़ता–लड़ता थाकग्या
   (ब) खावण–पीवण री कमी हुयगी
   (स) अकबर संधि करण नै राजी हुयग्यौ
   (द) जलमभोम नै विपदा सूं छूटकारौ दिरावण खातर

( )

3. 'अैड़ा धन नै राखनै म्है कंई करूं? धूड़ बराबर है।' किसौ धन धूड़ बराबर है?
   (अ) जो मैनत नीं कर कमायौ जावै
   (ब) जो कंजूसी कर बचायौ जावै
   (स) जो देस रै काम नीं आवै
   (द) जो खुद रै काम नीं आवै

( )

4. 'इणनै आप त्याग कैवौ अंदाता। हरगिज नहीं। औ त्याग बिलकुल नीं है।'
   भामासा रौ पडूत्तर उणां रै चरित रा किसा गुण नै बतावै–
   (अ) उदारता
   (ब) देसभगति
   (स) अनासक्ति
   (द) नरमाई

( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. महाराणा प्रताप कठै रा शासक था?
2. प्रताप किण रै सांमी जुद्ध लड़ रह्या हा?
3. भामासा किण राज रा दीवान हा?
4. प्रताप किण रै राज में जावण रौ विचार कियौ?
5. 'नाक जावै' मुहावरे रौ अरथ लिखौ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. 'कैड़ी कड़वी बात फुरमाय दी अन्दाता!' आ कड़वी बात किसी ही?
2. 'अैड़ा जीवण बिचै तो मरणो चोखौ।' किसा जीवण सूं मरणो चोखौ है?
3. 'थांरो ओ त्याग जगत में अमर रैवैला।' भामासा रो ओ त्याग किसो हो?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. अेकांकी रै आधार माथै महाराणा प्रताप री चरित्रगत विसेसतावां नै उजागर करौ?
2. 'थांरो ओ त्याग जगत में अमर रेवैला' इण कथन री विवेचना करौ?
3. अेकांकी रा मूल–तत्त्वां रै आधार माथै इण अेकांकी री समीक्षा करौ?
4. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–
   (अ) अैड़ा बिखा में छोड़तां म्हारौ काळजौ चिरीजै है। पण कांई करूं, मां। थनै इण बिपद सूं छुटकारौ दिरावण खातर ईज जाऊं हूं। मां। वंदवूं, लाख लाख परणाम। (आंखियां मांय सूं आंसू री लड़िया बै'वै)
   (ब) भामासा– अैतराज? इण सूं मोटो अैतराज फैर कांई हूं सकै, कै मेवाड़ री आन, मान नै मरजाद रौ रूखाळौ घर छोड़ नै दर–दर भटकै, नै म्है अठै तुरकां री पगथळियां चाट–चाट नै जिन्दगी बितावां? अैड़ा जीवणा बिचै तो मरणौ चोखौ।
   (स) धिन है भामासा। थांरी छाती नै धिन है। सिरदार– महाराणा। जठै तक भारत री धरती माथै अैड़ा नर–रतन ऊभा पगां है, उठै तक आपांणी सुतन्तरता सांम्ही कोई करड़ी निज़र सूं देख भी नीं सकै।

संस्मरण
सुरजो नायक

डॉ. नेमनारायण जोशी

लेखक–परिचै

डॉ. नेमनारायण जोशी रौ जनम 31 जनवरी सन् 1926 में नागौर जिलै रै गांव डोडियाणा में होयौ। आप जोधपुर रै जसवन्त कॉलेज सूं हिन्दी में प्रथम श्रेणी सूं सन् 1949 में अेम.अे. पास करनै कल्याण कॉलेज, सीकर में हिन्दी रा प्राध्यापक नियुक्त होया। सीकर कॉलेज में 14 बरस तांई नौकरी करनै उदयपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग रा प्रोफेसर अर अध्यक्ष रैया अर उण ई विस्वविद्यालय रै राजस्थानी विभाग रै अध्यक्ष पद सूं सेवानिवृत्त होया। वै राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर अर राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रा सदस्य ई रैया। डॉ. जोशी हिन्दी में छायावादी सलीके री घणी ई कवितावां रची, पण वां कवितावां नै छपाई कोनी। हिन्दी में फकत दोय पोथी छपी– 'सुमित्रानन्दन का नवचेतना काव्य' (सोध–ग्रंथ) अर 'चिन्तन–अनुचिन्तन' चिन्तन प्रधान निबन्धां रौ संग्रै है। राजस्थानी री मोकळी पत्रिकावां में आपरी रचनावां छपी। 'ओळूं री अखियातां' वांरौ राजस्थानी संस्मरण–संग्रै है, जिण माथै वांनै साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रौ राजस्थानी पुरस्कार मिळ्यौ।

पाठ–परिचै

संकलित संस्मरण 'सुरजो नायक' वांरै संस्मरण–संग्रै 'ओळूं री अखियातां' सूं लिरीज्यौ है। सुरजौ नायक अेक जीवंत पात्र है जिणरौ वरणन लेखक कर्‌यौ है। वौ अेक ताकतवार मिनख हौ। ताकत उण मांय इतरी है कै वौ अेकलौ ई पीठ माथै ऊखण'र पट्टियां मकान माथै चढाय देवै अर मिनख अचरज सूं देखता रैय जावै। दूजी घटना मांय दो नारेळां नै दोनूं हाथां सूं पकड़'र भच्च देणी भांग देवै। इण ताकत आळै सुरजै नै लेखक भूल नीं सक्यौ। आखिर मांय सुरजो कीं नसौ घणौ कर'र सुरग सिधारग्यौ।

सुरजो नायक

सुराज कांई आयौ, बळीतै तकात रौ गांव में टोटौ आयग्यौ। वौ भी जमानौ हौ, जद 'पो–म्हा' रै इसै ठारै में सिंझ्या री टैम, मिंदर में आरती री झालर बाजण रै सागै जागां–जागां सिगड़ियां चेत जाती। चीकणी गार सूं बणियोड़ी लूंठी सिगड़ियां में जाडी–जाडी कठफाड़ा पो'र रात गयां तांणी बळती रैवती, जठै जुड़'र भाई–सैण दुख–सुख री बातां करता। आज आखै गांव में मात्र दोय मातबिरां रै अठै सिगड़ी चेतै– कै तौ सेठ हीरालाल जी महेसरी री दुकान माथै अर कै जीवण चौधरी रै बारणै। कांकड़ में रूंखड़ा ई कोनी रैया, आवै कठै सूं बळीतौ? मुरदौ बाळबा खातर पण लकड़ी रौ तासौ रैवै। अर बिरखा पिण गैल रा बरसां में फोरी घणी रैयी। इंदर बाबै रै पिण, के बेरो के आंट फंस म्हेली है, जिकौ तूठै ई

कोनी! रूसियौ थकौ रैवै। गांव री माळ में कदे चाळीस बेरा चालता, ज्यां माथै खामां काढता सींचारां रा बोल माऊमाव टकरीजता, बठै आज चालै मात्र पांच। बाकी सै सूख'र खोड़ा हुयग्या। मझ ऊनाळै जोहड़ में दोबड़ी ऊभी रैवती गोडा–गोडांणी, जठै नैड़ा–नैड़ा गांवां रौ धन ढूकतौ, बठै आज इणी'ज गांव री मड़कल गायां जमीं सूंघती फिरै, चरबा नै तिणकलै रौ ई काम नीं। अर कितरौ धान निपजतौ हौ इणरै खेतां–जावां में। छोटा–मोटा करसां रै अठै थळ्या–मूंडै पड़ियौ रैवतौ। आज धान सूं गार री कोठी पिण नीं भरीजै। घरां में जाय'र देखौ तौ नाज हांड्यां में लाधै। कांई जमानौ आयग्यौ देखतां–देखतां ई! कांई बीजळी पड़ी है कै राम ई निकळग्यौ इण गांव रौ तौ। करसण री बढोतरी सारू सिरकार बापड़ी घणी'ज कोसीस राखै, घणा ई तरळा लेवै, पण धरती ई उत्तर दे देवै जरै कांई हुवै!

इण भांत नान्हो–मोटो काततो परमो ढोली कांमळी रौ खो'ल्यौ ओढ्यां चौधरियां रौ गिराळौ पार करै हौ। माथै में वीं रै कूकड़ी बणै लागी ही। जितरै तौ डावै पसवाड़ै सूं हेलौ आयौ– ''आव, आव दमामी, इयां कांई चाल्यौ परबारौ ई? आव, हाथ सेकलै थोड़ा। ठारौ बेजां पड़ै है।''

परमै री कूकड़ी रौ तार टूट'र मांय रौ मांय ताकळै माथै डोढौ–बांकौ लपटीजगौ। रूई री पूणी पिण के बेरौ कठीनै बिलायगी! जीवण चौधरी री आवाज पिछाणी जरै रस्तौ छेड'र सांकड़ै आवतौ बोल्यौ– ''पड़ै कांई है चौधरयां, नांव बूझै है। म्हारी ऊमर में तौ असी कोझी सरदी म्हूं को देखी नीं।''

''देखतौ कठै सूं? बूढीजण तौ हमै लागियौ है। आवती साल थनै ओजूं बेसी लागसी।'' हमकाळै आवाज मोवन नाई री ही।

परमो थोड़ौ–सो मुळक्यौ। नैड़ौ आय'र देख्यौ– सिगड़ी धप्पळ–धप्पळ बळ रैयी ही। खेजड़ै रा तीन घोचा कीं बेसी लांबा होण सूं नीचै जमीं माथै तीन पसवाड़ै टिक रह्या हा अर वांरा ऊपरला बूंगा राता लाल हुयोड़ा माथै सूं माथौ जोड़'र लपट री धजा उडाता म्हा' महीनै री ठंड सूं जूझ रह्या हा।

सांम्हीसाम बैठौ हौ जीवण जीवण चौधरी– घमकदार पेच रौ धोळौ पोतियौ बांध्यां अर खांधै दोवड़ी कामळ ओढ्यां। ओस्था पचास नैड़ी आयोड़ी, तौ पिण चैरै रौ रौब–दाब देखण जोग। कानां री लोळ तांणी आयोड़ी कलमां अर भरियोड़ी डंकदार मूंछां। मूंडै माथै तेल पयोड़ी डांगड़ी जिसी पळपळाट, जिण में कदे–कदे सांम्ही पड़ी सिगड़ी रा धपळका पळकै। जीमणै पसवाड़ै मूंगियां रंग रौ गोळ–घसक रौ फेंटौ बांधियां अर डील माथै धोळौ खेसलौ न्हांकियां बैठ्यौ हौ मोवन नाई। जीभ माथै सुरसती बैठती। बात इसी ठावी करतौ जाणै टकसाळ में ढळ'र नीसरी हुवै। सांमला नै पडूत्तर नीं लाधतौ। आखर जोधराम रौ गुण कोई न कोई बेटा में तौ आवणौ ई हौ। पण जोधराज दारू सूं जतरौ आंतरौ राखियौ, मोवन बतरौ ई वीं रै सांकड़ै रह्यौ। दारू घणी पीण सूं वीं रौ चैरौ साव पतळौ पड़ग्यौ हौ अर होठ काळूंसीजग्या हा। इण बखत पिण वीं रै मूंडै सूं हळकी कसबू आय री ही। सिगड़ी रै डावै पसवाड़ै रातै पोतियै माथै धोळी घूघी ओढ्यां बैठौ है सांवतौ गूजर– चाळीस रै लंगै–ढंगै, पण गोरी चामड़ी माथै ओस्था री सळां हाल उघड़ी नीं ही।

उकडूं बैठ'र परमो आपरा हाथ खो'ल्यै सूं बारै काढिया अर सिगड़ी रा धपळकां में वांनै यूं उल्ट–पुल्ट करण लागौ, जाणै हाथ नीं, बाजरै रा सिट्टा सेक रह्यौ हुवै। थोड़ौ निवास आयौ जरै ढूडी टेक'र आराम सूं बैठग्यौ।

सांवतै रौ घर पक्कौ बण रह्यौ हौ। वीं कांनी मूंडौ फेर'र चौधरी बूझ्यौ– ''थारै कमठै रौ कांई हाल है? पट्टियां चढगी हुसी आज तौ?''

अेक घोचै सूं सिगड़ी रा खीरा आघा–पाछा

करतौ सांवतौ पडूत्तर दियौ– ''कठै चढगी चौधरी? आजकाल रा मजूर न्याल करै है कांई? पो'र खंड दिन चढियां पै'ली तौ आवै ई कोनी। दो–दो वार वांनै बुलाण खातर जाऊं अर जियां–तियां भाई–बीरौ कर, पोटा–पोटू'र ल्याऊं तौ आवतां ई घेरौ घाल'र चिलम पीवण नै बैठ जावै। काम माथै कांई आवै जाणै म्हारै माथै अैसान करै। रीस तौ म्हनै अणूंती ई आवै, पण करूं कांई, मजबूरी रौ नांव महात्मा गांधी। आज पिण सूरज मथारै आयौ जठा तांणी तौ हाथ ई नीं घाल्यौ पट्टियां में, जाणै वां रै लारै सांप बैठ्यौ हुवै। फेर दो'रा–सो'रा होय'र नीठ आठ पट्टियां चढाई, जितरै तौ दिन तुरतुस्योक रैयग्यौ। बोल्या कै व्हैगौ काम आज रौ तौ।''

मोवन नाई सूं रैवणी कोनी आयौ। धोती रा चिल्ला साथळां रै पळेट'र गोडां माथै खींचतौ वौ ऊकडू होयग्यौ। बोल्यौ– ''है कठै मजूर? पांच–चार ढंकळ हुयोड़ा नवादू छोरा? वां रा बाप ई करी कदे मजूरी? मजूरी करण आळै रै डील में ओसांण चाईजै, ओसांण। थारला अै मजूरिया च्यार जणां भेळा होय'र सांकळां घाल'र ऊंच तौ लेवै पट्टी, पण वीं नै ले'र चालै जरै हेठानी पगां रा टांट्या लड़ै। इल्ल्यां है इल्ल्यां धान री, ज्यांनै पींचौ तौ पाणी नीसरै– रगत रौ तौ लवलेस ई कोनी।''

लकड़ी रा बूंगा बळता–बळता छेती खायग्या हा। वां रा खीरा झाड़'र माथा पाछा जोड़'र खवास ओजूं सरू होयग्यौ– ''अर साची बूझै चौधरी तौ इस्या मौकां माथै सुरजो नायक याद आवै। होतौ आज बिलालो तौ अेकलौ ई तीस पट्टियां अेक चिलम पीवां जितरी देर में– सई... सई... जरै ई सरका देवतौ।

''अेकलौ पट्टी चढा देवतौ?'' सांवतै री आंख्यां इचरज सूं चौड़ी होयगी। मोवन नाई रा गोडा आंच सूं तपग्या हा। दोयूं हाथां सूं वांनै पंपोळतौ वौ लारै सरक'र जबाब देवतौ, उण पै'ली तौ परमो ढोली ऊकडू होय'र सरू हुयग्यौ– ''और नईं तौ कांई दुकेलौ? म्हारै रूबरू री बात है। वा कूंट दीसै है के, बठै साहजी सा री हेली बण री ही। पट्टियां चढणी ही। कारीगर (सुरजो) पट्टी झेलबा खातर भींत माथै बैठौ हौ। हेठै चार मजूरया कूकरियां री जियां पट्टी सूं उळझ रह्या हा। उडीकतां–उडीकतां कारीगर आघतौ हुयग्यौ। सेवट खाय बूंबळ'र हेठै कूद आयौ अर धोती रा खो'जा टांकतौ बोल्यौ– ''परै हो जावौ रे नाजोगां! सात दिनां रा उवास्या हौ कांई? आगै जा'र भाठौ ई तौ है, सीसौ तौ आथ कोनी! आघी म्हेलौ थांरी अै सांकळां–फांकळां अर बैठ जावौ आंतरै जा'र।'

''डील में बीं रै, के बेरौ हड़मानजी आया कै भैरूंजी, आडी पट्टी जोधपुर री बा'रा फुटी पट्टी री कोरां गै'री झाली अर जोर री अेक 'हुम्' रै सागै मगरां रौ झालौ दे'र ऊंच ली। आदमी कांई हो बजराक हौ। नान्हा–नान्हा पांवडा म्हेलतौ लदाण माथै आधौ ई कोनी चढियौ, जीं पै'ली तौ पट्टी रौ आगलौ बूंगौ उतरादी भींत माथै म्हेल दियौ। फेर पाधरौ हुय'र लारलै बूंगै नै– आपां टैण रौ चद्दर पकड़ां– जियां पकड़'र दिखणादी भींत माथै म्हेल दियौ। आधी कलाक तांणी वा 'हुम्' 'हुम्' चालती रही अर पट्टियां सटाक–सटाक म्हेलीजती गई। मजूरिया सांस रोकियां, सांप–सूंघ्योड़ा–सा चिरबळ–चिरबळ देखता रह्या। पूरी बाईस पट्टियां म्हेल'र पसेव सूं न्हायोड़ौ वौ बारलै नीमड़ै री छियां कांनी चाल्यौ जद वीं री साथळां री फूल्योड़ी मछलियां रौ सळसळाट देख'र लोगां रौ जीव धापियौ। चूनै रा खाली तसळा माथै लियां सागै काम करण वाळी मजदूरणियां रा मन तौ डोलर हींडै चढग्या।

''घर धणी साहजी सा खुद अेक सौ इग्यारै लंबर रौ तिलक लगायां सो–कीं देख

रह्या हा– आ डीघी पूजती काया, अर आ चौड़ी छाती जिकी इण बखत भरीजियोड़ै सांस रै समचै, बी'त बी'त भर ऊंची–नीची हुय रैयी; भरियोड़ै चै'रै माथै अै... मोटा–मोटा आंखियां रा डोळा, जिणां मांयला राता डोरा गै'रा लाल हुयोड़ा; पींडियां, साथळां अर बूकियां माथै जाणै पींड म्हेल्योड़ा; पेट मांय धंसियोड़ौ अरपतळी ना'र जिसी कमर; लीलै भाठै सूं कोर'र जाणै मूरत काढी हुवै; खराद माथै चढा'र जाणै उतारियौ हुवै– अस्यौ वौ सरूप लाग रह्यौ। साहजी सा सांकड़ै आ'र थुथकारौ न्हांखता बोल्या– धन है भाई सुरजा थनै थूं इण गांव रै पाणी री लाज है। बडेरा कैंवता आया है कै नर री पींडी रौ मोल नीं अर आदमी री ताकत रौ कूंतौ नीं, सो सुणी तौ केई वार, पण आज आंखियां देखी है।

सुरजौ बोल्यौ– "सो तो मायतपणौ है थांरौ, पण नारेळ–आरेळ कोनी बधारणौ कांई?"

साहजी सा जाणै ऊंचै सूं पड़िया। बरसां सूं कमाई खातर परदेस रैवण मांयकर असी जरूरी रीत तकात री वांनै सुध नीं आई। हमै उम्हीज'र नैड़ै ई ऊभै आपरै बेटै सूं बोल्या– "जिया रे रामजी दो–च्यारेक नारेळ मांय सूं। दातारी में रामजी पिण बाप सूं दोय हाथ आगै हौ। आधी बोरी नारेळां री कच्चोड़ै घर में पड़ी ही, सो जियां री तियां ल्याय म्हेली बारणै। सै कारीगरां अर मजूरां नै न्यारौ–न्यारौ नारेळ मिळियौ। अठीनै सुरजै रै हाथ में नारेळ आयौ, अठीनै वौ म्हेल वीं नै चांतरै रै भाठै माथै अर जोर सूं मारियौ मुक्कौ– जाणै घण पड़ियौ हुवै लुहार रौ– अर डाढी सूधै नारेळ री चिटकां बिखरगी।"

परमै ढोली री कूकड़ी रौ तागौ औरूं पिण नीं टूटतौ, पण इण बिचाळै चौधरी अेक नूंवो घोचौ म्हेल दियौ हौ सिगड़ी में, जिकौ कीं आलौ हुवण सूं धुंवौ दैण लाग्यौ। बायरै री सोय सूं धुंवौ पाधरौ परमै री आंख्यिां में पूगियौ। सिगड़ी में फूंक दैण री बजाय दमामी लारै सरक'र ढूंडी टेक दी। सांवतौ अर मोवन बिलग्या जिकौ मार–मार फूंकां अर पाछी ध्‍ापळकै चढाय दी सिगड़ी नै

जीवण बोल्यौ– "अेऽ बीं दिन तौ म्हूं हौ कोनी गांव में। उणरै दूजै दिन री बात है। ओई कोई पो'रेक दिन चढियौ हुसी। म्हूं सिवजी भूतड़ै री दुकान माथै बैठौ हौ कै सुरजो आयौ बठै कीं सौदो लेवण नै सिवजी वीं नै बूझ्यौ कै म्हे तो सुणी सुरजा का'ल थूं मुक्की री देय'र डाढीदार नारेळ फोड़ न्हांखियौ, जिकी साची बात है कांई? सुरजौ मुळक'श्र कह्यौ कै सेठां, अेकलौ बाईस पट्टी चाढी, जीं री सांच तौ बूझी कोनी, नारेळ फोड़बा री भली बूझी! बापड़ै अेक नारेळ रौ कांई तौ फोड़णौ? हां, अलबत्ता दोय नरेळ अेकण सागै फोड़बा रौ मौकौ आवै जरै कीं ठा पड़ै। दोय रा आंना अढाई लागै बापजी, कठा सूं लाऊं गरीब आदमी? सिवजी बोल्यौ– मन री काढणी हुवै जरै तौ लाऊं। फोड़ नांखै तौ नारेळ थारा, नींतर म्हूं पाछा म्हारी दुकान में म्हेल लेस्यूं। सुरजो हामी भरी, जरै सिवजी मांय जाय'र बोरी मांय सूं उकराळ–उकराळ'र दोय नुंवां अर सच्चम नारेळ टाळ परा'र ल्यायौ। सुरजो दुकान रै दासै माथै दोनूं नारेळां नै आडा, उपराथळी म्हेल'र डावै हाथ सूं ऊपरला नारेळ नै काठौ ढाब लियौ। जीवणी मुक्की तांण'र ऊंची लेयग्यौ जठै तांणी तौ ठा है, पण के बेरो कद, बा बीजळी बण'र पड़ी कै अेक चिटक उछळ'र म्हारी डावी आंख रै ऊपर– इण जगां लागी, जद ठा पड़ी कै नारेळ दोनूं बिखरग्या हा।"

सांवतौ दोनूं हाथां सूं पगां री खाज खुजळातौ बोल्यौ– "बाइफुन्ना जुवा घणा ओ. .. अठै तौ। वाढ्यां म्हेलै।" खवास कह्यौ– "थारौ लोही मीठौ है। म्हारै तौ नैड़ा ई कोनी आवै। सांवतौ थोड़ौ–सो मुळक्यौ अर लाजां मरतौ–सो बोल्यौ कै म्हारै थोड़ौ चूनै रौ इंतजाम करणौ है, जिकौ म्हूं तौ हमैं चालस्यूं

रै भायां!'' फेर आपरी घूघी नै जचाय, हाथां नै उणरै मांय लकोवतौ वौ ऊभौ हुयग्यौ अर बहीर पड़ियौ। अंधारै में जावती धोळी घूघी थोड़ी ताळ तौ दीसती रही, फेर होळै–होळै अलोप हुयगी।

तमाखू रौ लकड़ी रौ गट्टौ, जिणरै मूंडै में चिलम पिण फंस रैयी ही, उठा'र खवास कांनी आघौ करतौ चौधरी बोल्यौ– ''भर रे मोवन अेक चिलमड़ी!'' मोवन पडूत्तर दियौ कै कांई करबा नै? कुण काळजौ बाळै फाऊ ई? पीवण जोगी चीज री तौ बूझी कोयनी अर चिलमड़ी कर दी आगै!'' समझदार नै तौ इसारौ ई काफी। चौधरी मुळक परो'र ऊठ्यौ अर हेली रै मांय परौ गयौ। बावड़ियौ पाछौ, जरै दोवड़ी कामळ मांय सूं हाथ बारै काढ दारू री बोतल खवास रै मुंडागै म्हेल दी। रंग देखतां ई मोवन अर परमो दोनूं पिछांण ली कै 'गुलाब' है, अर चैरा पिण दोयां रा गुलाब जिस्या ई खिलग्या। मोवन डाट खोल परो'र दारू में आंगळी डबोई अर माताजी रै नांव सूं छांटा ऊपरांनी हवा में उडाया। फेर तीनूं जणां बारी–बारी सूं बोतल रै मूंडौ चेड चेड'र गुटक्यां लेवण लाग्या। मैफिल जमगी। थोड़ी–सी तर्राटी आई अर कानड़ा कीं ताता हुया जरै मोवन बोल्यौ– ''हमै तौ भर परमा चिलमड़ी!''

आंगळी सूं कुचर–कुचर'र परमो गट्टै सूं तमाखू काढी अर हथेळी माथै म्हेल'र जीमणै हाथ रै अंगूठै सूं डांखळां नै मसळ्या। कांकरी नै नाळ रै मूंडै जचाय'र चिलम में तमाखू दाब–दाब'र भरी। फेर दोय घोचां रै चींपियै सूं अेक नान्हो–सो खीरो सिगड़ी मांय सूं काढ'र चिलम माथै जचायौ अर होळै–होळै सारी। जीवण घूंट लेय'र बोतलड़ी परमा कांनी आघी करी जरै परमो चिलमड़ी मोवन नै पकड़ाई। घूंट भर'र परमो बूझ्यौ कै आ बात म्हारी समझ में कोनी आवै कै वा ई दाळ–रोटी सुरजो खातो अर वा ई दाळ–रोटी आपां खावां, पण...?''

चिलम रौ धुंवौ छोडतौ मोवन बोल्यौ– ''अरे... खायां सूं कांई हुवै, हजम होवणौ चाईजै। घणौ चोखौ खावै, जिकां नै घणी बेगी सिगरणी होवै अर फेर तरड़्यौ करता फिरै। सै'रां सूं आवै कोनी कांई पिलांदरा पड़िया सेठ–साहूकार आपणां बैदराजजी कनै परपट्यां लेवण खातर? आखौ–आखौ दिन गादी–तकियां माथै गुड़िया रैवै अर घड़ी दोय घड़ी सिंझ्या री टैम घूमण नै जावै, तौ मोटरां में। पछै खायौ–पीयौ हजम हुवै कीकर? रोटियां वां रै पेट में उणी'ज तरियां पड़ी रैवै जिण भांत पै'ली कटोरदान में पड़ी हुती। अेक कटोरदान सूं काढ'र दूजै कटोरदान (पेट) में म्हेल देवण सूं रोटियां डीलां थोड़ी लागै! सो हाजमो बडी चीज है। सुरजै रौ हाजमौ जबरदस्त हौ। भाठा पिण खा जावतौ तौ हजम हुय जावता। थूं हौ नीं रे चौधरी, जोसीजी म्हाराज रै पोतै रामेसर री जांन में. .. सैंसड़ै?'' चौधरी माथौ हलाय'र बतायौ कै कोनी हौ।

''जरै किसै बिल में बड़'र बैठग्यौ हौ? गांव में तौ लारै बूढा–ठाडा गिणती रा आदमी रैयग्या हा। बिसी जांन म्हूं तौ म्हारी जिनगी में देखी नीं। गाड्यां सूं गाड्यां जुड़गी अर बींद रौ रथ ठेट सथाणै रै आपेटै पूंचग्यौ जतरै कोठीगडौ आपणी आकस्यां में ई पड़ियौ हौ। जांन सैंसड़ै पूगी जद साम्हलौ धणी मंगजी उपाधियो आ'र जोसीजी नै हाथ जोड़'र कह्यौ कै बापजी, जांनी तौ इतरा ल्याया जिका चोखा पण इतरा बळदां खातर चारौ म्हूं कठै सूं ल्यासूं? जोसीजी आकरा पड़िया– तौ कांई... फाटगी? लखपती रौ... बण्यौ फिरै है? म्हांनै पाळा बुलावण रौ मन हो कांई? पागड़ा नीं ऊंचै तौ झेलिया क्यूं हा? भलौ फिकर करियौ। हमार पाछी जुता देस्यूं

आठ–दस गाड्यां, जिकी आथण तांई भर चारौ अर ले आसी म्हारै गांव सूं।

''दूजै दिन परभातै खीचड़ी–बाटां री कच्ची रसोई होणी ही। रीत मुजब पुरसगारी रौ घी पास कराबा खातर ब्याही मंगजी अेक चरी में घी भर'र जांन रै डेरै ल्याया। उण बगत जोसीजी अमल गाळ'र मसंद लगायां, गादी माथै बैठा होकौ पी रह्या हा। डावै पसवाड़ै बैठ्या हा भोळूजी चौधरी, वां रा खासमखास अर जीमणै पसवाड़ै बैठ्या हा म्हारला काकोजी जोधराज नाई। चरी म्हेल'र मंगजी जाजम माथै ई बैठण लाग्या जद जोसीजी ऊठ'श्र वांनै हाथ पकड़'र आपरै जोड़ै गादी माथै बिठाया। होकै री नळी नै ब्याहीजी रै मूंडागै करी, हालांकै जोसीजी जाणता हा कै मंगजी तमाखू पीवै कोनी। मंगजी सेती बठै बैठ्या सै जणां मुळकिया। पछै आपरै पोतै मांय सूं अमल रा कुटका हथेळी माथै लेय'र वां रै मूंडागै करिया, जिणां मांय सूं अेक छोटी–सीक कांकरी नै उठा'र मूंडै में ले लीं

''होकै री नळी नै पाछी मूंडै में लेवता जोसीजी बोल्या– कर रे जोधराज घी री पिछांण। काकोजी आंगळी डबो'र घी देख्यौ– कसबू ली। बोल्या– घी सांतरौ है।

भोळूजी चौधरी पिण देखियौ अर तारीफ करी। घी पास हुयग्यौ।

''सुरजौ पिण बठै बैठ्यौ हौ, लारलै पसवाड़ै औरां रै सागै। वीं सूं बूझणी आयग्यौ– ईं चरी में कतरोक घी है जजमान? मंगजी अपूठा मुड़'र सुरजै कांनी मींट बांध'र देखियौ। बोल्या– हुसी ओई कोई पूंणीक च्यार सेर। क्यूं... पीणौ है कांई?

–नईं, अयां ई बूझ्यो हो। अर थे कैवौ हो जजमान, तो पी लेस्यां।

–आधौ–परधौ कै पूरौ ई?

–पूरौ ई पी लेस्यां, आधौ–परधौ क्यूं?

–दस्तां छूट जावैली, तरड़्यौ करता फिरोला।

–अेकर जाऊं जजमान निमटबा खातर, जकौ तौ जाऊंला ई। दूजी वार लोटौ उठाऊं तौ हाथ पकड़ लीज्यौ।

–जरै पीवौ परा, म्हे ई देखां।

सुरजौ ऊठ'र आगै आयौ। अेक करी न दोय, उठाय चरी अर मूंडौ टेक्यौ जकौ गटक–गटक–गटक... चरी खाली हुयां ई आघौ कर्स्यौ। मगजी रौ मूंडौ देखौ तौ थाप खायोड़ौ।''

बोतलड़ी रौ पींदौ आयग्यौ जरै जीवण वीं नै सिगड़ी रै हेठै गुड़काय दी। परमो धुंवौ छोड'र चिलम मोवन कांनी आघी करी। दोनूं हाथां में चिलम ढाब'र मोवन सफ–सफ करतौ अेक जोर रौ सफीड़ लगायौ अर धुंवै नै काळजै में उतार लियौ, जठै सूं वौ होळै–होळै, रमतौ–रमतौ ऊंचौ आ'र नाक रै रस्तै बारै निकळतौ रह्यौ।

चिलम झेलतां जीवण बोल्यौ– ''म्हूं तौ उण दिन रात पड़ियां मेड़तै सूं पाछौ आयौ जरै सुणी कै सुरजो तौ आज दारू पी'र मरगौ। वौ इसी अणूंती तौ कोनी पीवतौ हौ, फेर आ बात बणी कियां?''

मोवन पडूत्तर दियौ, ''अजी, जोग टळै है कांई? दिनूंगै सिरावण कर'र राजी–खुसी कमठै माथै वहीर हुयौ जरै कुण जाणी ही कै वीं रौ आज रौ दिन आंथैलौ नीं। घर सूं बारै नीसर्‍यौ ई हौ कै गढ रै दरीखानै में बैठ्या ठाकर सा'ब बारी मांय सूं ई हेलौ पाड़ लियौ– आव रे सुरजा, आव। कमठै माथै तौ रोजीना ई जावै। अेक दिन नाघा ई सही। सुरजौ जाणग्यौ कै आज तौ ठाकर दिनूंगै ई बोतल खोल ली दीसै। गढ री छियां में वीं रा बाप–दादा पीढियां सूं रैवता आया, जिकौ बेराजी कियां करतौ ठाकरां नै? मझ दोफारां बावड़ियौ गढ सूं तौ आंखियां रा डोरा राता लाल हौ म्हेल्या हा। क्यूं नीं उणी'ज बखत वीं रै छोरै नारांण रै सगपण री बातचीत करण सारू कड़ैल सूं पांवणा आ जावै? अेक दिन

आगै–लारै कोनी आ सका हा कांई? पण जोग पीवणौ हौ।

''भावै जोग म्हूं बठी सूं नीसरयौ। सुरजो म्हनै नैड़ौ बुला'र कह्यौ कै गोळ झूंपै में दोय माचा ढाळ दै अर छांन मांय सूं लाय'र पाणी री मटकी टिमची माथै म्हेल दै। म्हूं अै काम निवेड़ूं, जा पै'ली तौ वौ कलाळ रै घर सूं–नैड़ौ ई तौ है–दोय बोतलां नारंगी री लियायौ। अेक माचै माथै दोनूं पांवणा बैठिया अर दूजोड़ै माथै सुरजो अेकलौ। बठीनै छांन में रोट्यां री त्यारी हुय रैयी ही, जठै सूं अेक बाटकै में चार–पांचेक कांदा कटीज'र आयग्या। म्हूं चालण लाग्यौ जरै सुरजो बोल्यौ– बैठ–बैठ, जावै कठै है? खोल बोतलड़ी। अेक बोतल रौ डाट खोल'र म्हूं देवतां रौ छांटौ उछाळ्यौ अर बोतल पांवणां कांनी आघी करी। होळै–होळै मैफिल जमगी।

''अेक बोतल निठी जितरै पांवणां तौ तन्नैट होयग्या अर हाथ जोड़ लिया। म्हारी जीभ पिण आंटौ खावै लागी अर माथै में चकरी हींडौ चालग्यौ। सुरजै री आंख्यां रा डोळा– अै खीरा है क सिगड़ी में–इसा राता लाल हुयग्या। म्हारै कांनी देख'र सुरजो कह्यौ– ''खोल रे मोवन दूजोड़ी, पांवणा री मनवार तौ हाल करी ई कोनी। म्हूं कह्यौ– कै पांवणा तौ अबै कोनी अरोगै अर थे पिण हमैं रैवण दो। घी री चरी कोनी है जिकौ..!

''निजरां कांई घुमाई, दो बळबळता खीरा म्हारै चैरै माथै म्हेल दिया। म्हूं मांय तांणी धूजग्यौ। म्हारै हाथां नै बोतल खोलणी पड़ी अर पांवणां री मनवार करणी पड़ी, पण वै क्यूं पीवण लाग्या? मूंडौ चेड–चेड'र बोतल सुरजै कनै पुगाय दी। आपां बळदां नै नाळ देवां हां क, जियां वौ ऊपर सूं ई डग डग डग आधी'क बोतल मूंडै में ऊंधा ली अर बोतल म्हनै झिलावतौ बोल्यौ– लै, पीऽ। थनै थारै मानै जिकां री आंण है नीं पीवी तौ। फेर अेक बीड़ी सिळगा'र माचै माथै आडौ होयग्यौ अर गाणौ गावै लाग्यौ। म्हूं सोची कै ईं नै हमैं नींद चिप जावै तौ चोखी, पण कुण जाण्यौ कै वौ तौ बडोड़ी नींद री उडीक में है।

''पाछौ ऊठ'र बैठौ हुयग्यौ। कोई कीं कैवै, जा पै'ली तौ बोतल उठा'र बचियोड़ी दारू पिण पधरा ली अर खाली बोतल नै जमीं माथै गुड़ाय दी। म्हैं तीनूं जणां डरग्या अर म्हांरौ नसौ उतरग्यौ। चांणचकी बोल्यौ– अरे मोवन, म्हारै माथै में औ ढीमड़ौ चालै है जकौ तौ ठीक, पण ईं री पनड़ी माळजादी आ घड़ी–घड़ी में पड़ै है क खटी...ड़ खटीड़– ईं नै परी तोड़'र बगा रे!

''म्हूं देख्यौ कै औ सीत में आयोड़ौ हुवै ज्यूं कियां करण लागग्यौ। जतरै तौ कुड़त्यै नै खोल'र बगा दियौ अर बोल्यौ– आ पांणी री मटकी म्हारै माथै ऊंधा दै, बळत फूट रयी है।

''मटकी रौ पांणी माथै आवतौ नीं दीस्यौ, जरै वौ माचै सूं ऊठ्यौ, पण खाय गरणाटी'र पाछौ पड़ग्यौ। फेर ऊठ्यौ अर झूंपै रै बारणै सूं नीसर'र सांम्हलै कोहर रै कोठै कांनी चाल्यौ– अधर पगां, डावै–जीवणै हींडा खावतौ– ज्यूं बायरै में रूई रौ चूंखौ उडै– जाणै आंधी रै फटकारां में पांयां रौ भिंटोरौ मारग सोध रह्यौ हुवै। कोठौ तौ कोठौ, खेळी तांणी पिण नीं पूग्यौ हौ कै आंख्यां माथै काच फिरग्यौ। खेळी रै बारलै खाबूचियै रै कादै–पाणी में गडूरड़ा रमै हा, जिणां रै बिचाळै जाय पड़ियौ– धड़ीम! डरियोड़ा गडूर कादौ उछाळता बारै भाज्या। वां मांय सूं दोयेक खाबूचियै रै सांकड़ा ऊभा थोड़ी ताळ चूं–चूं करता रह्या, जाणै बूझता हुवै कै औ अजब–गजब रौ गडूर कठै सूं आयौ। मिंट दस–पांचेक लागी अर वौ नाड़ न्हांख दी।''

परमै अर जीवण नै सिगड़ी रै खीरां में घणी ताळ सुरजो दीसतौ रह्यौ– कादै में कळीज्योड़ौ, दम तोड़तौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

बळीतौ=ईंधन (जलाऊ लकड़ी)। टोटो=कमी। ठारै=ठण्ड (सर्दी)। आखै=पूरै (सम्पूर्ण)। कठफाड़ां–फाड़ियोडी लकड़ी। मुरदो=शव (लाश)। रूसियो=नाराज। मझ=बीच। उन्हाळै=गर्मी में। मड़कल=दुबली–पतली। नाज=अनाज। बूझै=पूछै। ओस्था=उमर। कसबू=गंध। अैसान=एहसान। ओंजू बेसी=ओर भी अधिक। हेठानी=नीचे से। उबास्या=भूखा (उपवास कियोड़ा)। पाळा=पैदल। अपूठा=पीछे। सेर=तौल की इकाई। चाणचकी=अचानक। गरणाटी=चक्कर। झाली=पकड़ी। पसेव=पसीना। माचा=खाट। सौदो=चीज–बस्त। होळै=होळै=धीरे धीरे। फाऊ=फोगट। ताता=गरम। हजम होवणौ=पचणौ। दिखणादी=दक्षिण दिसा में। सगपण=सगाई। तासौ=तंगी, कमी। गोडा–गोडांणी=(गोडां तांई) गोडां सूंणी। मड़कल=थाकोड़ौ, पतळौ, दुबळौ।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'सूरजो नायक' संस्मरण किण पोथी सूं सामिल करीज्यौ है–
   (अ) उणियारा ओळ्यूं तणा (ब) रोवणिया दासा
   (स) ओळूं री अखियातां (द) मन सूं कदै न वीसरै
   ( )
2. गांव में बळीतै तकात रौ टोटौ आयग्यौ–
   (अ) खेत खड़ण सूं (ब) अकाळ पड.ण सूं
   (स) धरती उतर देणै सूं (द) रूखां री कटाई सूं
   ( )
3. "आव हाथ सेकलै थोड़ा, ठारो बेजां पड़ै है।" आ बात कुण किणनै कही–
   (अ) चौधरी परमै नै (ब) मोहन परमै नै
   (स) परमै सांवतै नै (द) सांवतै मोहन नै
   ( )
4. "भावै ई जोग म्हैं बठी सूं नीसर्यौ।" बठी सूं कुण नीसर्यौ–
   (अ) मोहन (ब) सांवतो
   (स) सुरजो (द) जोधराज
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. जोधराज आपरै जीवण में किण चीज सूं घणौ आंतरौ राखियौ?
2. साहजी नै किण रीत री सुध नीं आई?
3. 'गांव रै पांणी री लाज' किणनै बतायौ गयौ है?
4. सिगड़ी रा खीरां में कुण दीसतौ रैयौ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. संस्मरण अर रेखाचितरांम में अंतर स्पष्ट करौ?
2. ''साहजी सा जाणै ऊंचै सूं पड़िया।'' साहजी री आ गत क्यूं हुई?
3. ''समझदार नै इसारौ काफी।'' इण ओळी रौ आसय स्पष्ट करौ?
4. अरै खायां सूं कांई हुवै, हजम होवणौ चाईजै।'' आ ओळी कुण किणरै सारू कैयी?

लेखरूप पडूतर वाळा सवाल

1. सूरजै री ताकत रौ बखाण करण वाळी दो घटनावां रौ खुलासैवार वरणन करौ।
2. 'ओ संस्मरण हकीकत रौ बखांण करतां थकां सही मारग चालण रौ इसारौ करै।' सहमति–असहमति बाबत आपरा विचार प्रकट करौ।
3. इण संस्मरण री गद्य शैली री विसेसतावां नैं दाखला देय'र समझावौ।
4. 'सूरजो नायक' संस्मरण रौ संदेस आपरै सबदां मे विस्तार सूं उजागर करौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) मझ ऊनाळै जोहड़ में दोबड़ी ऊभी रैवती गोडां–गोडांणी, जठै नैड़ा–नैड़ा गांवां रौ धन ढूकतौ, बठै आज इणी'ज गांव री मड़कल गायां जमीं सूंघती फिरै, चरबां नैं तिणकलै रौ ई काम नीं। अर कितरौ धान निपजतौ हौ इणरै खेतां–जावां में। छोटा–मोटा करसां रै अठै थळ्यां–मूंडै पड़ियौ रैवतौ। आज धान सूं गार री कोठी पिण नीं भरीजै।

(ब) आजकाल रा मजूर न्याल करै है कांई ? पो'र खंड दिन चढियां पै'ली तौ आवै ई कोनी। दो–दो बार वांनै बुलाण खातर जाऊं अर जियां तियां भाई–बीरौ कर, पोटा पोटू'र ल्याऊं तौ आवतां ई घेरौ घाल'र चिलम पीवण नै बैठ जावै। काम माथै कांई आवै, जाणै म्हारै माथै अैसान करै।

रेखाचितरांम
मक्खणसा

श्रीलाल नथमल जोशी

लेखक–परिचै

श्रीलाल नथमल जोशी रौ जनम 22 फरवरी, 1922 नै बीकानेर में होयौ। माता श्रीमती केसरबाई रै राजस्थानी भासा अर लोक–साहित्य रै गम्भीर ज्ञान रौ वां माथै घणौ प्रभाव पड़ियौ। श्री जोशी राजस्थानी रा चावा–ठावा अर ख्यातनांव साहित्यकार हा। उणां री केई पोथ्यां छप्योड़ी है, जिणां में प्रमुख है– आभै पटकी, धोरां रो धोरी, अेक बीनणी दोय बींद (उपन्यास), सबड़का (रेखाचितरांम), आपणा बापूजी (जीवणी), परण्योड़ी कंवारी, मैंदी कणेर अर गुलाब (कहाणी–संग्रै), नृसिंहगिरि स्तोत्र (कविता)। महताऊ रचनावां सूं राजस्थानी नै बधावौ देवण रै कारण वांनै घणा ई इनाम अर सम्मान मिळ्या। सन् 1959–60 में वांनै बांठिया पुरस्कार मिळ्यौ। 1979 में राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर सूं विसिस्ट साहित्यकार सम्मान मिळ्यौ। 'मैंदी कणेर अर गुलाब' (कहाणी–संग्रै) माथै राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी रौ पुरस्कार मिळ्यौ। 'हकूमत जनता री' रै राजस्थानी अनुवाद सारू वांनै साहित्य अकादेमी, दिल्ली रौ अनुवाद पुरस्कार मिळ्यौ। जोशी संपादक रै रूप में लूंठी पैठ राखता। सन् 1983 में राजस्थान सरकार कानी सूं 'हिवड़ै रौ उजास' रौ संपादन करियौ। सन् 1991 में 'युग–दर्शन' रौ संपादन करियौ।

पाठ–परिचै

मक्खणसा रेखाचितरांम वांरी पोथी 'सबड़का' सूं लिरीज्यौ है। मक्खणसा मिनखां जैड़ा मिनख हुवता थकां ई सोळवौं सोनौ है। भलांई वै काळा है, कोजा है, डरपोक है, घणखाऊ है। पण चोर–चार कोनी। रावळा मांय उणां री सीधी 'एन्ट्री' है। सोनौ भलांई उणां रै पगां में पड्यौ हुवै। उणनै वै धूड़ बराबर गिणता। इण सगळी विसेसतावां सूं मंडित है– 'मक्खणसा' रौ औ रेखाचित्राम, जकौ घणौ अंगेजण जोग है।

मक्खणसा

मक्खणसा री ऊमर अबार कोई इकताळीस–बयांळीस हुवैली, पण बातां हाल तांई टाबरां वाळी करै। रंग तौ रामजी रै घर सूं काळौ ई पांती आयौ, पण डील रा पूरा है– ऊंठ सूं थोड़–साक नीचा रैवै। पगरखी रौ अजूणौ कस्योड़ौ ई समझौ। ब्याव–सावै में माथै ऊपर बोदौ–सोदौ पेचौ बंधाय लेसी, कोट नवौ पैरसी, पण कोट रै मांय गंजी का कमीज को हुवैनी। धोती पैरसी धुआऊ, पण बांधै इसी ढीली ढबळ जाणै अबार खुली, घड़ी नै खुली। मनै तौ घणी बार औ डर लागै कै कणैई रस्तै बैवतै मक्खणसा री धोती धरती पड़ जासी अर मक्खणसा नागा हो जासी। पण हाल तांई तौ, माईतां रै भाग सूं, धोती पड़ती–पड़ती बंचै है।

गाभा पैर–पैराय'र आप असली पन्ना रौ कंठौ अर खरै मोत्यां री पौतरी पैरै। अै गैणा है तौ मक्खणसा रा आपरा, पण दीसै है मांग'र लायोड़ा।

मक्खणसा रै पट्टा छंटावण री तौ सौगन ई है, पण बिना अेढै संवार भी करावै नईं। अेक रै लारै भद्दर हुवै जिकै रा फेर कोई दूसरौ मरै तद भद्दर सूं पाछा भद्दर ई हुवै। जे कदास लागती–पागती में कोई नईं मरै अर मक्खणसा देखै कै अबै तौ माथै में जट कोजी बधगी, अर खाज खातर दाड़ी घड़ी–घड़ी कुचरणी पड़ै, तौ आप केई डागै, बाएती, माळी, मोदी, हरेक रै लारै भद्दर हो जावै, कारण, भद्दर री संवार करायां मोफत में चन्नण घसीजै, जट उतराई रौ कोडी अेक लागै नईं। पण घणी–सी'क वार केस अर दाड़ी बध्योड़ा ई रैवै। गैणा पैर–पैराय'र आप उभराणा पगां ई निकळसी। पग पावड़ां जिसा– बारै ई मास ब्याऊ फाट्योड़ी हुवै ज्यूं चीराळी–चीराळी रैवै।

मक्खणसा री खुराक

मक्खणसा रुपियै ऊपर जीमै, रुपियै ऊपर कांई जीमै, बस फूल ई सूंघै, घरवाळा सगळा जीम्यां पछै आप जीमण नै बैठै जिको रोट्यां री ओडी खाली कर देवै। बाबोजी जीम्यां पछै ठिया रैवै। जीमण री चाल मसीन रै बराबर तेज– डावै हाथ सूं फलको लेवै जित्तै जीवणै हाथ सूं गब्बौ कर जावै। पण घरै मक्खणसा धापै नईं। जद कोई जीमण–जूठण हुवै, तद ई इणां रै पेट रा सळ निकळै। जीमण मं ई घणा आदम्यां रौ बैधौ हुवै तौ धापै। पांच–सात मिनख नूंत्योड़ा हुवै अर जे मक्खण जीमण नै पैली पूग जावै, तौ का तौ रसोई दूसर बणै अर का पछै आवै जिका पाछा भूखा घरै जावै।

मक्खणसा जद जीमण जावै तौ साथै अैंढौ भी ले जावै। टाबरां री छोटी–सीक गोथळ्यां तौ झट भरीज जावै, पण मक्खणसा रै कूवै रौ हाल तळौ ई ढकीजै नईं, इण कारण बै देखै टाबर भूखा है अर उणां नै ठोलां सूं मार–मार'र जीमावै। ठोलां रै डर सूं घर रा टाबर भी इणां रै सागै जीमण रै नांव सूं कांपै।

अेक दिन मक्खणसा अेक छोटै बैधै में जीमण नै गया। सेठाणी पैली च्यार लाडू पुरस्या, दूजी बार में दो अर तीजी बार में अेक लाडू पुरस'र पूड़्यां रौ पूछण लागगी। मक्खणसा देख्यौ, आज तौ काम कठन दीसै है, इयां टोपै–टोपै सूं कणै घड़ौ भरीजसी? सेठाणी पसवाड़ कर निकळी अर मक्खणसा कैय दियौ, ''देय देवौ आठ लाडू!'' आठ सुणतां ई सेठाणी रौ काळजौ तौ फड़क–फडक करण लागग्यौ, पण जीमणियौ मांगै ज्यूं पुरसणौ तौ पड़ै ई। मक्खणसा इयां आठ–छव, आठ–छव कर–करनै नीठ पेट भरयौ।

अेक दिन आप बेढबीं पूड़्यां जीम'र आया। म्हैं पूछ्यौ– ''कित्ती'क पूड़्यां खायी आज?''

''कांई खायी, जीव सो'रौ कोनी जिकौ भायी कोनी आज तौ।''

''तौ ई कांई तौ खायी हुसी?''

''खायी कांई, अै ई पचास रै मांय–मांय खायी हुसी।''

मक्खणसा रै साब रै बेटै रौ ब्याव हुयौ, मक्खणसा नै भी जान लेयग्या। साब मक्खणसा नै डेरै में राखै, जीमण नै साथै नईं लेजावै, पण मक्खणसा खातर दस आदम्यां रौ कांसौ पुरसाय'र मंगाय लेवै। अेक दिन मांढै रौ आदमी डेरै में आय'र साब सूं बोल्यौ– ''कसूर माफ हुवै तौ अरदास करूं।''

''फरमावौ सा, कांई हुकम है।'' साब कैयौ।

मांढी संकतौ–संकतौ बोल्यौ– ''डेरै में लारै आदमी तौ अेक रैवै अर आप कांसौ मंगावौ दस रौ, बाकी रा नव जणां नै तौ

देख्या ई कोनी।

साब बोल्यौ– ''अछ्या, आज आप अेक ई कांसौ ना भेज्या।''

''औ हो, आप तौ रीस करली।'' मांढी गिड़गिड़ायौ।

साब कैयौ– ''नईं, नईं, रीस कोनी, आप बेफिकर रैवौ।''

मक्खणसा नै साब आज जीमण नै साथै चालण रौ कैय दियौ। मक्खणसा नसा–पता लेय'र त्यार हुयग्या। सगळा जीमण नै गया। मक्खणसा ई गया। और लोग तौ थोड़ी ताळ में जीम–जीम'र उठग्या, पण मक्खणसा हाल आधा ई धाप्या नईं। जामफळ वाळौ पूछै– ''क्यूं, दो देय दूं?'' मक्खणसा कैवै– ''बस, अेक–दो सूं बेसी ना दिया, हूं धाप्योड़ौ हूं।'' लाडू वाळौ पूछै– ''लाडू?'' मक्खणसा कैवै– ''थांरौ तौ मन राखणौ पड़सी, देय दो च्यार लाडू।''

जद मक्खणसा भांत–भांत रा खटका देखाळ्या, तौ कानी–मानी सगळा घेरौ घालनै ऊभग्या। पैली वाळौ मांडी मक्खणसा रै साब कनै आयौ, बोल्यौ– ''मक्खणसा, आं खातर तौ आपनै बीस जणां रौ कांसौ मंगावणौ चाईजतौ हौ, दस रौ मंगाय'र तौ आप लाई बामण रौ फालतू पेट रौक्यौ।

तीन सेर मीठै री होड

अेक मजूर केई सूं सवा सेर मीठौ खावण री होड करी। सवा सेर मीठौ सामलै सूं खायीज्यौ नईं जद दूणा पईसा चिपग्या। मजूर रौ हाव बधग्यौ, मक्खणसा सूं भिड़ग्यौ– दो सेर मीठै री होड में! लोकां समझायौ– ''अरे, दो सेर तौ मक्खणसा उडाय जासी।'' मजूर डरग्यौ। खैंचाताणी कर–कराय'र तीन सेर माथै होड पूगी– खाली मीठौ, साथै चरकौ नईं। जे मक्खणसा जीतै तौ दो रुपिया इनाम; जे हारै, तौ मिठाई रै मोल सूं दूणौ चटीड़!

खीरमोवन–जामफळ रौ अेक–अेक ठूंगौ आयग्यौ अर मक्खणसा हाथ साफ करणौ सरू कस्यौ। दो सेर उडायौ जित्तै तौ आपनै डकार ई को आयी नीं। पण, मक्खणसा मोथा जीमाकिया है, जीमण री अटकळ जाणै नईं। दो सेर मीठौ खायौ जित्तै अढाई–तीन सेर पाणी पेट में ऊंधाय लियौ जिकै सूं पेट तणीज'र नगारौ हुवै ज्यूं हुयग्यौ। अबै आप घबराया– ''अरे! जीत्यां सूं तौ आसी खाली दो छिलका, अर जे हारग्यौ तौ पंदरै कळदार खुस जासी।'' मीठै रौ भाव उण दिनां अढाई रुपियां सेर रौ हौ।

पण हाल तांई मक्खणसा अेड्यां रै ताण बैठ्या जीमता हा। अबै पालखी मारणी याद आयी, कोट रा बटण खोल्या, अर बीं दिन संजोग सूं पजामौ पैस्योड़ौ हौ, जिणरौ नाड़ौ ढीलौ कस्यौ। अबै मक्खणसा फेर थोड़ा ससवां हुयग्या। मीठै रौ ठूंगौ मक्खणसा सूं आघौ मेल्योड़ौ हौ, जे सगळौ मीठौ दीखतौ रैवै तौ छाती चढ जावै। मक्खणसा पूछ्यो– ''अबै कित्तो'क रैयौ है?'' मक्खणसा मांगौ तौ न्हांख दियौ, पण दिलासा दिरावण सारू म्हैं कैयौ– ''बाजी मारली, थोड़ी ई है अबै तौ।'' अर म्हैं फेर च्यार खीरमोवन पुरस दिया।

होड करण वाळौ मजूर घड़ी–घड़ी कैवै– ''देख, उल्टी ना कर दियै। जे करदी, तौ पईसा चिप जावैला।'' मक्खणसा नै उल्टी करावण सारू ई मजूर घड़ी–घड़ी उल्टी रौ नांव लेंवतौ हौ। मक्खणसा रौ हाथ तौ बराबर चालै, पण मांय सूं जीव घबरावै। उबकी आंवती–आंवती रैय जावै। अेक बार तौ थोड़ी–सीक गुचळकी आय ई गयी, पण मक्खणसा री बध्योड़ी दाढ़ी काम देयगी। मूंढै आडौ हाथ देय'र मक्खणसा गुचळकी नै दाढ़ी में रमाय दी। मजूर हाका तौ कस्या पण मक्खणसा ऊपर रौ ऊपर उडाय दियौ।

दो सेर खायौ जित्तै तौ बूंटी रा नसा सागीड़ा ऊग्या, पण अबै नकसा फीका पड़ण लागग्या। पसीनै रा बा'ळा बैवै, डील झोबाझोब होयग्यौ। मीठौ खांवतै–खांवतै कित्ती ई बार मक्खणसा हाथ में पाणी लियौ कै फेर तौ

कोई सूं मरतौ–जींवतौ होड करूं नईं, पण तौ ई मजूर नै कैवै– ''थारै लाई रै मोफत में नुकसाण हुवणौ लिख्योड़ौ हो जिको हुयग्यौ, अर रैयौ–खेयौ फेर हुय जासी। अबै तौ मिठाई थोड़ी–सी'क रैयी हुसी।'' आ बात कैंवता मक्खणसा छाकटा हुवै ज्यूं को दीसै नीं, पण इयां लागै कै साच्याणी आं रै मन में मजूर रै खातर हमदरदी है।

आखर मक्खणसा इत्ता छिकग्या कै टाबर नै ठगावै ज्यूं ठगा–ठगा'र मीठौ खुवावणौ पड़्यौ– अछ्या, अबै आठ रैया है, अबै छव रैया है...। तौ ई फेर, सूरज बापजी री साख भराय'र मक्खणसा हाथ में पाणी लियौ कै फेर तौ केई सूं भोळै भूल'र ई होड नईं करूं। इयां करतां–करतां मक्खणसा तीन सेर मीठौ मांय मेलग्या। मजूर रौ मूंडौ फलकौ हुवै ज्यूं हुयग्यौ, पण मरतै आक चाब्यौ– ठूंगां में रस बंच्योड़ौ है जिकौ भी तीन सेर में सामल है, पीवणौ पड़सी।'' तमासौ देखणिया कैयौ– ''रस री तौ होड को ही नीं।'' पण मक्खणसा देख्यौ कै रस रै कारण गुड़ गोबर हुवै है, ले ठूंगौ अर लिया सबड़का– ''हे... लै, औ रस!'' इयां कैय'र सगळौ रस सबड़ग्या।

मजूर दो रुपिया इनाम देय'र बोलौ–बोलौ टुरग्यौ।

रंग–ढंग

मक्खणसा नै पोगाय'र भलांई कोई उणां रा घर–जायदाद आपरै नांव करवायलौ। चलाक लूंकड़ी कागलै नै धुरु बणाय'र ज्यूं रोटी लेयगी उणी तरै मक्खणसा कनै कित्ती ई लूंकड़्यां ढूकै, अर सगळ्यां आपरै भाग सारू कांई–न–कांई पावै, खाली नईं जावै।

अेक डाकोत कैयौ– ''मक्खणसा! थांरै आगै डागा, रामपुरिया भी पाणी भरै। थांरी पगथळी री ई होड नईं कर सकै। धरम–पुन में थांरै जिसौ जीव राजा–म्हाराजावां में ई कोनी।''

''अरे वाह रे डाकोत! तनै मक्खणसा नूंईं री नूंईं रजाई काढ'र देयदी। आप सियाळै में गूदड़ौ आधौ बिछायौ अर आधौ ओढ्यौ।

मक्खणसा रै घर में धान–चून जोवौ तौ ऊंदरा थड़ी करता लाधसी। बऊ जे धान लावण रौ कैसी तौ दस बार कैयां भी सुणाई हुवै नईं; पण जे आप धान लांवता हुसी अर मारग में बडाई करणियौ सांम्ही मोडौ मिल जासी तौ आधौ–पड़धौ धान दड़ाछंट बांट देसी।

आखी दुनिया मक्खणसा री दातारी रौ डंकौ पीटै, पण घरवाळा कैवै– ''तूं दादियै बायरो है, थारै में कोडी रा ई सऊर कोनी, बळी थारी दातारी भूंडी लागै!'' अै बोल मक्खणसा सूं झलै पण कांकर झलै जदकै सगळा लोग बांरी बडाई करता को धापै नीं। इण कारण घरवाळां सूं मक्खणसा री कमती बणै। जे कोई घरवाळौ चोखी सीख देसी तौ वा चोपड़ियै घड़ै री छांट दांई तिसळ जासी। इत्तै सूं लारौ नईं छूटै। मक्खणसा बड़बड़ाट करता घर सूं निकळसी, जिकै रा थोड़–सी'क दूर जांवतै ई जोर–जोर सूं गाळ्यां काढण लाग जासी। जे कोई चासा पीवणियौ हंकारा देवण लाग जासी, तौ आप भूं–भूं रोवण लाग जासी अर साच्याणी आंसू लासी।

आप नौकरी करै– जमादारी। अेक रात आपरौ पौरौ कोयलां कांनी हौ। तीन माणस आया, दो तौ आपनै बातां में लगाय लिया अर तीसरौ कोयला पार करतौ रैयौ। मक्खणसा इसी जमादारी करै। पण फेर भी आपनै रात री डिपटी में राखणा पड़ै। जे दिन री डिपटी में राखै तौ लोग इणां रौ उदबुदौ रंगढंग देख'र ''हाऊड़ौ! हाऊड़ौ!!'' हाका करण लाग जावै। मक्खणसा रा तमासा देखण सारू मोकळा माणस भेळा हुय जावै। इण तरै मेळौ मंडायोड़ौ अफसरां नै पोसावै नईं अर मक्खणसा री रोटी भी खोसणी चावै नईं। इण कारण रात री डिपटी देय'र मक्खणसा नै धिकावै।

जे कदास मक्खणसा दिन रा कारखानै पासी आय जावै अर मजूर आपस में सल्ला कर'र, 'हाऊड़ौ–हाऊड़ौ' नईं कैवै, तौ भी आपनै सुवावै नईं। मजूरां नै चुप देख'र मक्खणसा अेक दिन कैय ई दियौ– ''आज सगळा अणबोल हौ, जाणै माईत मरग्या हुवै।

लैण–दैण

मक्खणसा रुपिया बौरै, बौरै कांई, दुनिया नै लूंटै! आनो रुपियो ब्याज कमावै! पण इणां रा सैंस्कार पोचू है– ब्याज तौ इणां नै देवै ई कुण, मूळ पाछौ चूकायदै इसौ भलौ माणसक भी इणां रै ढूकै नईं। पण है मक्खणसा धनगैला। अबार ई थे जे अेक आनै रुपियै रौ लोभ देवौ, तौ झट थांनै रुपिया उधार देय देसी। राम दिरावै तौ पाछा दिया, नईं तौ चकन्दा कर जाया। मक्खणसा उंतावळा बोल'र तगादौ भी नईं करै अर धीरै कैयां रुपिया पाछा देय देवै इसा मिनख पड्या कठै है?

आप हैंसाब पाई–पाई रौ मूंढै राखै, चूक छदाम री री करै नईं। जे मक्खणसा खुद केई कनै सूं रुपियौ–टक्कौ उधार लेसी, तौ पाछौ तौ देय देसी, पण देसी रुळा–रुळा'र।

सागीड़ा तिराक

खेजड़ै री ऊंची डाळ सूं, आंख्यां मींच'र आप तळाव में गंठौ बीड़ै, सागीड़ौ पाणी उछाळै। आप ऊभी तिरणी तिरै, मुड़दा–तिरणी तिरै, तळाव रा घूम–घूम'र चक्कर काटै। पण मक्खणसा न्हायां पछै पैरण सारू साथै दूजा गाभा नईं लावै। सागी आला पूर पैरै। घरै जावै जणै दीसै इसा जाणै न्यारै (मसाणां) सूं पधारया हुवै, पण मक्खणसा नै जाणै जिका तौ समझ जावै कै आप तळाव सूं पधारया है।

तगदीर सिकन्दर

का तौ मक्खणसा घर में पाणी लावै ई नईं, अर जद लावण लागसी तौ कूंडी री पट्यां सूं टकराय देसी। माटा–झरबा, लोटा–कळसिया सगळा भर देसी। बीजा माणस तौ टूंटी कनै ऊभा बारी नै अडीकता रैवै अर मक्खणसा आंवतै ई जचै जिकी लुगाई नै झाल बूकियौ अर छेड़ै कर देवै अर आपरौ घड़ौ भर लेवै। घणी–सी'क लुगायां तौ खिलखिला'र हंसण लाग जावै, पण जे कोई नवै नाक आळी गाळ्यां काढण ढूक जावै तौ मक्खणसा नै डर को लागै नीं, वै खुद आपरौ रेडियौ चालू कर देवै।

मक्खणसा लूंबौ लाया

मक्खणसा टाबर हा जद री बात है। इणां रै सेठां रै घर में कोई रौ ब्याव हौ। घर आगै जळसौ होयौ, भगतण्यां नाची। मक्खणसा सदेई गावणौ सुणन नै जावता। अेक दिन उणां री मां भी गयी। सेठां मां नै पूछ्यौ– ''तनै किसी गावणै में ठाह पड़ै है जिकौ आयी है सुणन नै?'' मां इयां ई नस सूं हंकारै रौ लटकौ कर दियौ। सेठां पूछ्यौ– ''आ कांई गावै है बताव?'' हाकै रै कारण मां नै सुणीज्यौ– ''कित्ता जणा करै है गावणौ?'' मां जीवणै हाथ री पांचूं आंगळ्यां देखाळदी– ''भई पांच जणा है– अेक तौ गावण वाळी, दूजौ तबलै वाळौ, तीजौ पेटी वाळौ, चौथौ सारंगी वाळौ अर पांचवीं गावण वाळी री मां।'' उण बगत भगतण पंचम सुर में अलाप लेवती ही। माजी री पांच आंगळ्यां देख'र सेठां सोच्यौ– डोकरी समझै दीसै। सेठ राजी हुया, मुनीमजी कनै सूं झट पांच रुपियां रौ नोट इनाम में दिराय दियौ।

माजी तौ रुपिया लेय'र मैफिल रै अधबिच में ई घरै टुरग्या। जद छोटो–सो'क मक्खणियौ घरै गयौ तौ मां झड़फड़ायौ– ''देख, तूं तौ नित–हमेस रात री अेक–अेक दो–दो बजाय'र आवै, पण ठोक्यै भाग रैवै, हूं तौ आज ई गयी जिकै में रुपिया पांच इनाम रा लेय आयी।''

मक्खणसा सोच्यौ– काल बात। आप ई सेठां री जाजम ऊपर बैठ'र लोगां रै देखादेख नस रा लटका करण लागग्या। सेठां री निजर

बठीनै पड़ी, पूछ्यौ– ''अरे मक्खणिया, इत्ता लटका करै, तूं किसौ समझै है, बताव आ कांई गावै है?'' मक्खणसा बोल्या ई– ''क्यूं, समझूं क्यूं कोनी, मनै तौ सगळी ठाह पड़ै है। आ गावै है...'' इयां कैय'र दोनूं हाथां री दसूं आंगळ्यां दस रुपिया लेवण खातर सेठां रै सांम्ही कर दी। सेठां रौ सभाव कीं अकरौ हौ। नौकर नै हुकम दियौ– ''ईं मक्खणियै नै बांध'र घोड़ां रै ठाण कनै गुड़काय दै। रोज–रोज अठै जाजम ऊपर बराबर आय'र बैठ जावै अर गैला लटका करबो करै, सऊर कोनी धूड़ खावण रौ ई।

मक्खणसा थोड़ी ताळ ठाण री हवा खाय'र घरै आया। मन में विचार कर्‌यौ– आ भगतणकी नईं आंवती तौ ना तौ गावणौ हुंवतौ, ना हूं लटका करतौ अर ना ठाण कनै गुड़कायीजतौ। काल ईं रांड रौ कोई लूंबौ–झूंबौ तोड़'र लाऊं जणै जीव सो'रौ हुवै।

सियाळै री रात ही। मक्खणसा भगतण रै पसवाड़लै पाटै माथै चदरौ छीदो कर'र बैठग्या– भई आ इत्ती नाचै–कूदै है, कणै–न–कणै तौ कोई लूंबौ पड़ ई जासी।

भगतण नै जुखम इत्ती जोरदार कै रुमाल आलौ गार हुयग्यौ, पण हाल तांई नाक सूं पाणी पड़ै। मौकौ देख'र भगतण मक्खणसा रै चदरै माथै टेचो न्हांख दियौ जिकौ बीजळी री सैचनण रोसणी में पळपळाट करतौ मक्खणसा नै लूंबौ ई लागयौ। झट कर चदरियौ भेळौ अर मक्खणसा दिया ठोका। मां घर रौ बारणौ खोल्यौ कोनी जित्तै तौ मक्खणसा कैय ई दियौ– ''तूं तौ लायी काल पांच रुपिया, म्हैं लायौ हूं लूंबौ!'' घर में दीयौ जगायोड़ौ तौ हो नीं। डोकरी चदरै में लूंबौ जोवण लागी तौ अंधारै में हाथ भरीजग्यौ। मक्खणसा तौ देख्यौ मनै मिलसी सबासी, पण पांती आयी गाळ्यां अर ठोलै रौ भचीड़।

नसैबाज मक्खणसा

नईं जणै तौ मक्खणसा नै दुनिया भर रौ सोच रैवै। कणैई रोवै कणैई हंसै, पण बूंटी रौ लुगदौ चबायां पछै आपनै ईं दुनिया री सुध–बुध नईं रैवै। मूंडौ सूज'र तूंबौ हुवै ज्यूं हुय जावै, आंख्यां रा पट गैळीज जावै, चाल में इसी मस्ती आवै कै पांच मिंट सूं पांवडौ धरै। पग उठावतै इसी ठाह पड़ै जाणै पगां रै जेवड़ी बंध्योड़ी है।

पण है अबार मस्ती री बेळा– थे गाळ्यां काढ दो, घुद्दा लगाय दो, मक्खणसा रै रीस नैड़ी ई को अड़ै नीं। आप बराबर मुळकता रैसी। हां, आ जरूर है कै थे जे कैसौ– ''कानां रै लूंगां री बिड़ग्यां ढीली हुयगी'', तौ आप लूंग झट संभाळ लेसी। जे कनै ऊभा दस आदमी बारी–बारी दस बार कैसी, तौ आप दस बार संभाळ लेसी। जे अेक आदमी दस बार कैसी, तौ ई पांच–सात बार तौ संभाळ ई लेसी।

जद इयां मस्त हाथी दांई मक्खणसा झूम–झूम'र चालै, तौ गळ्यां रा कुत्ता भुसण लाग जावै। पण हाथी लारै कुत्ता घणा ई भुसै। फरक इत्तौ है कै साच्याणी हाथी रै कुत्ता बटकी को भरैनी अर मक्खणसा रै निरी बार घबूर काढ लेवै। पैलड़ै रौ डंक आछौ हुवै जित्तै दूजौ त्यार! अेक दिन तौ सागी कुत्तौ मक्खणसा नै अेक गळी में आंवतै अर जांवतै दो बार खायग्यौ।

गण कच्चौ

जे कोई कच्ची छाती वाळौ अंधारै में मक्खणसा नै अेकाअेक देखलै तौ काळजौ गिरै छोडदै, पण अचम्बौ तौ औ है कै मक्खणसा रौ आपरौ गण कच्चौ है। जद कदैई रात रा सूनवाड़ मांय सूं अेकलौ जावणौ पड़ै तौ कोई न कोई कैर–बोरटी–खेजड़ै–जाळ में पक्कायत कोई न कोई भूत–भूतणी दीख जावै। मक्खणसा कैवै– ''जे दूसरै आदमी नै दीख जावै तौ छाती फाट'र मर जावै। औ तौ म्हैं हौ जणै अैसी दाकल करदी जिणसूं भूत रौ बस को चाल्यौ नीं।'' कदै–कदैई मक्खणसा

नै दो–तीन भूत भेळा ई दीस जावै, पण मक्खणसा री दाकल देवण री हीमत नईं पड़ै अर इणां नै ताव चढ जावै, दो–च्यार दिन घर में सूता रैवै। फेर भी लोग इणां री भूत–पलीत री बात रौ भरोसौ नईं करै।

अेक बार सिंझ्या रा आप तळाव सूं न्हाय'र घरै आवता हा। सागै अेक म्हाराज दूध रौ गूणियौ लियां चालता हा। म्हाराज भूत–खईस डाकण–स्यारी रा झाड़ा तौ बतावता हा, पण मक्खणसा नै साच्याणी भूत दीसै; आ बात नईं मानता।

आज मक्खणसा नै साच्याणी भूत दीस्यौ! मक्खणसा भाग्या, इसा भाग्या जाणै कोई पइया लाग्योड़ा हुवै। म्हाराज रै माथै में इणरौ अरथ रत्ती भर समझ में नईं आयौ। थोड़ी–सी'क ताळ नै रोही रौ चक्कर काट'र मक्खणसा म्हाराज रै कनै कर सैंपूर चाल सूं निकळ्या। म्हाराज देख्यौ– आज तौ साच्याणी दाळ में काळौ है। म्हाराज थोड़ा आगै गया, जित्तै मक्खणसा फेर दड़बड़–दड़बड़ करता, सागीड़ा हांफ्योड़ा, पसवाड़ कर निकळ्या। म्हाराज सोच्यौ– आज तौ मक्खणसा में साच्याणी भूत बड़ग्यौ दीसै अर म्हारै कनै दूध है, इण कारण म्हारै बार–बार चक्कर काटै है, जे कदास म्हैं भूत री फेट में आयग्यौ तौ औ दूध कीं रै आडौ आसी?

झाड़ागर म्हाराज च्यार सेर दूध धरती माता नै पाय दियौ। मक्खणसा नै तीन दिन ताव आयौ, म्हाराज नै पांच दिन!

गवैया मक्खणसा अंगरेजी समझै

मक्खणसा गवैया चोखा है, पण ज्यूं कैयौ कुंभार गधै नईं चढै, उणी तरै मक्खणसा भी कैयां सूं गावै नईं। मक्खणसा रौ कंठ मीठौ है, राग री मोड़ भी जाणै, पण गावै है 'रबड़ छंद'। रबड़ छंद में भी आप तुकान्त रौ ध्यान राखै। नमूनै खातर–

''भजन बिना रे, बीती जाती है उमरिया।
नित नहीं नेम नहीं, सन्तों से प्रेम नहीं,
सिर पर धरी रे
मूरख तेनै क्यों,
युवा उमर गमाई,
उर्जन, नर्जन, तर्जन,
अब क्यों नीं पटकै
.....पाप की गठरिया।''

जिणमें केई सबद फालतू कैय'र लारै जांवतौ 'उमरिया' री तुक 'गठरिया' सूं मिलाय देसी।

कारखानै रै साब लोगां रा बंगलां कनै कर निकळै जद मक्खणसा पैली सूं ई गावणौ सरू कर देवै। रस्तै में मिलै जिकै नै आप कैवै– ''म्हारै गावणै सूं आज साब री मैम बौत राजी हुयी।''

''थांनै कांई ठाह?''

''म्हारै सामनै ई तौ मैम बडाई करी साब रै आगै म्हारी।''

''थे किसा अंगरेजी समझौ हौ, मैम तौ अंगरेजी में कैयौ हुसी नीं।''

''अंगरेजी समझूं क्यूं कोनी, मैम कैयौ– देखो गुट मैन, नो मिस्टेक, म्हाराज इस फ्रन्ट बिचारा कैसा अच्छा गाता है।''

''आ तौ सफा खोटी अंगरेजी है।''

''म्हैं कोई अंगरेजी पढ्योड़ौ थोड़ौ ई हूं। इत्तौ तौ हिरदै री उकत सूं समझग्यौ। पण म्हारौ गावणौ जे मैम रै दाय नईं आवतौ, तौ म्हारै सामनै देख'र वा हंसती कांय वास्तै?''

सोळवौं सोनौ

मक्खणसा काळा है, कोजा है, डरपोक है, घणखाऊ है, पण चोर–जार कोनी, इण कारण बडा–बडा रावळा री जिनानी डोढ्यां जिणां में चिड़ी रौ जायौ भी नईं बड़ सकै, मक्खणसा खातर खुल्या है। बठै जे सोनौ ई पगां में पड़्यौ हुसी तौ आप उणनै धूड़ बराबर समझसी। पारकी चीज नै पारकी अर आपरी नै आपरी समझै, इण कारण मक्खणसा मक्खणणा हुवतां थकां भी सोळवौं सोनौ है।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

जीमण=भोजन। उभराणा पगां=अळवाणा पग, बिना पगरखी। पुरसणौ=परोसणौ। रीस=किरोध, झाळ। मोफत=फोगट में, बिना मोल चुकायां। झोबाझोब=पसीनै–पसीनै पोगाय'र=राजी कर'र। उदबुदौ=अजब–गजब रौ। सागीड़ा=सांतरा, सांगोपांग। तिरणी=तिरणौ। बडाई=सरावरा, प्रसंसा। पगथळी=पगां रै हेठलौ भाग। भूंडी=बुरी, माड़ी। पसवाड़=अेक कांनी, पसवाड़ै। घणखाऊ=घणौ खावणियौ। उतावळा=खतावळा, जल्दबाजी। लारौ=पीछौ। खैंचाताणी=रस्साकसी, खींचताण। टैंचौ=नाक सिणक'र सेडौ न्हाख दियौ। गण=प्रक्रति। गब्बौ=खावणौ, बेगौ–बेगौ खावणौ। धुरू=मूर्ख। हाऊड़ौ=डरावण वाळौ सबद। चासा=ठिठोळी। अैंढौ=संगी–साथी।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. मक्खणसा री उमर कित्ती ही–
   (अ) पचास–इक्यावन (ब) इकताळीस–बयांळीस
   (स) पैंताळीस–छयांळीस (द) साठ–इकसठ
   ( )
2. मक्खणसा किणरै ब्याव में गया हा–
   (अ) साब रै भाई (ब) साब रै भतीजै
   (स) साब रै बेटै (द) साब रै भाणजै
   ( )
3. मजूर अर मक्खणसा रै बिच्चै कित्ता रुपियां री सरत लागी?
   (अ) दस रिपिया (ब) इक्कीस रिपिया
   (स) चार रिपिया (द) दो रिपिया
   ( )
4. अेक डाकोत कैयौ– मक्खणसा, थांरै आगै सै पाणी भरै। अै कुण पाणी भरै?
   (अ) डागा, रामपुरिया (ब) कुंभार
   (स) साब (द) भगतण
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. मक्खणसा, मक्खणसा हुवता थकां ई कांई है?
2. सेठ माजी नै कित्ता रौ नोट इनाम मांय दियौ?
3. मक्खणसा रै गावणै सूं कुण खुस व्ही?
4. मक्खणसा अर मजूर रै बिच्चै कुणसी मिठाई री सरत लागी?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. इण रेखाचितरांम में मक्खणसा रौ कांई संदेस है?
2. मक्खणसा रौ चरित्र–चित्रण आपरै सबदां मांय मांडौ।

3. मक्खणसा री खुराक कांई ही, आप खुलासैवार लिखौ।
4. अरे खायां सूं कांई हुवै, हजम होवणौ चाईजै।'' आ ओळी कुण किणरै सारू कैयी?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. मक्खणसा रै जीवण सूं आपनै कांई सीख मिळै?
2. ''मक्खणसा रौ गण कच्चौ हौ।'' इण बात नै उदाहरण देय'र समझावौ।
3. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) मक्खणसा रुपियै ऊपर जीमै, रुपियै ऊपर कांई जीमै, बस फूल ई सूंघै, घरवाळा सगळा जीम्यां पछै आप जीमण नै बैठै जिको रोट्यां री ओडी खाली कर देवै। बाबोजी जीम्यां पछै ठिया रैवै। जीमण री चाल मसीन रै बराबर तेज– डावै हाथ सूं फलको लेवै जित्तै जीवणै हाथ सूं गब्बौ कर जावै।

(ब) मक्खणसा गवैया चोखा है, पण ज्यूं कैयौ कुंभार गधै नईं चढै, उणी तरै मक्खणसा भी कैयां सूं गावै नईं। मक्खणसा रौ कंठ मीठौ है, राग री मोड़ भी जाणै, पण गावै है 'रबड़ छंद'। रबड़ छंद में भी आप तुकान्त रौ ध्यान राखै।

यात्रा–संस्मरण
म्हारी जापान यात्रा

राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

लेखिका–परिचै

राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रौ जनम वि. संवत् 1973 में मेवाड़ रियासत रै देवगढ़ ठिकाणै में होयौ। उणां रौ ब्याव बीकानेर रियासत रै रावतसर ठिकाणै रा रावजी सागै होयौ। बाळपणै सूं ई साहित्य कांनी आपरौ लगाव हौ। राजस्थानी संस्क्रति सूं गैरै लगाव रै कारण आप उणरी घणी ई भणाई करी। आपरी राजस्थानी में लिख्योड़ी पोथ्यां इण भांत है– 'मांझळ रात', 'गिर ऊंचा ऊंचा गढां', 'मूमल', 'कै रे चकवा बात', 'अमोलक बातां', 'हुंकारो दो सा' अर 'टाबरां री बातां'। अै सगळा कहाणी–संग्रै है। राजस्थानी लोकगीत, राजस्थानी दोहा संग्रह, जुगल–विलास अर वीरवांण राणीजी री सम्पादित पोथ्यां है। आं रै अलावा राणीजी हिन्दी में ई मोकळी पोथ्यां लिखी है। इण भांत राजस्थान रै साहित्यकारां में आपरी लूंठी ठौड़ है। यात्रा–विवरौ लिखण मांय आपनै महारत हासल हौ। 'हिन्दुकुश के उस पार' नांव री पोथी इणरौ पुख्ता प्रमाण है। राणीजी साहित्य–सेवा रै सागै–सागै सामाजिक, राजनीतिक अर सांस्कृतिक ज्ञान री मोकळी प्रवृत्तियां सूं जुड़ियोड़ा हा। विदेसां में केई कान्फ्रेंसां में आप भारत रौ प्रतिनिधित्व करियौ।

पाठ–परिचै

सन् 1959 में जापान में हुवण वाळी 'अेंटी अेटम हाइड्रोजन बम वर्ल्ड कान्फ्रेंस में भाग लियौ। उण यात्रा रौ औ वरणन रोचक अर प्रवहमान सैली में करियोड़ौ है। इणनै पढतां पांण जापानी जनजीवण, सांति–स्मारक, म्यूजियम, हिरोशिमा री विधंसक लीला, सांति मार्च री रंगीली दृश्यावली आद पाठक रै हियै मांय तस्वीर जियां मंड जावै। म्यूजियम मांय देख्या चित्रामां सूं मिनखां रै हिरदै मांय करुणा रा भाव जाग्या अर सगळा मन ही मन निस्चै कर्‌यौ कै अैड़ौ विणासकारी जुद्ध भविस में नीं होवै, नीतर स्रिस्टी रौ विणास व्हे जावैला। इण विध्वंसक लीला में लील हुया जुझारां री देवळी जाय'र सगळा नतमस्तक होवै।

म्हारी जापान यात्रा

(1)

जापान रौ असली नाम जापान नीं है। उणरौ असली नाम निप्पोन है। जापानी आपरा देस नैं निप्पोन कैवै। परदेसियां रा अशुद्ध उच्चारण सूं निप्पोन जापान बणग्यौ।

जापान देस चार टापुवां सूं बण्योड़ौ है। आं में होन्शू टापू सबसूं मोटौ है। टोकियो, ओसाका, क्योटा, हिरोशिमा वगैरा जापान रा खास–खास शहर इणी'ज टापू में बसियोड़ा है। बीकिना रा तीन टापू इण सूं चिप्योड़ा है। उतराद में होकायडो टापू है, दिखणाद में सिकोकू अर क्यूसू। इणां रै अलावा जापान रै समंदर में छोटा–छोटा हजारूं टापू बिखरियोड़ा बसिया है।

टोकियो रै हेनेडा हवाई टेसण पर उतरतां ई घड़ी साम्ही झांकी। कळकत्तै रै और बठै रै टैम में तीन घंटां रौ फरक हौ। आ बात कैवणी पड़ैला कै अठै रा कस्टमवाळा भला आदमी हा। कांई आतां, कांई जातां, सामान रै हाथ ई नीं अड़ायौ, कोई पूछताछ ई नीं करी। पासपोर्ट देख झटपट छाप लगा, सीख दे दी।

म्हांनैं प्रिंस होटल में उतारिया। औ तौ म्हैं टोकियो में पूगतां ई देख लियौ कै अठै नक्सां रौ जोर है। म्हारै कमरै में नक्सौ टांगियोड़ौ हौ। कांफ्रेंस री ओर सूं म्हांनै कागजात दिया हा, उणां में ई नक्सो नत्थी हौ। गेलै में जिण किणी नैं ई म्हैं गेलो पूछियौ, उण झट कागद–पेंसिल काढ नक्सो मांड म्हनैं गेलौ बतायौ। टैक्सी ड्राइवर नै कठैई जाबा नै कहियौ तौ झट देणी नक्सौ जेब सूं काढ म्हारै मूंडागै राखियौ। जिण जागां जावणौ हुवै, नक्सै में बता देवौ। बठै नक्सै सिवाय कोई बात ही नीं। रेलां में सफर करबावाळां सारू ई नक्सा मौजूद।

(2)

उण ईज दिन सांझ री गाडी सूं म्हांनै हिरोशिमा जावणौ हौ। टोकियो टेसण माथै पूगिया। टेसण री इमारत में बड़िया, पण बठै नीं तौ प्लेटफारम ई दीख्यौ, नीं गाडी दीखी, नीं इंजन नजर आयौ। अचंभै में पड़गी– च्यारूं पासी दुकानां ई दुकानां।

जापान कोंसलवाळा म्हांनैं कैयौ हौ कै आपनै हिरोशिमा तक पूगावा नै म्हांरौ आदमी साथै दे देवांला। वो आपनै सांझ नै टेसण पर मिळ जावैला। गाडी छूटण री बेळा नजीक आयगी। म्हैं उडीकता उकतायीजग्या। टेसण पर भीड़ घणी ही। नीं तो गाइड म्हांनै ओळखै, नीं म्हे गाइड नै ओळखां। अैन बगत पर गाइड हांफतौ थकौ आयौ। आवतां ई म्हनै देख बोलियौ– भलो हुवौ थांरी इण साड़ी रौ जो इणनै देख म्हैं थांनैं ओळखिया।

गाइड म्हांनैं लेय ऊपर चढियौ। म्हैं सोचण लागी– आपां नैं तौ गाडी चढणौ है। औ ऊपर कठै ले जावै है? ऊपर आवतां ई देखियौ कै प्लेटफारम पर आयग्या हां। गाडी मूंडागै ऊभी ही। समझ में नीं आयौ कै ऊपर चढियां गाडी किण तरै आयी। नीचै झांकी। बाजार, सड़क, दुकानां नीचै ही। टोकियो में आबादी घणी होवा सूं रेलां दुकानां री छातां पर चालै। टोकियो शहर में रेलां रौ जाळ–सो गुंथियोड़ौ है– आगै–पाछै, डावै–जीमणै, ऊंचै–नीचै धड़धड़ करती रेलां चालती रैवै।

जापानियां नैं आपरी रेलां रौ टाइम री पाबंदी रौ घणौ अंजस है। बठै रेलां लेट नीं हुवै, कदेई हुवै तौ कुछ सेकंडां सारू ईज। म्हांरी गाडी हिरोशिमा आडी भागी जावै ही। रेल री पटड़ी रै दोनां आडी नै खेतां में अर जंगळ तक में बिजळी रा तारां रा खंभा रुपियोड़ा बतावै हा कै अठै उद्योग रौ कित्तौ विस्तार है। घरां माथै टेलीविजन रा अेरियलां रा खंभा साम्हीं आंगळी दिखाता जापानी सज्जन श्री फुकुसिया बोलिया– अै अेरियलां रा थोक देखनै आप अंदाजौ लगा लिरावौ कै जापान में कितरा टेलीविजन है।

सैकड़ां कोसां री मुसाफरी में देखियौ कै जापान में अेक आंगळ धरती बेकार कोनी पड़ी। मानलो कठैई जमीन खेती रै लायक कोनी, पाणी रौ खाडौ ई है, तौ उणनैं ई काम में ले राखियौ है। बीं खाडै में कमल ई बाय दिया। कमल री डांडी, बीज, पत्ता, फूल, पांखड़ियां रौ साग बणावै।

(3)

ता. 31 जुलाई, 1959 नै सुबै 10 बजियां हिरोशिमा में विश्व सम्मेलन सरू हुयौ। प्रतिनिधि टैम सूं पैलां ई भेळा हुवण लागग्या। म्हैं बारै

बरामदै में ऊभी ही। अचाणचक अेक लांबी बाढ रा सरदार टोप उतार माथौ झुकाय मुजरौ करियौ। बोलिया– आप जरूर हिन्दुस्तान सूं आया हौ, म्हैं आस्ट्रेलियन हूं। पांच बरस दक्खण–भारत में रियोड़ौ हूं। आप किसै प्रदेस सूं आया हौ?

म्हैं कैयौ– राजस्थान री हूं।

–आछौ! आछौ! उदैपुर तक म्हैं ई गयोड़ौ हूं, म्हारौ नाम अेंड्रयूज ह्यूज है। म्हनै मराठी बोलबा री घणी मन में आय रैयी है। आपरै साथ वाळां में कोई मराठी बोलणियौ है कै नीं?

दूजै दिन म्हैं उणां नैं म्हारै प्रतिनिधि मंडळ रा नेता श्री हिरे सूं मिलाया। ह्यूज वांसूं मराठी में धड़ाधड़ बात करबा लागा। मराठी रै 'ळ' आखर रौ उच्चारण वै घणौ सुद्ध करता। म्हनै उणां रै 'ळ' रै उच्चारण पर खुसी हुयी अर अचंभौ ई आयौ। आपणै अठै रा हिन्दी बोलणियां भायां सूं खासकर उत्तर प्रदेस अर बिहार वाळां सूं 'ळ' बोलणी नीं आवै। 'ळ' रौ प्रयोग राजस्थानी, पंजाबी, गुजराती अर मराठी में तो खूब हुवै।

इण 'ळ' नैं लेयनै म्हनैं अेक जूनी बात याद आयगी। बीकानेर राज में महाराजा गंगासिंहजी रै बगत में महाजन रा राजा हरिसिंहजी ठावा सरदार हा। बीकानेर राज में उणां दिनां अेक हुकम निकाळियौ कै राज री नौकरियां में बीकानेर रा लोगां नैं ई राखिया जावै। फलाणौ बीकानेरी है कै नीं, इणरौ इम्तिहान घणी बिरियां महाजन–राजा साहब लिया करता। इण इम्तिहान री जरूरत यूं आयी कै घणा जणा नकली सर्टीफिकेट ले बीकानेरी बण जावता। उम्मेदवार री जांच करबा वै राजा साहब उणनैं पूछता– बोलो खळळ–खळळ। बाहरवाळां सूं सुद्ध उच्चारण नीं करणी आवतौ और वै बोलता खलल–खलल। उण ई बगत राजाजी फैसलो सुणा देता– थारै बीकानेरी होवण में खलल है भाया।

श्री ह्यूज महाराष्ट्र री मांयली बातां री घणी जाणकारी राखै। बठै री जनजातियां रै जीवण अर संस्कृति री बातां सुणाबा लाग्या तौ मन में म्हनै घणी सरम आई। म्हैं तौ वां जनजातियां रौ नाम ई नीं सुणियौ।

(4)

कान्फ्रेंस हाल रै बारै ऊभा प्रतिनिधि लोग गप्पां लगाय रैया हा। गरमी तेज पड़ री ही। जापान में छातां रा पंखा तो हुवै ई नीं। सब जणा हाथां में जापानी कागज रा पंखा लीधां हिलाय रैया हा। सूडान रा प्रतिनिधि इजिप्ट री लुगाई प्रतिनिधि मिस करम नै बतळायी– गरमी तौ अठै ई आपां जिसी पड़ै है पण जापानी आपां जिसा काळा क्यूं कोयनी? पश्चिमी जर्मनी रौ प्रतिनिधि हाफूं–हाफूं करतौ फूंकां देतौ फिर रैयौ हौ– मर गयौ गरमी आगै, म्हैं तौ कालै परौ जावूंला।

यूरोप री अेक जवान लुगाई प्रतिनिधि आपरै बटवै सूं काढै अर यूडीकोलन री सीसी नै छांटै माथै पै। म्हैं कनै बैठी, म्हारै ई ललाट रै उण यूडीकोलन लगायौ। म्हैं कैयौ– म्हनै इसी ज्यादा गरमी कोनी लागै। म्हैं राजस्थान री अर बा ई तपतै बीकानेर री रैवणवाळी, जठै इणसूं बेसी गरमी पड़ै।

जिण भवन में कान्फ्रेंस हुई उणरै भेळै ईज सांति स्मारक म्यूजियम हौ। घणखरा म्हे वौ म्यूजियम देखण लागग्या। इण म्यूजियम में हिरोशिमा में जीं अैटम बम सूं तबाही हुई ही उणरी तसवीरां, नक्सा अर आंकड़ा जमाय राखिया है। पूरौ विवरण उण प्रळै रौ देय राखियौ है। उण महानाश रा राखसी करमां नै देख बजर री छातीवाळां रै ई आंसू आयां बिना नीं रैवै। भींत पै अेक मोटी सारी तसवीर लाग री। उणमें धूंवै रौ मगरै रौ मगरौ लपता

लगोलग ऊंचौ चढ रैयौ है। अैटम बम रै फूटतां ई हिरोशिमा नै आपरी काळी छाया में ढांकतो औ फोटू चार हजार मीटर दूरां सूं खैंचियौ हौ। 1945 री छह अगस्त सुबै अैन आठ बज'र 15 मिनट पै अेक अमेरिका रै विमाण बम फेंकियौ। वौ सत्यानासी विमाण बम फेंकतां ई नटाटूट पाछै पगां भागियौ। वौ इसौ तेज भागियौ कै बम फूटै–फूटै जीं रै पैलां 16 किलोमीटर भागनै दूर निकळग्यौ।

बम जमीन सूं 570 मीटर ऊंचौ आकास में फूटियौ। धरती पर पड़'र फूटबा सूं इतरौ नास नीं हो सकै, क्यूंकै बम में इतरी ताकत ही कै जमीन में धंस जावतौ। जकां मिनखां बम नैं आकास में फूटतौ देखियौ वां बतायौ कै बम फूटतां ई इसौ लाग्यौ जाणै परचंड सूरत धरती पै उतर रैयौ है। बम फूटियौ जिण वेळा उणसूं गरमी निकळी, वा दो लाख सेंटीग्रेड ही। सौ सेंटीग्रेड गरमी में पाणी उकळबा लाग जावै। वा गरमी ही दो लाख। भूंगड़ा तिड़कै ज्यूं मिनख तिड़कग्या। वो धूंधै रौ बादळौ, जिणनैं आणविक बादळ कैवै, अड़ताळीस सैकिंड में तीन हजार मीटर ऊंचौ चढियौ। साढी आठ मिनट में तौ नौ हजार मीटर ऊपर चढग्यौ। पंद्रह मिनट पछै इण बादळै में सूं बरखा होवण लागी। दो घंटां तांई बराबर कादौ बरसतौ रैयौ। रेडियौ सक्रियता रा जो कण धूंधै रै सागै ऊपर परा गया हा, उणां नै बरखा पाछा नीचै ले आयी।

बम फूटबा रै 20 मिनट पछै नीचै जमीन पै लाय लागगी। लकड़ी रा अर बांसड़ां रा जंगळ भभक–भभक बळबा लागग्या। छोटा–मोटा सब घर भसम होयग्या। आखै ई शहर में खाली छाईस अर अधबळिया रैयग्या। नदियां रा पुळ टूटग्या। गाडी री पटड़ियां बांकी हुयगी। गरमी इतरी हुयी कै लोह कांई पत्थर पिघळग्या। हिरोशिमा लाय री लपटां में समायग्यौ। तीन दिनां तांई धूं–धूं बळतौ रैयौ। हरियौ–भरियौ जंगळ अर शहर राख रौ ढिगलौ होयग्यौ।

(5)

इण कयामत में लोग–लुगायां, टाबर–टींगरां री दुरदसा हुयी, उणरी बात तौ कैवण जोग ई कोयनीं। आंखियां देखियोड़ा हाल, बठैवाळा सुणाय रैया हा। म्हारै में तो सुणबा री हीमत ई कोयनी ही, काळजौ कांप–कांप जातौ। लपटां आभै रै अड़ री ही, मिनख बरळाय रैया, टाबर चिरळाय रैया, कुण–किणरी सुणै, कुण किणनैं बचावै मरिया–बळिया! लपटां में भसम! इण भयंकर कांड री याद सूं ईज मिनख री चेतना परी जावै। 2 लाख 40 हजार लोग–लुगाई अर टाबर बरळावता थका जींवता बळग्या। 51 हजार बुरी तरह घायल होयग्या। अेक लाख आसरै मामूली घायल हुया।

इण नरमेध में जळनै मर गया वां तौ सुख पायौ, पण ज्यांरी सांसां बाकी रैयगी वै जींवती लासां 'पाणी–पाणी' कर री ही, पण पाणी रै जबाब में काळ उणां नै लाय री लपटां में छानौ कर देतौ। डील रा गाभा बळग्या, डोळ सूजग्या।, केस बळग्या, चामड़ी अर हाडकियां बळनै लटकग्या। अै नर–कंकाळ चेतौ आवतां ई करळावता– 'पाणी–पाणी'। पाणी कठै? पावावाळौ कुण? आपणै पुराणां में जी रौरव नरक रौ वरणन कीधौ, वौ इणरै आगै तुच्छ है। जो हाल तसवीरां में देखियौ अर जो देखणवाळां रा मूंडा सूं कानां सुणियौ उणनैं लिखबा नै अर कैबा नै कोई लबज ई नीं। म्यूजियम नैं देखतां मन दुख, ग्लानि अर अंतर्दाह सूं बळबा लागग्यौ। मन में रैय–रैय औ सवाल ऊठतौ– मिनख इसौ हत्यारौ हो सकै है? अै देख रैया हां जो साची तसवीरां है? हे भगवान! मिनख रै साथै औ बरताव कीधौ? मिनख ई इसौ हौ सकै तौ पछै राखस, पिसाच, दैत्य इणसूं ज्यादा कांई हुवैला?

(6)

हिरोशिमा रै सत्यानास रौ जापानियां रै दिल अर दिमाग पै घणौ असर पड़ियौ। बठै रा साहित्यकारां रै आगै तौ आज ई हिरोशिमा सूं हीज बळ रैयौ है अर राष्ट्रीय चेतनावाळा जापानियां रा काळजा में तौ आ होळी पीढियां तांई सुळगती रैवैला।

अेक चितराम हो 'भूतां री सवारी'। हिरोशिमा में लाय लागबा रै तुरन्त पछै री छिबी ही। धूंवै सूं काळा पड़ियोड़ा नर कंकाळां रौ झुंड ज्यांरा कपड़ा बळग्या; नागा, चामड़ी फाटियोड़ी, गाभा ज्यूं लटकियोड़ी, हाथ मूंडा सूजियोड़ा, दुख सूं होस–हवास गायब, ज्यां में अत सूझै न गत, बिचळायोड़ा, ढूंढा ज्यूं वीरान हुयोड़ी गळियां में बेमतळब भटक रैया। उण बगत री असली हालत ही आ। अेक चित्र और हौ। अैटम बम सूं निकळी बेहिसाब गरमी सूं लोग घबरायग्या।

घायल 'पाणी–पाणी' कर रैया। पाणी कठै? नळां री लैणां टूटगी। चारूं आडी नै लाय लागरी। तिसिया मरतां कंठ सूख रैया। सरीर घावां सूं चिरीज रैया। 'पाणी–पाणी' करता नदी साम्हीं दौड़िया। दौड़णौ वांसूं ताबै आय नीं रैयौ, सांस लेणाो ई नीं आय रैयौ। उठता–पड़ता नदी रै किनारै जाय पाणी रै होठ लगायौ। हा बठै रा बठै ठंडा पड़ग्या। नदी रै किनारै लोथां रा ढिगला लागग्या। हिरोशिमा सहर रै मांयनै सात नदियां बैवै अर सातूं नदियां लोथां सूं भरगी।

सुबै रौ बगत हौ। टाबर पढण नै गया हा। अेक दिन पैलां हवाई हमलै सूं टूटियोड़ा घरां में मदद सारू जाबा रौ स्कूल रा टाबरां रौ प्रोग्राम हौ। मास्टरां रै लारै स्कूलां रा टाबर टोळा रा टोळा मदद सारू जाय रैया हा। उणी'ज बगत वौ हत्यारौ पापी बम पड़ियौ। 'मां–मां' करता भोळाभाळा मूंडा रा टाबर बठै रा बठै सीझग्या। उण वेळा रौ चितराम देखणी नीं आवै। आज ई हिरोशिमा री मांवां आधी रात रा 'सणण–सणण' करतै बायरै में 'मां–मां' रोवता टाबरां रा हेला सुणै।

म्हारै सूं तौ वै चितराम देखणी नीं आया। आंखियां मींचनै बैठगी। चितरामां नैं देख–देख हिरोशिमा री जापानी लुगायां रोय री ही। उणां रै मूंडागै उणां रा टाबर यूं ही 'मां–मां' करता, बळता–बरळावता मरिया हा। कितरा ई टाबर बठै ऊभा–ऊभा आपरा मां–बाप नै याद कर रोय रैया हा। हे भगवान! वौ नजारौ याद आवै जद आज भी म्हारौ काळजौ थर–थर करबा लाग जावै।

(7)

इण विस्व सम्मेलन में संसार रा सारा ई देसां सूं प्रतिनिधि आया हा। अमेरिका सूं ई पांच–सात सरदार आया हा। उणां में डॉ. पोलिंग ई हा। डॉ. पोलिंग अमेरिका रा नामी रसायन शास्त्री है। आणविक अस्त्रां नै काम में लेबा पछै उणां रौ कांई–कांई असर दुनिया माथै हुवै, इण विषय में डॉ. पोलिंग घणी सोध कीधी है। इणी'ज काम माथै आंनै नोबल पुरस्कार मिळियौ।

डॉ. पोलिंग सम्मेलन में घणा जोरदार बोलिया। डॉ. पोलिंग रौ भाषण सुण, सुणबा वाळां रा कानां री खिड़कियां खुलगी। आगै दुनियां अंधारी दीखबा लागी। म्हारा रामजी! आं मोटा देसां रा मोटा लीडरां नै जे कुबुद्धि आयगी तौ आ दुनियां, जिणनैं हजारां बरसां सूं मानवी सजावतौ, सिणगारतौ खपग्यौ है, अेक पळ में गारत हुय जावैला।

जापान रा लोगां इण अणुबम–विरोधी विस्व सम्मेलन रै मौकै पै बडौ जबरदस्त सांति मार्च कीधौ। दूर–दूर सूं मिनख पगां चालता, मार्च करता, हिरोशिमा तक आया। तावड़ै सूं छाया राखबा नै चारै रा गूंथियोड़ा मोटा–मोटा टोप माथै मेल राखिया हा। लांबी,

खूब लांबी सवारी निकळी। सगळां सूं आगै तौ पैदल मार्च करनै आवणियां, उणां रै लारै विदेसां सूं आयोड़ा प्रतिनिधि; पाछै हिरोशिमा री अणपार जनता।

भरी दुपैरी। कोई तीन बजियां रौ तावड़ौ तड़क रैयौ। सूरज कड़ रैयौ। सवारी चाली। म्हां लोगां रै आप–आपरा देसां रा झंडा हाथ में। पसीनौ टपक रैयौ। गेलै रै दोई आडी नै मानखौ मावै नीं। थाळी फेंकै तौ आंगणै नीं पड़ै। दुकानां री, घरां री छातां मिनखां सूं लद री। छातां पर सूं आदम– लुगायां फूलां री बिरखा कर रैया। रंगियोड़ा कागजां री कतरण री पुष्प–बिरखा करणै री बठै रीत है। ऊंची–ऊंची हवेलियां सूं कागज रा फीता नीचै म्हांपै लटकाय रैया। फूलां सूं सड़क भरगी। माथा पै रंग–रंगीला कागज रा फीता लटक रैया। टेलीविजन सारू तस्वीरां खैंचबा नैं हेलीकाप्टर माथा पै आय–आय, उड–उड जाय रैयौ।

औ उछाह अर सुवागत जापानियां उणां लोगां रौ कीधौ जो आणविक अस्त्र पै पाबंदी लगाबा री आवाज उठाबा नै देस–विदेस सूं समंदर लांघनै आया– पैदल चालता, शांति मार्च करता, देस रा खूणां–खूणां सूं, टापू–टापू सूं बठै आया। यूं तौ च्यारूं कानी हरख–उछाह नजर आय रैयौ हौ, पण जनता पै जमनै नजर नाखबावाळां नैं अंतस में और ई बात दीखी। सड़क रै दोई कानी ऊभी लुगायां रा रुमाल आंसूड़ां सूं आला हा। औ मार्च देख उणां री आंख्यां आगै चवदा बरसां पैलां रौ नजारौ छायग्यौ। वांनै घरबीती याद आय रैयी ही। वांरा हिवड़ा हबूका लेबा लागग्या। वै आंसूड़ा पूंछती जायरी ही, अर फीका–फीका मूंडां सूं मुळक नै सांति–सैनिकां रौ सुवागत करती जाय री ही। उणां रै अंतर रौ अंदाजौ लगाणौ कोई कठण नीं हौ। सगळी जापानी मावां री अेक आवाज ही– म्हांरा टाबरां री खैरियत सारू सांति री आवाज उठावौ।

मार्च करण नै आवणियां अर परदेसां सूं आयोड़ा प्रतिनिधियां सारू उणां रै मन में घणौ मान हौ। मार्च करणियां नै रोक–रोक पाणी री गिलासां लुगायां झलाय री ही। म्हनैं तावड़ै में कळमळाती देख अेक लुगाई आपरै माथै रौ टोप उतार म्हारै माथै पै मेल दीधौ; अेक जणी आपरौ पंखौ म्हारै हाथ में झलाय दीधौ। म्हनैं कड़कड़तै तावड़ै में तपती अर पसीनै सूं लथपथ देख उणां नै दुख हो रैयौ हौ। यूरोप सूं आयोड़ा प्रतिनिधि तौ तावड़ै सूं लाल बम्ब पड़ग्या। उणां रा कान तौ इसा राता होयग्या कै जाणै अबार लोही टपक पड़ैला।

सवारा सूधी जूझारां री देवळी पै गई। अैटम बम सूं मरियोड़ां री याद में काळै भाठै री समाधि बणायोड़ी है। सगळा जणां बठै जाय माथौ झुकायौ, ढोल पै ताल लागी। ताल रै सागै बैंड री धुन गगन गुंजाय दीधौ–

never again the atom Bomb

कदैई नीं, अबै अैटम–बम कदैई नीं।

सुर में सुर मिलाय लाखां कंठ गावा लागिया–

अैटम–बम कदैई नीं, कदैई नीं।

कदैई खाली बैठी रैऊं तौ उण सांझ री वै गैरी भावनावां याद आय जावै अर म्हैं बां में गम जावूं।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

चिपियोड़ो=जुड़्योड़ौ, मिल्योड़ौ। झांकी=देख्यौ। पूगतां ई=पोंचता ई। मांड=कोर नै, बणाय नै मूंडागै=मूंडै सांम्ही, मूंडै आगळ। लारै ई=सागै रा सागै। बड़िया–मांयनै गया। उडीकतां–बाट जोवतां। ओळखै–पिछाणै, जाणै। गैरी=घणी, सांघणी। अंजस=गुमेज, गौरव। वाय दिया=बो दिया, बीज दिया। लांबी वढ रा–लांबै कद रा। वगत–बखत, समै। फलाणी=अमुक। घणी विरियां–केई बार। खलल=अटकाव, विघन। मांयली=भीतर री। तबाही=विणास। नटाटूट=घणै वेग सूं। कादौ=कीचड़। कयामत=प्रळय। बरळाय रया=चिरळाय रैया। लबज=लफज, सबद। गारत=बरबाद। अंतस में=मन मांय। हिवड़ा–हिरदौ। हबुका–हूक। देवळी–समाधि। गम जाऊं=खो जाऊं।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'म्हारी जापान यात्रा' किण विधा री रचना है–
   (अ) कहाणी (ब) निबंध
   (स) यात्रा संस्मरण (द) रेखाचितरांम
   ( )
2. डॉ. पॉलिग किण देस रा नामी रसायन शास्त्री है–
   (अ) अमेरिका (ब) जापान
   (स) फ्रांस (द) रूस
   ( )
3. 'म्हारै सूं तो वै चित्राम देखणी नीं आया।' इण कथन सूं किसौ भाव प्रकट होवै–
   (अ) भय (ब) अचरज
   (स) करुणा (द) दया
   ( )
4. 'सवारी सूधी जूझारां री देवळी पै गयी' सवारी देवळी पर क्यूं गयी–
   (अ) देवळी रौ फुटरायौ देखण नै (ब) जूझारां नै माथौ टेकण नै
   (स) सम्मेलन री सरुआत करण नै (द) मरियोड़ा नै याद करण नै
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. जापान रौ असली नाम कांई है?
2. हेनेड़ा हवाई–टेसण जापान रै किसै सहर में आयोड़ौ है?
3. अणजाण गाईड लेखिका ने किण कारण पिछाण लिया?
4. डॉ. पॉलिग नै किण काम माथै नोबल पुरस्कार मिलियौ?
5. जापान रा लोगां नै किण बात रौ घणौ अंजस है?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. श्री ह्यूज री बातां सुण'र लेखिका नै सरम क्यूं आई ?
2. ''जापानी लोग धरती रौ सागैड़ौ उपयोग करै।'' इण ओळी रै अरथ रौ खुलासौ करौ?
3. ''शांति स्मारक देख बजर छाती वाळा रै आंसू आया बिना कोनी रेवै।'' समझावौ।
4. ''राष्ट्रीय चेतना वाळा जापानिया रै काळजै में तो आ होळी पीढियां तांई सिळगती रैवैला।'' आ किसी होळी है ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. जापानिया रै स्वावलम्बी जीवण अर आतिथ्य–सत्कार रौ दाखला देय'र खुलासौ करौ?
2. हिरोशिमा माथै अेटम–बम फूटौ जद उठै कांई हाल हुयौ ? पाठ रै आधार माथै वरणन करौ।
3. अणुबम विरोधी विश्व सम्मेलन रै मौके जापानियां रै शांति मांर्च रौ नजारौ आपरै सबदां मांय प्रकट करौ?
4. नोबल पुरस्कार री जाणकारी कर बतावौ कै आज तांई ओ पुरस्कार किण–किण भारतीयां नै मिलियौ है?
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) सैकड़ां कोसां री मुसाफरी में देखियौ कै जापान में अेक आंगळ धरती बेकार कोनी पड़ी। मानलो कठैई जमीन खेती रै लायक कोनी, पाणी रौ खाडौ ई है, तौ उणनैं ई काम में ले राखियौ है। बीं खाडै में कमल ई बाय दिया। कमल री डांडी, बीज, पत्ता, फूल, पांखड़ियां रौ साग बणावै।

(ब) हिरोशिमा रै सत्यानास रौ जापानियां रै दिल अर दिमाग पै घणौ असर पड़ियौ। बठै रा साहित्यकारां रै आगै तौ आज ई हिरोशिमा सूं हीज बळ रैयौ है अर राष्ट्रीय चेतनावाळा जापानियां रा काळजा में तौ आ होळी पीढियां तांई सुळगती रैवैला।

(स) सवारा सूधी जूझारां री देवळी पै गई। अैटम बम सूं मरियोड़ां री याद में काळै भाठै री समाधि बणायोड़ी है। सगळा जणां बठै जाय माथौ झुकायौ, ढोल पै ताल लागी। ताल रै सागै बैंड री धुन गगन गुंजाय दीधौ– अैटम–बम कदैई नीं, कदैई नीं।

रिपोर्ताज
अेक दिन आपरौ

विनोद सोमानी 'हंस'

लेखक–परिचै

विनोद सोमानी 'हंस' रौ जनम भीलवाड़ा जिलै रै महेन्द्रगढ़ कस्बा में 4 नवमबर, 1938 में होयौ। आपरी सरुआती भणाई–लिखाई महेन्द्रगढ़ में अर पछै नौकरी करता थकां अजमेर में होयी। श्री सोमानी रौ जीवण भणाई–लिखाई री हटौटी, साहित्य सिरजण रै उमाव अर करड़ी मैणत सूं ऊजळ्योड़ौ जीवण है। हिन्दी मांय केई पोथ्यां छपी, पण राजस्थानी में उणां री पोथ्या है– 'खामोसी' अर 'तिस' (कहाणी–संग्रै)। श्रीकान्त वर्मा रै 'मगध' नांव रै कविता–संग्रै रौ आप राजस्थानी मांय उल्थौ करियौ जकौ केन्द्रीय साहित्य अकादेमी, दिल्ली सूं छपियौ अर इणी माथै साहित्य अकादेमी रौ अनुवाद पुरस्कार मिळ्यौ। आपरी केई रचनावां पुरस्कृत होय चुकी है।

पाठ–परिचै

संकलित रचना अेक रिपोर्ताज है। राजस्थानी में हिन्दी री भांत रिपोर्ताज लिखण री सरुआत नूंवी ई है। 'अेक दिन आपरौ' नांव रै इण रिपोर्ताज में 'आप' नांव सूं बतळाईज्योड़ै नौकरी–पेशा आदमी री छुट्टी रै दिन बजार में अफसर सूं बातचीत, दफ्तर रै साथी–साईनां सूं ठट्ठा–मसखरी, करड़ी–कंवळी बातां वाळी हथाई री अेक दिन री रपट है। आथमतै दिन अेक मेहमान मिळ जावै अर उणां नै लेय'र घरां जावै अर उणां रौ पूरौ दिन यूं ही बीत जावै। गिनायत आवण सूं मस्ती में खलल पड़ै अर पूरौ मूड बिगड़ जावै। 'आप' भायलै सूं नमस्ते कर घरां कांनी मुड़ग्या।

अेक दिन आपरौ

आज दीतवार है अर आप आपरा फालतू बगत रै उपयोग सारू घरां सूं बारै निसर गया हौ। जिण तरै खरीद करणियौ आपरै खूंझ्या में गिणती रा रुपिया घालनै चालै बियां ई आप भी नमस्ते करणै रौ बंडळ उठायनै चाल्या हौ। पण कदै–कदै तौ नमस्ते रौ बंडळ खुलै ई कोनी अर कदै–कदै आप नै अतरी नमस्ते ठोकणी पड़ै कै उधार लेय नै काम चलावणौ पड़ै।

आप सड़क पर आयग्या हौ अर आगै बध रैया हौ। सागै ई स्कूटर पर आपरौ बोस आय रैयौ है। आपरी निजरां मिळगी है। आप फटाक सूं सैनिक री दांई 'गुड मार्निंग सर' कैय दियौ है। वौ आपरी नाड़ नै थोड़ी–सीक हिलाय दी है। वौ आपरै कनै स्कूटर नै लाय थाम्यौ है अर बोल्यौ है– ''छुट्टी मनाय रैया हौ?'' आपरै हिरदा में उपज्यौ कै 'आप भी तो मनाय रैया हौ' आप आप सरमाय नै मुळकता

मूड में कैय देवौ हौ– ''आपरी किरपा है, सर।''

बोस अर आप सड़क रै किनारै खिसक आया हौ। फेरूं वौ बोल्यौ– ''वै केस कालै निपटग्या हा के? म्हैं तौ पूछणौ ई भूलग्यौ हौ।''

''हां सर, वै तौ लंच रै पैलां ईज निपटाय दिया हा। आपरौ काम तौ सै सूं पैलां निपटाऊं हूं।'' आप अेक हुंसियार क्लर्क री दांई उथळौ देय दियौ। आपरा ई उथळा सूं वौ घणौ राजी व्हियौ अर हेताळू भाव सूं बोल्यौ है– ''भाई, बाकी रौ स्टाफ तौ चोखौ है, पण वौ मिश्रो घणो परेसान करै है। साळौ, कदै काम तौ करै नीं अर नेतागिरी करै है।''

आप पाणी रा ढाळ नै जाणौ हौ। मस्कौ लगावतां बोल्या हौ– ''हां सर, आप सही फरमावौ हौ।''

बियां आप मन में तो राजी हौ कै मिश्रो इण री नाक में दम कर राख्यौ है, पण आप बोस नैं राजी राखणौ चावौ हौ अर मौकौ देखनै हां में हां मिळाय रैया हौ। आप कैयौ है– ''कांई करां सर! म्हैं तौ उणनैं घणौ ई समझाया करां, पण वौ है ईज अड़ियल किस्म रौ मिनख। कैवै है कै दबेलदारी सूं काम नीं करूंला।''

बोस री चेतना जागगी है– ''अच्छा, म्हनै ईज कीं–न–कीं करणौ पड़सी। साळै री तबीयत ठीक कर देवूंला। हाथ जोड़तौ फिरसी। म्हनै समझै कांई है! आखिर म्हैं भी फर्स्ट क्लास अफसर हूं, नाकां चणा चबवाय देवूंला।''

आप स्वीकृति सूचक मुळक दिया हौ, बियां मन में खीझ रैया हौ। बातां ई बातां में आपनै घणी बेळ्या हुयगी है। आप जरूरी काम रौ बायनौ करनै बोस सूं पिंड छुडायौ है अर आगै बधग्या हौ।

थोड़ी ई छेटी पर आपरौ अेक लंगोटियौ मिळग्यौ है। जो आपनै बोस रै साथै बातां करतां देख लियौ है– ''कहो प्यारे, घणौ मस्कौ लगायौ आज तौ?''

आप रंग्या हाथां पकड़ीजग्या हौ, पण हुंसियारी सूं बोल्या हौ– ''अरे यार, इयां ई फालतू टैम खराब कर दियौ। अबै रस्ता में मिळग्यौ तौ बात तौ करणी ई पड़ै। इस्या अफसरां री कांई परवा करूं।''

भायलौ भी घुटी थकी रकम है– ''तौ कांई हुयौ यार, आ नौकरी ई यांन री ईज है। सलाम नीं ठोकौ तौ अै बेराजी हुय जावै; कांई न कांई रीत सूं कसर निकाळै। इण वास्तै म्हारै गुरुजी भी कैयौ है कै अफसर कैवै कै दिन तौ दिन, वौ कैवै रात तौ रात।''

''मिळा प्यारा हाथ।'' आप तुक मिलावता थका उछळ पड़िया हौ। दोनूं ई जोरां सूं ठहाकौ लगाय दियौ। फेरूं बात रौ रुख पलटता थकां आप कैयौ है– ''यार, रात नै बेबी री तबीयत घणी बिगड़गी ही।''

''पण, म्हासूं मिळौ तौ यांन री फालतू बातां मत कर्‌या कर।'' भायलौ बोल्यौ है। वौ कैयौ है– ''चार दिन री जिनगाणी में अै दुख री बातां रैवण दे, कोई हंसी–खुसी री बात कर।''

आप दोनूं आगै बधग्या हौ। कोई धेय कोनी है। अचाणचूक अेक कवि–मित्र मिळग्यौ है– ''नमस्कारम्।''

आप दोनूं हाथ जोड़नै कैयौ है– ''कैवौ कविराजा, घणा दिनां सूं मिळ्या हौ। कविता कियां चालरी है?''

कवि थोड़ौ गंभीर हुयग्यौ है। वौ दारसनिक अंदाज सूं बोल्यौ– ''साहित्य रा पारखी है कठै! कविता नैं कुण समझै? बांरी संवेदना नै कोई परस नीं पावै। लोगां नै चावै कोरौ मनोरंजन। बस, स्वांतः सुखाय लिखता रैवौ।''

आप वांनै उछाव सूं कैय रैया हौ– ''कविराज, आ साधन री बात है। जनता जागैली अर अेक दिन थांरी कवितावां पिछाणी

जावैली। हां, आं दिनां कोई कवि–सम्मेलन नीं हुवै है....।''

''होय रियौ है। निराला जयंती आवण वाळी है। बारै सूं भी लोग आय रिया है।''

''खूब! म्हां सुणणै रै वास्तै जरूर आवांला।'' आप अै आखरी बोल बोलनै आगै बधग्या हौ।

अबै आप चौराया पर आयग्या हौ। आपरौ दोस्त आपरै साथै घिसट रियौ है। अठै चौराया पर केई भांत–भंतीला मोटा–मोटा पोस्टर लाग्योड़ा है। आपरौ भायलौ अेक पोस्टर देख रियौ है जिणमें सिनेमा री फोटूवां लाग्योड़ी है। आप मूंडै सूं सीटी बजाय दी है। बठीनै वां तीजा भायला रौ ध्यान पोस्टर सूं हट'र आपरै कानी व्हैग्यौ है। वौ आपनै देखनै उछळग्यौ है। आप दोनूं लिपटग्या हो अर अेक–दूजै रौ बोझौ उठाय रिया हौ।

आप उणरौ परिचै आपरै साथी सूं करायौ। पछै आप पूछ्यौ– ''आज रौ कांई प्रोग्राम है?''

''पिक्चर रौ।''

''किसी?''

''आसीरवाद। इण में अशोक कुमार री जोरदार अेक्टिंग है।''

''हूंऽऽ, अशोक कुमार नै राष्ट्रपति रौ इनाम भी तौ मिळ चुक्यौ है।'' साथीड़ौ बोल्यौ।

''मिळणौ ईज हौ। बौत जोरां रौ काम है इण में।'' दूजोड़ौ भायलौ कैयौ।

''अेकला ईज जावौ हौ?'' आप वांनै पूछ रैया हौ।

''थे लोग भी चालो यार। आपां रौ साथै रैवैला। पण पईसां रौ सिस्टम अमेरिकन रैवैला।''

आप सगळा ई हंस पड़्या हौ– ''थूं रैसी कंजूस रौ कंजूस।

आप मना करनै आगै बधग्या हौ। आपरा केई जाण्यां–पिछाण्यां मिळ रिया है। आप किणी सूं हंस नै, किणी सूं 'हैलो', किणी सूं हाथ हिलायनै, कुछेक सूं आंख मारनै, अेक सूं मुक्को ताणनै अर हेताळू सूं चुंबन री अेक्टिंग मारता अभिवादन कर रिया हौ। आप नमस्ते में माहिर हुयग्या हौ। जतरा लोग बतरी ई तरै सूं नमस्कार। जिण तरै लोग सैकडूं तरै री हंसी में माहिर हुवै है, उणीज तरै आप नमस्ते में अथोरिटी हुयग्या हौ। अचाणचूक आपरौ माथौ ठणकगयौ है। आपरा अेक रिस्तेदार थैली लटकायां चल्या आय रिया है। आप साम्हीं पड़ग्या हौ अर दोनूं हाथ जोड़नै बोल्या हौ– ''पधारौ, कठीनै आज रस्तौ भूलग्या हौ आप।''

''कालै कोरट में पेसी है, सो चल्यौ आयौ। थे अठै हौ ईज, इण वास्तै आज ई आयग्यौ। थोड़ौ सामान खरीदणौ हौ।'' रिस्तेदार आपरी बात साफ करी।

आप आपरा भायला नै खारी दीठ सूं देख्यौ है अर उण सूं टाटा करनै रिस्तैदार रै साथै घरां री आडी मुड़ग्या हौ। भायलौ अेकलौ ईज चाल पड़ियौ, पण वौ भी आखरी अभिवादन कर लियौ है– नमस्ते।

आपरौ मूड बिगड़ग्यौ है, क्यूंकै आपरी मस्ती में खलल पड़गी है। मेहमान सूं रामजी बचावै। पण, आयां री खातरी तौ करणी ईज पड़सी। आपरौ औ अेक दिन यान ईज बीतग्यौ– बाप कांई कर भी नीं पाया हौ, सोच भी नीं पाया हौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

दीतवार=रविवार। बगत=समै, बखत। हिरदा=हियौ, दिल। उथळौ=जवाब। ढाळ=ढळाण। बेळ्या=समै। बायनौ=बहानौ, ओळाव। लंगोटियौ=बालगोठियौ, बालसखा। बेराजी=रीसाणौ, नाराज। फालतू=बेकार, बाधू। अचाणचूक=अचाणचक, अेकाअेक। परचै=परिचय, ओळखाण। धेय=उद्देस्य। आखरी=छेहलौ, अंतिम। जतरा=जितरौ। माहिर=पारंगत। स्याफ=साफ। भायला=वाहेला, मित्र। खलल=बाधा, अटकाव, विघन। उल्थौ=अनुवाद।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'अेक दिन आपरौ' रचना किसी विधा री रचना है—
   (अ) संस्मरण (ब) रिपोर्ताज
   (स) व्यंग्य (द) कहाणी
   ( )
2. आपरै 'गुड मार्निंग सर' रै पडूत्तर में अफसर रै थोड़ी—सीक नाक हिलावण सूं कांई परगट हुवै—
   (अ) नाड़ में दरद है। (ब) नाड़ मुड़ै कोनी
   (स) अफसर में 'मैं' है (द) मातहत सूं नफरत है
   ( )
3. आप स्वीकृति मूलक मुळक रिया हौ बियां मन में खीझ रैया हौ। आपरै मन में खीझ क्यूं हुयी?
   (अ) अफसर रै 'मैं' आळै बोल सूं
   (ब) बातां में घणी बेळ्या होवण सूं
   (स) अफसर सूं भेंट अणचाही होवण सूं
   (द) अफसर सागै बात करतां नै भायलां रै देखण सूं
   ( )
4. म्हारै गुरुजी कैयौ— ''अफसर कैवै कै दिन तौ दिन, वौ कैवै रात तौ रात।'' वौ क्लर्क आपरा भायला नै गुरुजी रौ औ बोल क्यूं बतायौ?
   (अ) अफसर री खुसामद आळै व्यौवार नै ठीक ठैरावण खातर
   (ब) गुरुजी रै बोल रौ महत्त्व दिखावण खातर
   (स) भायला नै आपरी हुंसियारी दिखावण खातर
   (द) भायलां नै ठकुरसुहाती दीठ रौ नफौ बतावण खातर
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. लेखक सोमानी जी किण रचना रौ राजस्थानी उल्थौ कर्‌यौ?
2. रिपोर्ताज में 'आप' सबद रौ प्रयोग किण सारू हुयौ है?
3. कवि मित्र सूं लोगां री कांई सिकायत है?
4. 'नाक में दम करणौ' मुहावरै रौ कांई अरथ है।

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. ''चार दिन री जिनगाणी में अै दुख री बातां रैवण दे।'' आपरी किण बात माथै उणरौ भायलौ उणनै आ बात कैयी?
2. ''आप नमस्ते में माहिर हुयग्या हौ।'' इण बोल री सच्चाई दाखला देयनै परगट करौ।
3. ''आपरौ औ अेक दिन यान ईज बीतग्यौ।'' लेखक आ बात क्यूं कही?
4. आपरा अेक रिस्तेदार नै देख 'आपरौ' माथौ क्यूं ठणक गियौ?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. ''साहित्य रा पारखी है कठै?'' आ बात कुण किणनै, कद अर क्यूं कही? खुलासौ करौ।
2. इण रिपोर्ताज नै संस्मरण कैवण में कांई अबखाई है? खुलासौ करौ।
3. 'अेक दिन आपरौ' रचना रै धेय रौ खुलासौ करौ।
4. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) आपरौ भायलौ अेक पोस्टर देख रियौ है जिणमें सिनेमा री फोटूवां लाग्योड़ी है। आप मूंडै सूं सीटी बजाय दी है। बठीनै वां तीजा भायला रौ ध्यान पोस्टर सूं हट'र आपरै कानी व्हैग्यौ है। वौ आपनै देखनै उछळग्यौ है। आप दोनूं लिपटग्या हौ अर अेक–दूजै रौ बोझौ उठाय रिया हौ।

(ब) आपरौ मूड बिगड़ग्यौ है, क्यूंकै आपरी मस्ती में खलल पड़गी है। मेहमान सूं रामजी बचावै। पण, आयां री खातरी तौ करणी ईज पड़सी। आपरौ औ अेक दिन यान ईज बीतग्यौ– बाप कांई कर भी नीं पाया हौ, सोच भी नीं पाया हौ।

दूहा
वीर सतसई

सूर्यमल्ल मीसण

कवि–परिचै

राजस्थानी काव्य परम्परा री आधुनिक काल री पैली कड़ी रा कवियां में कविवर सूर्यमल्ल मीसण सिरमौड़ कवि है। राजस्थानी काव्य री चारण सैली रा कवि जिका परम्परागत मूल्यां रै साथै–साथै आधुनिक विचारां नै ई आगै बधाया वां कवियां में कविवर सूर्यमल्ल मीसण रौ नांव सिरै रैयौ है। आपनै 'वीर रसावतार' भी कैयौ जावै। कविराज सूर्यमल्ल मीसण रौ जनम काती रा अंधार–पख री अेकम, संवत् 1872 नै बूंदी में हुयौ। आपरा पिता बूंदी रा राजकवि चंडीदान मीसण हा। टाबरपणा सूं ई आप बेजोड़ प्रतिभा रा धणी रैया। दस बरस री उमर आवतां–आवतां आप 'रामरंजाट' नांव रै गद्य ग्रंथ री रचना करी। आपरा गुरु दादूपंथी साधु श्री स्वरूपदासजी हा। साहित्य सिरजण रै साथै–साथै सूर्यमल्ल संगीत रा साधक अर कुसल वीणावादक हा। आप छः ब्याव कस्या, पण आपनै संतान सुख नीं मिळ्यौ। आपरा चेलां मांय 'गणेशपुरी' खास रैया जिका 'वीर–विनोद' री रचना करी। कविवर सूर्यमल्ल मीसण री चावी रचनावां इण भांत रैयी है– 1. रामरंजाट 2. वंश भास्कर 3. बलवद् विलास 4. छंदो मयूख 5. वीर–सतसई 6. सतीरासो 7. धातुरूपावलि 8. फुटकर कवित्त। आं सगळी रचनावां मांय सूं कवि री चावी रचना 'वंशभास्कर' ग्रंथ है जिकौ रावराजा रामसिंह री इच्छा सूं लिखीज्यौ। औ ग्रंथ इतियास, भासा अर साहित्य री दीठ सूं घणौ महताऊ ग्रंथ है। इण ग्रंथ री रचना संवत् 1897 में हुई इण विसाल ग्रंथ रौ मूल पाठ लगैटगै ढाई हजार पानां रौ है। साहित्य सिरजण करतां–करतां आप आसाढ़ बदी 11, संवत् 1925 में सुरग सिधाया। भौतिक रूप सूं आज आप भलां ई नीं है, पण आप आपरी रचनावां पाण जुगां लग जीवता रैवैला।

पाठ–परिचै

कविराजा सूर्यमल्ल मीसण री रचनावां मांय सूं अेक चावी रचना 'वीर–सतसई' रैयी है। 'सतसई' रौ अरथ 'सात सौ छंदां' री रचना सूं हुवै, पण आ रचना सात सौ छंदां (दूहां) मांय नीं लिखीजी है। इण मांय 288 दूहा ईज लिखीज्या है, आ रचना पूरी नीं लिखी जा सकी। वीर–सतसई री रचना उण जुग नै देखतां घणी महताऊ गिणी जा सकै, उण बखत भारत में सन् 1857 रै पैले स्वतंत्रता संग्राम री ज्वाला सिळगण लागगी ही। इण रचना में केई ठौड़ इण भांत रा संकेत मिळै है। वीर सतसई में मरजाद भूल्योड़ा वीरां में वीरता जगावण रौ संदेस है, अंगरेजां री बधती ताकत सूं कवि वाकब हा अर उणनैं दबावण रौ संदेस आपरी रचना सूं दियौ। केई विचारक तो आ भी कैवै कै 'वीर–सतसई' पैलड़ै स्वतंत्रता संग्राम रौ 'काव्यमय उद्‌गार' है। इण रचना में आदर्श वीरां रौ चितराम है तो वीर नारियां री प्रेरणा है। इणमें कठैई वीर मां, कठैई वीर पत्नी री हुंकार अर चेतना है, तौ कठैई कायरां री निंदा करण में ई कवि पाछ नीं राखी है। इण रचना सूं आ बात सिद्ध हुवै' कै जे समाज री नारी वीर होवै तौ समाज किणी भांत कायर अर डरपोक नी रैय सकै। वीरां रा आदर्श, वीर नारी री चेतना अर कवि री सीख इण रचना री खासियत कैयी जा सकै। आधुनिक राजस्थानी काव्य परपंरा री इण रचना में सगळै 'दूहा छंद' रौ प्रयोग हुयौ है अर वैणसगाई री छिब खास उल्लेख जोग है।

वीर सतसई

सहणी सबरी हूं सखी, दो उर उलटी दाह।
दूध लजाणौ पूत सम, वलय लजाणौ नाह।।

हथळेवै री मूठ किण, हाथ विलग्गा माय।
लाखां बातां हेकलौ, चूड़ौ मो न लजाय।।

नागण जाया चीटळा, सीहण जाया साव।
राणी जाया नहँ रुकै, सो कुलवाट सुभाव।।

घोड़ा घर ढालां पटल, भाला थंभ बणाय।
जे ठाकुर भोगै जमीं, और किसौ अपणाय।।

मणिहारी जा री सखी, अब न हवेली आव।
पीव मुवा घर आविया, विधवा कवण बणाव।।

अठै सुजस प्रभुता उठै, अवसर मरियां आय।
मरणौ घर रै मांझियां, जम नरकां ले जाय।।

सूता घर–घर आळसी, वृथा गुमावै बेस।
खग धारा घोड़ां खुरां, दाबै अजका देस।।

नहँ पड़ौस कायर नराँ, हेली वास सुहाय।
बळिहारी जिण देसड़ै, माथा मोल बिकाय।।

टोटै सरकाँ भींतड़ा, घातै ऊपर घास।
वारीजै भड़ झूंपड़ाँ, अधपतियाँ आवास।।

इळा न देणी आपणी, हालरिया हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बड़ाई माय।।

कायर घर ऊढ़ा कहै, की धव जोड़ै काम।
कण कण संचै कीड़ियाँ, जोवै तीतर जाम।।

जिण बन भूल न जावता, गैंद गवय गिड़राज।
तिण बन जंबुक ताखड़ा, ऊधम मंडै आज।।

बिण माथै वाढै दळां, पौढै करज उतार।
तिण सूरां रौ नाम ले, भड़ बांधै तरवार।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

भड़=वीर। ओळगण=गावण वाळा। केहरी=सिंह। गज=हाथी। वाव=गंध। वळय=चूड़ियां। धण=पत्नी। चीटला=नागण रा बच्चा। उर=हिरदै। वलय=चूड़ौ। हेकलौ=अेकलौ। चीटळा=सपोळा। कुळवाट=कुळ परंपरा। सुभाव=स्वभाव। थंभ=थंभा। मुवा=मरियोड़ा। मांझिया=बीच में। वृथा=व्यर्थ। हेली=सखी। सरका=सरकंडा। इळा=पृथ्वी। ऊढ़ा=प्रौढ़ा। धव=पति। बन=वन। गैंद=गैंडौ। जंबुक=सियार। बाढै=काटै। दळां=सेना। भड़=वीर।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'वीर सतसई' रा रचनाकार है–
   (अ) दुरसा आढा (ब) ईसरदास
   (स) सूर्यमल्ल मीसण (द) नरसी भगत
   ( )

2. सूर्यमल्ल मीसण रौ जनम–स्थान है–

(अ) जोधपुर (ब) बीकानेर

(स) बाड़मेर (द) बूंदी

( )

3. कुणसौ ग्रन्थ सूर्यमल्ल मीसण रै रचियोड़ौ नीं है–

(अ) वंश भास्कर (ब) वीर सतसई

(स) राधा (द) राम रंजाट

( )

4. सूर्यमल्ल मीसण रा गुरु कुण हा?

(अ) कबीरदासजी (ब) दादूदयाल

(स) स्वरूपदासजी (द) रैदासजी

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. सूर्यमल्ल मीसण रौ जनम कठै अर कद होयौ?
2. 'वीर सतसई' किण रस री रचना है?
3. सूर्यमल्ल मीसण वीर सतसई री रचना किण शैली में करी?
4. सूर्यमल्ल रै पिता रौ कांई नाम हौ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. सूर्यमल्ल मीसण रा दो ग्रंथां रा नांव बतावौ।
2. सूर्यमल्ल मीसण रचित 'वीर सतसई' में कित्ता दूहा है?
3. सिंधू राग कुण गावता? इणरौ कांई महत्त्व हौ?
4. ''सो कुळ वाट सुभाव'' में कवि कांई कैवणौ चावै?
5. वीर पत्नी घोड़ै री बडाई किण भांत करी है?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. सूर्यमल्ल मीसण रौ जीवण परिचय देवता थकां साहित्य जगत में इणां रै योगदान रौ खुलासौ करौ।
2. कवि सूर्यमल्ल मीसण वीर सतसई में वीरत्व री व्यंजना किण भांत करी है?
3. 'वीर सतसई' रा पठित छंदां रै आधार माथै राजस्थान री वीर नारी रा गुणां रौ बखाण करौ।
4. नीचै दिरीज्या दूहां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) घोड़ा घर ढालां पटल, भाला थंभ बणाय।
जे ठाकुर भोगै जमीं, और किसौ अपणाय।।

(ब) बिण माथै वाढै दळां, पौढै करज उतार।
तिण सूरां रौ नाम ले, भड़ बांधै तरवार।।

(स) टोटै सरकाँ भींतड़ा, घातै ऊपर घास।
वारीजै भड़ झूंपड़ाँ, अधपतियाँ आवास।।

सोरठा
चेतावणी रा चूंगट्या

केसरीसिंह बारहठ

कवि–परिचै

राजस्थानी काव्य परम्परा में वै कवि जिका काव्य सिरजण रै साथै देस रै स्वतंत्रता संग्राम में आपरी महताऊ भूमिका निभायी अर देस रै खातर आपरौ सैं की बलिदान कर दियौ, अैड़ा भारत माता रा सपूतां में राजस्थान रा कवि केसरीसिंह बारहठ रौ नांव खास तौर सूं लियौ जाय सकै। इणां री प्रेरणा सूं आं रौ छोटो भाई अर बेटौ भी आजादी खातर आपरै जीवण नै होम दियौ। कवि केसरीसिंह बारहठ रौ जनम 21 नवम्बर, 1872 नै शाहपुरा (भीलवाड़ा) ठिकाणै रै 'देवखेड़ा' गांव में हुयौ। आपरा पिता किशनसिंह जी बारहठ भी चावा कवि अर इतिहासविद् हा। उण बगत देस में आजादी रौ आंदोलन चालतौ हौ, सो आप आंदोलन में कूद पड़्या। पैली आपरी आस्था अहिंसक आंदोलनां कांनी नीं ही। आप हिंसक आंदोलन रा समरथक रैया। इणी कारण वै 'अभिनव भारत' नांव रै क्रान्तिकारी संगठन सूं जुड़ग्या अर राजस्थान में इण री जड़ां जमावण सारू खूब प्रयास कर्‌या। भारत रै स्वतंत्रता संग्राम में आपरौ पूरौ परिवार लागग्यौ। आपरा छोटा भाई जोरावर सिंह 'हार्डिंग बम कांड' में अपराधी घोसित हुया, पण आपनै कोई पकड़ नीं सक्यौ। आपरौ सपूत प्रतापसिंह बारहठ भी कांतिकारी रैयौ। वो ई वीर हौ, पण उणनै धोखै सूं पकड़ लियौ अर जेळ में कैद कर लियौ। अणूंती जातनावां रै कारण उणरी जेळ में ईज मौत होयगी। अंगरेजी सरकार आपनै ई सन् 1912 में गिरफ्तार कर लियौ। पछै कोटा अर हजारी बाग जेळ में आपनैं राखीज्यौ। आपनै 1919 में जेळ सूं पाछी मुगती मिली। कवि केसरीसिंह आपरै विचारां सूं रजवाड़ां नै ई औ समझावण रौ जतन करता रैया कै अंगरेजां रौ राज घणा दिनां तांई रैवण वाळौ नीं है, इण वास्तै सगळां नै आगै आय'र इण राज नैं हटावण में सैयोग करणौ चाईजै, वै लिख्यौ–

''अवधि अब ओछीह, सोचीजै सह भूपत्यां।
पड़ग़ी पख पोचीह, नीत सलोची नह रखी।
साज्यां बणिकां साज, रजवट वट खोवै रिपु।
रहसी नहीं ओ राज, आज लगां जिण बिध रह्यौ।''

वै कवि रै दायित्व नै नीं भूल्या वै लिख्यौ कै अेक चारण कवि रौ जीव इण दुरगत नै देख घणौ दुख पाय रह्यौ है–

''खत्रवट मांहै खोट, देखै दुख पावै दुसह।
तद चारण चुभती चोट, हिरदै सबदां री हणै।।''

आजादी रा क्रान्तिकारी कवि केसरीसिंह आपरै जीवण रै छैहला दिनां में अंहिसा अन्दोलन रा समरथक बणग्या। 14 अगस्त, 1941 में देस री सेवा करतां थकां औ सेवक आपरी जीवण–यात्रा नै विराम दियौ।

पाठ–परिचै

भारत रै स्वतंत्रता आन्दोलन रै इतिहास में कवि केसरीसिंह बारहठ रा लिख्योड़ा 13 सोरठा 'चेतावणी रा चूंगट्या' रै नाम सूं घणा चावा रैया। अै सोरठा इतिहास नैं अेक नूंवौ मोड़ दियौ। सन् 1903 में दिल्ली में लार्ड कर्जन अेक दरबार रौ आयोजन कर्‍यौ। इणमें भारत रा सगळा राजावां नै दरबार में हाजरी देवण रौ न्यूतौ दिरीज्यौ। मेवाड़ रा महाराणा फतहसिंह ई दिल्ली सारु व्हीर होया। कवि केसरीसिंह बारहठ आ चावता हा कै मेवाड़ री अनमी पाग जिकी मुगलां आगै ई नीं झुकी वा अंगरेजां सांम्ही नीं झुकै, इण वास्तै आप अै सोरठा लिख महाराणा री सेवा में भेज्या। आं सोरठां नै पढ़ दिल्ली पूग्योड़ा महाराणा दरबार में हाजर नीं होया अर पाछा उदयपुर आयग्या। 1903 में अंगरेजां रै विरोध री आ घटना अेतिहासिक रैयी। महाराणा रौ दरबार में नीं जावणौ मेवाड़ री आन–मान–मरजादा नै बचाय लियौ अर मेवाड़ री अनमी पाग जिकी पैली किणी रै सांम्ही नीं झुकी, उण बगत ई नीं झुकी। अै अेतिहासिक सोरठा इण वास्तै महताऊ है।

चेतावणी रा चूंगट्या

पग–पग भम्या पहाड़, धरा छांड राख्यौ धरम।
महारांणा 'र मेवाड़, हिरदै बसिया हिंद रै।।

घण घलिया घमसांण, रांण सदा रहिया निडर।
पेखंतां फुरमांण, हलचल किम फतमल हुवै।।

गिरद गजां घमसांण, नहचै धर माई नहीं।
मावै किम महरांण, गज दो सै रा गिरद में।।

औरां नै आसांण, हाकां हरवळ हालणौ।
किम हालै कुळरांण, हरवळ साहां हांकिया।।

नरियंद सह निजरांण, झुक करसी सरसी जका।
पसरेलौ किम पांण, पांण थकां थारौ फता।।

सिर झुकिया सहंसाह, सिंघासण जिण सांमनै
रळणौ पंगत राह, फाबै किम तोनै फता।।

सकळ चढावै सीस, दांन धरम जिणरौ दिये।
सौ खिताब बगसीस, लेवण किम ललचावसी।।

देखैला हिंदवांण, निज सूरज दिस नेह सूं।
पण तारा परमांण, निरख निसासां नांखसी।।

देखे अंजस दीह, मुळकेलौ मन ही मनां।
दंभी गढ दिल्लीह, सीस नमंतां सीसवद।।

अंत बेर आखीह, पातल जे बातां पहल।
रांणां सह राखीह, जिणरी साखी सिरजटा।।

'कठण जमांनौ' कौल, बांधै नर हीमत बिना।
वीरां हंदौ बोल, पातल सांगै पैखियौ।।

मांण मोद सीसोद, राजनीति बळ राखणौ।
गवरमिंट री गोद, फळ मीठा दीठा फता।।

अब लग सारां आस, रांण रीत कुळ राखसी।
रहौ स्याय सुखरास, अेकलिंग प्रभु आपरै।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

भमिया=भटकता रैया। फुरमाण=फरमान (हुकम)। गिरद=गरद, खंक, रंजी। धैरौ=नेहचै, पक्कायत। हरवळ=हरावळ, आगीवाण। नरीयंद=नरेन्द्र, राजा। पाण=तरवार, हाथ। निसांसा नाखसी=दुख भरी सांस छोडणी, अफसोस जाहिर करणौ। अंजस=गुमेज, गौरव। दीह=दीरघ, मोटौ। बैर=बगत, समै। आखिह=कैयौ, भाखी। हंदौ=रौ। खिताब=उपाधि, पदवी।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'निजरांण' सबद रौ अरथ है–

(अ) राणा रौ निजू (ब) निजर आवणौ

(स) भेंट (द) निजर लागणी

( )

2. 'चेतावणी रा चूंगट्या' किण सारू लिखीज्या?

(अ) महाराणा फतहसिंह (ब) महाराजा गंगासिंह

(स) महाराजा जोरावरसिंह (द) महाराणा प्रतापसिंह

( )

3. 'चेतावणी रा चूंगट्या' रा रचनाकार है–

(अ) प्रतापसिंह बारहठ (ब) केसरीसिंह बारहठ

(स) किसनसिंह बारहठ (द) करणीदान बारहठ

( )

4. 'हार्डिंग बम कांड' में किणनै अपराधी घोसित करीज्यौ–

(अ) केसरीसिंह बारहठ (ब) प्रतापसिंह बारहठ

(स) किसनसिंह बारहठ (द) जोरावरसिंह बारहठ

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि केसरीसिंह बारहठ रौ जलम कठै हुयौ?
2. केसरीसिंह बारहठ क्रान्तिकारियां रै कुणसै संगठण सूं जुड़्या?
3. केसरीसिंह बारहठ रजवाड़ां नै कांई सीख दी?
4. आजादी रै आंदोलन में कवि बारहठ नै कुण–कुणसी जेळां में राखीज्यौ?
5. महाराणा फतेहसिंह दिल्ली दरबार में हाजर क्यूं नीं हुया?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'खिताब' अर 'बखसीस' में कांई फरक हुवै?
2. कवि रै मुजब महाराणा फतहसिंह अर वांरै बडेरां में कांई फरक है?
3. कवि भारत रा दूजा राजावां री तुलना में मेवाड़ रा महाराणावां नै खास क्यूं मान्या है?
4. आं ओळियां में कवि कांई कैवणौ चावै–

(अ) 'पण तारा परमांण, निरख निसांसा नांखसी।''

(ब) 'मान मोद सीसोद, राजनीत बल राखणौ।''

5. 'चेतावणी रा चूंगट्या' में आया वैण–सगाई अलंकार रा दोय दाखला देवौ।
6. 'स्वतंत्रता संग्राम' में केसरीसिंह बारहठ रौ पूरौ परिवार ईज लागग्यौ।'' इण कथन रौ खुलासौ करौ।

लेखरूप पडू़त्तर वाळा सवाल

1. 'चेतावणी रा चूंगट्या' भारतीय इतिहास नै नूंवौ मोड़ दियौ।'' इण कथन रौ खुलासौ करौ।
2. ''केसरीसिंह बारहठ कवि रै सागै क्रान्तिकारी ई हा।'' इण कथन नै ध्यान में राखता थकां केसरसिंह बारहठ रै व्यक्तित्व अर कृतित्व नै समझावौ।
3. 'चेतावणी रा चूंगट्या' रौ सार लिखौ।
4. नीचै दिरीज्या सोरठां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) पग–पग भम्या पहाड़, धरा छांड राख्यौ धरम।
महारांणा 'र मेवाड़, हिरदै बसिया हिंद रै।।

(ब) नरियंद सह निजरांण, झुक करसी सरसी जका।
पसरेलौ किम पांण, पांण थकां थारौ फता।।

सोरठा
द्रौपदी–विनय

रामनाथ कविया

कवि–परिचै

आधुनिक राजस्थानी काव्य परम्परा रा चावा कवि रामनाथ कविया रौ जनम चारण जाति री 'कविया' साखा में संवत् 1865 में 'चोखै को बास' गांव में हुयौ। कठैई–कठैई इण गांव रौ नांव 'गुमानपुरौ' ई बतायौ जावै है। आपरै पिताजी रौ नांव ग्यानजी कविया हौ। ग्यानजी आपरी वीरता अर पौरुषता रै कारणै घणा लोक चावा रैया। आपरा दादोसा नरसिंहदास जी कविया ई रणखेतर में ईज प्राण त्यागिया हा अर पड़दादोसा रौ नांव ई घणौ चावौ रैयौ। इण भांत सूरवीरता आपनै कुळ परंपरा सूं मिळी अर शिक्षा–दीक्षा ई उणी भांत हुयी। कवि रामनाथ कविया रै जीवण री महताऊ घटना खुद रै छोटै भाई री खोज करण री रैयी, जिणां नै खोजतां–खोजतां तिजारै पूग्या भाई नै तिजारै रा राजा बळवंतसिंह साथै देख्यौ अर राजा सांम्ही भाई नै मां सूं मिळावण रौ संकळप बतायौ, पण राजाजी इणां री काव्य–प्रतिभा सूं प्रभावित हुय उणां नै ई उठै ईज राख लिया पछै घणी अरदास कर्‍यां फगत छः दिनां सारू मां कनै जावण री आज्ञा दीनी। विदाई री बेळा राजाजी कांनी सूं 'लाख पसाव' अर 'सिंहाली' गांव आपनै भेंट करीज्यौ।

अठीनै अेक कुचक्र में अलवर नरेश विनयसिंह राजा बळवंतसिंह नै मरवा दियौ अर जागीर जब्त करली अर इणरै साथै रामनाथजी कविया रौ गांव ई जब्त कर लियौ, जदकै 'सांसण' गांव कदैई जब्त नीं हुवै। वै कवि री बात नीं मानी। कवि रामनाथ जी इणरौ विरोध कर्‍यौ, पण राजा रै कीं असर नीं हुयौ। राज दरबार अर परिवार में भी इणरौ विरोध हुयौ, पण राजा आपरौ हठ नीं छोड्यौ। इणरै विरोध में कवि रामनाथजी अेक सौ अेक चारणां रै साथै धरणौ दियौ जिकौ इतिहास में घणौ विख्यात हुयौ। कवि दृढ़ रैवतां देवी रौ आह्वान कर्‍यौ। आ बात घणी मानीजै कै देवी रै कोप सूं म्हैल हिलग्या अर राजा डर' र 'सिंहाली' री ठौड 'सटावट' गांव दियौ। इणरै पछै महाराज शिवदान सिंह रा आप संरक्षक बण्या, पण आपरी कठोरता अर करड़ै अनुसासन सूं शिवदानसिंहजी नाराज हुया अर बालिग हुयां आपरै गांव नै जब्त कर आपनै कैद में बंद कर दिया। कैद में रैवतां ईज आप 'द्रौपदी–विनय' री रचना करी, जकी 'करुण बहत्तरी' रै नांव सूं ई चावी है। लारलौ जीवन भक्ति में लगावतां–लगावतां कवि आपरी देह नै संवत् 1935 में छोडी।

कविवर रामनाथ कविया री रचनावां इण भांत रैयी– 1. करणीजी री स्तुति 2. पाबूजी रा सोरठा 3. द्रोपदी–विनय (करुणा बावनी) 4. फुटकर काव्य।

पाठ–परिचै

कन्हैयालाल सहल री संपादित पोथी 'द्रौपदी–विनय' कवि रामनाथ कविया री घणी चावी रचना है। आ रचना 'करुणा बावनी' या 'करुण–बहत्तरी' रै नांव सूं भी जाणीजै। नारी सशक्तिकरण रौ भाव लियां वांरी आ खास रचना रैयी है। इण काव्य री रचना वै जेळ में कैद रैवता थकां करी। कवि रामनाथ कविया महाराजा शिवदान सिंह रै राज री अव्यवस्था रा शिकार हुया। वांरा स्वामी ईज वांनै दुख दिया, इण वास्तै वै अव्यवस्था रौ विरोध कर्‍यौ। कवि आपरै भाव नै द्रौपदी

रै माध्यम सूं सांम्ही लाया। जिण भांत द्रौपदी आपरै पतियां रै कारणै दुख पायी– राजा, मंत्री, सभासद या सभा में बैठा मोटा–मोटा मानवी अर दूजा कोई वीर उणरी सहायता नीं करी। वा खुद आगै आय सगळां नै धिक्कारिया, समाज री विडरूपता माथै करारौ व्यंग्य कर्‌यौ अर द्रौपदी अेक वीर नारी रै रूप में सांम्ही आयी है, जिकी आपरै सैंजोड़ जुग सूं संघर्ष करतां विजय पायी। उणरै संघर्ष में भगवान ई सहायक हुया। कवि कैवै जिकौ खुद संघर्ष करै भगवान उण री सहायता करै।

द्रौपदी–विनय

पति गंध्रप है पाँच, धरतां पग धूजै धरा।
आवै लाज न आँच, धर नख सूं कुचरै धवळ।।

मिटसी सह मतिमंद, कळंक न मिटसी भरत कुळ।
अंध हिया रा अंध, पूत दुसासण पाल रे।।

लौ या बिरियां लाख, धर थांरी थे ही धणी।
निंदित क्रित हकनाक, कुरुकुळ भूखण मत करौ।।

निलजी कैरव नार, के ऊभी मुळक्या करै।
आसी कुटुम्ब उधार, देणा सो लेणा दुरस।।

जोवो जेठाणीह, देराणी थैं देखल्यौ।
होवै लज हाणीह, बीती मो तो बीतसी।।

देवकी'र वसुदेव, पख ऊजळ माता–पिता।
जिण कुळ जनम अजेय, सो किम बिसर्‌यो सांवरा।।

गज नै ग्रहियौ ग्राह, तैं सहाय हुय तारियौ।
बारी मो बैराह, बैठौ व्है वसुदेव रा।।

रटियौ हरि गजराज, तज खगेस धायौ तठै।
आ कँई देरी आज, करी इती तैं कान्हड़ा।।

लड़कापण प्रहलाद, आद अंत कीधौ अवस।
उणरी राखी याद, सिंघनाद कर सांवरा।।

अबळा बाळक एक, अरज करूं ऊभी अठै।
टाबर ध्रुव री टेक, तैं राखी वसुदेव तण।।

लेवै अबळा लाज, सबळा हुय बैठां सको।
गरढ सभा पर गाज, सुणतां राळौ सांवरा।।

द्रौपद हेलौ देह, वेगौ आ वसुदेव रा।
लाज राख जस लेह, लाज गियां व्रद लाजसी।।

ऐ मिल दुसटी आज, पाल अनारी पालटै।
लागै कुळ नै लाज, सांच रखाज्यौ सांवरा।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

गंध्रप=गंधर्व। आंच=आग (रीस, क्रोध)। धवळ=वीर। पाल=रोक। सह=सारा। या=इणनै हकनाक=नाहक। निलजी=निरलज, बेसरम। ऊभी=खड़ी। दुरसं=ठीक वौ ईज। जोवौ=देखल्यौ। गज=हाथी। ग्रहियौ=पकड़ियौ। बैराह=बोळौ, बहरौ। तठै=बठै। गरड=बूढा। गाज=बिजळी। राळौ=गेरौ, न्हाखौ। व्रद=विरुद। पालटै=पलटै।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. पाल अनारी पालटै' मांय कुणसौ अलंकार है–

   (अ) रूपक (ब) मानवीकरण

   (स) यमक (द) अतिशयोक्ति

   ( )

2. 'सो किम बिसरयौ सांवरा' मांय कुणसौ अलंकार है–

   (अ) वैणसगाई (ब) अतिशयोक्ति

   (स) उपमा (द) स्लेस

   ( )

3. द्रौपदी लाज राखण री अरज किण सूं करी–

   (अ) राम सूं (ब) हनुमान सूं

   (स) क्रिसन सूं (द) दुर्गा सूं

   ( )

4. 'गरढ़ सभा पर गाज' मांय गरड सबद आयौ है–

   (अ) विद्वानां सारू (ब) बूढां सारू

   (स) पांडुवां सारू (द) कौरवां सारू

   ( )

5. महाभारत में 'धरमराज' रै नांव सूं कुण विख्यात हा–

   (अ) दुर्योधन (ब) अर्जुन

   (स) करण (द) युधिष्ठिर

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. रामनाथजी कविया रौ जलम कठै होयौ?
2. 'द्रौपदी–विनय' पोथी दूजै किण नांव सूं प्रसिद्ध है?
3. 'द्रौपदी–विनय' रौ सम्पादन कुण कर्यौ?
4. रामनाथ कविया री किणी दो रचनावां रा नांव लिखौ।

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कळंक न मिटसी भरतकुळ' में कवि कांई कैवणौ चावै?
2. सोरठा छंद री परिभासा अर उदाहरण लिखौ।
3. द्रौपदी आपरी करुण पुकार किण सूं किण भांत करी?
4. 'टाबर ध्रुव री टेक' ओळी रौ भाव–विस्तार करौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. रामनाथ कविया रै व्यक्तित्व अर कृतित्व रौ वरणन करौ।
2. द्रौपदी–विनय रा पठित छंदां रौ सार लिखौ।

3. 'रामनाथजी रै हिरदै री करुण पुकार ईज द्रौपदी–विनय रै सोरठां मांय परतख हुयी है।''
   इण कथन रौ खुलासौ करौ।
4. द्रौपदी री करुण पुकार में कुण–कुणसी अंतरकथावां आई है? मांड'र लिखौ।
5. नीचै दिरीज्या सोरठां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) पति गंध्रप है पाँच, धरतां पग धूजै धरा।
    आवै लाज न आँच, धर नख सूं कुचरै धवळ।।

(ब) रटियौ हरि गजराज, तज खगेस धायौ तठै।
    आ कँई देरी आज, करी इती तैं कान्हड़ा।।

(स) द्रौपद हेलौ देह, वेगौ आ वसुदेव रा।
    लाज राख जस लेह, लाज गियां व्रद लाजसी।।

दूहा
चतुर चिन्तामणी

बावजी चतुरसिंह

कवि–परिचै

संसार में आध्यात्मिक चेतना जगावण रौ काम कोई साधु–संत ईज करै, औ जरूरी नीं है। गिरस्ती भी वेदां रौ ज्ञान देय सकै, उपनिषदां नै समझा सकै अर गीता री व्याख्या करता थकां मानखै री चेतना नै जगाय उणनै सद्मारग री प्रेरणा देय सकै। औ अबखौ काम कर्‌यौ। मेवाड़ रा संतकवि महाराज चतुरसिंह, जिणां नै सगळा 'बावजी चतुरसिंह' रै नांव सूं पिछाणै है। बावजी चतुरसिंह रौ जनम मेवाड़ रै राजपरिवार सूं जुड्या महाराजा संग्राम सिंह (दूजा) रै तीजै बेटै बाघसिंह रै वंस में महाराजा सूरजसिंह, ठिकाणौ करजाली रै पुत्र रै रूप में 9 फरवरी, 1880 नै हुयौ। आपरी माता कृष्ण कंवर हा। आप मेवाड़ महाराणा फतहसिंह रा भतीजा हा। आपरौ ब्याव जयपुर रा छापोली ठिकाणै में हुयौ अर आपरै अेक बेटी ई हुयी, पण जोड़ायत अर बेटी रौ देहावसान बैगौ ईज हुयग्यौ। इण पछै आपरी वृत्ति आध्यात्मिकता कांनी जुड़ग़ी इणांरै व्यक्तित्व माथै आपरै पिता रौ घणौ असर रैयौ, जिका खुद ई उदासीन विरती रा महापुरुस हा। धीरै–धीरै आपरी इच्छा योग शिक्षा लेवण री हुई अर आप नरबदा नदी रै किनारै रैवण वाळा योगी कमल भारतीजी कन्नै गया, पण वै आपनै बाठरड़ा रा योगीराज ठाकुर गुमानसिंह सूं शिक्षा लेवण रौ निर्देश दियौ। आप बाठरड़ा ठिकाणा रै लिछमणपुरा गांव में ठाकुर गुमानसिंह सूं योगशिक्षा लेवण वास्तै आया जिका आपरै साख में काका लागता हा। वै आपरा गुरु बणग्या अर आपनै राजयोग री शिक्षा दी इण सारू आप खुद लिख्यौ है–

पायो नह विसराम, धायो धामो धाम।
घर में ही काका मिळ्या, नरदेही में राम।।

गुरु गुमानसिंह जिका खुद योगी अर महान् कवि हा वै लिछमणपुरा रै 'रामझरोखै' बैठ 'बावजी' नै योग री शिक्षा देवतां लिख्यौ–

"प्रथम अभ्यासो ज्ञान को, ज्ञान भक्ति संग राख,
जानो चतुर आपहू, वो गीता की साख,
हृदय ब्रह्म को भवन है, चातुर श्रुति प्रमांण,
नैन द्वार तै निरख लो, सत–सत कहै गुमांन।।"

इण भांत बावजी चतुरसिंह राजयोग री शिक्षा लीवी अर महान् योगी बणग्या। इणरै साथै–साथै आप केई ग्रंथां री रचना करी। इण रूप में आप समाज में संत, योगी, साधक अर कवि रै रूप में चावा हुयग्या। वै आपरी रचनावां में साधना री बात तौ करी, पण साथै–साथै जन–जन नै अध्यात्म अर आदर्श जीवण री सीख दी। आध्यात्मिक, सामाजिक चेतना जगावता थकां आप जनकवि भी बणग्या। महाराजा चतुरसिंह रा ग्रंथ इण भांत देख्या जा सकै–

1. भगवत् गीता (गंगाजली टीका) 2. परमार्थ विचार 3. योगसूत्र टीका 4. सांख्यतत्त्व टीका 5. सांख्यकारिका टीका 6. मानवमित्र रामचरित्र 7. शेष चरित्र 8. अलख पच्चीसी 9. तूं ही अष्टक 10. अनुभव प्रकास 11. चतुर चिंतामणी 13. महिम्नस्तोत्र (अनुवाद)–चन्द्रशेखराष्टक 14. हनुमान पंचक 15. समान बतीसी 16. चतुरप्रकाश 17. मेवाड़ी प्राइमर 18. बालकां री बातां।

योग–साधना, साहित्य–साधना करतां अर जन–जन नै चेतावता थकां बावजी आपरी देह नै 1 जुलाई, 1929 नै त्याग दी।

पाठ–परिचै

महाराज बावजी चतुरसिंह री रचनावां मांय अेक महताऊ रचना 'चतुर चिन्तामणी' है। आ रचना घणी लोकचावी रैयी है आप इणमें न्यारा–न्यारा विसयां नै आधार बणाय दूहा, सोरठा, पदावली, सवैया मांय आपरा भाव उजागर कर्‌या है। 'चतुर चिन्तामणी' में गुरु रौ मैतव, विनय, ब्रज महिमा, ज्ञान, बैराग अर चेतावणी रौ भाव है। माताजी री स्तुति, शौर्य रै साथै फुटकर पदां में भी न्यारा–न्यारा विसयां नै आधार बणायौ है। 'चतुर चिंतामणी' में नीति रा जिका दूहा सांम्ही आया है वां दूहां में बावजी रौ गैरौ अनुभव दीसै। यूं लागै, जाणै बावजी लोक नै कितरै सांतरै ढंग सूं समझ्यौ है अर उणी समझ अर अनुभव रै आधार माथै नीति रा दूहा लिख्या है । अै दूहा कोरा दूहा नीं हुय'र नीति रा सूत्र अर आदर्श जीवण रा आधार है जिणरौ अनुसरण कर मिनख अेक महामानव बण सकै।

चतुर चिन्तामणी

धरम–धरम सब एक है, पण बरताव अनेक।
ईश जाणनौ धरम है, जींरौ पंथ विवेक।।

पान युंही परमारथी, देवै ताप बुझाय।
नमै फेर सूळां खमै, जद दूना बण जाय।।

पर घर पग नीं मेलणौ, बिनां मान मनवार।
अंजन आवै देखनै, सिंगल रौ सत्कार।।

काम बड़ौ वौ ही बड़ौ, वृथा बड़ौ आकार।
मेंगळ मोटा दांत रौ, नाना नख रौ ना'र।।

उपजै आपौ आप ही, भाग प्रमांणै लाग।
कोइक पीटै ताळियां, कोइक खेंचै खाग।।

उण डोढी तूं जाव रै, जठै न रोकण हार।
या डोढी किण कांम री, रे तूं कहै गंवार।।

ऊंध सूंध नै छोडनै, लेणौ कांम पछांण।
कर ऊंधौ सूंधौ घड़ौ, तरती भरती दांण।

रेंठ फरै चरख्यौ फरै, पण फरवा में फेर।
वो तो बाढ़ हर्‌यौ करै, यो छूंतां रो ढेर।।

बढ–बढ कर माथै चढ्यौ, यो पड़ व्हियौ अजोग।
घड़ौ बीखर्‌यौ देखनै, कहै ठीकरौ लोग।।

कारड तौ कैतौ फरै, हर कींनै हकनाक।
जीं री व्है वींनै कहै, हियै लिफाफौ राख।।

वी भटका भोगै नहीं, ठीक समझलै ठौर।
पग मेल्यां पेलां करै, गेला ऊपर गौर।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

अंजन=इंजन। खाग=तलवार। मेंगळ=हाथी। ना'र=सिंघ। डोढी=मुख्य दरवाजौ। रेंठ=रहट, अरठ। फरवा में=फिरण में, घूमण में। हियै=हिरदै, काळजै। नख=नाखून।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. बावजी चतुरसिंह रौ जलम स्थान है–

   (अ) मारवाड़ (ब) मेवाड़

   (स) वागड़ (द) ढूंढाड़

   ( )

2. कवि धरम किणनै मान्यौ है–

   (अ) धन कमावणौ (ब) भगवान नै जाणणौ

   (स) मिल'र चालणौ (द) सम्मान पावणौ

   ( )

3. ''ठीक समझलै ठौर'' मांय कुणसौ अलंकार है–

   (अ) मानवीकरण (ब) अनुप्रास

   (स) वैणसगाई (द) यमक

   ( )

4. ग्यान, भक्ति अर नीति रा कवि मानीजै–

   (अ) चन्द्रसिंह बिरकाळी (ब) बावजी चतुरसिंह

   (स) सूर्यमल्ल मीसण (द) गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद'

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. बावजी चतुरसिंह रौ जलम किण घराणै में हुयौ?
2. बावजी चतुरसिंह री चावी रचना कुणसी है?
3. 'गंगाजळी' रौ दूजौ नाम कांई है?
4. बावजी चतुरसिंह रौ साहित्य राजस्थानी री कुणसी बोली में रचीज्यौ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. बावजी चतुरसिंह री रचनावां रौ मूळ विसय कांई है?
2. कवि रै मुजब परायै घरां कद जावणौ चाईजै?
3. कवि मोटै आकार नै बिरथा क्यूं मान्यौ है?
4. कवि 'कारड' अर 'लिफाफे' में कांई फरक मान्यौ है?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. बावजी चतुरसिंह रै जीवण–दरसण नै समझावौ।
2. ''बावजी चतुरसिंह री रचनावां में नीति, भगती अर दरसण रौ अखूट खजानौ भर्‌यौ है।'' पाठ में आयोड़ा दूहां रै आधार माथै इण कथन रौ खुलासौ करौ।
3. नीचै दिरीज्या दूहां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) धरम–धरम सब एक है, पण बरताव अनेक।
ईश जाणनौ धरम है, जींरौ पंथ विवेक।।

(ब) काम बड़ौ वौ ही बड़ौ, वृथा बड़ौ आकार।
मेंगळ म्होटा दांत रौ, नाना नख रौ ना'र।।

काव्यांस
जुद्ध

सत्यप्रकाश जोशी

कवि–परिचै

सत्यप्रकाश जोशी आधुनिक राजस्थानी काव्य–परंपरा रा महताऊ कवि रैया है। आपरौ जनम 20 मार्च, 1926 नै जोधपुर में पंडित मोहनलाल जोशी रै घरै हुयौ। साहित्य अर संगीत साधना रा संस्कार आपनै आपरै परिवारिक परिवेस सूं मिळ्या। आप जसवंत कालेज जोधपुर सूं हिन्दी में अेम.अे. करी। सन् 1943 में द्वितीय विश्वजुद्ध री परिस्थितियां नै ध्यान में राखतां आप अेक कविता लिखी– 'जय होगी उनकी ही रण में'। आपरी आ पैली कविता कैयी जा सकै। इण कविता नै जोधपुर राज कानीं सूं पुरस्कार दिरीज्यौ। घर सूं मिळ्या राजस्थानी भासा रा संस्कार, लोकगीतां अर भजनां रा चाव आपनै राजस्थानी कांनी मोड़ दियौ अर आप राजस्थानी में रचना करणी सरू कर दी। सत्यप्रकाश जोशी री कवितावां में इणी कारण लोकसैली रौ प्रभाव ई देख्यौ जा सकै। पढ़ाई पूरी हुयां आप नौकरी सारू बम्बई गया, उठै सूं पाछा आय रूपायन संस्थान, बोरूंदा में काम संभाळ्यौ, पण सेवट आप पाछा बम्बई जाय पूग्या अर उठै अेक कालेज में प्राध्यापक री नौकरी करी। उठै रैवता थकां ई राजस्थानी भासा अर साहित्य री सेवा करता रैया। उठै सूं ईज आप 'हरावळ' नांव री राजस्थानी पत्रिका भी प्रकासित करी। सेवानिवृत्ति पछै आप जोधपुर अर अमेरिका रैया अर 26 अप्रेल, 1990 नै आपरौ सुरगवास जयपुर में हुयौ।

कवि सत्यप्रकाश जोशी री साहित्य साधना बेजोड़ रैयी है। आपरी छः पोथियां छप्योड़ी है, जिकी इण भांत है – 1. सहस्त्रधारा (1956) 2. राधा (1960) 3. दीवा कांपै क्यूं (1962) 4. बोल भारमली (1974) 5. गांगेय (1985) 6. सोन मिरगला। इणरै अलावा आपरी केई कवितावां, निबन्ध अर गद्य रचनावां रा अनुवाद भी छप्योड़ा है। कवि सत्यप्रकाश जोशी री 'बोल भारमली' काव्यकृति नै केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली सूं राजस्थानी रौ पुरस्कार मिळ्यौ। सत्यप्रकाश जोशी री रचनावां री विसेसतावां वांरी भासा री सहजता, संगीतात्मकता अर लयबद्धता है। सबदां रौ विसेस प्रयोग अर वांरी आंट आपरी भासा नै फूठरी बणावै।

पाठ–परिचै

सत्यप्रकाश जोशी री रचनावां में 'राधा' अेक विसेस रचना है। सहस्त्रधारा रचना में तौ हिन्दी री कवितावां ई ही, पण 'राधा' राजस्थानी री पैली न्यारी पोथी कैयी जा सकै। इण रचना में 20 खण्ड है, जिका इण भांत है – मुरली, पैला पैल, पूजा, दरसण, पिणघट माखण, बदनांमी, तिरस, गोरधन, ब्याव, रास, रूसणौ, होळी, बिदा, ओळूं, रूकमणीजी, घनस्यांम, विजोग, पालणौ, जुद्ध। कृष्ण भक्ति परम्परा में 'राधा' नै कृष्ण री प्रेमिका तौ स्वीकार करीज्यौ ईज है पण इण रै साथै–साथै वा आद्या शक्ति रौ अवतार ई मानीजी है। राधा अर कृष्ण आदर्श प्रेमी है, जठै कोई काम रौ भाव नीं है, यानी भक्ति परंपरा में अेक दूजा रा पूरक मान्या है। अलेखूं गद्य–पद्य रचनावां आं दोनूं रै प्रेम नै लेय'र लिखीजी है। राजस्थानी काव्य परंपरा भी इण सूं

अछूती नीं है। आधुनिक राजस्थानी काव्य परम्परा री आ रचना राधा अर कृष्ण रै प्रेम नै नूंवै सरुप में सांम्ही लावै, बालपणै रै प्रीत री ओळूं सांम्ही लायीजी है, पण जद राधा सुणै कै कृष्ण री फौज जुद्ध सारु व्हीर हुई है तो वा संदेश भेजै कै थारी फौजां नै रोक, जुद्ध मत कर। राजस्थानी काव्य में जुद्ध में मरणौ अमरता रौ प्रतीक मानीज्यौ या इणनै 'मरण पर्व' कहीज्यौ है, पण अठै कवि अेक नूंवै सुर में जुद्ध रौ विरोध करता थकां जुद्ध री विभीषिका रौ वरणाव करै। राधा, कृष्ण नै जुद्ध करण सूं रौकै। धरम, समाज, संस्कृति अर मिनखीचारै सारू जुद्ध कितरी हाण पुगावण वाळौ हुय सकै, कवि इण बात नै राधा काव्य रै इण 'जुद्ध' खंड में समझावण रौ प्रयास कर्‌यौ है। मानखै नै जुद्ध सूं विरत करण वाळौ औ संदेस मानवतावादी संदेस कैयौ जाय सकै, जिकौ कवि आपरी इण कविता रै माध्यम सूं देवणी चावै।

जुद्ध

मन रा मीत कांन्हा रे–
कुण थारा दोयण कुण रे सैण,
राता लोयण क्यूं बांकी भूंहड़ी!
धारण क्यूं करिया रे कड़ियाळ,
छोड्या पीतांबर क्यूं रे सोहणा!
सीस बचावण क्यूं सिरत्राण,
मोड़ क्यूं उतार्‌या मोर पंख रा!
मुरली रै बदळै कर कोदंड,
चिरमी री माळा आगी क्यूं धरी!

मन रा मीत कांन्हा रे–
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तौ
भाई पर भाई करसी वार,
आपस में लड़सी, मरसी मांनखौ।
चुड़ला फोड़ैला काळा ओढ़,
अमर सुहागण थारी गोपियां।
कांमणियां बिकसी बीच बजार,
कुण तौ उघड़ी बै'नां नै ढांकसी।
पिरथी पुरखां सूं होसी हीण,
टाबर कहासी बिना बाप रा।
कुण करसी धीवड़ियां रौ ब्याव,
कुण तौ कडूंबौ वांरौ पाळसी!
अणगिण मावड़ियां देसी हाय,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।

मन रा मीत कांन्हा रे–
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तौ
कुण तौ बणासी सतखंड मै'ल,
कुण तौ चिणासी मैड़ी माळिया!
कुण तौ उगेरै मीठा गीत,
कुण तौ बांचैला पोथी पांनड़ा!
कुण करसी गोखड़ियां में जोत,
कुण तौ मांडैला आंगण मांडणा!
कुण तो मनावै वार तिंवार,
कुण तौ तुळछां गवरां नै पूजसी!
अणपूज्या सात्यूं सिंझ्या देव,
कुण तौ करसी रे मिंदर आरती!
मिटता जीवण री थनै आंण,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।

मन रा मीत कांन्हा रे–
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तौ
कोयल कुरळासी बागां मांय,
नाचता थमसी बन में मोरिया।
चीलां मंडरासी हरियै खेत,
गीधण भंवैला सगळै देस पर।
डाकणियां रमसी रात्यूं रास,
चौसठ जोगणियां खप्पर पूरसी।
धरती माता रौ लागै स्राप,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।

मन रा मीत कांन्हा रे–
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तौ
भातौ लै भंवसी रे भतवार,
हाळी जद लड़वा जासी खेत में।
हळ री हळवांणी बणसी सैल
खुरपी सुरां री जड़ियां बाढसी।
मुड़दां री लोथां रौ निनांण,
लोई री पांणत व्हैसी रेत में।
कांमेतण देसी थनै गाळ,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।

मन रा मीत कांन्हा रे–
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तौ
जमना में लोई रै'सी नीर,
माटी रै' जासी लाखां बोटियां।
बस्ती में घावां रिसता सूर,
लूला लंगड़ा बण थनै भांडसी।
अणघड़ रै' जासी सगळी भोम,
ऊजड़ विरंगी होसी कोटड़ियां।
क्यूं मेटै रखवाळां रौ नांव,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।

मन रा मीत कांन्हा रे–
आजा रे दूधां धोल्यां हाथ,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।
गोरस माखण सूं रंगल्यां होठ,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।
आजा गोरी नै भरलै बाथ,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।
आजा रे पिणघट करल्यां बात,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।
आजा रे ओज्यूं रमल्यां रास,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

दोयण=दुस्मण। सैण=हेताळू, आत्मीय। लोयण=आंख्यां, नैण। कर=हाथ। कोदंड=धनुस। घमसांण=जुद्ध, घमासाण। धीवड़ियां=बेटियां। कड़ूंबौ=परिवार। गोखड़ियां=झरोखा, गोखा। कुरळासी=कूकसी, रुदन करसी। भंवैला=मंडरासी। सैल=भाला। लोई=खून। बोटियां=सरीर रा टुकड़ा। भांडसी=भूंडसी, बुराई करसी।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि सत्यप्रकाश जोशी रौ जलम कठै हुयौ?
   (अ) बीकानेर (ब) जोधपुर
   (स) बूंदी (द) कोटा
   ( )

2. कुणसी पोथी सत्यप्रकाश जोशी री नीं है–
   (अ) दीवा कांपै क्यूं (ब) बोल भारमली
   (स) सोन मिरगला (द) लीलटांस
   ( )

3. 'जुद्ध' कविता रौ अंस कुणसी पोथी सूं लिरीज्यौ है–

   (अ) राधा (ब) गांगेय

   (स) दीवा कांपै क्यूं (द) सोन मिरगला

( )

4. जुद्ध कविता संदेस देवै–

   (अ) जुद्ध रौ (ब) बैराग रौ

   (स) सान्ति रौ (द) संन्यास रौ

( )

साव छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. सत्यप्रकाश जोशी री पैली कविता किसी मानीजै?
2. सत्यप्रकाश जोशी री किण रचना माथै केन्द्रीय साहित्य अकादमी सूं पुरस्कार मिळ्यौ।
3. राधा जुद्ध करणै सूं किणनै बरजै?
4. कृष्ण मोरपंख क्यूं उतार दिया?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. सत्यप्रकाश जोशी री किणी चार रचनावां रा नांव बतावौ।
2. ''टाबर कहासी बिना बाप रा'', राधा आ बात क्यूं कैवै?
3. जुद्ध कविता में कृष्ण री पोसाक में कांई बदळाव दरसाईज्यौ है?
4. जुद्ध कविता में लोक–संस्कृति रा कुणसा चितराम दरसाईज्या है?
5. ''मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।'' राधा रै इण कथन में उणरौ कुणसौ रूप परतख हुवै?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. राधा जुद्ध री विभीषिका रौ वरणाव किण भांत कर्‌यौ है? विस्तार सूं समझावौ।
2. ''राधा काव्यकृति सांति अर मिनखपणै रौ संदेस देवै।'' इण कथन नै विगतवार समझावौ।
3. सत्यप्रकाश जोशी री साहित्य–साधना माथै निबन्ध लिखौ।
4. 'जुद्ध' कविता रौ सार आपरै सबदां में लिखौ।
5. नीचै दिरीजी कविता–ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) मन रा मीत कान्हा रे–
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तौ
भाई पर भाई करसी वार,
आपस में लड़सी, मरसी मांनखौ।
चुड़ला फोड़ैला काळा ओढ़,
अमर सुहागण थारी गोपियां।
कांमणियां बिकसी बीच बजार,
कुण तौ उघड़ी बै'नां नै ढांकसी।
पिरथी पुरखां सूं होसी हीण,
टाबर कहासी बिना बाप रा।

(ब) मन रा मीत कांन्हा रे–
जग में जे मंडग्यौ घमसांण, तौ
कोयल कुरळासी बागां मांय,
नाचता थमसी बन में मोरिया।
चीलां मंडरासी हरियै खेत,
गीधण भंवैला सगळै देस पर।
डाकणियां रमसी रात्यूं रास,
चौसठ जोगणियां खप्पर पूरसी।
धरती माता रौ लागै स्राप,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोड़लै।

काव्यांस
मानखौ

गिरधारी सिंह पड़िहार

कवि–परिचै

गिरधारी सिंह पड़िहार राजस्थानी भासा रा ख्यातनांव साहित्यकार हुया है। आपरौ जनम सं. 1976 री सावण बदी 4 नै बीकानेर मांय हुयौ। आप मून धारयोड़ा अेक लूंठा रचनाकार हा। आपरी काव्यकृति 'जागती जोतां' 1960 मांय साम्ही आई। इण पोथी रै कारणै आप इकताळीस बरसां री उमर में ई सिरमौर कवि रै रूप में ई थापित होया। आपरौ खंडकाव्य 'मानखौ' सन् 1964 में छप्यौ। गिरधारी सिंह पड़िहार रौ शैक्षणिक दायरौ भलांई सीमित रैयौ हुवै, पण उणां रै चिन्तन रौ कैनवास इतरौ व्यापक हौ कै वै हरेक बात माथै निष्पक्ष हुयनै खुली बहस करता। आप टेलीफोन एक्सचेंज में काम करता हा। आपरी कविता–पोथी 'जागती जोतां' मांय नौ कवितावां है, जिकी इण भांत है– मेघनाद, सिसपाळ, पुरु, पाबूजी, पातल–अकबर–मान, गोविन्द गुरु रा टाबरिया, धूड़कोट, डूंगजी–जवारजी अर बापू। आपरी कवितावां सुणण री मांग भारतीय फौजी उण बगत रा भारत रा रक्षामंत्री कैलासनाथ काटजू सूं करी ही, जिणरै कारण वै अचरज में पड़ग्या।

पाठ–परिचै

'मानखौ' सबद रौ अरथ तौ 'मिनख' सूं ईज है। मिनख इण समाज अर परिवार री मूल इकाई है। मिनखां सूं ई परिवार अर समाज रौ सरूप बणै। गिरधारी सिंह पडिहार री काव्यकृति 'मानखो' मांय मानखै रौ अरथ मूळ–सबद सूं बेसी है, जिणनै अेकदम सीधै रूप सूं यूं समझ सकां, जिकौ मिनख देही नै धारण करी है, वौ ईज मिनख नीं है। मिनख तौ वौ है जिकौ मिनखपणै नै जीवै। वौ खुद रै वास्तै नीं जीवै, नीं मरै, वौ जीवै तौ दूजां खातर अर मरै तौ दूजां खातर। जिकौ किणी ई भांत दूजां रै अस्तित्व नै मिटाय खुद रै अस्तित्व नै बणायौ राखणौ चावै, वौ मिनख नीं है। वौ मिनख जिकौ व्यक्तिवाद नै लेय'र चालै वौ मिनख नीं है, जिकौ प्रेम अर सहअस्तित्व नै लेय आगै बधै, वौ असली मिनख है। इणी मिनखपणै नै समझावण रौ प्रयास इण काव्य में करीज्यौ है। कवि गिरधारी सिंह पडिहार इण काव्य रौ आधार अेक पौराणिक कथा नै बणायी है, जिणमें सुरग रौ गंधर्व चित्रसेन आपरी प्रेम लीला में मर्यादा नै भूल अेक रिसी रौ अपमान कर देवै। भगवान कृष्ण उण रा अपराध नै अणदेख्यौ नीं कर उणनै मृत्यु–दंड देवण री धार लेवै। उणरी पत्नी सैं ठौड़ सरण री गुहार करै, पण कोई उणरी बात नीं सुणै क्यूंकै उणनै मौत री सजा देवण वाळा कोई और नीं, द्वारकाधीस होवै। गंधर्व हार मान'र खुद चिता चढण लागै जद सुभद्रा आय उणरी रिछ्या रौ अभय वर देवै, जिकी अर्जुन री पत्नी अर कृष्ण री बैन है। सुभद्रा उणनै सरण देय देवै। पछै गंधर्वराज रै जीवण नै उबारण रौ भार अर्जुन रै हाथां में आय जावै, कृष्ण उणनै मारण नै आवै पण अर्जुन उणरी रक्षा खातर त्यार हुय जावै। इण भांत कृष्ण अर अर्जुन आंम्ही–सांम्ही मोरचौ मांड लेवै। सेवट वै ईज रिसी वठै पूग जावै, जिकां रै कारण कृष्ण गंधर्वराज नै स्राप दियौ हौ। रिसी वांनै जुद्ध करतां नै रोकै, साथै ई जुद्ध सूं हुवण वाळी विणास री गति नै समझावै।

रिसी रौ मानणौ हौ कै जुद्ध किणी समस्या रौ समाधान नीं है। अेक जुद्ध दूजै जुद्ध नै जलम देवै। जुद्ध नै तो प्रेम सूं ईज खतम कर्‌यौ जाय सकै। लोग अधिकारां वास्तै जुद्ध करै, पण कवि मानै कै ''अधिकार मानखै रौ निर्णय, इण जुद्धां सूं कद तांई होसी।'' कवि मानै कै आं जुद्धां रौ प्रेम सूं उपचार नीं करीज्यौ तौ इण धरती रौ उपकार नीं अपकार ईज हुवैला। आज री इण परिस्थिति में जठै विश्व दो महाजुद्धां नै देख चुक्यौ है, उणरी पीड़ा नैं भोग चुक्यौ है, फेरूं ई केई छोटा–मोटा जुद्ध हुया अर हुय रैया है। कवि पडिहार वांनै रोकण री बात कैवै कै आं जुद्धां सूं किणी नै नुकसाण है तौ वौ 'मिनख' रै 'मिनखपणै' नै है।

मानखौ

औ चित्रसेन गंधर्व राज,
तीनूं लोकां नै बण्यौ भार।
चढ रयो चिता पर जीवतड़ौ,
देवां रौ प्यारौ कळाकार।।

झर–झर आंसू री धार झरै,
सांमै ऊभी बिलखै राणी।
प्रीतम अै'ड़ौ दिन आवैलौ,
आ सुपनै में ही नीं जाणी।।

चित्रसेन–सुभद्रा संवाद

बोली वाणी में नेह घोळ,
हूं बोल सुण्या इण झुरती रा।
धण कूकै कुरज जियां थारी,
क्यूं जी'तौ चिता चढै बीरा।।

अणहूंतौ तनै दुखायौ कुण,
कुंकर औ बीखौ आय पड़्यौ?
तूं निरभै बात बता, बूझै–
पारथ रौ आधौ अंग खड़्यौ।।

मत पूछ मावड़ी बौ कुण है?
सुणतां ही पग पाछा पड़सी।
पोरस रा पाड़ झुकै जिणनै,
अबळा रौ बळ कांई अड़सी।।

रळ आधौ आध अंग पूरौ,
जद मिनख लुगाई कुण कम है।
जे नर है नद पुरसारथ रौ,
तौ नारी इणरौ उद्‌गम है।।

कैतां हीं जीव हुवै दोरौ,
जणनी नीं बात पराई है।
जदुनाथ द्वारका धणी जका,
थांरा बै सागी भाई है।।

राणी मां बुरौ मती मान्या,
दुनिया रौ सत बळ घटग्यौ है।
थांरै बस वाळी बात नहीं,
आधौ अंग पैली नटग्यौ है।।

जे आखी दुनिया मुख मोड़्यौ,
संकट नीं झाल सकी थारौ।
तो चित्रसेन अब डर कोनी,
सरणौ है तनै सुभद्रा रौ।।

मन हळकौ कर मत चित्रसेन,
आ धरा धरम नीं खोवैली।
हूं मर ज्याऊं पण मुड़ूं नहीं,
अणहूंती कदै नीं होवैली।।

नीं बात अेक रै मरणै री,
आ चोट मरम पर आवै है।
कुळ धरम करम सत तेज लाज,
हूं मुड्यां मानखौ जावै है।।

सुभद्रा–अरजुण संवाद

राव रावळै में बड़तां हीं,
अजब नजारौ देख्यौ।
राणी बखतर कसियोड़ी,
उणमुण उणियारौ देख्यौ।।

जोरावर जोधा ही सरणो,
सत नै दियां डरै है।
न्यासव पठंगै जकै नरां रै,
बै इन्याव करै है।।

प्रीतम सत दो कुळ रौ छीजै,
मरणै जिसी घड़ी है।
इण कारण आज सुभद्रा,
बखतर कस्यां खड़ी है।।

सरण दियां रण तौ रुप ज्यासी,
झली नहीं छूटैली।
बैर बसैलौ गिरधर सागै,
बात नहीं खूटैली।।

हाथ, हाथ नै काटै अै'ड़ौ,
मारग मत अंवळौ लौ।
भली बुरी नै तोलौ मन में,
कसिया बंधण खोलौ।।

मन रौ बोझ सबद नीं सांभै,
बोलूं तौ के बोलूं।
आभौ धरा भिळै है पारथ,
बखतर कूंकर खोलूं।।

अणहक मरणौ अेक मिनख रौ,
सांस अमूंज रही है।
गायक रै धरणी री सिसक्यां,
कानां गूंज रही है।।

अकरम ही मेटण नै, पारथ,
थां तौ रगत खिंडायौ।
मिनख धरम जुग–जुग जूझ्यौ है,
जद–जद अकरम आयौ।।

हूं असरण नै सरणौ दीनौ,
हूं हीं जुद्ध करूंली।
गिरधर जद गायक मारैला,
पै'ली जूंझ मरूंली।।

चावै जितरौ सिमरथ का'नौ,
अब पण नहीं सरैलौ।
लाख बात, सरणागत राणी,
थारौ नहीं मरैलौ।।

मुड़तां ही करम–धरम जावै,
बधतै रौ जी दुख पावै है।
पण जीवण री अै'ड़ी घड़ियां ही,
मिनखां रौ मोल बतावै है।।

●●

बृम–अस्त्र औ पासूपत,
औ हेलौ होड लगावण रौ।
नीं मंगळकारी गिरधारी,
आंधौ बळ भोम भिळावण रौ।।

जुद्धां पर धरा टिक्योड़ी है,
हरि अबै मानता आ मान्या।
नर री मुट्ठी खैनास खड़्यौ,
नेड़ै ही अंत हुयौ जाण्या।।

मिळसी मत, असत, करम, अकरम,
इन्याव, न्याव अणहूत हूंत।
झटकै में आखौ जगत मिटै,
जद पाप पुन्न री किसी कूंत।।

रण कठै जका नीं करै जका,
दुबळा, बूढा, बाळक, नारी।
दोसी अणदोस दया जोग,
मिटसी दुनिया पसु पंख्यां री।।

हूं मानूं भोम बंट्योड़ी है,
न्यारी सत्तावां मत न्यारा।
जन–मन न्यारा, जातां न्यारी,
अधिकार अड़्यां रा मत न्यारा।।

पण न्यारपणै रै नेचै स्यूं,
जे अब नर ऊंचौ नीं आसी।
तौ सै डाळां सागै ढैसी,
जग–रूंख मूळ स्यूं मिट जासी।।

आ तमोगुणी सगळी पूजा,
मारग हिरणांकुस–रावण रौ।
आं छोळा समद हबोळां रौ,
झोलौ जग ज्याज डुबावण रौ।।

सिमरथ हरि थे ग्यानेसर हौ,
ग्यानी नै ग्यान किसौ देणौ।
किल्याण विचारौ दुनिया रौ,
म्हारौ तौ इतरौ ही कैणौ।।

अै तन जोरावर मिनखां रा,
बोट्यां में बढियोड़ा सोवै।
कागा कांवळिया गीरज गीध,
चौगड़दै गादड़िया रोवै।।

मनड़ौ मिचळावै घड़ी–घड़ी,
नीं ठौड़ ठैरणै जैड़ी है।
रवि आथूंणै नाकै पूग्यौ,
संध्या री बेळा नैड़ी है।।

सेना नै मोड़ौ मुड़ौ अबै,
विनय बिचारण री थांस्यूं।
गढ धरमराज रै हथनापुर,
हूं देव द्वारका घिर आस्यूं।।

औ जग थाक्योड़ौ जुद्धां स्यूं,
अब पाप लारला धोणा है।
उळझ्या आंटा सुळझावण रा,
दूजा ही मारग जोणा है।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

ऊभी=खड़ी। अणहूंतौ=घणौ। बीखौ=विपदा, संकट। पारथ=अर्जुन। आखी=सगळी, सारी, सैंग। बखतर=जुद्ध रौ वेस। जोरावर=सूरवीर। जोधा=वीर। अंवळौ=दो'रौ। आभौ=आकास। रगत=खून। धरा=धरती। धरणी=धरा, धण, जोड़ायत।

सवाल

विकळपाऊ पडू़त्तर वाळा सवाल

1. 'मानखौ' खंडकाव्य संदेस देवै–
   (अ) मिनखपणै रौ (ब) जुद्ध रौ
   (स) महाजुद्ध रौ (द) साच रौ
   ( )

2. चित्रसेन कुण हौ?
   (अ) मिनख (ब) गंधर्व
   (स) देवता (द) राकस
( )

3. चित्रसेन नै मौत री सजा कुण सुणायी?
   (अ) सुभद्रा (ब) अर्जुन
   (स) श्रीकृष्ण (द) रिसी
( )

4. चित्रसेन नै सरणौ कुण दियौ?
   (अ) सुभद्रा (ब) अुर्जन
   (स) इन्दर (द) राम
( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि गिरधारी सिंह पड़िहार रौ जलम कद अर कठै हुयौ?
2. 'मानखौ' रै अलावा गिरधारी सिंह पड़िहार री अेक पोथी और कुणसी है?
3. 'मानखौ' कृति मांय कित्ता सरग है?
4. समाज अर परिवार री मूळ इकाई कुणसी है?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''न्याव पठंगै जिकै नरां रै, वै इन्याव करै है।'' काव्य री आं ओळ्यां रौ भाव विस्तार करौ।
2. ''पोरस रा पा'ड़ झुकै जिणनै, अबळा रौ बळ कांई अड़सी'' कविता री ओळ्यां में कवि रौ कांई आसय है?
3. 'दूजा ही मारग जोणा है'' काव्य–ओळी में कवि कांई कैवणौ चावै?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि गिरधारी सिंह पड़िहार इण काव्य रौ आधार पौराणिक कथा नै बणायौ है। इण कथा रौ सार लिखौ।
2. 'मानखौ' खंडकाव्य कांई संदेस देवै? विस्तार सूं समझावौ।
3. चित्रसेन अर सुभद्रा रै संवाद रौ सार लिखौ।
4. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) झर–झर आंसू री धार झरै, सांमै ऊभी बिलखै राणी।
    प्रीतम अै'ड़ौ दिन आवैलौ,आ सुपनै में ही नीं जाणी।।

(ब) हाथ, हाथ नै काटै अै'ड़ौ, मारग मत अंवळौ लौ।
    भली बुरी नै तोलौ मन में, कसिया बंधण खोलौ।।

(स) चावै जितरौ सिमरथ का'नौ, अब पण नहीं सरैलौ।
    लाख बात, सरणागत राणी, थारौ नहीं मरैलौ।।

(द) सेना नै मोड़ौ मुड़ौ अबै, विनय बिचारण री थांस्यूं।
    गढ धरमराज रै हथनापुर, हूं देव द्वारका घिर आस्यूं।।

कविता
'जुगवांणी' अर 'हेत चाईजै'

गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद'

कवि–परिचै

आधुनिक राजस्थानी काव्य परंपरा मांय केई कवि इण भांत रा रैया जिका राजस्थानी काव्य री सेवा रै साथै स्वतंत्रता संग्राम में भी आपरी महताऊ भूमिका निभाई अर समाज रै विकास में भी आपरौ योगदान दियौ। इण कड़ी में सैं सूं महताऊ नाम जनकवि गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' रौ रैयौ है। जनकवि 'उस्ताद' रौ जनम 21 मार्च, 1907 ई. नै जोधपुर में हुयौ। आपरा पिताश्री चन्द्रभाणजी हा, जिका खुद ई कवि हा अर स्वाभीमानी व्यक्तित्व रा धणी हा। आपरा नानाजी जोधपुर राज रा दीवान भी रैया। उस्ताद औपचारिक शिक्षा में घणा आगै नीं बध सक्या, पण वैचारिक ग्यांन में घणा आगै बधग्या। इणी वास्तै वांनै दियौड़ै नांव 'उस्ताद' नै वै खरौ सिद्ध कर्‍यौ। जीवण री सरुआत वै अेक ठिकाणै री नौकरी सूं करी, पण उठै रा अत्याचार देख वांरै मन में सोसण अर करसां रै वास्तै जिकौ भाव जाग्यौ वौ भाव जीवन–भर नीं छूट सक्यौ। वै करसां, मजदूरां वास्तै लड़ता रैया। वै समाज में सोसण रै खिलाफ आवाज उठायी, जात–पांत सूं, राजशाही सूं लड़्या अर देस री आजादी खातर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड्या। वांनै केई बार जेळ री यात्रावां भी करणी पड़ी, पण वै हार्‍या नीं। आपरै काव्य नै आधार बणाय वै लगौलग संघर्ष करता रैया। औ संघर्ष कोरौ स्वतंत्रता प्राप्ति तक ईज नीं रैयौ, वै देस रै स्वतंत्र हुयां पछै 'स्वराज' खातर नीं तो 'सुराज' खातर संघर्ष कर्‍यौ। आपरी केई कवितावां में इण भांत रा भाव देख्या जा सकै। सोसण, अत्याचार, स्वराज्य अर सुराज खातर संघर्ष करतां–करतां कवि जनता रौ सेवक, उणरौ मारग–दरसक बणग्यौ। वौ जन–जन नै उणरै अधिकारां खातर जगावतौ रैयौ। 'उस्ताद' आपरै काव्य में 'जन' रै अलावा और किणी नै स्वीकार नीं कर्‍यौ। वौ जन रौ साचौ सेवक बण्यौ, इणी वास्तै लोग उणनै जनकवि रौ नांव देय दियौ। जनकवि री दीठ आ रैयी कै समाज नै जगावणौ है तौ समाज में नारी नै जगावणौ पड़ैला, समाज में नारी नै ठावी ठौड़ दिरावणी पड़ैला। इणी कारण सूं जनकवि 'उस्ताद' रै काव्य में नारी 'सिणगार–सुंदरी' बण'र सांम्ही नीं आवै। वा समाज में चेतना जगावण वाळी 'सगती पुंज' बण सांम्ही आवै। वा सोसण, अत्याचार रै खिलाफ लड़ै अर समाज रै विकास खातर आपरी बरोबरी री भूमिका निभावै। वा पड़दां, म्हैलां, हवेलियां या गैंणां में दब्योड़ी कमजोर नारी नीं है, वा मरद रै साथै–साथै संघर्ष करण वाळी अर जे मरद आपरौ कर्तव्य भूल जावै तो उणनै मारग दिखावण वाळी सगती ई बण सांम्ही आवै। देश री सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियां सूं संघर्ष करण वाळौ कवि आजादी रै पछै ई सुराज खातर लड़तां–लड़तां 29 अक्टूबर, 1965 रै दिन आपरी भौतिक काया नै छोड दी। कवि भलां ई आज नीं है, पण उणां रै काव्य–रूप बोलां में आजलग जीवण री जोत जागती निजर आवै।

पाठ–परिचै

'जुगवांणी' कविता जनकवि री आत्मा री आवाज अर उणरै काव्य–संदेस रौ सार है, जठै वौ आपरै सैंजोड़ जुग नै समझै अर समझावै। कवि इणमें इण बात रौ खुलासौ करै कै समाज

रौ साचौ सेवक अर साचौ मारग–दरसक वौ ईज कवि है जिकौ किणी ई परिस्थिति में झुकै नीं, किणी ई लोभ, लालच या डर–भय सूं दबै नीं। साचौ साहित्यकार वौ ईज है, जिकौ सगळां नै साच रा दरसण करावै। साचौ मिनख नीं तौ आज तक दब्यौ है अर नीं आगै ई कदैई दबैला। जनकवि लिखै कै जद–जद जनता री आवाज नै कोई दबावण री कोसीस करी है, तौ जनता उणनै पलट'र जबाब दियौ है। झूठ–अन्याय, अत्याचार घणा दिनां तक चालण वाळा नीं है। जनकवि 'उस्ताद' आगै लिखै कै इतिहास में केई लोग आया–गया है, पण लोग तो उणां नै ईज याद राखै जिका साच नै समझै अर समझावै, साच सूं डरै कोनी। मिनख री काया तौ आवणी–जावणी है, पण इण जगत में मिनख आपरै करम सूं, आपरी करणी सूं, आपरी दीठ सूं, आपरै संदेस सूं जीवतौ रैवै। साचाणी औ जनकवि ई इणी भांत जीवै है।

इणी भांत 'हेत चाइजै' में जनकवि समाज में सब तरै री विसमतावां नै मिटावण रौ संदेस दियौ। 'उस्ताद' रौ मानणौ रैयौ कै समाज रौ जे विकास करणौ है तौ समाज में 'हेत' अर 'अपणायत' रौ भाव जगावणौ पड़ैला। इणी वास्तै वै लिखै कै "जन जन रै मन हेत चाइजै।" जद जुग में बदळाव हुवै, उण बेळा लोगां में अेकता अर सावचेती हुवणी चाईजै। जे समाज में फूट–फजीता हुवै तौ वौ समाज विकास नीं कर सकै। जिण समाज में जांत–पांत रै धरम अर आधार सूं फरक करीजै वौ समाज कदैई आगै नीं बध सकै। जनकवि 'उस्ताद' आ बात खरै रूप सूं लिखै कै मिनख रै भाग्य नै बणावण वाळौ कोई दूजौ नीं हुवै, मिनख आपरौ भाग खुद बणावै। इण समाज रै विकास खातर नेतावां, अफसरां, करसांणां, मजूरां अर सगळी जनता नै अेक हुवणौ चाईजै। सगळां री अेकता सूं ईज देस केसर री क्यारी ज्यूं फूठरौ अर महकतौ बणैला।

जुगवांणी

आ जनकवि री जुगवांणी, आ कदेन चुप रह जांणी,
कोई लाख जतन कर हारे, आ समझे सांच सुणाणी।

कोई मार कूट धमकाई, धन–कुरब–धाम ललचाई,
सै जुग रा जुल्मी खपग्या, इण करी नहीं सुणवाई,
आखड़िया सो आथड़िया, इण माथै धूंस जमाणी।

जन जन रै पग बेड़ी ही, जनता गाडर जैड़ी ही,
राजा रौ जोर जमांवण, अंगरेज फौज नेड़ी ही,
जद कठै दबी जबरां सूं, अब किणरै हाथ दबांणी।

जद गोरी हकुमत अड़ती, सड़कां पर गोळ्यां झड़ती,
जेळां में चौखट चढ़िया, मौरां री खाल उधड़ती,
पण जै स्वराज घुर्राता, नरसिंघ जुत्योड़ा घांणी।

आ चोट लग्यां चमकै है, निरणां पेटां दमकै है,
फाटा जामां में रण रा, झंडा गिणती धमकै है,
इण रा धण–टाबर जांणै, विपदा माथै मुसकांणी।

आ भूला समझा लेला, ऊजड़ खड़तां पालैला,
पूठै, इण घड़ी अगाड़ी, हाली, हाकै, हालैला।
जुग–जुग इण री भावी है, सिलगांणी फेर बणांणी।

गायक इक दिन मिट जासी, पण अैड़ा गीत बणासी,
जन–जन रे कंठां रमसी, पीढी–दर–पीढी जासी,
आ काया तौ कवि री है, पण जनता री जुगवांणी।

⌘⌘

हेत चाईजै

जन–जन रे मन हेत चाईजै,
जुग साथै संकट री वेळा, सगळा सुभट सचेत चाईजै।

जिण जनता में फूट–फजीती, खुली किंवाड़्या, लोग नचीता,
तक मिलतां उण घर में बड़सी लूंक, सियाळ्या, गंडक, चीता,
जन–बळ में लय बजर कटै, पर तन बळ तेज सचेत चाईजै।

धरम–ढूंग रा खुल्या खलीता, जात–पांत रा जग्या पलीता,
जुग जीवण में लाय लगाता, पनप रया जन लोही पीता,
फूट समंद री भंवरा तिरबा, जन–मन मेळप सेत चाईजै।

लिख्या लेख सूं लोक मुगत है, पण जीवन जंजाळ जुगत है,
नवा राव ने नवा रावळा, कुण जांणै जन री हुकमत है,
काम करै वांरी रसना में, करी बात रौ बेंत चाईजै।

अेक चरै चौरासी पीसै, उण घर समता किण विध दीसै,
जन रा पीड़क करै खंखारा, जन रा भीडू मुड़दा घीसै,
धाड़वियां रै धूड़ माजनै, न्हांखण मूठी रेत चाईजै।

नेता, हाकम, नै इधकारी, हळधर कळधर जनता सारी,
एक मनां पुरसारथ कर नै, मुलक करै केसर री क्यारी,
भुज मैणत रा सीरी उपजै, खरौ कमायौ खेत चाईजै।

धर खैंचण दुसमण सींवाड़ै, दो चीता दोनूं दिस दहाड़ै,
अेक मनो जाग्यां जनजीवण, अेक भिड़ै इक्कीस पछाड़ै,
बजरबळी भारत रै रथ रा, सगळा तुरंग कुमेत चाईजै।

रजथांनी, कस्मीर, बंगाली, पंजाबी, उड़िया, मलियाळी,
करणाटक गुजरात मराठा, केरल उत्तराखंड रा हाळी,
वां में भुज मैणत भेळप री, नवजीवण री नेत चाईजै।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

जुगवांणी=समै री आवाज। जुल्मी=जुल्म करणिया, अत्याचारी। खपग्या=खतम हुयग्या। आखड़िया=लड़खड़ाया। बेड़ी=गुलामी री सांकळ। गाडर=भेड़। जबरां=ताकतवर। निरणां=भूखा। जामां=कपड़ा। ऊजड़=बिना मारग रै। जूझारां=जुद्ध रै मांय जूझण वाळा जोद्धा। पळीता–पूळौ लगावणौ, लड़ाई री लाय। लाय=आग। लोही=खून। पींडक=पीड़ देवणिया। भीडू=पक्षधर। धाड़वी=लूटेरा। सींवाड़ै=सीमा माथै। तुरंग=घोड़ा। रसना=जीभ। बेंत=नाप, माप।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. जनकवि गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' कुणसी काव्यधारा रा कवि है–
   (अ) प्रगतिसील (ब) प्रकृतिसील
   (स) सम्बोधन काव्य (द) हालावादी
   ( )
2. 'जुगवांणी सूं कवि रौ मानणौ है–
   (अ) कवियां री वांणी (ब) समै री साची वांणी
   (स) आजादी री वांणी (द) मजदूरां री वांणी
   ( )
3. जद देस गुलाम हौ, जनता कैड़ी ही?
   (अ) भोळी ही (ब) गाडर जैड़ी
   (स) गाय जैड़ी (द) बेड़ी जैड़ी
   ( )
4. ''मौरां री खाल उधड़ती।'' इण ओळी में 'मौरां री खाल' सूं कवि रौ आसय है–
   (अ) पीठ री चामड़ी (ब) मोर री खाल
   (स) राजा मोरधज (द) जेळां रा मोर
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. साच कुण सुणावै?
2. जै स्वराज कुण घुर्राता?
3. निरणां पेट सूं कांई मतलब है?
4. ऊजड़–खड़तां सूं कांई मतलब है?
5. 'धावड़ियां रै धूड़ माजनै' में कवि कांई कैवै?
6. 'सगळा सुभट सचेत' चाईजै में कुण–सो अलंकार है?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'जुग रा जुलमियां' जुगवांणी नै थामण सारू कांई–कांई करणौ?
2. 'आ समझै सांच सुणाणी' सूं कांई आसय है?
3. जनता नै 'गाडर' जैड़ी क्यूं बताईजी है?
4. 'जुगवांणी' कांई–कांई काम करसी?
5. 'जिण जनता में फूट फजीता' हुवण सूं कांई हुवै?
6. 'फूट समंदरी भंवरा तरळा' में कवि कांई कैवणौ चावै?
7. समता ल्यावण सारू कांई करणौ पड़सी?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'जुगवांणी' कविता आधुनिक प्रगतिशील काव्यधारा री अेक नामी कविता है। समझावौ।
2. 'हेत चाईजै' कविता रौ सार लिखौ।
3. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) आ चोट लग्यां चमकै है, निरणां पेटां दमकै है,
फाटा जामां में रण रा, झंडा गिणती धमकै है,
इण रा धण–टाबर जांणै, विपदा माथै मुसकांणी।

(ब) गायक इक दिन मिट जासी, पण अैड़ा गीत बणासी,
जन–जन रे कंठां रमसी, पीढी–दर–पीढी जासी,
आ काया तौ कवि री है, पण जनता री जुगवांणी।

(स) जिण जनता में फूट–फजीती, खुली किंवाड़्या, लोग नचीता,
तक मिलतां उण घर में बड़सी लूंक, सियाळ्या, गंडक, चीता,
जन–बळ में लय बजर कटै, पर तन बळ तेज सचेत चाईजै।

(द) नेता, हाकम, नै इधकारी, हळधर कळधर जनता सारी,
एक मनां पुरसारथ कर नै, मुलक करै केसर री क्यारी,
भुज मैणत रा सीरी उपजै, खरौ कमायौ खेत चाईजै।

कविता
ईश्वर!, राम–नाम, साच’र झूठ!, निराकार!

कन्हैयालाल सेठिया

कवि–परिचै

आधुनिक राजस्थानी काव्य परम्परा रा वै कवि जिका राजस्थानी काव्य नै नूंवी पिछाण दिरायी, कविता नै नूवें ढाळै ढाळी अर इणनै भाव अर भासा री नूंवी आधारभोम दी, वां में कवि कन्हैयालाल सेठिया रौ नांव हरावळ में है। कवि सेठिया रौ जनम 11 सितम्बर, 1919 नै चूरू जिला रै सुजानगढ़ में हुयौ। सरुआती जीवण आपरौ अठै ईज बीत्यौ, पण पछै आप कलकत्ता गया परा। बठै सूं आप स्नातक स्तर री पढ़ाई करी। उणरै पछै आजादी रा आंदोलन में कूदग्या। इण सूं पढ़ाई छूटगी, जिकी घणां बरसां पछै जयपुर सूं पूरी हुई। सेठियाजी माथै गांधी–दरसण री छाप रैयी। आप प्रगतिसील रचनावां ई लिखी, पण आपरी कविता रौ मूल भाव अध्यात्म अर दरसण रौ रैयौ। आपरी कवितावां प्रकृति रा भावां नै भी उकेस्या। कवि कन्हैयालाल सेठिया री दो रचनावां राजस्थान अर राजस्थानी काव्य री पिछाण बणगी, जिणमें अेक ‘धरती धोरां री’ अर दूजी ‘पातल अर पीथल’ रैयी। राजस्थानी धरा अर इणरै अनूठै इतिहास री झांकी ‘धरती धोरां री’ गीत सूं मिळै, तौ ‘पातल अर पीथल’ कविता री ओळियां ‘अरे घास री रोटी ही...’ हरेक मरुधरवासी रै कंठां रौ हार बणगी। आ कविता महाराणा प्रताप रै गौरव रौ बखाण कस्यौ है। ‘रमणियै रा सोरठा’ काव्य–कृति नीति काव्य परंपरा रौ सांतरौ उदाहरण है। किणी भी कविता में भासा, सिल्प, भाव–सम्पदा अर सम्प्रेषणीयता री विसेसता हुवणी घणी जरूरी मानीजी है। जे इणां मांय सूं कोई अेक भाव भी कमजोर हुय जावै, तौ उण कविता रौ प्रभाव भी कम हुय जावै। इण दीठ सूं देखां तो लखावै कै सेठिया रौ काव्य कठैई कम हुवतौ नीं लागै। सबदां अर भावां में गंभीरता है, तौ विचारां री क्रमबद्धता काव्य आनन्द नै संपूरण करै।

कन्हैयालाल सेठिया री काव्य–कृतियां इण भांत रैयी है– 1. रमणियै रा सोरठा 2.मींझर 3. गळगचिया (गद्यगीत) 4. कूं कूं 5. लीलटांस 6. धर कूचां धर मजलां 7. सतवाणी 8. सबद 9. अघोरी काळ 10. मायड़ रौ हेलौ 11. कक्कौ कोड रौ 12. दीठ 13. लीक–लकोळिया आद। आपरी ‘निर्ग्रंथ’ पोथी माथै भारतीय ज्ञानपीठ कांनी सूं ‘मूर्ति देवी पुरस्कार’ मिळ्यौ। साहित्य अकादेमी कांनी सूं ‘लीलटांस’ माथै पुरस्कार दिरीज्यौ। राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर कांनी सूं ‘मनीषी सम्मान’, राजस्थानी भासा, साहित्य, संस्कृति अकादमी, बीकानेर कांनी सूं ‘सूर्यमल्ल मीसण पुरस्कार’ आपनै मिळ्यौ। इणां रै अलावा राजस्थान विश्वविद्यालय कांनी सूं मानद् डीलिट्. उपाधि सेती केई सम्मान मिळ्या। आपनै भारत सरकार कांनी सूं ‘पद्मश्री’ सरीखौ सिरै सम्मान ई मिळ्यौ।

पाठ–परिचै

पाठ में दिरीजी कविता, कवि कन्हैयालाल सेठिया री ‘लीलटांस’ पोथी सूं लिरीजी है। ‘लीलटांस’ भाव अर दरसण री गंभीरता लियोड़ी पोथी है। इण पोथी री सैं सूं मोटी खासियत

है कै इण कृति री 68 कवितावां, जिकी दिखण में छोटी–छोटी है, पण दरसण, समाज, मनोविज्ञान, साहित्य अर संस्क्रति जैड़ा विसयां नै लियोड़ी है। अै छोटी–छोटी कवितावां कठैई तौ ज्ञान–सूत्रां नै परिभासित करै, तौ कठैई ज्ञान री ग्रंथियां नै खोलै। इणां में कठैई समाज री विसमता रौ वरणाव है, तौ कठैई वां विसमतावां रौ हल ई है। कठैई मानखै रै मन री समस्यावां रौ सुळझाव ई है, तौ कठैई मानव मन री कमजोरी नै ई दरसायी है। भावां री गंभीरता लियां अै कवितावां सेठियाजी रै विचार–दरसण री ओळखाण करावै।

ईश्वर!, राम–नाम, साच'र झूठ, निराकार!

ईश्वर!

कुण देख्यौ है
ईश्वर?
ई सवाल रौ जबाब
औ तळाब,
जको कोनी देख्यौ समन्दर!

राम–नाम

सोनै रौ पींजरौ
मखमल री खोळी
रतन बाटकां में
दाड़म'र दाख
सिखावै सूवटै नै
बोल मिट्ठू
राधेश्याम
सामूंसाम
गळी में बैठौ
भूखौ सूरदास
छोड दिया पिराण
रट रट'र राम–नाम!

साच'र झूठ!

चाकी रौ
हेटलौ पाट
साच,
ऊपरलौ पाट
झूठ,
साच रै
सांम्ही छाती कील
झूठ रै
पूठ में मूठ!

निराकार!

परतख नै
कांई
परमाण री दरकार!
कांदै रा
छूंतका उतार
आकार में
निराकार!
⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

सूवटौ=मिट्ठू, तोतौ। सूरदास=आंधौ आदमी। पिराण=प्राण, सांस। चाकी=घट्टी। हेठलौ=निचलौ। पूठ=लारै, पीछै। परतख=सैमूंडै, सन्मुख। कांदौ=प्याज। दाड़म=अनार। दाख=किसमिस। दरकार=जरूरत।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. कन्हैयालाल सेठिया रौ जनम कठै हुयौ–
   (अ) हनुमानगढ़ (ब) सुजानगढ
   (स) जूनागढ (द) भरतपुर
   ( )
2. केन्द्रीय साहित्य अकादेमी सूं पुरस्कृत कृति कुणसी है–
   (अ) लीलटांस (ब) मींझर
   (स) अघोरी काळ (द) कूंकूं
   ( )
3. कुणसी कविता कन्हैयालाल सेठिया री नीं है–
   (अ) साच'र झूठ (ब) निराकार
   (स) जुद्ध (द) राम नाम
   ( )
4. ''कांदै रा छूंतका उतार' में कवि रौ भाव रैयौ है–
   (अ) कांदै रै स्वाद रौ (ब) संसार रै मोह रौ
   (स) निराकार रौ (द) इण मांय सूं अेक ई नीं
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी भासा रै अलावा कवि री रच्योड़ी खास रचनावां रा नांव बतावौ।
2. इण पाठ री कवितावां कवि री कुणसी पोथी सूं लियोड़ी है?
3. साच रै सांम्ही छाती कांई ऊभी है?
4. तळाब कांई नीं देख्यौ?
5. रतन बाटकै में दाड़म अर दाख किण सारू हा?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल–

1. 'ईश्वर' कविता रै माध्यम सूं कवि कांई कैवणौ चावै?
2. 'साच'र झूठ' कविता कांई संदेस देवै?
3. कन्हैयालाल सेठिया री खास रचनावां रा नांव बतावौ।
4. 'निराकार' कविता रौ भाव बतावौ।
5. 'राम नाम' कविता में आई संवेदना नै ध्यान में राखतां थकां कवि री दीठ नै उजागर करौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. ''सेठिया री काव्यचेतना में सांस्कृतिक, प्रगतिशील अर आध्यात्मिक भाव उजागर होवै।''
   पठित कवितावां रै आधार माथै इण कथन रौ खुलासौ करौ।
2. इण काव्य रै आधार माथै सेठिया जी रै काव्य रौ भावपख अर कलापख समझावौ।

3. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) चाकी रौ हेठलौ पाट/साच
ऊपरलो पाट/झूठ
साच रै सांम्ही छाती/कील
झूठ रै पूठ में/मूठ!

(ब) कुण देख्यौ है/ईश्वर?
ईं सवाल रौ जवाब
औ तळाब,
जको कोनी देख्यौ समदर!

(स) परतख नै/कांई
परमाण री दरकार!
कांदै रा/छूंतका उतार
आकार में/निराकार!

कविता
सैनाणी

मेघराज 'मुकुल'

कवि–परिचै

राजस्थानी कवि–सम्मेलनां रै मंच रा ख्यातनांव कवियां में मेघराज 'मुकुल' रौ नांव घणौ ऊंचौ अर अनमोल रैयौ है। आप मंच रै जरियै राजस्थानी कविता नै जन–जन तक पूगाय इणनै अेक नूवीं पिछाण दी है, वांरौ औ चमत्कार राजस्थानी प्रेमी कदी नीं भूल सकै। कवि मेघराज 'मुकुल' रौ जनम चुरू रा 'राजगढ़' गांव में 17 जुलाई, 1923 नै हुयौ। आपरौ परिवार तौ साधारण रैयौ, पण आप नांव कमावण में कदी लारै नीं रैया। छोटी अवस्था सूं काव्य सिरजण कर आप घणौ जस कमायौ। राजस्थानी लोक री गौरव गाथावां नै आप आपरै भावां अर आखरां सूं नूंवौ रूप दियौ अर वां काव्य नायकां नै अमर कर दिया जिणां री चितार लोक में कीं कम हुयगी ही। आपरी ओजस्वी वाणी सूं निकळ्या वै सबद अर सबदां सूं उकेस्योड़ा पात्र लोक में नूंवी रंगत साथै अमर हुयग्या। 'दिनाजपुर' रा कवि सम्मेलन सूं आप जिकी लोक में पैठ बणायी उण रौ वरणाव नीं कस्यौ जाय सकै। आपरी कवितावां री पैठ लोक में इतरी गैरी अर इतरी चावी रैयी कै लोग चालती रेलगाडियां रोक, आपरी कवितावां नै सुणण री मांग करता। आपरी अेक कविता 'सैनाणी' आं कवितावां मांय सूं सिरै गिणी जा सकै। आ कविता राजस्थानी भासा अर काव्य नै अेक नूंवी पिछाण दी। मेघराज 'मुकुल' री साहित्य अर काव्य–साधना हिन्दी अर राजस्थानी दोनूं ही भासावां मांय चालती रैयी। यूं तौ आपरी रचनावां वीर नायकां सूं जुड़ी रैयी, पण उण भावां मांय समै मुजब लगोलग बदळाव ई हुवतौ रैयौ। छंदबद्ध कविता सूं गजल तक आप लिखी। मुक्तछंद, महाकाव्य सिरखी गाथावां, गीत आपरी काव्य–सैली रा चावा दाखला है। इणां रै साथै बिम्बां अर प्रतीकां रौ भी नूंवौ प्रयोग आपरै काव्य री सफलता कैयी जाय सकै। आप काव्य साधना रै साथै–साथै आप नाटक, रेडियो–रूपक ई लिख्या, जिका आकासवाणी अर दूरदरसण सूं प्रसारित हुया। आपरी राजस्थानी पोथियां इण भांत है– 1. सैनाणी 2. कोडमदे, 3.डांफर, 4. चंवरी आद। भाव, भासा अर चिंतन नै समै रै साथै नूंवौ–नूंवौ रूप देवणौ मुकुल जी रै काव्य री खास विसेसता कैयी जाय सकै। साहित्य री साधना करतां–करतां मुकुलजी रौ सुरगवास 30 नवम्बर, 1996 नै हुयग्यौ।

पाठ–परिचै

'सैनाणी' कविता आधुनिक राजस्थानी काव्य परंपरा रौ अैड़ौ 'कीरतथंभ' है, जिणसूं राजस्थानी काव्य नै नूंवी पिछाण मिळी। हाल तक जिका लोक राजस्थानी नै दूहा–छंदा रौ पारम्परिक काव्य मानता, उणनै मुक्त छंद री कविता सूं, सुरीला गीतां सूं मंच तक पुगावण रौ काम कवि मुकुल कस्यौ। भलां ई मंच री पिछाण चिर–थिर नीं रैवै, पण उण मंच सूं जणै–जणै तक राजस्थानी काव्य पूग जावण में सफल रैयौ, जिणरौ श्रेय 'मुकुल' नै दियौ जावणौ चाईजै। 'सैनाणी' कविता रा काव्य–आधार में मेवाड़ रा सलूम्बर ठिकाणै रा चूंडावत सिरदार अर वांरी हाडी राणी रैया। आं दोनूं रौ ब्याव हुयौ ईज हौ, सेज बिछती ईज ही कै रणभेरी बाजगी।

चूंडावत सरदार जुद्ध में जावण वास्तै झिझक्या, वै नूंवी राणी रै मोह में पड़ण लागा। राणी वांनै जुद्ध में भेज तौ दिया, पण फेरूं ई वांरौ मन राणी में ईज अटक्यौ रह्यौ। वै सेवक नै भेज राणी सूं 'सैनाणी' मांगी। हाडी राणी समझगी कै म्हारौ मोह वांनै कर्तव्य–पालन सूं विरत कर रैयौ है। वा खुद रै हाथां आपरौ सीस काट 'सैनाणी' सरूप में भेज दियौ। सैनाणी नै देख सरदार चमकग्या। वै उण मुंडमाळ नै गळै धारण कर कर्तव्य–पालन में आपरै देह नै होम दी। वीर नायिका री आ अमर गाथा आज लग लोक में अमर है अर राजस्थानी वीरागंनावां री ओळख नै आ कविता बणायी राखी है। इण गाथा नै कवि इण कविता सांतरै ढंग सूं मांडी है। इण कविता में सिणगार, वीर, रौद्र, भयानक अर वीभत्स रस सांम्ही आया है, पण सैं सूं महताऊ है राजस्थानी वीर–वीरांगनावां रौ आदर्श अर बळिदान।

सैनाणी

सैनाण पड़्यो हथळेवै रौ, हिंगळू माथै में दमकै ही।
रखड़ी फेरां री आण लियां, गमगमाट करती गमकै ही।
कांकण–डोरो पूंचै मांही, चुड़लौ सुहाग लै सुघड़ाई।
चुंदड़ी रो रंग न छूट्यो हो, था बंध्या रह्या बिछिया तांई।

अरमाण सुहाग–रात रा ले, छत्राणी महलां में आई।
ठमकै सूं ठुमक–ठुमक छम–छम, चढगी महलां में सरमाई।
पोढण री अमर लियां आसा, प्यासा नैणां में लियां हेत।
चूंडावत गंठजोड़ो खोल्यो, तन–मन री सुध–बुध अमिट मेट।

पण बाज रही थी सहनाई, महलां में गूंज्यो संखनाद।
अधरां पर अधर झुक्या रहग्या, सरदार भूलग्यौ आलिंगन।
रजपूती मुख पीळौ पड़ग्यौ, बोल्यौ, 'रण में नहिं जाऊंला।
राणी! थारी पलकां सहळा, हूं गीत हेत रा गाऊंला।'

'आ बात उचित है कीं हद तक, ब्या' में भी चैन न ले पाऊं?
मेवाड़ भलां क्यूं हो न दास, हूं रण में लड़ण नहीं जाऊं।'
बोली छत्राणी, 'नाथ! आज थे मती पधारौ रण मांही।
तलवार बताद्यौ, हूं जासूं, थे चूड़ौ पैर रैवौ घर मांही।'

कह, कूद पड़ी झट सेज त्याग, नैणां में अगनी चमक उठी।
चंडी रौ रूप बण्यौ छिण में, बिकराळ भवानी भभक उठी।
बोली, 'आ बात जचै कोनी, पति नै चाहूं मैं मरवाणौ।
पति म्हारो कोमल कूंपळ सो, फूलां सो छिण में मुरझाणौ।

पैल्यां कीं समझ नहीं आई, पागल सो बैठ्यौ रह्यौ मूर्ख।
पण बात समझ में जद आई, हो गया नैण इकदम्म सुर्ख।
बिजळी–सी चाली रग–रग में, वो धार कवच उतस्यो पोड़ी।
हुंकार 'बम बम महादेव', 'ठक–ठक–ठक ठपक' बढ़ी घोड़ी।

पैल्यां राणी नै हरख हुयौ, पण फेर ज्यान–सी निकळ गई।
काळजौ मुंह कांनी आयौ, डब–डब आंखड़ियां पथर गई।
उन्मत–सी भाजी महलां में, फिर बीच झरोखां टिक्या नैण।
बारै दरवाजै चूंडावत, उच्चार रह्यौ थो वीर–बैण।

आंख्यां सूं आंख मिळी छिण में, सरदार वीरता बिसराई।
सेवक नै भेज रावळै में, अन्तिम सैनाणी मंगवाई।
सेवक पहुंच्यो अन्तःपुर में, राणी सूं मांगी सैनाणी।
राणी सहमी फिर गरज उठी, बोली, 'कह दै मरगी राणी।'

फिर कह्यौ, 'ठहर! लै सैनाणी', कह झपट खड़ग खींच्यौ भारी।
सिर कट्यौ हाथ में उछळ पड़्यौ, सेवक भाज्यौ ले सैनाणी।
सरदार ऊछळ्यौ घोड़ी पर, बोल्यो, 'ल्या–ल्या–ल्या सैनाणी।'
फिर देख्यौ कट्यौ सीस हंसतौ, बोल्यौ, 'राणी! मेरी राणी।'

'तूं भली सैनाणी दी राणी! है धन्य धन्य तूं छत्राणी।
हूं भूल चुक्यौ हो रण–पथ नै, तूं भलौ पाठ दीन्यौ राणी!'
कह एड़ लगाई घोड़ी कै, रण बीच भयंकर हुयौ नाद।
केहरी करी गर्जन भारी, अरि–गण रै ऊपर पड़ी गाज।

फिर कट्यौ सीस गळ में धास्यौ, बेणी री दो लट बांट बळी।
उन्मत्त बण्यौ फिर करद धार, असपत्त फौज नै खूब दळी।
सरदार विजय पाई रण में, सारी जगती बोली, 'जय हो!'
'रण–देवी हाड़ी राणी री, मां भारत री जय हो! जय हो!'

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

सैनाण=निसाण। हथळेवौ=ब्याव रौ अेक रिवाज, पाणिग्रहण। हिंगळू=सिंदूर। रखड़ी=माथै रौ आभूसण। बिछिया=पगां री आंगळियां रौ आभूसण। पोढणौ=सोवणौ। अधर=होठ। रण=जुद्ध। बिसराई=भूली, पांतरी। खड़ग=तलवार। केहरी=सिंघ। अरि–गण=सत्रु सेना। गाज=खींवती बीजळी सरीखी तलवार री चोट। करद=तलवार। जगती=संसार।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. सलूम्बर ठिकाणै रा सिरदार हा–

   (अ) चूंडावत (ब) राणा चूंडा

   (स) हाड़ावत (द) राणा प्रताप

   ( )

2. मेघराज 'मुकुल' रौ जलम हुयौ–

   (अ) राजगढ में (ब) रामगढ में

   (स) हनुमानगढ में (द) रायगढ में

   ( )

3. दिनाजपुर कवि सम्मेलन में पैठ बणाई–

   (अ) चन्द्रसिंह (ब) सूर्यमल्ल

   (स) मेघराज 'मुकुल' (द) कानदान 'कल्पित'

   ( )

4. कुणसी पोथी मेघराज 'मुकुल' री नीं है–

   (अ) कोडमदे (ब) सैनाणी

   (स) डांफर (द) बसंत

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. मेघराज 'मुकुल' रौ जलम कद हुयौ?
2. मेघराज 'मुकुल' कुण–कुणसी भासावां में काव्य सिरजण कर्‌यौ?
3. 'महलां में गूंज्यौ संखनाद।'' अठै संखनाद किण बात रौ प्रतीक है?
4. राणी चूंडावत नै कांई सैनाणी दी?
5. कवि 'मुकुल' री किणी दो पोथ्यां रा नांव बतावौ।
6. कवि 'मुकुल' किण–किण काव्य–रूपां में सिरजण कर्‌यौ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल–

1. मेघराज 'मुकुल' रै काव्य री खास विसेसतावां कांई है?
2. ''पति म्हारौ कोमल कूंपळ–सो'' में कुण–कुणसा अलंकार आया है?
3. ''पण बाज रही थी सहनाई, महलां में गूंज्यौ संखनाद'' ओळी रौ भाव–विस्तार करौ।
4. कवि मेघराज 'मुकुल' रै रचना–संसार री ओळख करावौ।
5. चूंडावत रण में जावण सूं क्यूं नटग्यौ?
6. चूंडावत री जुद्ध में नीं जावण री बात सुण'र राणी कांई कैयौ?
7. ''तूं भलौ पाठ दीन्यौ राणी।'' राणी, चूंडावत सिरदार नै कांई पाठ पढायौ?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. ''मेघराज 'मुकुल' राजस्थानी भासा अर साहित्य–साधना नै अेक नूंवी पिछाण दी है।'' इण कथन री दीठ सूं कवि रै व्यक्तित्व अर कृतित्व रौ वरणन करौ।
2. ''सैनाणी कविता राजस्थानी काव्य–परम्परा रौ कीरत–थंभ है।'' इण कथन नै ध्यान में राखता थकां सैनाणी कविता रै भाव अर कलापख रौ खुलासौ करौ।
3. 'सैनाणी' कविता रौ सार आपरै सबदां में लिखौ।
4. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) 'आ बात उचित है कीं हद तक, ब्या' में भी चैन न ले पाऊं?
मेवाड़ भलां क्यूं हो न दास, हूं रण में लड़ण नहीं जाऊं।'
बोली छत्राणी, 'नाथ! आज थे मती पधारौ रण मांही।
तलवार बतादयौ, हूं जासूं, थे चूड़ौ पैर रैवौ घर मांही।'

(ब) पैल्यां कीं समझ नहीं आई, पागल सो बैठ्यौ रह्यौ मूर्ख।
पण बात समझ में जद आई, हो गया नैण इकदम्म सुर्ख।
बिजळी–सी चाली रग–रग में, वो धार कवच उतरयो पोड़ी।
हुंकार 'बम बम महादेव', 'ठक–ठक–ठक ठपक' बढ़ी घोड़ी।

(स) आंख्यां सूं आंख मिळी छिण में, सरदार वीरता बिसराई।
सेवक नै भेज रावळै में, अन्तिम सैनाणी मंगवाई।
सेवक पहुंच्यो अन्तःपुर में, राणी सूं मांगी सैनाणी।
राणी सहमी फिर गरज उठी, बोली, 'कह दै मरगी राणी।'

(द) 'तूं भली सैनाणी दी राणी! है धन्य धन्य तूं छत्राणी।
हूं भूल चुक्यौ हौ रण–पथ नै, तूं भलौ पाठ दीन्यौ राणी!'
कह एड़ लगाई घोड़ी कै, रण बीच भयंकर हुयौ नाद।
केहरी करी गर्जन भारी, अरि–गण रै ऊपर पड़ी गाज।

काव्यांस
'लू' अर 'बादळी'

चन्द्रसिंह

कवि–परिचै

राजस्थानी प्रक्रति काव्य–परम्परा रा लूंठा कवि चन्द्रसिंह रौ जलम बीकानेर रै गांव बिरकाळी में वि.सं. 1969 में हुयौ। आपरा पिता ठाकुर खूमसिंहजी हा, पण पछै आप ठाकुर हरिसिंहजी रै खोळै आया। आपरौ लालन–पालन सामंती परिवेस में हुयौ, पण इण परिवेस रौ प्रभाव आपरै व्यक्तित्व माथै हावी नीं हुयौ। आपरी शिक्षा–दीक्षा बीकानेर में हुई। सामंती परिवेस सूं जुड्या रैवता थकां ई आप सामंतशाही रौ विरोध कर्‌यौ, जिणरौ दाखलौ वांरै स्कूली जीवण में छात्रसंघ रौ चुनाव 'बैलेट पेपर' सू करावण रै रूप में देख्यौ जा सकै। इस्कूली भणाई नोबल इस्कूल, बीकानेर अर कॉलेज शिक्षा, डूंगर कॉलेज बीकानेर सूं पूरी हुयी। आपरा साथी–सायनां में सूर्यकरण पारीक, मुरलीधर व्यास, ठा. रामसिंह अर रावत सारस्वत कैया जा सकै। प्रो. नरोत्तमदास स्वामी यूं तौ आपरा गुरु हा, पण सिरजण धारा में वै आपरा खरा मित्र अर मारग–दरसक रैया। कवि चन्द्रसिंह अनुसासित अर ठीमर व्यक्तित्व रा धणी रैया। वांरौ राजस्थानी कांनी सनेव घणौ गैरौ रैयौ। प्रक्रति कांनी भी वांरौ झुकाव घणौ गैरौ रैयौ, इणी कारण वै बर्न्स, कीट्‌स, वर्ड्‌स वर्थ, सैली, टैनीसन अर भारतीय कवियां में सुमित्रानंदन पंत री काव्य रचनावां री खास भणाई करी। वै काव्य में बुद्धि तत्त्व नै कदैई महत्त्व नीं दियौ। वै काव्य नै कदैई विचारधारा रै प्रचार–प्रसार रौ साधन नीं मान्यौ। कवि चन्द्रसिंह कविता नै कदैई मंच सूं कोनी जोड़ी। वांरौ मानणौ हौ कै कविता नै समझण री जरुरत है। वांरी रचनावां इण भांत रैयी है– 1.बाळसाद 2. कै मुकरणी 3. सांझ 4. बादळी 5. लू 6. मरुमहिमा 7. डांफर। राजस्थानी प्रकृति काव्य–परम्परा रा चावा रचनाकार चन्द्रसिंह री जीवण जात्रा 1996 ई. में संपूरण हुयी।

पाठ–परिचै

लू : राजस्थानी प्रक्रति काव्य–परम्परा रा चावा कवि चन्द्रसिंह आपरी काव्य–साधना में राजस्थानी प्रक्रति रै महताऊ पख में 'लू' नै कियां भुला सकता हा। इणी वास्तै वै 'लू' नै आधार बणाय आपरी रचना करी। 'लू' रै तीखास रौ प्रक्रति, जीव–जिनावर अर मिनखाजूण माथै कांई असर हुवै, इणरौ रूपाळौ चितरांम मांड्यौ है। 'लू' अेक कांनी प्रक्रति रै फूठरापै रौ विनास करै, तौ दूजी कांनी बादळ्यां नै जलम ई देवै। इण वास्तै मरुधरा उण लूवां नै घणौ लडावै। कवि इण भाव नै घणै फूठरापै साथै मांड्यौ है–

''जीवण दाता बादळ्यां, थांसूं जीवण पाय।
भल लूवां बाजौ कित्ती, मुरधर सहसी लाय।।''

बादळी : मरुधर प्रदेस राजस्थान रै वास्तै बादळ्यां रौ घणौ महत्त्व है। बादळ्यां अठै जीवणदाता मानीजी है। 'बादळ्यां' मरु प्रदेश रै वास्तै नूंवौ जीवण लेय'र आवै। 'बादळ्यां' आयां घणौ हरख हुवै। प्रकृति, जीवाजूण अर मानखै रै जीवण में बादळी नूंवी ल्हैर लेय'र आवै। इणी आणंद रौ वरणाव कवि इण रचना में कर्‌यौ है। अठै 'बादळी' नायिका है, जिकी कदैई सूरज सारू सजै–संवरै तौ कदैई पवन रै साथै रमै। आं दोनूं रचनावां में उपमा, रूपक अनुप्रास, उत्प्रेक्षा अलंकार अर राजस्थानी अलंकार वैणसगाई रौ खास बरताव हुयौ है।

लू

कोमल कोमल पांखड़्यां, कोमल कोमल पान।
कोमल कोमल बेलड़्यां, राख्या लूआं ध्यान।।

काची कूंपळ फूल फळ, फूटी सा बणराय।
बाड़ी भरी बसंत री, लूटी लूआं आय।।

पोखी कळियां प्यार सूं, भर–भर आस अटूट।
बिलखै सारी बेलड़्यां, लूआं लीधी लूट।।

नान्हा–नान्हा फूलड़ा, मोटा–मोटा फूल।
काची कळियां रोसियां, कीधी आ के भूल।।

चूण लेण रै चाव में, चिड़ियां खोलै चांच।
भीतर सारौ भूंजवै, लूआं अकरी आंच।।

अिमि सूकी आंख्यां मिची, हिरण्यां रुकी पुकार।
लाग लपेटै लू तणै, प्राणां लीध उडार।।

छप्पर ओरां छांह में, कर–कर पूळो ओट।
घणी जुगत राखै धणी, लुआं न चूकै चोट।।

⌘⌘

बादळी

जीवण नै सह तरसिया, बंजड़ झंखड़ बाढ।
बरस अे भोळी बादळी, आयौ आज आसाढ।।

छिनेक सूरज निखरियौ, बिखरी बादळियांह।
चिलकण मुंह अब लागियौ, धरा किरण मिलियांह।।

पहरै बदळै बादळी, बदळ पहर बदळाय।
सूरज साजन नै सखी, आसी कुणसौ दाय।।

दूर खितिज पर बादळ्यां, च्यारूं दिस में गाज।
जाणै कम्मर बांधली, आभै बरसण आज।।

मीठा बोलै मोरिया, डूंगा–टोकां गाज।
पल–पल साजन संभरै, इसड़ी बेळा आज।।

आज कळायण ऊमटी, छोड खूब हळूस।
सौ सौ कोसां बरससी, करसी काळ विधूंस।।

टप–टप चूवै आसरा, टप–टप विरही नैण।
झप–झप पळका बीज रा, झप–झप हिवड़ौ सैण।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

सह=सगळा, सारा। बंजड़=बंजर धरती। झंखड़=झाड़–झंखाड़। बाढ=झाड़ी, खेतां री बाड़। दाय=पसंद। खितिज=जठै आभौ अर धरती भेळा हुंवता दीसै। आभौ=आकास। कळायण=काळै बादळां री घटा। विधूंस=खतम, विणास। पान=पत्ता। बिलखै=विलाप करै। चूण=आटौ। कीधी=करी। हळूस=उल्लास साथै, आपौ छोड'र।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'लू' अर 'बादळी' काव्य कृतियां रा रचनाकार है–
   (अ) कन्हैयालाल सेठिया (ब) मेघराज मुकुल
   (स) चन्द्रसिंह बिरकाळी (द) हनुमान दीक्षित
   ( )

2. 'लू' अर 'बादळी' किण भांत री काव्य–रचना है–
   (अ) प्रक्रति काव्य (ब) प्रगतिसील काव्य
   (स) वीर रसात्मक काव्य (द) व्यंग्यात्मक काव्य
   ( )

3. बसंत री बाड़ी नै लूटी–
   (अ) बादळी (ब) लूआं
   (स) भतूळियौ (द) ओस
   ( )

4. बादळी में साजन बतायौ है–
   (अ) चांद नै (ब) बिरखा नै
   (स) धरती नै (द) सूरज नै
   ( )

5. पहरै–बदळै बादळी मांय कुणसौ अलंकार है–

(अ) वैणसगाई (ब) स्लेस

(स) अनुप्रास (द) रूपक

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. चन्द्रसिंह रौ जलम कठै हुयौ?
2. चन्द्रसिंह री खास दोय कवितावां कुणसी है?
3. जीवण नै कुण–कुण तरस रैया है?
4. 'बदळ–पहर बदळाय' मांय कुणसौ अलंकार है?
5. 'लाग लपेटै लू तणै' मांय कुणसौ अलंकार है?
6. लूआं सूं किणरौ ध्यान राखणै री अरज करीजी है?
7. 'बरस अे भोळी बादळी' कवि बादळी नै भोळी क्यूं बताई है?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. चन्द्रसिंह बिरकाळी री रचित कृतियां रा नांव लिखौ।
2. 'बादळी' अर 'लू' किण भांत रा काव्य है? सार रूप में समझावौ।
3. चन्द्रसिंह बिरकाळी प्रकृति रौ मानवीकरण किण भांत कस्यौ है? समझावौ।
4. बादळी किणरै मन भांवतौ बणाव, कियां अर किण भांत करै? समझावौ।
5. कवि 'लू' सूं कांई अरज करी है?
6. 'बिलखै सारी बेलड़्यां लूआं लीधी लूट' पंक्ति रौ भाव सारांस बतावौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'लू' अर 'बादळी' रै आधार माथै सिद्ध करौ कै चन्द्रसिंह बिरकाळी मरु–प्रक्रति रा चितेरा है।
2. बादळी काव्य रौ भावपख अर कलापख समझावौ।
3. 'लू' काव्य रौ सार लिखौ।
4. नीचै दिरीज्या दूहां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) काची कूंपळ फूल फळ, फूटी सा बणराय।
बाड़ी भरी बसंत री, लूटी लूआं आय।।

(ब) नान्हा–नान्हा फूलड़ा, मोटा–मोटा फूल।
काची कळियां रोसियां, कीधी आ के भूल।।

(स) आज कळायण ऊमटी, छोड खूब हळूस।
सौ सौ कोसां बरससी, करसी काळ विधूंस।।

काव्यांस
दुर्गादास

डॉ. नारायण सिंह भाटी

कवि–परिचै

आधुनिक राजस्थानी काव्य में महताऊ रचनावां सूं साहित्य–सेवा करण वाळा कवि डॉ. नारायण सिंह भाटी रौ जनम जोधपुर जिला रै मालूंगा गांव में 7 अगस्त, 1930 नै हुयौ। आपरै पिता रौ नाम कानसिंह भाटी हो। आपरी औपचारिक भणाई री सरुआत मालूंगा गांव सूं हुई। इणरै पछै आप चौपासनी स्कूल में पढ्या और एम.ए. एलएल.बी. तांई री भणाई एस.एम.के. कालेज जोधपुर सूं प्राप्त करी। इण भणाई रै पछै आप वकालात सरू करी, पण कवि–मन वकालात में कद लागण वाळौ हौ। वै वकालात छोड दी। जद जोधपुर रै चौपासनी शिक्षण संस्थान में राजस्थानी सोध संस्थान री थरपणा हुई, तौ आप इण रा पैलड़ा निदेसक बण्या। एलएल.बी. कर्‍यां पछै भी आपरौ झुकाव तौ साहित्य अर इतिहास कांनी हौ, इण वास्तै औ फरज आप बौत आछै ढंग सूं निभायौ। इण संस्थान सूं भासा, साहित्य अर इतिहास रा जिका ग्रंथ प्रकाशित हुया वै सगळा ग्रंथ आपरी पिंडताई रा परमांण है। जूना ग्रंथां रौ ई आप गैरौ अध्ययन कर्‍यौ। राजस्थानी सोध संस्थान कांनी सूं छपण वाळी सोध पत्रिका 'परम्परा' रौ आप सम्पादन कर्‍यौ। आपरै सम्पादन में इण पत्रिका रा लगैटगै 100 अंक छप्या। परम्परा रा सगळा अंक न्यारा–न्यारा विसयां अर न्यारी–न्यारी दीठ नै लियां रैया है। इणरै साथै 'मारवाड़ रा परगनां री विगत', 'महाराजा मानसिंह री ख्यात', 'तखतसिंह री ख्यात' ग्रंथ आपरी संपादन–कला रा ठावा दाखला कैया जाय सकै। राजस्थानी सोध संस्थान रा निदेसक रैवतां इतियास अर सोध री सेवा करतां भी आप–आपरी मूल कविता–धारां सूं न्यारा नीं हुया। वै सगळा फरज निभाया, पण कवि री भूमिका नै नीं भूल सक्या। इणी कारणै वै केई काव्य–रचनावां री रचना कर सक्या। वै सगळी रचनावां आपरै काव्य–कौसल री साख भरै।

आपरी खास काव्य–पोथ्यां इण भांत है– 1. ओळूं 2. सांझ 3. मेघदूत (अनुवाद) 4. जीवणधन 5. परमवीर 6. दुर्गादास 7. कळप 8. मीरां 9. बरसां रा डिगोड़ा डूंगर लांघिया 10. मिनख नै समझावणौ दोरौ 11. पतियारौ।

भासा अर सैली री दीठ सूं कवि नारायण सिंह भाटी आपरी नूंवी शैली बणायी, जिणमें डिंगळ सैली रौ प्रवाह अर सबदां रौ वरताव प्रयोग खास कैयौ जाय सकै। आपरी भासा में राजस्थानी रौ रूपाळपण है। कवि आपरै भावां नै सांम्ही लावणं में आगत नीं करी, सबद खुद आगै होय'र कवि रा भावां नै सांम्ही लावता चितरांम मांडता–सा लागता रैया है। आधुनिक राजस्थानी कविता रौ औ सपूत 18 अप्रेल, 1994 नै औ लोक छोड परलोक कांनी गयौ परौ। आज कवि तौ नीं, पण उणरी रचनावां उणरै व्यक्तित्व अर कृतित्व री साख भरै।

पाठ–परिचै

मारवाड़ रै इतिहास में वीरवर दुर्गादास रौ नाम किणी सूं छानौ नीं है। मारवाड़ रा महाराजा जसवंतसिंह रा विस्वासपात्र सेवक अर महाराजा अजीतसिंह रै जीवण री रिच्छा करण वाळा इण

देसभक्त रौ जीवण मारवाड़ रै खातर अरपण रैयौ। इणरी धाक सूं ईज औरंगजेब री कुदीठ सूं मारवाड़ बच्यौ रैय सक्यौ, पण वीरवर दुर्गादास रै साथै कीं अैड़ी परिस्थितियां आयगी कै वांनै मारवाड़ रौ त्याग करणौ पड़्यौ। वै हरमेस धोळै घोड़ै रा असवार रैया। वांरा बागा ई धोळा ईज रैया। वांरी कीरत ई ऊजळी रैयी। वीर दुर्गादास आपरी वीरता री मरजाद नै कदैई तोड़ी नीं। चायै खुद कितरा ई दुख देख्या, पण मायड़ भोम री सींव नै आंच नीं आवण दी। दुर्गादास रै इणी ऊजळ चरित्र अर उणरी ऊजळ कीरत–गाथा रै रूप में आ कविता कवि नारायणसिंह भाटी मांडी है।

दुर्गादास

अस रा असवार ऊजळा,
रह्यौ ऊजळै वागां
ऊजळी खागां
ऊजळै मनां
राखियौ खत ऊजळौ,
पण असल रंगरेज आसरा
थें रंगियौ कसूंबल धरा–पोमचौ–
बिनां कर रंगियां।।

थें करी असांयत आसरा!
थिर सांयत थावा सारू,
थारी बाढ़ाळी खळकाया–
रगत–वा'ळा,
करुण आंखियां ढळता–
अरुण–आंसू ढाबवा सारू।।

भाखरां भटकियौ,
न अटकियौ खाळां–वा'ळां,
पलक न विखौ जेण उर खटकियौ
निरासा ची रोही में ऊभौ जाण हेकलौ–
भालाळै किण दिन कर भटकियौ?
रुकियौ न रोक्यौ गज–जूथां,
बाढ़तौ बिखा,
औरंग–सेन–वनां,
करोत ज्यूं करणौत पार व्हेगौ।।

अस चढणा!
हेकलौ प्रण पाळ चढ्यौ,
लियण घण मूंगी रतन–धरा।
सैलां झकझोळियौ अरियां समंद,
ढळी ऊमरां,
अस ढळिया,
पण अस रौ असवार नंह ढळियौ।।

भुरजाळा!
व्है मतवाळौ मेघ मालियौ–
नौ कूंटी मरुधरा धरा,
आवा न दीधौ आंच मां–भोम नै
कीनी छांवळ लाज खेतां,
वचन डूंगरां,
खिंवियौ बीच खागां–
खळ–दळां।
सेवट बरसियौ बोह जस मोतियां।।
⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

अस=घोड़ौ। ऊजळै=ऊजळौ, धोळौ। वागां=पौसाक। खागां=तलवार। कसूंबल=लाल। बाढाळी=तलवार। अरुण=लाल। ढाबवा=रोकणै। भाखरां=पहाड़ां। रोही=जंगळ। ऊभौ=खड़्यौ। बिखा=दुख। गज जूथां=हाथियां रा झुंड। सैलां=भालां। झकझोळिया=मथिया। अरियां=दुस्मणां। समंद=समदर। भुरजाळा=दुरग रा रुखाळा। खिंबियौ=चमक्यौ। खागां=तलवारां।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'दुर्गादास' पोथी रा रचनाकार है–
   (अ) कल्याण सिंह राजावत (ब) नारायण सिंह भाटी
   (स) कन्हैयालाल सेठिया (द) सूर्यमल्ल मीसण
   ( )
2. 'दुर्गादास' पोथी रा पठित छंदां रौ खास रस है–
   (अ) सिणगार रस (ब) वीर रस
   (स) वीभत्स रस (द) वात्सल्य रस
   ( )
3. दुर्गादास किण महाराजा रा विस्वासपात्र हा–
   (अ) मानसिंह (ब) जसवन्तसिंह
   (स) तखतसिंह (द) विजयसिंह
   ( )
4. आं मांय सूं किसी पोथी नारायणसिंह भाटी री कोनी–
   (अ) दुर्गादास (ब) सांझ
   (स) मानखौ (द) ओळूं
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'दुर्गादास' रचना किण कवि री सिरजणा है?
2. दुर्गादास किणां रा प्राणां री रिच्छा करी ही?
3. डॉ. नारायण सिंह भाटी किण संस्था रा निदेसक हा?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. डॉ. नारायण सिंह भाटी री पोथियां रा नांव बतावौ।
2. डॉ. नारायण सिंह भाटी रै सम्पादन में छपी सोध पत्रिका रौ नांव अर उणरी विसेसतावां बतावौ।
3. दुर्गादास रौ नांव इतिहास में चावौ क्यूं है?
4. नारायण सिंह भाटी रौ राजस्थानी कविता रै लेखण में कांई योगदान है?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी साहित्य अर इतिहास रा ग्रंथ–लेखण में डॉ. नारायण सिंह भाटी रौ कांई योगदान है?
2. दुर्गादास रै चरित्र रा गुण बतावौ ?

3. मारवाड़ रै इतिहास में दुर्गादास रै योगदान नै समझावौ।
4. अजीतसिंह रा प्राणां री रिच्छा रै वास्तै वीर दुर्गादास कांई कदम उठायौ।
5. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) थें करी असांयत आसरा।
थिर सांयत थापवा सारू,
थारी बाढ़ाळी खळकाया
रगत–वा'ळा,
करुण आंखियां ढळता–
अरुण–आंसू ढाबवा सारू।।

(ब) भुरजाळा!
व्है मतवाळौ मेघ मालियौ–
नौ कूंटी मरुधरा धरा,
आवा न दीधी आंच मां–भोम नै
कीनी छांवळ लाज खेतां,
वचन डूंगरां,
खिंवियौ बीच खागां–
खळ–दळां।
सेवट बरसियौ बोह जस मोतियां।।

गीत
सीखड़ली

कानदान 'कल्पित'

गीतकार परिचै

गीतकार अर कवि कानदान 'कल्पित' रौ जनम नागौर जिलै रै झोरड़ा गांव मांय चारण जात री बीठू साखा में वि. सं. 1994 में होयौ। वांरै पिता रौ नांव हरिदानजी बीठू हौ। झोरड़ा गांव री आपरी मोटी विसेसता है कै उठै हरिराम बाबा रौ लोकचावौ मिंदर है। सांप–सपळोटियां सूं जीव मात्र री रिछ्या करण रै रूप में आपरा परचा चावा है। औ गांव हरिराम बाबा रौ झोरड़ौ गांव रै नांव सूं ई जाणीजै। कानदान 'कल्पित' दसवीं तांई पढाई करी, पण मां सुरसत रा सपूत में कविता री निकेवळी इधकाई ही। इण हथोटी रै पांण आपरा अलेखूं गीत अर कवितावां आखै भारत में ठौड़–ठौड़ राखीज्या कवि–सम्मेलनां रै मंचां सूं गूंजी। राजस्थानी समाज में आपरै गीतां नै घणा दाय करीजै। आपरै गीतां नै सुणतां सुणणिया धापै कोनी। गीतां री गोख सूं च्यारूं कांनी रौ वातावरण सरस पण लखावतौ। प्रक्रति में कदैई लड़ालूंब बिरखा रौ वरणाव तौ कठैई फागण री रंगत होवै। थोथी राजनीति सूं मानखै नै हंसावै तौ देसप्रेम रै भावां सूं हिरदौ सींचै। भांत–भांत सूं मानखै नै जगावै तौ कणैई सिणगार रा साज सजावै पण 'सीखड़ली' गीत उगेरै तौ बाईसा रा नैण ई नीं सुणण वाळां रा नैण ई डब–डब भरीज जावै। आपरी रचनावां रौ असर पाठकां रै हियै में अखी रैवण वाळौ है। गीतां रा पारखी इण कवि री छप्योड़ी पोथ्यां में हरिलीला अमृत (खंडकाव्य) में हरिराम बाबै रै जीवण–चरित्र रौ वरणन है। दूजी पोथी 'मरुधर म्हारो देस' में माटी रौ हेत हियै रमग्यौ। केई विसयां में कवि देसप्रेम, भाईपौ, संस्क्रति, परम्परावां रै ओळावै आपरा भाव प्रगट करै तौ प्रक्रति प्रेम री नूंवी अर सिणगारू रचनावां में संवेदना परगटी है। परंपराऊ कविता री ओळ में आप केई लोकगीतां रै ढाळै रा गीत लिख्या। वै लोकगीतां री परम्परा नै जींवती राखण वाळा सिरजणहार हा।

पाठ–परिचै

आपरा चावा गीतां में अेक गीत 'सीखड़ली' है। सीख रौ अरथ 'विदाई' होवै। सीख देवण रौ अरथ सासरै जावती बाई नै मां काळजा सूं लगाय अबोली ई सैंग सिखाय देवै कै अबै वौ ईज थारौ साचौ घर है। लोकलाज, मान–सम्मान, अपणायत री सीख भी देवै। लोक–वैवार में ई कैयीजै है– 'बेटी देखै बाप रै, करै आपरै'। पिता रै घरै मिल्योड़ै संस्कारां नै ठेठ तांई आपरा जीवण में निभावै, आ ईज सीख है। बेटी नै परणाय जद सासरै सीख दिरीजै तद बेटी रै मन में माईतां सूं बिछड़ण री जिकी पीड़ होवै, आपरी साईनी साथणियां सूं न्यारी होवती वा कित्ती कुरळावै, इणरौ मरमपरसी वरणन कवि इण गीत में कर्‌यौ है। कवि बेटी नै चिड़कली, लाडलड़ी, तीतरपंखी, सूवटड़ी जैड़ी ओपमावां दी है। अै बेटी रा विसेसण है। मायड़ रै काळजै री कोर, जिणनै लाडां–कोडा पाळी, मोटी करी, नैणां री पुतळी अर मोतयां सूं मूंघी कर राखी उणनै आज परायै घर सीख देवणी मां नै खारी लागै तौ धीव रै हियै जूनी यादां रौ मीठौ जैर

घुळै। मां जाणै मोत्यां बीचाळै री लाल पल्लै बंध्योड़ी आज खुल'र हेठी पड़गी, गमगी। ममता रौ अथाग समंदर हिलोळा चढगौ। आपरी लाडली नै काठी बाथां में भरली पण सीख देवणी सो देवणी, क्यूंकै बेटी परायौ धन मानीजै। परायै घर री बस्ती कहीजै। काळजा माथै भाटौ मेल'र माईत उणनै आंगणै री सीख देवै, आ इज रीत है। सीख री बगत भाई–भोजाई अर काकोसा–बाबोसा, सगळा आप–आपरा नेगचार करया। साथणियां रौ झूलरौ तौ बाईसा रै साथै–साथै चालै, आंसूवां रा रेला सूं वांरौ डील भीजग्यौ जाणै मेह री झड़ी लागी होवै। हियौ टूक–टूक होयग्यौ अर आखिर बाई नै होळै–होळै बहीर होवणौ ई पड़ियौ। परबस हारयोड़ी 'कायर हिरणी' ज्यूं पाछी मुड़–मुड़ देखै फेर आंख्यां माथै हाथ मेल दिया। औ बिछड़णौ उणनै घणौ दो'रौ लागौ। रोवतां–रोवतां सिणगार रौ काजळ गळग्यौ। 'सीख' अेक गीत है। उण गीत में गीत उगेरीज्यौ– 'मोरियो अे माय, म्हारी कोयल बाई सिध चाली'। बेटी रौ सासरै वास्तै विदा होवणौ माईतां रै मन में जित्तौ सुख जगावै उतरौ ई दुख उपजावै। अेकै कांनी वै कन्यादान कर रिणमुगत होवै, जिम्मेदारी निभावै, परम्परा नै पोखै तौ बेटी री विदाई सूं घर–आंगणौ अर मां रौ काळजौ सूनौ होय जावै। आपरै टाबरपणै रौ लाड, रूठणौ, मनावणौ, ढूल्यां रौ रमणौ, सगळौ लारै छोड सासरै में नूंवा परिवेस में जाय बसणौ। बेटी रै वास्तै उणरौ जीवण अेक चुनौती सूं कम कोनी। सासरियौ घणौ दो'रौ लागै पण उठै ई उणरी मरजाद है। नैणां में बाळपणै रा सुपनां लियां बेटी आंसूड़ा ढळकाती सासरै जावै। पण पीहरियै री यादां उणरै हिवड़ै रै अेक खूणै में सदैव जीवती रैवै। 'सीखड़ली' मानवी मन में संवेदना जगावण वाळौ गीत है–

सीखड़ली

डब डब भरिया, बाईसा रा नैण
चिड़कली रा नैण, लाडलड़ी रा नैण
तीतरपंखी रा नैण, सूवटड़ी रा नैण
दो'रौ घणौ सासरियौ।

मावड़ जाण कळेजै री कोर, फूल माथै पांख्यां धरी
माथै कर–कर पलकां री छांय, पाळ–पोस मोटी करी
राखी नैणां री पुतळी जाण, मोतीड़ां सूं महंगी करी
कर–कर आघ, लडाई घण लाड,
भरीजी मन गाढ,
जीवण मीठौ जहर पियौ
दो'रौ घणौ सासरियौ।

डूबी सोच समंदड़ै रै बीच, तरंगां में उळझ परी
जाणै मोत्यां बिचली लाल, पल्लै बंधी खुल परी
भरियौ नैणां ममता–नीर, लाडलड़ी नै गोद भरी

जागी–जागी काळजै री पीड़,
हियै सूं लीवी भीड़,
गरळ–गळ हिवड़ौ भर्‌यौ
दो'रौ घणौ सासरियौ।
भाभीसा काढ काजळियै री रेख, संवारी हिंगळू मांगड़ली
बीरोसा लाया सदा सुरंगौ बेस, ओढाई बोरंग चूंदड़ली
बाबोसा फेर्‌यौ माथै पर हाथ दिराई बाई नै सीखड़ली
ऊभौ–ऊभौ साथणियां रौ साथ,
आंसूड़ां भीज्यौ है गात,
नैणां झड़ ओसरियौ,
दो'रौ घणौ सासरियौ।

करती कळझळ हिवड़ै रा टूक, कूंकूं पगल्या आगै धर्‌या
कायर हिरणी–सी मुड़–मुड़ देख, आंख्यां माथै हाथ धर्‌या
मुखड़ौ मुरझ्यौ बिछड़ंतां आज, रो–रो नैण राता कर्‌या
चांद–मुखड़ै उदासी री रेख,
डुसक्यां भरती देख,
सहेल्यां गायौ मोरियौ,
दो'रौ घणौ सासरियौ।

रथड़ै चढतोड़ी पाछल फोर, सहेल्यां नै झालौ दियौ
कूंकूं–छाई बाजर हरियै खेत, जाणै जियां झोलौ बियौ
छळक्या नैण घूंघटियै री ओट, काळजौ काढ लियौ
काळी–काळी काजळियै री रेख,
मगसी पडग़ी देख,
नैणां सूं ढळक्यौ काजळियौ,
दो'रौ घणौ सासरियौ।

मनण–रूठण रा आणंद उछाव, हियै रै परदै मंडता गिया
सारा बाळपणै रा चितराम, नैणां आगै ढळता गिया
बिलखी मावड़ नै मुड़ती देख, विकळ नैण झरता गिया
करती निस–दिन हंस–किलोळ,
बाबोसा–घर री पोळ,
ढूल्यां रौ रमणौ छूट गियौ,
दो'रौ घणौ सासरियौ।

लागी बाळपणै री प्रीत, जातोड़ी जिवड़ौ दो'रौ कियौ
रेसम रासां नै दी फणकार, सागड़ी नै रथड़ौ खड़्चौ
धरती–अंबर रेखा रै बीच, सोवन सूरज डूब गियौ
दीख्या–दीख्या सासरियै रा रूंख,
रेतड़ली रा टूंक,
सौ कोसां रहग्यौ पीवरियौ,
दो'रौ घणौ सासरियौ।

डब डब भरिया, बाईसा रा नैण
चिड़कली रा नैण, लाडलड़ी रा नैण
तीतरपंखी रा नैण, सूवटड़ी रा नैण
दो'रौ घणौ सासरियौ।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

नैण=आंख्यां। मावड़=मां। आघ=पहल, अगवाणी। हियौ=हिरदौ, काळजौ। बोरंग=रंग–बिरंगी। गात=सरीर। कायर=डरपोक। राता=लाल। मगसी=फीकी। पोळ–मोटौ दरवाजौ, मुख्य द्वार, मौड़ौ। ढुल्यां=गुडिया, कपड़ै री गुड्डी। सागड़ी=सारथी।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. हरिराम बाबै रौ लोकचावौ मिंदर है–
   (अ) बिरकाळी (ब) झोरड़ा
   (स) जोधपुर (द) समदड़ी
   ( )
2. 'हरिलीला अमृत' काव्य रौ कुणसौ रूप है?
   (अ) महाकाव्य (ब) खंडकाव्य
   (स) चम्पूकाव्य (द) गद्यकाव्य
   ( )
3. कानदान कल्पित री चावी पोथी है–
   (अ) मरुधर म्हारौ देस (ब) बादळी
   (स) लीलटांस (द) राधा
   ( )

4. कानदान 'कल्पित' ओळखीजै—

(अ) गीतां सूं (ब) कहाण्यां सूं

(स) निबन्धां सूं (द) नाटकां सूं

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कानदान 'कल्पित' रौ जलम कठै होयौ?
2. कवि कानदान रै पिता रौ नांव कांई हौ?
3. कवि कानदान री दो पोथ्यां रौ नांव लिखौ।
4. हरिराम बाबा किणसूं जीवां री रिछ्या करै।
5. कवि रौ गांव किण कारण सूं चावौ है?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'सीखड़ली' गीत में बेटी वास्तै कांई—कांई सबद काम में लिरीज्या है।
2. 'सीखड़ली' गीत में भाई—भावज कांई कर सीख देवै।
3. मावड़ रै वास्तै बेटी कांई है? गीत सूं टाळवीं ओपमावां लिखौ।
4. सीख री टैम साथणियां री कांई दसा व्है?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'सीखड़ली' में विदा होवती बेटी रै मन री पीड़ रौ भाव आपरै सबदां में लिखौ।
2. 'सीखड़ली' गीत रौ सार आपरै सबदां में लिखौ।
3. ''सीखड़ली में विजोग री पीड़ सूं पाठकां अर स्रोतावां रै नैणां नीर आयां बिना नीं रैवै।'' इण कथन रौ खुलासौ करौ।
4. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ—

(अ) डूबी सोच समंदड़ै रै बीच, तरंगां में उळझ परी
जाणै मोत्यां बिचली लाल, पल्लै बंधी खुल परी
भरियौ नैणां ममता—नीर, लाडलड़ी नै गोद भरी

(ब) करती कळझळ हिवड़ै रा टूक, कूंकूं पगल्या आगै धर्‌या
कायर हिरणी—सी मुड़—मुड़ देख, आंख्यां माथै हाथ धर्‌या
मुखड़ौ मुरझ्यौ बिछड़ंतां आज, रो—रो नैण राता कर्‌या

लोकगीत
बधावौ

राजस्थानी भासा जुगां जूनी। बरसां लग आ लोकभासा रैयी। लोक रै अंतस री पीड़, हरख, उमाव अर हूंस री इण भासा में लोक री सगळी भावनावां नै उकेरण वाळा साहित्य रौ सिरजण होयौ। औ सिरजण साहित्य री सगळी विधावां में होयौ। उणमें लोकगीत उत्ता ईज जूना है, जित्तौ कै मिनख। अै लोकगीत राजस्थानी जनमानस रै हिरदै रा साचा उद्‌गार है; जीवता जागता चित्राम है। अै लोक री रचना है। आंरी बणगट रा जतन लोक कदैई नीं कर्‌या। अै तो मतैई उपजण वाळा अर साव निखोट अर मौलिक है। इण वास्तै ईज लोकगीतां रौ कोई अेक सरूप नीं, कोई छंद–विधान नीं होवै। राजस्थानी लोकगीतां में उणरै मूळ रूप नै छांटणौ घणौ अबखौ काम। आखी जीवाजूण अर लोकमानस में रमण वाळा आं गीतां रौ मूळ सरूप बगत अर ठौड़ रै साथै बदळतौ रैवै। राजस्थानी में आ कैवत है कै 'बारै कोसां बोली बदळै।' बोली रै फरक साथै आं लोकगीतां रै सरूप में सगळी जगै थोड़ौ–घणौ आंतरौ आयां बिनां नीं रैवै। अै तौ अपणै आप में सहज–सुतंतर, परंपरागत अर नित–नूंवां है। गेयता आंरौ खास गुण है। समाज रै हर तबकै नै लेयनै लोकगीतां री रचना होयी है। जीवण रौ कोई पहलू आं गीतां सूं अछूतौ, अणदीठौ कोनी। घटती–बधती छिंयां अर तावड़ै रै उणमांन ई मानखै रा जीवण में सुख–दुःख आवता–जावता रैवै। सुख, हरख, कोड, उछाव री घड़ियां में वौ जिकौ मैसूस करै, आं अनुभूतियां री अभिव्यक्ति ई लोकगीतां रै जलम रौ कारण बणै।

मूळ रूप सूं लोकगीतां रा दोय भेद है– 1. धारमिक लोकगीत, 2. मनोरंजनात्मक लोकगीत। धारमिक लोकगीतां में देवी–देवतावां रा गीत, बरत–बडोळियां रा गीत, संस्कारां रा गीत आवै। जदकै मनोरंजनात्मक गीतां री ओळी में लुगायां, मोट्यारां अर टाबरां रै सरस प्रसंगां रा गीत, खेल–तमासां रा गीत, तीज–तिंवारां रा गीत, न्यारी–न्यारी रितुवां माथै गाईजण वाळा गीत आवै।

राजस्थानी संस्कृति रूपी रूंखड़ै री जड़ां धरम सूं सींच्योड़ी है। धरम मानखै में संस्कार लावै। धारमिक लोकगीतां री अठै इधकी ठौड़। आपरै कुळ रा देवी–देवतावां री छत्तर–छिंयां में कड़ूंबौ, घर–गवाड़ी फळती–फूलती रैवै, इण वास्तै मिनख वांनै ध्यावै; मनावै अर अरदास करै। देवी–देवतावां रा गीतां नै भजन, हरजस कैवै। केई भजन अर हरजस मिनख आपरौ जलम सुधारण खातर गावै तौ केई अबखी पुळ में भजनां रै जोर सूं गैरी–गंगैर में सूता देवां नै जगावै अर मनचायौ वर पावै। पौराणिक देवी–देवतावां रा भजनां रै साथै लोकदेवियां– करणी माता, जीण माता, चौथ माता, सुसाणी माता अर लोकदेवतावां में रामदेवजी, पाबूजी, गोगाजी, तेजाजी आद रा गीत गांव–गांव अर ढाणी–ढाणी में गूंजै। इण भांत रा गीत भजन मंडळियां सांवठै सुर में गावै अर साथै लोकवाद्यां में नगाड़ा, मंजीरा, इकतारा अर रावण–हत्था री धुन होवै तौ भजनां में सवायौ रस आय जावै।

राजस्थान तीज–तिंवारां रौ प्रदेस। तीज–तिंवारां रै साथै जुड़्योड़ा है लुगायां रा बरत–बडोळिया अर आंरै सागै है लोकविस्वास। सावण री तीज होवौ अर भलां ई भादवै री काजळी तीज, हींडौ हींडती गोरियां गीत गावै अर गीतां रै गड़कै परदेसां गयोड़ै पीव नै घरै आवण री मनवार करै। तीज माता रौ अवास करै अर अमर–सवाग री अरदास करै। चेत मास में गिणगौर पूजती कंवारी कन्यावां चोखौ घर अर वर मांगै तौ सवागण नार अमर चुड़लै री आस लियां गीत गावै, गौर माता नै मनावै।

इणी भांत होळी अर दीवाळी रा गीत गाईजै। हरेक महीनै में आवण वाळा छोटा–बडा तिंवारां नै गीतां री गोख सूं लाडां–कोडां मनावण री रीत है। होळी रा दिनां में सायनी–साथणियां लूरां लेवती मीठा ओळबा सुणावै अर मसखरियां चालै, फागण गाईजै। मोट्यार चंग अर डफ रै साथै धमाल राग में फाग गीत गावै अर कीं दिनां खातर खुद नै ई बिसर जावै। वै आपरै मन रौ चाव गीतां रै ओळावै पूरौ करै।

दीवाळी रा दिनां में टाबर मतीरां में नैनी–नैनी जाळियां बणावै। उणरै ऊपर ढेबरी काट'र मांय 'दीवौ' मेल'र रात में गीत गावै अर घर–घर औ संदेसौ देवै कै 'दीवाळी रा दीवा दीठा, काचर बोर मतीरा मीठा।' दीवो कठैई 'बडौ' नीं होय जावै (बुझै नीं), इण वास्तै मिनखां में औ विस्वास जगावै कै 'घालौ तेल, बधै थांरी बेल।'

जीवण में संस्कारां रौ घणौ मोल, जीवण रा सोळा संस्कार मानीजै। जलम सूं लेय'र सौ बरस पूगै जित्तै मिनख आं संस्कारां रै गेलै–गेलै चालै। संस्कारां सूं जुड़्योड़ा है लोकगीत। घर में टाबर रौ जलम होवै तौ जच्चा रा गीत, सूरज पूजा रा गीत अर जळवा पूजण रा गीत गाईजै। इण मौकै सासू, बऊ, नणद–भौजाई, देराणी–जेठाणी रा गीत ई गाईजै, जिणमें जीवण रा खारा–खाटा अर मीठा अनुभव होवै। पैली होळी आवै जद टाबर री ढूंढ करै, उणरा गीत, जलम केसां नै बडा करै तौ झडूलै रा गीत गाईजै। जनेऊ धारण करावती बगत उणरा गीत गाईजै तौ ब्याव रै मौकै विनायक, मायरो, वंदोळी, कामण, कळस, पीठी, तेल, हळदी, तोरण, फेरा, कुंवर–कलेवौ, जुआ–जुई, सीख रा गीत गावण री रीत है। ब्याव रा गीतां नै 'बन्ना' कैवै जिणमें आपरै परिवार वाळां रा नांव लेय'र काकोसा, भाबोसा, दादोसा इत्याद रा संबोधन गीत गाईजै। इण मौकै भगवान नै पति रूप में पावण री कामना करती 'बन्नी' जांणै भगवान जैड़ो वर मिलै। इण वास्तै वा कांई मांगै–

म्हैं तो मांगूं अयोध्या रो राज, पीहर म्हारो जनकपुरी।
म्हैं तो वर मांगूं भगवान, छोटो देवर लिछमणजी।।

जीवण री सगळी अवस्थावां में टाबरपणो आपरी न्यारी ठौड़ राखै। टाबरां रा गीतां में मेवाड़ रौ 'हरणी' गीत, जिणनै टाबरिया रमता–रमता गावै–

हरणी हरणी थूं क्यूं दूबळी अे,
चाल म्हारै देस ! राता गंउवां की घूघरी अे,
नूंवी तिल्ली को तेल...।

जीवण हरमेस रंगीलौ नीं होवै। सुखां रै साथै दु:ख ई जुड़्योड़ा है। अठै रा गांवां अर ढाणियां में रैवण वाळा मिनखां रौ जीवण घणौ अबखौ अर दो'रौ। सियाळै री ठंडी रात में पांणत करता करसा अर लांबी जातरा करता कतारिया आं लोकगीतां सूं आपरै बगत नै सरस बणावै। मनोरंजनात्मक गीतां री ओळी में ई चिरमी, हिचकी, ईंडाणी, जीरौ अर केई ओळूं जैड़ा सिणगारू गीत ई गाईजै। पसु–पंखेरूवां साथै मिनखां रौ घणौ जूनौ संबंध रैयौ है। आं पंखेरूवां रै मिस आपरै पीव नै संदेसौ, तौ कदैई मीठा ओळबा देवती गोरड़्यां गीतां में आपरी पीड़ उकेरै। कुरजां, सूवटौ, कागलियौ, मोरियौ जैड़ा गीतां में अै पंछीड़ा ई विरहणियां रा सांचा मीत बणिया है तौ कदैई संदेसवाहक रौ काम सार्‌यौ है।

प्रकृति नै मानखौ कीकर भूल सकै? बरस में आवण वाळी रितुवां रौ वरणाव लोकगीतां में होयौ है तौ चौमासै रौ चौगणौ चाव गीतां में जबरौ राचै। बिरखा माथै ई मानखै रौ सगळौ दारोमदार है। बिरखा ऊमटै, मेह वूठै तौ बरस सो'रौ निकळै। चौमासै में खेतां री पगडांड्यां चालता हाळी–बाळदी चौमासै रा गीत गावै, इंदर राजा नै मनावै अर बिरखा रा लाड–कोड करै। लोकगीतां रौ वरणाव कठै

नीं होयौ? बात करां जित्ती ई थोड़ी। जीवण री कठोरता आं गीतां में है तौ मीठास रौ ई पार कोनी। आं गीतां में वौ दरद है, वा पीड़ है कै पासाण हिम ज्यूं गळ जावै, वौ इमरत है कै भलांई अेक पल वास्तै ई सही, पण! मानखौ जीव जावै, गीतां री सरसता में डूब'र खुद नै ई भूल जावै। टाबरां नै चिगळाय'र हींडै में सुवाड़ण रौ जादू आं गीतां में है तौ सूतोड़ां नै जगावण रौ जोर ई आं गीतां में लाधै।

लोकगीतां में समाज रा रीत–पांत, परंपरावां, लोकविस्वास अर उणरी भावनावां जुड़्योड़ी है। आं में किणी अेक मिनख रौ नीं, समुदाय रौ नीं, आखै समाज रौ सुर है। किणी समाज री संस्कृति अर परिवेस नै जाणण वास्तै उठै रा लोकगीतां सूं बध'र दूजौ साधन कोनीं। लोक–साहित्य विधावां रौ अथाग समदर है तौ लोकगीत उणसूं निकळण वाळा अमोलक रतन।

राजस्थानी संस्कृति री छिब अर आखै जीवण री सरसता रा दरसण जठै करीजै, उण मांयली अेक कड़ी है– 'बधावां' री। बधावौ– हरख–उमाव, लाड–कोड रौ छौळां चढियो समदर। बधावौ– जीवण री वां घड़ियां री सुखद अभिव्यक्ति, जठै घर–गिरस्थी रा सगळा सुख सैंधरूप होय जावै। घर में बेटा रौ जलम होवै, चायै बेटा–बेटी रौ ब्याव कै पछै नूंवै घर में रैवास रौ मौहरत होवै, आं अैढां माथै राग–रंग, उच्छब अर रस री बिरखा होवै तौ हिये में हरख अर राजीपै रौ पार नीं रैवै। आं सुभ अवसरां माथै 'बधावौ' गीत गाईजै।

राजस्थान रा मध्यकालीन सामंती समाज में जुद्ध डावै हाथ रौ खेल हौ। धरती, धरम अर मरजाद राखण वास्तै, तौ कदैई बदळै री भावना सूं, राज री सीमावां बधावण सारू तौ कदैई वचन–पाळण, स्वामिभक्ति रै कारण भांत–भांत रा जुद्ध अठै लड़ीजता रैया। आं जुद्धां में राजा, सामंत, सरदार, वीर–सैनिक, ओहदैदार, मंत्री अर सेना नै रासण पूगावण री खैचल वास्तै व्यौपारियां इत्याद नै केई–केई महीनां घर सूं अळगौ रैवणौ पड़तौ, जठै आव–जाव घणौ दो'रौ, चिट्ठी–पतरी रौ ई काम कोनीं। उण बगत घरां में रैवणिया हा तौ फगत बूढा, बेमार, टाबर अर धणी रै घरै आवण री आस में कंवळै ऊभी उडीकती, काग उडावती, सूनौ मारग भाळती अर झुरती वां वीर–जोधारां री विरहणियां। वै विजोग री वां घड़ियां नै बिलमावण री अैळी खैचल करती। आपरी कुळ–मरजाद री लिछमण रेखा में बंध्योड़ी सीलवंती– सतवंती कुळ–बऊवां री अैड़ी दसा में जद किणी रौ प्रवासी प्रियतम अचाणचक घरै आय पूगौ तौ मेड़ी रा गोखड़ा सूं प्राण–पिया नै निरखती वा विजोगण, सरब सवागण बण आपरा भाग सरावै अर 'सुख री घड़ी' में उणरौ मन गावण लागै। औ 'बधावौ' गीत स्यात उणरै हियै री उण बगत री उकेल ही। गीत रा भाव इण भांत है– आज आंगणै में जाणै सोळै सूरज अेकण साथै ऊगग्या होवै। इण सुख रौ वरणाव वा किंयां करै ? लंबै विछोह पछै संयोग रौ सुख सबदां नीं कथीजै। उण सुख नै भोगण वाळौ, उण स्थिति नै झेलण वाळौ ई जाण सकै। 'गूंगै रा गुळ' जैड़ी सुख री घड़ियां में नायिका थोड़ी ताळ वास्तै नारी सुलभ लाज, संस्कार, घर–परिवार वाळां रै संकै अर मरजाद नै जाणै भूल जावै, मन रा कोमल भाव इण भांत गीत रौ रूप लेय लेवै। वा आपरै पति रा पौरुस, वीरता अर दरप सूं दीपती आंख्यां री बडाई 'झीणी केसर' सूं करै। अैड़ी अनूठी उपमा कठैई नीं लाधै। तीखा उणियारा माथै ओपता नाक वास्तै कैवै कै वैमाता जाणै निकमी बैठ'र (फुरसत, नेठाव सूं) घड़ी है। औ लोकप्रचलित ओखाणौ है। इणनै परोटण सूं नाक वास्तै दूजी ओपमावां री दरकार ई मैसूस नीं होवै अर उणरौ फूठरापौ आपै ई प्रगट होय जावै। अैड़ा घणा रूपाळा प्रियतम नै निरखण रौ लोभ है पण ! खिण अेक पछै स्यात उणनै सोझी आ जावै– कुळ मरजाद

अर बडेरां सांम्ही अेकटक, खरी मीट दियां उण रूप–रूड़ा नै कियां देखै ? झीणै घूंघटै री ओट में ईज उणरै कानां रा गजमोती कांई इधका लागै जाणै 'महलां में दीपती दिवलै री जोत।' नायक री कमर में बंधी कटारी वीरोचित्त स्वभाव रौ प्रतीक है तौ नेवज (प्रसाद, भोग) सूं भरयोड़ी थाळी जैड़ी उणरी हथाळियां अस्त्र–सस्त्रां नै चलावण में उणरी खिमता दरसावै। इण छोटै'क गीत में नायक रै रूप अर गुणां री कैड़ी'क मरमपरसी अर सजीव अभिव्यक्ति होयी है। इणरी भासा सहज, सरल अर प्रसाद गुण वाळी है। सगळा सबद सहज ही समझण जोग है। इण लोकगीत में नायिका आपरै धणी वास्तै केई संबोधन सबदां नै काम लिया है ज्यूंकै 'नणदल बाई रा वीरा', 'सुगणी सासू रा जाया', 'कंवर बाई रा वीरा' इत्याद। राजस्थानी संस्कारां मुजब लुगाई आपरै धणी रौ नांव नीं लेवै अर दूजा संबोधनां सूं उणनै बुलावै। परिवार में आपसरी रा मीठा संबंधां नै ई अै संबोधन उजागर करै। 'सुगणी सासू रा जाया' सूं अरथ है कै आछा गुणां अर ऊजळा संस्कारां वाळी मां रै जैड़ौ उणरौ बेटौ ई गुणां रो गाडौ है, क्यूंकै 'रूंखां जैड़ा छोडा होवै।' सासू री बडाई सूं खुद रै धणी री बडाई करण में कित्ती वाक् चतुराई है। मूळ 'बधावौ' गीत इण भांत है–

बधावौ

माथै रौ दुमालौ कोई फूलां के रौ भारो जी,
नणदल बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।
कंवर बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।

कानां रा गजमोती, आडै घूंघट जोती जी,
सासू सुगणी रा जाया थांनै सुख री जी घड़ी।

आंखड़ल्यां रौ पाणी, कोई झीणी केसर छाणी जी,
कंवर बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।

नाकड़लै री डांडी कोई निकमी बैठ'र मांडीजी,
नणदल बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।

हाथां री हथेळी कोई नेवज री बड़ थाळी जी,
सासू सुगणी रा जाया थांनै सुख री जी घड़ी।

आंगणियै में ऊभा कोई सोळह सूरज ऊग्या जी,
नणदल बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।

सुख री घड़ी स्यूं गोरी रौ मन राजी जी,
कंवर बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।

⌘⌘

अबखां सबदां रा अरथ

दुमालौ=साफौ, पाघड़ी। सुगणी=गुणां वाळी। बीरा=भाई। ऊभा=खड़्या। नेवज=प्रसाद, भोग।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी बरसां लग कैड़ी भासा रैयी–
   (अ) डिंगळ भासा (ब) लोकभासा
   (स) पिंगळ भासा (द) गुजराती भासा
   ( )
2. लोकगीत उत्ता ईज जूना है, जित्तौ कै जूनौ है–
   (अ) महाकाव्य (ब) वेद
   (स) मिनख (द) राजस्थानी–काव्य
   ( )
3. लोकगीतां रौ मूळ सरूप मिळणौ घणौ दो'रौ है, क्यूंकै–
   (अ) अै लोक री रचना है अर बारै कोसां बोली बदळै
   (ब) गेयता आंरौ खास गुण होवण रै कारण
   (स) परंपराऊ होवण रै कारण
   (द) आं मांय सूं अेक ई नीं
   ( )
4. बाळपणै में खेल रै साथै गाईजण वाळौ गीत है–
   (अ) मेवाड़ रौ 'हरणी' गीत (ब) मारवाड़ रौ 'जल्लो' गीत
   (स) गोडवाड़ रौ 'चिरमी' गीत (द) मेवाड़ रौ 'झुरणी' गीत
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. लोकगीत री सबसूं मोटी विसेसता कांई है?
2. लोकगीत किणरै हियै रा उद्‌गार है?
3. ब्याव में गाईजण वाळा गीतां नै कांई कैवै?
4. गणगौर किण मास में आवै, लुगायां इण दिन कांई करै?
5. पंखेरूवां सूं संबंधित दो लोकगीतां रा नांव लिखौ।

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. लोकगीतां में कांई–कांई वरणन होयौ है?
2. हाळी–बाळदी अर कतारिया गीत क्यूं गावै?
3. लोकगीतां में कांई जोर है?
4. आखै जीवण री सरसता रा दरसण किण में होवै, उणरी अेक कड़ी कांई है?
5. मनोरंजनात्मक गीतां री ओळी में आवण वाळा चार गीतां रा नांव लिखौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. लोकगीतां में सांवठी संस्क्रति रा दरसण होवै। इण बात रौ खुलासौ करौ।
2. लोकगीत 'बधावा' रौ भाव आपरै सबदां में लिखौ।
3. नीचै दिरीजी ओळियां री परसंगाऊ व्याख्या करौ–

(अ) माथै रौ दुमालौ कोई फूलां के रौ भारो जी,
नणदल बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।

(ब) आंखड़ल्यां रौ पाणी, कोई झीणी केसर छाणी जी,
कंवर बाई रा ओ वीरा थांनै सुख री जी घड़ी।

(स) हाथां री हथेळी कोई नेवज री बड़ थाळी जी,
सासू सुगणी रा जाया थांनै सुख री जी घड़ी।

❑ परिशिष्ट

राजस्थानी साहित्य रौ इतियास : कूंकूं पगल्यां सूं आभै तांई

देस अर समाज री सांची साख भरै उठै रौ साहित्य। साहित्य समाज री आरसी होवै। समाज में घट्योड़ी सगळी घटनावां अर थितियां रौ वरणन साहित्य पेटै करीजै। किण बगत में प्रदेस री सामाजिक, राजनीतिक, आरथिक अर सांस्कृतिक दसावां कांई ही ? इणरौ खुलासौ करै उठै रौ साहित्य। आ बात ई चावी कै जिणरौ साहित्य सांवठौ अर सिमरथ होवै, वौ देस–समाज ई सिमरथ होवै।

राजस्थानी पद्य–साहित्य री विसय–वस्तु, प्रवृत्तियां, भासा अर सैली री ओळखाण खातर साहित्य रा इतिहास री कूंत करणी घणी जरूरी है, क्यूंकै हर अेक जुग री आपरी न्यारी सामाजिक, सांस्कृतिक अर साहित्यिक थितियां होवै। समाज रा ढब अर ढाळा रै मुजब साहित्यकार रचना करै। राजस्थानी साहित्य रै इतिहास रौ बगत न्यारा–न्यारा विद्वानां–– डॉ. मोतीलाल मेनारिया, डॉ. अेल. पी. टैस्सीटोरी, डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, डॉ. पुरुषोत्तम लाल मेनारिया अर पद्मश्री डॉ. सीताराम लाळस आद आप–आपरी दीठ सूं इणनै काळ–खंडां में बांट्यौ है। आं में पद्मश्री डॉ. सीताराम लाळस रै राजस्थानी सबदकोस रै पैलै भाग री भूमिका में राजस्थानी साहित्य रै इतिहास रौ काळ इण भांत दिरीज्यो है–

आदि–काळ – 800 सूं 1460 वि. सं.।
मध्य–काळ – 1460 सूं 1900 वि. सं.।
आधुनिक–काळ – 1900 सूं लगोतार।

आदि–काळ

राजस्थानी भासा रा विद्वानां अर पाठकां सूं आ बात छानी कोनी कै वि. सं. 835 में जाळौर रा जैन यति उद्योतनसूरि री रचना 'कुवलयमाळा' में 18 भासावां साथै मरुभासा रै रूप में राजस्थानी रौ उल्लेख होयौ है। इणसूं सुभट लखावै कै नौवीं सदी में राजस्थानी रौ भासागत सरूप अर दरजौ हौ; पण दसवीं सदी रै छेहलै दसक तांई इणरौ लिखित साहित्य निंगै नीं आवै। अैड़ौ मानण में आवै कै राजस्थानी रौ जूनौ अर सरूपांत रौ सगळौ साहित्य मौखिक रूप में चावौ हौ। इणनै श्रुतिनिष्ठ साहित्य री संज्ञा दिरीजै। इण भांत रै साहित्य री मौखिक रचना अेक–दूजा रै मूंडै सुण'र किणी तीजा रै कंठां ढळ जांवती अर पछै वा रचना कीं चावी अर ता पछै लोकचावी होय जावती।

जद मरुप्रदेस में चारण जाति रौ अस्तित्व ई कोनीं हौ, उण बगत फकत नायक अेक अैड़ी जाति ही जिकी आपरा बडेरां सूं सुण्योड़ा गीत अर पवाड़्यां नै कंठां राखती। गांव–गांव जाय इण जाति रा लोग लोकवाद्यां रै साथै राग–रागनियां में आं पवाड़्यां अर गीतां नै सुणावता अर अरथावता। इणीज बगत में जोगी अर नाथ ई इण मौखिक साहित्य नै जीवतौ राखण में मदत करी। मौखिक सरूप रै कारण इण बगत रा साहित्य नै उणरा असल रूप में राखणौ घणौ दो'रौ काम हौ। उण मांय कीं बातां तौ मिट–मिटायगी अर कीं नूंवी बातां जुड़गी, अबै उण रचना रा मूळ सरूप नै कोई कियां जाण सकै? जूना साहित्य री थाती नै मिटतां देख उणनै उदाहरण खातर चित्रलिपि री सरुआत होयी। चरित्र नायकां रौ पूरौ जीवण चित्रां में उजागर होवण लागौ। सगळी घटनावां रौ चित्रां सूं

पूरौ मेळ होवतौ। चित्रां रै आधार माथै गाईजण वाळा गीतां नै 'फड़' बांचणौ कैवै। राजस्थान रा गांवां में पवाड़्चां अर फड़ नै बांचण रौ काम खास तरै री जातियां रौ होवै। चित्रपटां सूं कथा में थिरता तौ आई, पण मौखिक होवण रै कारण भासा अर वरणन बदळता रैया।

दसवीं सदी री सरूआत में सिंध सूं चारणां रै इण मरुप्रदेस में आवण सूं राजस्थानी साहित्य रै इतिहास रौ औ जुग कीं पसवाड़ौ फेरै। इण बगत कविता नै अेक गति (प्रवाह) मिली। प्रदेस री राजनीतिक थिति ऊकचूक ही, राजावां री आपसी लड़ाई अर झगड़ा, खार–ईसकै में साहित्य–सिरजण अर उणनै रुखाळण री बात कुण सोचै? चारण कवि आपरा आश्रयदातावां री विरुदावली में काव्य रचता। इण काळ रा ग्रंथां में घणकरौ जैन साहित्य सांम्ही आवै, जिकौ आपरा धरम सूं जुड़्चोड़ौ है। लिखित अर प्रामाणिक साहित्य रै रूप में मिळण वाळा आं ग्रंथां री अंवेर जिनालय, जैन भंडार अर उपासरां में करीजै। जैन–साहित्य री रचना तौ संस्कृत–काळ सूं होवती आई है। प्राकृत अर अपभ्रंस सूं आ रीत राजस्थानी में आई। सरू सूं ई जैन रचनाकार आपरा साहित्य री अंवेर अर रुखाळी वास्तै सावचेत रैया। औ ईज कारण कै प्राचीन राजस्थानी साहित्य रै रूप में अठै रा जैन ग्रंथ ई पुख्ता प्रमाण है।

राजस्थानी रौ आदिकालीन साहित्य मौखिक परंपरा में ई रैयौ, लिखित सरूप घणौ थोड़ौ लाधै। सरूआती काळ री केई महताऊ रचनावां मिलै, पण वांरा रचनाकार कुण है, आ बात पुख्ता नीं होवै तौ कठैई रचनाकाळ में अबखाई आवै कै 'अमुक' रचना किण बरस में लिखीजी? आं रचनावां में आयोड़ा चरित नायकां सूं कीं पड़ताळ करी जाय सकै, पण अेक बगत में अेक नांव रा केई सासक अर मिनख होया, इण कारण आं रचनावां री प्रामाणिकता वास्तै घणै सोध री दरकार है। इण काळ री कीं खास रचनावां में 'खुम्माण रासौ' (चित्तौड़ रै महाराणावां रौ वर्णन है), बीसलदेव रासौ (अजमेर रा राजा बीसलदेव रो वरणन है) प्रमुख है। बीसलदेव रासौ जूनी राजस्थानी रो सबसूं प्रामाणिक ग्रंथ है। प्रेम–काव्य अर संदेस–काव्य रै रूप में लौकिक–शैली री रचना है। 'ढोला–मारू रा दूहा', 'जेठवै रा सोरठा' अर 'आभल–खींवजी रा दूहा' प्रेम–काव्य रै रूप में घणी चावी रचनावां रैयी है कवि असाइत री 'हंसाउली' रचना ई प्रेम–काव्य है जकौ चार खंडां में 440 कड़ियां में लिख्योड़ौ मिळै।

श्रीधर व्यास कृत 'रणमल्ल छंद' राजस्थानी री जूनी अर वीर रस री रचना है। 13वीं सदी तांई कीं जैनेतर कवियां री फुटकर रचनावां सांम्ही आवै जिकी भासा अर सैली री दीठ सूं महताऊ है। आं में बारूजी सोदा, ढूमण चारण, रामचंद्र चारण, बागण कवि इत्याद खास है।

11वीं सदी सूं 15वीं सदी रा पैलड़ा पांच दसकां तांई जैन कवियां रा प्रामाणिक ग्रंथ राजस्थानी साहित्य में बधेपौ करता दीखै। आं में– जिनवल्लभ सूरि री रचना 'व्रद्ध नवकार', वज्रसेन सूरि री 'भरतेस्वर बाहुबलि घोर', सालिभद्र सूरि रचित 'भरतेस्वर बाहुबलि रास', 'बुद्धि रास', कवि आसिगु रचित 'जीवदया रास', 'चंदन बाला रास', धम्म मुनि रचित 'जंबू स्वामी', विजयसेन सूरि रचित 'रेंवतगिरि रास', पल्हण कवि कृत 'आबू रास', 'नेमिनाथ बारामासा', जिनभद्र सूरि रचित 'वस्तुपाल तेजपाल प्रबंधावळी', अभयदेव सूरि रचित 'जयंत विजय', मुनि राजतिलक रचित 'सालिभद्र रास', राजेस्वर सूरि रचित 'प्रबंध कोस', 'नेमिनाथ फागु' अर हलराज कवि कृत 'स्थूलिभद्र फागु' इत्याद अलेखूं रचनावां अर जैन कवियां रा नांव गिणाया जाय सकै। आं जैन रचनावां री

आपरी निकेवळी विसेसतावां रैयी। आं रचनावां में संबंधित (रचना सूं) पूरौ प्रामाणिक विवरण, भासा री पुष्टता (गरबीली अर गुमेज जोग भासा), विविध काव्य रूप परंपरा जिणमें 117 काव्य रूपां री ओळखाण अबार तांई मिळै। जूना गद्य री बोहळायत, अैतिहासिक रचनावां री मोकळायत, नैतिकता माथै बल अर रचनावां नै लोकभासा में लिखणौ। लोक—साहित्य री अंवेर, हजारूं लोकगीतां अर कथावां नै आपरै लिखित साहित्य में अपणाय'र उणनै अखी राख्यौ।

इण भांत आदिकाळ में जैन साहित्य अर जैनेतर साहित्य रै रूप में राजस्थानी साहित्य रा दोय रूप मिळै, जिणांरी खास प्रवृत्तियां— प्रेम—काव्य या सिणगार—काव्य, नीति अर उपदेशात्मक—काव्य, वस्तु—वरणन प्रधान काव्य री रैयी। कीं वीर रसात्मक काव्य रौ सिरजण ई इण काळ में होयौ।

मध्य—काळ (1460 सूं 1900 तांई)

मध्य—काळ राजस्थानी भासा अर साहित्य री दीठ सूं घणौ महताऊ काळ मानीजै। औ राजस्थानी रौ सुवरण—काळ ई कैवीजै। इण काळ में राजस्थानी भासा रौ व्याकरणगत, सैलीगत, विधावांगत जित्तौ विगसाव होयौ, साहित्य री दोनूं विधावां (गद्य अर पद्य) में सिरजण ई उत्तौ ईज होयौ।

राजपूत रियासतां री आपसी फूट, खानवा रा जुद्ध में महाराणा सांगा री हार अर कीं दिनां पछै वांरी मौत सूं दुखी, नाउम्मीद अर निरास मानखौ, मुगलां रै पछै ई मराठां सूं भारत रा वीरां नै हरमेस संघर्ष करणौ पड़्यौ। औ बगत जुद्धां अर संघर्षां रौ काळ हौ। इण जुग में वीरां आपरै वीरत्व री ओळखाण कराई। हसतां—हसतां प्राणां नै मातृभूमि माथै निछावर करण री अठै अनूठी री रैयी है। वीरां री वीरता, साहस, त्याग अर बळिदान री जस गाथावां सूं औ साहित्य सरोवर छल्योड़ौ लाधै। साहित्य नै अखी राखण वाळा कवि किणी—न—किणी राजा रा आसरा में रैवता। आपरा आश्रयदाता री कीरति रै साथै जठै कठैई मिनखीचारौ अर वीरता रा गुण देखता, वै झट उणनै आपरै साहित्य—सिरजण रौ आधार बणाय लेवता अर काव्य रै मिस मानखै तांई वां भावां नै पुगावण रा जतन करता।

देसभक्तां, स्वामीभक्तां, दानवीरां, क्षमावीरां रा त्याग अर जस नै लेय'र अठै रा कवियां जिकौ साहित्य सिरजण कर्‌यौ वै राजस्थानी साहित्य सागर रा अमोलक (घण मूंघा) रतन है। अै कवि कलम अर तलवार रा धणी हा। काम पड़ियां रण में रीठ बजावता, अन्न रौ अैसाण उतार देवता, जुद्धभूमि में ऊभा आपरै ओजस्वी बोलां सूं वीरां री हूंस बधावता। राजस्थान में कोई अैड़ी ठौड़ कोनीं जठै आन—बान अर धरम—मरजाद खातर जुद्ध नीं लड़ीज्या होवै। औ ईज कारण कै अठै गांव अर झूंझारां रा थान थरपीज्योड़ा लाधै। आं सगळां री ऊजळी कीरत रा बखाण करण वाळा कवियां सूं ई आ धरती रीती कोनी रैयी। जठै रा वीर जोधार तो खांगण में लड़तां—लड़तां मरणै रौ मौकौ नीं चूकता, लुगायां अर टाबर आपरी आबरू बचावण वास्तै अगन देवता नै समरपित होय जावता। उठैई इण प्रदेस रा कवि हर अेक दरसाव नै निजरां देखता अर आखरां ढाळता। आपरा काव्य सूं त्याग—समरपण वाळी उण घड़ी—पुळ नै बांध देंवता। जिणां री वीरता नै बैरी ई सरायां बिनां नीं रैया, अैड़ा वीरां रौ जस राजस्थानी कवियां भर—भर मूंडा बखाणियां बिनां नीं रैया। 'राजा करण री बेळा' में याद करणजोगा वां वीरां री भावनावां रौ कविसरां री भावनावां साथै जुड़णौ मात्र हौ, कोई अतिशयोक्ति वरणन कोनीं हौ।

चित्तौड़ रा गढ में अकबर री फौज रै विरोध में घणी वीरता सूं लड़ण वाळा जयमल

मेड़तिया अर पत्ता सिसोदिया री वीरता, देसभक्ति, त्याग अर साचा साम धरम नै देख अकबर ई बड़ाई कस्यां बिनां नीं रैयौ। इत्तौ ई नीं, बादशाह वां वीरां नै अमर करण वास्तै हाथी रै होदै चढ्योड़ा जयमल–पत्ता, दोनूं री मूर्तियां बणाई अर आगरा रै किलै री सिरै पोळ माथै वां पाखाण मूर्तियां नै थिरपत कराई। बैरी ई जाणग्यौ कै गढ रा रुखाळा अर साम धरमी होवै तौ जयमल–पत्ता जैड़ा। उठै प्रमाण सारू औ दूहो ई खुदवायो––

जयमल बड़तां जीमणै, पत्तो डावै पास।
हिंदू चढिया हाथियां, अड़ियौ जस आकास।।

अैड़ा वीरां वास्तै राजस्थानी कवि री लेखनी लिखती नीं थाकी तौ अपजोगती बात कांई? जद कदैई हिंदू राजा निरास होया, कायरता लाया, बैस्यां सूं डर'र पग पाछा मेल्या, आपरा कर्तव्यां नै भूलण लागा तौ अठै रा कवियां ई वां में हूंस भरी, कायरां–उर सालण वाळी वाणी सूं जोस जगायौ, कर्तव्य–विमुखां नै सूंवै मारग चालण री सीख दी। राजा जठै कठैई झूठौ गरब कस्यौ तौ आपरा सूळ जैड़ा बोलां सूं वांरौ हियौ बींधतां कवि खरा बोल कैवण में अर वांरी भूंड करण में पाछ नीं राखी। कीं दाखला देय'र आं बातां नै पुख्ता करणी चावूं–

खानवा रा जुद्ध में हारयोड़ा राणा सांगा में 'आतम–बळ' वापस्यौ उण बगत रा कवि 'जमणाजी' रा गीत सूं। जिणरा नांव सूं अकबर सूतौ ओझकतौ अर जिणरी वीरता नै रंग देवतौ, उण महाराणा प्रताप री वीरता, देसभक्ति, त्याग अर बलिदान किणसूं अछानौ है। दुरसा आढा अर सूरायच टापरिया रा काव्य में प्रताप री वीरता रा जिका बखाण होया है उणसूं कायरां में ई वीरत्व पांगर जावै। जयपुर रा राजा मानसिंघजी जोधपुर (मंडोवर) रा राव जोधा सूं खुद री बरोबरी करतां उदयपुर में पिछोलै घोड़ा पावतां कूड़ौ गरब कस्यौ तौ वांरा आश्रित कवि सूं रहीज्यौ कोनीं अर मानसिंघ रौ गरब गाळतां औ दूहौ कैयौ–

मांना मन अंजसौ मती, अकबर बळ आयांह।
जोधै' जंगम आपणा, पांणां बळ पायांह।।

इणी'ज भांत नरहरदास बारठ मारवाड़ रा महाराजा जसवंतसिंघजी (पैला) री कायरता देख'र घणी मै'णी दी। कम्माजी चारणवास मेवाड़ महाराणा राजसिंघ नै चेताया अर हिंदुवांण री रीत राखण री सीख दी।

राजस्थानी साहित्य में अैड़ा हजारूं उदाहरण मिळै, जिणमें कवियां आपरा आश्रयदातावां रौ लिहाज नीं राखतां खारी अर खरी–खोटी पण साची बात कैय'र वांरौ मारग–दरसण कस्यौ।

'जस जीवण अर अपजस मरण' वाळी सीख नै मानती अठै री वीरांगनावां ई वीरां सूं अेक पांवडौ ई लारै नीं रैयी। वै किणी कायर, कपूत री मा, बैन, बेटी कै जोड़ायत बणणौ कदैई नीं अंगेजियौ। कायर धणी री लुगाई खुद नै विधवा अर कायर–कपूत री मा खुद नै निपूति कै पछै बांझड़ी मानती। इणी'ज भावना रै कारण 'दूध लजाणौ पूत सम, वलय लजाणौ नाह', हियौ दझावण वाळी अै दोय बातां वीर क्षत्राणी नै कदैई दाय नीं आई। राजस्थानी कवियां घणै अंजस रै साथै वीरांगनावां रा बखांण आपरै काव्य में कस्या– जद जयसिंघ कछवाहा री बेटी किसनावती आपरा बेटां री रिछ्या सारू जुद्ध कर्‌यो तो 'गोरधन बोगसा' रै काव्य में देवता ई उण वीरांगना माथै निछावर होयग्या। ईसरदास बारठ 'हालां–झालां रा कुंडळियां' में जसाजी री जोड़ायत रै मूंडै उण वीर री वीरता बखाणी है। जोधपुर महाराजा मालदेवजी री राणी उमादे भटियाणी 'रूठी राणी' बण'र रैयी, महलां रौ सुख नीं देख्यौ; पण मालदेवजी साथै सती होय'र पतिव्रत धरम नै निभायौ जिणरौ जस वरणन 'आसा बारठ' रा सबदां में– 'लछण महा लच्छिमी, जिसी गंगा पारबती' रूप में होयौ।

सत–पत, धीज अर पतीज सूं दोनूं कुळां में ऊजळी कीरत री रीत राखण वाळी वीरांगनावां रै जस री अखूट परंपरा अठै बणगी। आधुनिक काळ रा कवि सूरजमल मीसण तौ आपरी रचना 'वीर सतसई' में वीर नारी रा सगळा रूप दरसाया है अर सिंघ सरूप वीरां नै जणण वाळी उण मातृशक्ति माथै कवि सौ–सौ बार निछावर होवणी चावै।

राजस्थानी साहित्य रा मध्य–काळ में श्रुतिनिष्ठ साहित्य आपरी चाल चालतौ रैयौ, मौखिक साहित्य रा रूप में– पवाड़्या, फड़ां, बातां, लोकगीत, चिरजावां, भजन, हरजस ई इण जुग में आपरी ठौड़ बणावता रैया। लिखित साहित्य रा रूप में– अैतिहासिक काव्य जिकौ चरित नायकां रै नांव साथै रासौ, रूपक, प्रकास, विलास, वचनिका, वेल, वेलि इत्याद लगाय'र लिखीजता। रायमल रासौ, रतन रासौ, सूरजप्रकास, भीमप्रकास, राजविलास, राजरूपक, अनोपसिंघजी री वेल, अचलदास खीची री वचनिका आद आं काव्य–रूपां रा उदाहरण है। केई रचनावां डिंगळ छंदां नै आधार बणाय'र वांरै नांव सूं लिखीजी। जथा– गोगैजी चौहाण री निसांणी, सोढां रा गुण झूलणा, बीदावत करमसेण हिमतसिंघोत री झमाल, हालां–झालां रा कुंडळिया, अभैसिंघजी रा कवित्त, पाबूजी रा दूहा, प्रकीर्णक काव्य, अनुवाद अर अनेक शास्त्रीय साहित्य रै साथै गद्य रूपां में वात, ख्यात, विगत, वंशावली, पीढी इत्याद री इण जुग में बोहळायत रैयी। डिंगळ–गीत, फुटकर रचनावां साथै घणकरौ डिंगळ–काव्य इण जुग री देन है। डिंगळ–काव्य सैली रा रचनाकारां में चारण जाति रौ नांव सिरै मानीजै। आ बात कोनीं कै चारणेतर कवियां री डिंगळ–सैली में कठैई खामी रैयी होवै; पण चारणां री बोहळायत सूं ई ना नीं करीजै। डिंगळ–गीतां रै रूप में चारण–सैली री मौखिक परंपरा ई रैयी। होळै–होळै अै गीत लिखित सरूप लेवण लाग्या। ध्वन्यात्मक सबदां– ट, ठ, ड, ढ ण जैड़ा कठोर करकस सबदां नै चारण–काव्य में परोटण री आपरी न्यारी कला है। इण काव्य में सगळा सबदालंकारां अर अरथालंकारां रै साथै राजस्थानी रौ आपरौ वैणसगाई अलंकार, जिणरौ काव्य री ओळी– ओळी में भरपूर प्रयोग कर काव्य कुसळता री ओळखाण कराईजी है। छंदां री विविधता अर रसत्रिवेणी रा दरसण ई इण चारण–सैली री आपरी इधकी विसेसता रैयी है।

सिवदास गाडण विरचित 'अचलदास खीची री वचनिका', बादर ढाढी री 'वीरमायण', चानण खिड़िया रा गीत, पसाइत री रचना 'राव रिड़मल रो रूपक', 'गुण जोधायण', पद्मनाभ कृत कान्हड़दे प्रबंध, कवि दामो कृत 'लखमसेन पदमावती चौपई' कवि भाडउ व्यास री 'हमीरायण' अर बीठू सूजो कृत 'राव जैतसी रौ छंद' इण काळ री प्रमुख रचनावां ही।

मध्य–काळ में मिटता हिंदू धरम अर समाज में पग जमावता मुस्लिम धरम, धरम रै नांव माथै होवता अत्याचार, जनता में पसर्‌या अविस्वास मांय हिंदू धरम अर संस्कृति नै उबारण रौ काम कर्‌यौ अठै रा भक्तकवि अर संत संप्रदाय। भक्ति री सगुण अर निरगुण धारा मध्यकाळ में बैवती रैयी। आं भगत–कवियां में भक्त–शिरोमणि मीरांबाई (मीरां पदावली), ईसरदास बारठ (हरिरस अर देवियांण), महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ (क्रिसन रुकमणी री वेलि) रस–त्रिवेणी रै साथै केई भक्ति रचनावां लिखी। सांयाजी झूला कृत 'नागदमण', माधोदास दधवाड़िया कृत 'रांमरासौ', नरहरिदास कृत 'अवतार चरित्र' जैड़ा अलेखूं कवि होया। लौकिक सैली में, लोकभासा अर लौकिक वरणन विसयां री समन्वयवादी दीठ, जनकल्याण, लोकचेतना री भावना सूं

लोकविश्वास नै जगावण सारू अठै रा संतां, संत सम्प्रदायां री घणी महताऊ भूमिका रैयी। संत जांभोजी, सिद्ध जसनाथजी, रज्जबजी, संत दादूदयाल जी, हरिरामदास जी, दयालदास जी इत्याद अनेक संतां आपरी सबद, साखियां, वाणियां रै रूप में धरम, करम, नीति अर उपदेस री बातां समाज लग पुगावण रौ सरावण जोग काम कर्‌यौ। राजस्थानी साहित्य हरमेस आं संत कवियां अर समाज–सुधारकां रौ ऋणी रैवैला।

इण भांत मध्य–काळ में सूरां, सापुरुषां अर सतियां री इण वीर–वसुंधरा वास्तै अलेखूं कवियां आपरी लेखनी रै बळ वीर, सिणगार, नीति अर भक्ति रौ साहित्य रच्यौ तौ संत संप्रदाय धरम री जड़ हरी करी। इणरै साथै ई लोक–साहित्य आपरी सगळी विधावां साथै पांगर्‌यौ अर हरियल रूंख ज्यूं फळ्यौ–फूल्यौ। भासाई दीठ सूं राजस्थानी भासा ई आपरै बाळपणै रै संगी–साथियां नै छिटकाय जोबन मतवाळी, राती–माती निजर आवण लागी।

आधुनिक–काळ (1900 सूं आज तांई)

इण काळ में दोय न्यारी थितियां में न्यारी काव्य–धारावां अर न्यारा विचारां नै बळ मिळ्यौ। आजादी सूं पैली रौ काळ अर आजादी रै पछै रौ काळ। दोनूं बगत चेतना जगावण वाळा हा; पण विसय न्यारा हा। मोटै रूप सूं औ काव्य–चेतना रौ जुग हौ। इण काळ में देस माथै अंग्रेजी हकुमत, उणरा अत्याचारां अर अन्यावां सूं मांनखौ दुखी हौ। 'फूट घालौ अर राज करौ' वाळी दोगली नीत नै अपणाय'र गोरां केई रियासतां माथै हक जमाय लियौ। केई राजा तौ अंग्रेजां रै हाथ रा रमतिया हा। केई राजा, सामंत, अंग्रेजां साथै राजीपा रौ सौदौ कर बैठा हा। इण जुग में ई देसप्रेमियां अर स्वाधीनता नै पूजण वाळां रौ घाटौ कोनीं हौ। राजस्थानी कवि आथूणी हवा साथै उठता काळा धूंवां सूं अणजाण कोनीं हा; गोरी सरकार रै काळा मन नै वै चोखी तरियां जाणता हा। अबै राजावां नै विरुदावण री दरकार कोनीं ही। कवियां परंपरागत काव्य री लीक छोड'र अंग्रेजी सत्ता रै विरोध में काव्य करण लागा। अंग्रेजां री खोटी नीतियां अर वांरा कानून आगै तळ–तळीजतै मानखै नै न्याव दिरावण वास्तै आं कवियां री कलम चाली। देस में जनजागरण, देसप्रेम, वीरता अर स्वतंत्रता रौ पाठ पढावण वाळा इण जुग रा पैला कवि सूरजमल मीसण होया। वीर रसावतार रै रूप में चावा इण कवि री 'वीर सतसई' रो अेक–अेक दूहौ देसभक्ति अर स्वतंत्रता री सीख देवै, तौ कायरां–उर छैलका करै जैड़ा। रामनाथ कविया 'द्रोपदी–विनय' रै मिस नारी रै विद्रोही रूप नै दरसायो। शंकरदान सामौर रा गोळी हंदा गीतां में अंग्रेजां नै झूंपड़ियां रा धाड़ायती बताईज्या तो केसरीसिंघ बारठ, हींगळाज दान कविया, माणिक्यलाल वर्मा, विजयसिंघ पथिक जैड़ा कवियां अंग्रेजी सत्ता रौ खुलासौ करतां जनचेतना जगाई अर जनता में आजादी रौ सुर भर्‌यौ।

जनकवि ऊमरदान लाळस प्रगतिशील काव्य–धारा री सरूआत करी। समाज नै सांस्कृतिक अर सामाजिक उत्थान सारू चेतायौ। धरम रै नांव माथै होवण वाळा पाखंडां रौ खुलासौ करतां समाज–सुधारक अर जनकवि रौ काम सार्‌यौ।

राजस्थान रा कवि हरमेस थाकल मिनखां रौ साथ दियौ, रियासतां रा सामंतां, जागीरदारां, ठाकरां रा हेठवाळिया करसां अर मजदूरां रौ साथ देवता समाज रा आं ठेकैदारां नै आडै हाथां लिया। जोसीला सबदां में वांनै फटकारण रौ काम गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' जैड़ा जनकवि ई कर सकै। समाज रा हेठला तबका रौ साथ देवणिया कवियां में रेंवतदान चारण, उदयराज उज्ज्वळ, हीरालाल शास्त्री अर जयनारायण व्यास जैड़ा कवि आगै आया।

देसप्रेम, अेकता, अधिकारां वास्तै सावचेत करणौ, अशिक्षा नै मेटणी, काम–धंधा अर मैनत री जै बोलावतां वरगभेद अर नारी जागरण री बात आंरी रचनावां में करीजी।

गांधीजी री अगवाई में देस री आजादी खातर जिकी लड़ाई छिड़ी, अठै रौ साहित्यकार ई उणसूं अळगौ अर अछूतौ नीं रैयौ। गांधीजी रै सत्य, अहिंसा, न्याय अर वांरा आदर्शां नै लेय'र साहित्यकारां बोहळौ काव्य लिख्यौ। साथै ई राजनीतिक आंदोलन, समाज–सुधार, अछूतोद्धार, सामाजिक अेकता, कुटीर उ़द्योगां रै साथै गांधीवादी विचारां सूं ओतप्रोत कवियां अठै रामराज्य री कल्पना ई करी। आं सगळां विसयां नै लेय'र राजस्थानी में सैकडूं रचनावां लिखीजी।

साहित्यिक दीठ सूं आधुनिक जुग में केई नूंवी चिंतन धारावां रौ जलम होयौ। देस री आजादी पछै नूंवी काव्य चेतना री सरूआत होयी। प्रकृति संचेतना परक काव्य में प्रकृति रौ मानवीकरण करीज्यौ है। प्रकृति साथै मिनख रौ आद–जुगाद संबंध रैयौ है। मानखै रै हिरदै में लुक्योड़ी भावनावां नै प्रकृति रा कोमल–कठोर, अर रूप–विडरूप रै मिस प्रगट करीजी है। प्रकृति–काव्य कै छायावादी–काव्य री अठै लूंठी परंपरा रैयी। इण काळ रा कवियां में– चंद्रसिंह बिरकाळी (बादळी, लू), नारायणसिंह भाटी (सांझ), नानूराम संस्कर्ता (कळायण, दसदेव), गजानन वर्मा (सोनो निपजै रेत में), कन्हैयालाल सेठिया (मींझर), कल्याणसिंह राजावत (परभाती), रेंवतदान चारण (बिरखा– बीनणी), सुमेरसिंह शेखावत अर डॉ. मनोहर शर्मा आद रा नांव गिणाया जाय सकै।

प्रबंध–काव्यां रै साथै मुक्तक कविता रौ भी जोर रैयौ। प्रबंध–काव्य में रामायण, महाभारत, उपनिषद् अर पौराणिक विसयां नै आधार बणाय'र धारमिक प्रबंध–काव्य लिखीज्या, तौ अैतिहासिक, अर्द्धअैतिहासिक, लोक–काव्य अर काल्पनिक प्रबंध–काव्यां रौ सिरजण ई अठै होयौ। अमृतलाल माथुर री 'गीत रामायण', मेघराज मुकुल री 'सैनाणी', डॉ. मनोहर शर्मा री 'कुंजा', 'अमरफळ', 'पंछी', 'मरवण', महावीर प्रसाद जोशी री 'बिंदराबन', 'द्वारका', 'मथरा', 'अंतरधान', श्रीमंत कुमार व्यास री 'रामदूत', सत्यप्रकाश जोशी री 'राधा', सत्यनारायण 'अमन' प्रभाकर री 'सीसदान', गिरधारीसिंह पड़िहार कृत 'मानखो', करणीदान बारठ री 'शकुंतला' इत्याद प्रबंध–काव्यां रै रूप में मोटी अर लांबी काव्य–रचनावां लिखण री अठै लूंठी परंपरा रैयी है।

आधुनिक–जुग रा कवियां में कन्हैयालाल सेठिया री कविता में नूंवा बिंब–विधान साथै जीवण–दरसण रा भाव है। देस अर समाज रा बदळता रंग–रूप, ढब, जीवणगत, मानवी भावनावां रा सैंस रूप परगट करण में आधुनिक कवियां री लांबी पांत है जिणमें– तेजसिंह जोधा, मणि मधुकर, ओंकारश्री, पारस अरोड़ा, गोरधनसिंह शेखावत, भगवतीलाल व्यास, मोहम्मद सदीक, गजानन वर्मा, बुद्धिप्रकाश पारीक, गणपतिचंद्र भंडारी, किशोर कल्पनाकांत, कल्याण सिंह राजावत, सुमनेस जोशी, सत्यप्रकाश जोशी, रघुराजसिंह हाडा, प्रेमजी प्रेम, सीताराम महर्षि, कानदान कल्पित जैड़ा अलेखूं कवियां आधुनिक कविता में नूंवा भाव–बोध, बिंब–विधान, प्रतीकां नै लेय'र राजस्थानी कविता में नूंवा प्रयोग कर्‌या। धोरां वाळा देस नै जगावण वास्तै कदैई मनुज देपावत नै आगै आवणौ पड़्यौ तौ कदैई 'मानखै' री ऊंडी नींव राखण नै गिरधारी सिंह पड़िहार जैड़ा सादगी वाळा कवि नै मुखरित होवणौ पड़्यौ। श्रीमंत कुमार व्यास नै आपरी बात द्रोपदी, मीरां, मांडवी अर कैकयी रै ओळावै कैवणी पड़ी।

आधुनिक राजस्थानी कविता नै दूजी

भासा री कवितावां रै सैंजोड़ लावण नै, उणरी कूंत करण वास्तै कविता में नूंवा–नूंवा रूप उकेरीजता रैया। बगत रै परवाण कवियां समाज री विडरूपता माथै रोस करता भांत–भांत सूं भावां री अभिव्यक्ति दी है। आं कवियां में– मोहन आलोक, चंद्रप्रकाश देवल, सत्येन जोशी, हरमन चौहान, अस्तअलीखां मलकांण, पुरुषोत्तम छंगाणी, वीरेन्द्र लखावत, सत्यदेव संवितेन्द्र, श्याम महर्षि, सांवर दइया, नंद भारद्वाज, मीठेस निरमोही, आईदानसिंह भाटी, चैनसिंह परिहार, जुगल परिहार, ज्योतिपुंज, कुंदन माली, अर्जुनदेव चारण, शिवराज छंगाणी, रामेश्वरदयाल श्रीमाली, चेतन स्वामी, बद्रीदान गाडण, हरीश भादाणी बी. अेल. माली 'अशांत', मालचंद तिवाड़ी, लक्ष्मणदान कविया, रामस्वरूप किसान, मुकुट मणिराज, दलपत परिहार, वासु आचार्य, ओम पुरोहित 'कागद', नीरज दइया, अशोक जोशी 'क्रांत', शंकरसिंह राजपुरोहित, गिरधरदान रतनू दासोड़ी इत्याद आज तांई रा राजस्थानी कवि इण आधुनिक जुग में आवै।

आधुनिक कविता में प्रकृति संचेतनापरक काव्य, प्रगतिशील काव्य, छायावादी काव्य, प्रतीकात्मक सैली रौ काव्य, नुंवै भावबोध अर जुगबोध रौ काव्य लिखीज्यौ। पारम्परिक काव्य रै साथै नूंवी कविता रौ बानौ पैराय कवियां जीवण रा सगळा प्रसंगां सूं जुड़्योड़ी रचनावां लिखी; आथूणै साहित्य में होवण वाळा नूंवा प्रयोगां रौ असर मायड़ भासा माथै ई पड़ियौ; दूजी भासावां रै देखा–देखी उणां सूं सीख लेय'र राजस्थानी कवियां ई नूंवा–नूंवा काव्य रूपां नै परोटण रा जतन कस्या; आपरी बात नै कैवण री न्यारी आंट राखणिया कवियां में नारायणसिंह भाटी, तेजसिंह जोधा, पारस अरोड़ा, चन्द्रप्रकास देवल, मालचन्द तिवाड़ी, अर्जुनदेव चारण रा नांव गिणाया जाय सकै, जिणां री कवितावां में चिंतन री नूंवी रीत निजर आवै।

नूंवी कविता, मिनी कविता रै साथै **गद्यगीत** ई राजस्थानी में लिखीज्या। बारलौ सरूप तौ जिणरौ गद्य रौ पण भावां में काव्य रौ रस आवै। इणमें आलंकारिक, चमत्कारी भासा रौ प्रयोग करीजै वौ गद्यगीत कहीजै। जूना कलात्मक गद्य री ओळ रा गद्य–गीत, जिणां में भावां री सबळता, संगीत री लय वक्रोक्ति अर ध्वनि–संकेत (ध्वन्यात्मकता) जैड़ी विसेसतावां इणां में होवै। रामसिंघ तंवर, विद्याधर सास्त्री, मुरलीधर व्यास, कन्हैयालाल सेठिया अर कु. चन्द्रसिंह रा नांव गिणावण जोग है, जिकै गद्य–गीतां री रचना करी। राजस्थानी **गजल** प्रीत री कुळण, मैफिलां री गायकी नै छोड'र आम आदमी रै जीवण री गजल बणगी। आज री व्यवस्था रै खिलाफ बगावत रा तीखा तेवर रौ अंदाज अर व्यंग्य रौ रौ मारक सुर आं गजलां में जबरौ दीखै। गजलकारां में सत्येन जोशी, नवल जोशी, रामेश्वरदयाल श्रीमाळी, श्यामसुंदर भारती, भागीरथ सिंह भाग्य, जुगल परिहार, राजेन्द्र स्वर्णकार, सत्यदेव 'संवितेन्द्र' आद आवै। **डांखळा** पांच ओळी वाळौ वरणिक छंद है। अंग्रेजी रै लिमरिक छंद री बुणगट नै अपणाय'र राजस्थानी कवियां इणमें रचना रची। आपरी भासा नै सिरमथ बणावण खातर दूजी भासावां रा छंदां नै अपणाय आज रा कवियां भांत–भांतीला मनोरंजक विसयां माथै 'डांखळा' लिखिया। राजस्थानी में हास्य–व्यंग्य आंरौ खास विसय रैयौ है। मोहन आलोक, विद्यासागर, श्यामसुंदर भारती, बजरंग सारस्वत रा डांखळा घणा सराईज्या। शिव पारीक री पोथी 'गळै में अटक्यौ डांखळौ' नाम सूं सांम्ही आवै। डांखळौ चुटकलानुमा काव्य रौ रूप है। आज री नूंवी चिंतन सैली अर सबदां री पकड़ आं डांखळां में निजर आवै।

काव्य–रूपां री इण जूण–जातरा में राजस्थानी कवियां जापानी छन्द **'हाइकू'** में ई आपरी हथौटी कसण रा जतन करै। भारत

सूं चीन अर जापान में गयोड़ा बौद्ध धरम रा अनुयायी धरम उपदेस अर सीख री बात नै थोड़ा'क सबदां में कैवता। इण रचना–बंध नै 'हाइकू' नांव दिरीज्यौ, जिणरी जड़ां भारतीय साहित्य सूं ई सींचीजी है। ध्यान, गैरा चिंतन सूं मन रा झीणा विचारां नै कम सबदां में कैवण री कला रौ नांव 'हाइकू'। फगत (17) सतरा आखरां रौ नैनौ–सोक वरणिक छंद है– हाइकू। इणमें भासा अर भावां री सूक्ष्मता है; सांवर दइया, लक्ष्मीनारायण रंगा, नीरज दइया, भंवरलाल भ्रमर, सुमन बिस्सा, घनश्यामनाथ कच्छावा जैड़ा कवियां 'हाइकू' में आपरा विचार राख्या है। **सोनेट** राजस्थानी कविता आज री दौड़ में लारै नीं रैय जावै, इणरी पूरी खैचल अठा रौ कवि करतौ रैवै। वाणी रौ वर तौ मां सुरसत रा इण लाडलां नै मिळ्योड़ौ है ई। 14 (चवदै) ओळी रा इण छंद में जीवण री जथारथ थितियां अर घटनावां रौ वरणाव, आपरै च्यारूंमेर रै वातावरण रौ सांच अर आपरै हियै रा निजू संबंधां री बात नै घणा मरम परसी सबदां में कथीजण री कळा राजस्थानी कवि मोहन आलोक री थाती है। 'सौ सोनेट' नांव री इण पोथी में 102 सोनेट छंद है। न्यारा–न्यारा विसयां में सबदां री कळा अर भावां री परगळाई है। अंग्रेजी छंद नै अपणाय आपरै हियै री बात उकेरण में राजस्थानी लारै नीं रैया। पढती बगत ई कठैई अबखायी नीं लखावै कै इण छंद री पकड़ में राजस्थानी कवियां कीं खामी राखी होवै। इणरै पछै **बीजीकावां** ई राजस्थानी में रचीजी, जिणमें साव थोड़ा'क सबदां में सार री बात कैवणी होवै। हिन्दी री 'क्षणिकावां' ज्यूं जीवण रा आम–फेम प्रतीकां अर बिम्बां नै नूंवा, अबोट आखरां नै अरथ देवती, सचोट तीखी व्यंग्य भस्योड़ी, थोड़ा में घणौ कैवण री खिमता राखण वाळी अै 'बीजीकावां' जीव जगत रा न्यारा–न्यारा रूपां नै उकेरती निजर आवै। लक्ष्मीनारायण रंगा री बीजीकावां सरावण जोग है। ओम पुरोहित 'कागद' री 'कुचरणी' में अरथावूं कुचरणयां रौ मापौ ई कोनी। दौलतराम डोटासरा रा '**टुणकला**' ई जूना ओखाणां ज्यूं अरथावै जिणमें सार बात कहीजी है। राजस्थानी में भासाई सबदां रौ औ साव नूंवौ प्रयोग है।

इण भांत आधुनिक राजस्थानी काव्य साहित्य में काव्य रा नूंवा रूपां रौ प्रयोग ई साहित्य भंडार नै सिमरथ करैला अर इण भासा री कूंत करण में आज रा अै काव्य–रूप आपरी सैनरूपता रौ म्यानौ देवैला। आधुनिकता री दौड़ में आगै बधता साहित्य रा पग मंडाण आपरी मंजिल लग पूगैला।

राजस्थानी साहित्य में नारी लेखण री बात करां तौ केई शोध–प्रबन्ध त्यार होय जावै। मध्यकाळ री मीरां सूं जीवण री सीख लेय'र अलेखूं महिला रचनाकार सांम्ही आवै। सगुण–निरगुण भगती रा सुरां नै आपरा पदां में अंवेरती दया बाई, सहजो बाई, गवरी देवी, स्वरूपां बाई, राणा बाई, इण सूं ई पैली सोढी नाथी अर रसिक बिहारी रा नांव भक्तिमती कवयित्रियां में आवै, तौ पतिव्रत धरम, तीज–तिंवार अर देसप्रेम नै प्रकृति रा मोवणा चितराम ई भगती नीति रै साथै निजर आवै। आं मांय दीप कुंवरी, उमादेवी जैड़ी रचनाकार सांम्ही आई।

आज नारी सामाजिक विडरूपता, अबखायां नै आपरी रचनावां पेटै उकेरै। सामाजिकता रै ढांचा में दोवड़ी विचारधारा में पीसीजती नारी आज आपरी लेखणी सूं उण असमानता नै नकारै। जथारथ वरणन में नारी लेखण आपरी व्यथा री कथा कैवै। 'धर मजलां धर कूचां' रै साथै नूंवी सोच, मानवी–संघर्ष, मानवतावादी दीठ रौ लेखौ करती आपरी दिसा में चाल रैयौ है। डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत रौ 'कैक्ट्स मांय तुळसी' काव्य संकलन

सामाजिक विसंगतियां नै उकेरै। डॉ. सावित्री डागा, संतोष मायामोहन, डॉ. कमला जैन, वंदना शर्मा, डॉ. अरुणा शर्मा, प्रतिभा व्यास, सुमन बिस्सा, कविता किरण, मोनिका गौड़, राजेश दुलारी सांदू, कमला कमसिन, डॉ. प्रकाश अमरावत, श्रीमती शारदा कृष्ण, किरण राजपुरोहित 'नितिला', रीना मेनारिया, ऋतुप्रिया, छैल कंवर चारण, डॉ. लीला मोदी आद अनेक महिला रचनाकारां री काव्य प्रतिभा–गीत, कविता, गजल अर छंदां रै रूप में सांम्ही आवै। आज समाज रूपी रथ रौ दूजोड़ौ पहियौ ई लेखणी री धुरी बणाय साथै संभग्यौ है। नूंवी चेतना रै संचार संचरियौ अर अबै समाज नै आगै बधण सूं कुण रोक सकैला। राजस्थानी साहित्य रा रूंखड़ां नै हरियल करणियां डाळियां, पानड़ा, कूंपळ, फूल अर फळां रै रूप में आपरी न्यारी ठौड़ फाबतां सिरजणहारां री साख भरूं तौ म्हारौ सौभाग है। बाल–साहित्य में ई राजस्थानी लेखन लारै कोनी। टाबरां रै वास्तै हेत–अपणायत अर शिक्षाप्रद कवितावां री बानगी इण में देखीजै।

आं मांय सूं केई कवि परंपरागत काव्य लिखै, तौ केई जथारथवादी काव्य रै नैड़ा ढूकै। केई प्रकृति रा प्रेमी इणरा कण–कण नै आखरां ढाळै, रूंखां री महिमा गावै, तौ केई मैणत रा नारा देवै। केई संस्कृति री रूपाळी छिब तीज–तिंवारा देख'र उणरा गीत गावै तौ केई नूंवा भाव–बोध साथै अनाम कविता, मिनी कविता नै सिरजै। मानवी भावनावां साथै जुड़'र झीणी संवेदना नै कविता रा सुर बणावै, तौ केई समाज री दसा अर दिसा माथै छीजतौ निजर आवै। कोई विरलौ कविता नै साचै संचै ढाळै, तौ केई फकत नांव खातर च्यार ओळ्यां मांड'र कवि बण जावणौ चावै। कीं होवौ, आधुनिक राजस्थानी कविता री थिर जातरा करता आगै बधता आं कवियां री कोरणी मंड्या आखरां में आधुनिक भावबोध, नवजीवण अर नूंवै भावबोध, कथ्य, रचाव, विचार, भासा, बिंब अर सिल्प सरावण जोग अर आपरी निकेवळी पिछाण बणावण जोग है।

इण भांत आधुनिक काव्य री खास प्रवृत्तियां में जथारथवादी काव्य, प्रगतिशील काव्य, नवजीवण रौ काव्य, नव भावबोध रौ काव्य, हास्य–व्यंग्यात्मक काव्य, प्रकृतिवादी काव्य, नूंवां बिम्ब अर प्रतीक विधान में लिखीज्यौ तौ परम्परागत काव्य में भक्ति, नीति, प्रकृति, वीरता, सिणगार रौ काव्य ई बरोबर लिखीजतौ रैयौ, गिरधरदान रतनू दासोड़ी जैड़ा कवियां रै पाण डिंगळ रौ डमरू छन्दां री छौळां रै पाण आपरौ नाद गुंजावै, तो छंदमुक्त कवितावां ई आधुनिक राजस्थानी साहित्य में होवण लागी।

राजस्थानी गद्य–साहित्य

राजस्थान री जसगाथा उणरै साहित्य मांय रची–बसी है। राजस्थानी साहित्य मांय वीरत री कीरत बखाणीजै। इण साहित्य रौ नांव लेवतां ई वीरता सूं उफणतौ साहित्य चेतै आवै। इण साहित्य री बात करां तौ गद्य–पद्य दोय रूप सांम्ही आवै। राजस्थानी गद्य–साहित्य रौ इतिहास घणौ जस भरियौ है।

देवभासा संस्कृत सूं पालि, प्राकृत, अपभ्रंस अर आधुनिक आर्य भासावां रौ जलम होयौ, अैड़ौ मानीजै। संस्कृत सगळी भासावां री जणनी है। संस्कृत सूं ईज पालि, प्राकृत, अपभ्रंस अर दूजी भारतीय भासावां रौ जलम होयौ। अपभ्रंस रै सत्ताईस भेदां में घणी चावी तीन अपभ्रंस भासावां– नागर अपभ्रंस, मरु गुजरी अपभ्रंस अर सोरसैनी अपभ्रंस नै लेय'र न्यारा–न्यारा विद्वानां राजस्थानी री उत्पत्ति वास्तै आपरा विचार राखिया है, जिणमें डॉ. उदय नारायण तिवारी, डॉ. नामवर सिंह, डॉ. मोतीलाल मेनारिया, प्रो. कल्याणसिंह शेखावत, हीरालाल माहेश्वरी, विदेसी विद्वानां में डॉ.

एल. पी. तैस्सीतोरी, रिचर्ड्स पिसल आद विद्वानां रा मत पढियां पछै औ लखावै कै घणकरा सोरसैनी अपभ्रंस सूं ईज राजस्थानी री उत्पत्ति मानै सबसूं पैली राजस्थानी भासा रौ उल्लेख वि. सं. 835 में जालौर रा जैन यति उद्योतन सूरी रा ग्रंथ 'कुवळयमाला' में 18 भासावां रै साथै मरुभासा रै रूप में राजस्थानी रौ उल्लेख मिळै। इणरौ अरथ औ है कै विक्रम री 9वीं सदी में मरुभासा रै रूप में राजस्थानी लोकचावी ही।

राजस्थानी रौ आपरौ सिमरथ रूप अर साहित्य है। भासा वैग्यानिकां री दीठ में अेक भासा रै वास्तै उणरौ तै भू–भाग, बोलणवाळा, सबदकोस, व्याकरण, लिपि अर साहित्य भंडार होवणौ चाईजै, जिकौ राजस्थानी कनै है। इणरी बोलियां मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढूंढाड़ी, हाड़ौती, मारवाड़ी, बागड़ी, मेवाती राजस्थानी रै सिमरथपणै री साख भरै तौ इणां रौ अखूट साहित्य इणरै सिमरथ होवण नै जगचावौ करै।

राजस्थानी रै गद्य–साहित्य रै इतिहास नै जाणण सारू जूनी पुड़तां उधेड़णी पड़ैला। राजस्थानी गद्य रौ उद्‌भव 13वीं सदी सूं मानीजै। सरुआती गद्य माथै अपभ्रंस रौ असर देखण नै मिळै। 13वीं सदी सूं लेय'र 16वीं सदी तांई रौ बगत जूनी राजस्थानी रौ रैयौ। 16वीं सदी तांई राजस्थानी अर गुजराती रौ अेक रूप रैयौ अर पछै अै दोय न्यारी भासावां रौ रूप लेय लियौ।

राजस्थानी रौ पद्य–साहित्य जित्तौ सिमरथ है, गद्य–साहित्य ई उत्तौ ईज सिमरथ अर रातौ–मातौ है। राजस्थानी में प्राचीन गद्य रूप में विविध विसयक गद्य मिळै। जूनै राजस्थानी ग़द्य नै विसय री दीठ सूं पांच भागां मांय बांटीज्यौ है–

धारमिक गद्य मांय टीका, टब्बा, बालावबोध, पट्टावली अर गुर्रावली आवै। कोई भी धार्मिक ग्रन्थ नै समझण खातर उणमें कथावां दी जावती, उणां री विरोळ मूळ पाठ रै हेठै या अलग सूं देवता, वांनै टीका कैयौ जावतौ। उणी'ज भांत टब्बा रौ रूप हुवतौ, पण टब्बा मूळ पाठ रै हासियै माथै लिखीजता। टाबरां नै बोध करावण सारू, वांनै धरम अर सदाचार री सीख 'बालावबोध' सूं दिरीजती। जातक कथावां रै सरूप रै रूप में इणरौ मैतव रैयौ है। इणमें सं. 1411 में खरतरगच्छ रा तरुणप्रभ सूरि रौ 'षडावश्यक बोलावबोध' सब सूं जूनौ मान्यौ जावै। इणी भांत गुरु–चेलै री परम्परा नै निभावण सारू गुरु रै पछै चेलै नै पाट (गादी) माथै बैठायौ जावतौ, उणरै इतिहास, गुरु अर चेलै रै परिचै नै इण विधा में परोट्यौ जावतौ। जैन परम्परा मांय वंशावली रौ दूजौ रूप गुर्रावली रौ रैयौ है जिकी गुरु–चेलै सूं जुड़ी है।

अैतिहासिक गद्य मांय वात, ख्यात, वचनिका, दवावैत, विगत, वंसावली जैड़ी गद्य विधावां आवै। 'वात' न्यारा–न्यारा विसयां नै लेय'र रचीजी है। आधुनिक जुग री कहाणी विधा ईज उण बगत 'वात' रै नांव सूं जाणीजती। अै वातां अैतिहासिक, अर्द्ध अैतिहासिक, धारमिक, नीति प्रधान हुया करती। 'ख्यात' नै चरित्र ग्रन्थ अथवा उर्दू–फारसी रै 'नामा' या 'आइने' रै नैड़ौ मान्यौ जाय सकै। ख्यात में घटना वरणन, चरित्र वरणन रै सागै अैतिहासिक तथ्यां नै भी महत्त्व दिरीज्यौ है। इण में सिसोदियां री ख्यात, मुहणोत नैणसी री ख्यात, महाराजा मानसिंह री ख्यात, जोधपुर री ख्यात, उमरावां री ख्यात, बांकीदास री ख्यात सिरै ओळी में आवै। 'विगत' रै मांय अेक ईज ठौड़, घटनावां, मिनखां अथवा जातियां रौ विगतवार वरणन करियौ जावै। इणमें मारवाड़ रा परगनां री विगत, मेवाड़ रा भाखरां री विगत, कछवाहा सेखावतां री विगत आद आवै। अेक ईज परिवार कै जाति रौ जद

अेक वंशवृक्ष रै सायरै सूं पीढी–दर–पीढी रौ गद्यात्मक वरणन करियौ जावै उणनै वंसावली रै नांव सूं ओळखीजै। राठौड़ां री वंसावळी, महारावळ री वंसावळी, झालां री वंसावळी, राठौड़ राजावां री वंसावळी, राजपूतां री वंसावळी आद।

हकीकत सूं अरथ जथारथ रौ बखाण हुवै। इणरौ उद्देस्य कोई घटना या खास बात री जांणकारी देवणी होवै। इणमें मनसब री हकीकत, हाडां री हकीकत, पातसाह औरंगजेब री हकीकत उल्लेखजोग है। इणी'ज भांत '**हाल**' में भी हकीकत रै दांई कोई खास घटना रौ बखांण करियौ जावै। 'सांखला दहियां सूं जांगळू लियौ तेरौ हाल' इण रीत री अेक खास रचना है। '**वचनिका**' सबद संस्कृत रै 'वचन' सबद सूं बणियौ है। गद्य–पद्य मिश्रित रचना जिणनै संस्कृत में चम्पू काव्य भी कैयौ जावै। इणमें अचलदास खींची री वचनिका, वचनिका राठौड़ रतनसिंह महेसदासौत री, जिन समुद्र सूरि री वचनिका, माताजी री वचनिका आद आवै। '**दवावैत**' सबद री व्युत्पत्ति अरबी भासा रा सबद 'वैत' सूं मानी जावै। दवावैत में उर्दू अर फारसी रा सबद घणा मिळै। राजस्थानी भासा री सैं सूं जूनी दवावैत में उर्दू अर फारसी रा सबद घणा मिळै। राजस्थानी भासा री सैं सूं जूनी दवावैत 'नरसिंहदास गौड़ री दवावैत' मानीजै। इणरै पछै 'महाराजा अजीतसिंह री दवावैत', 'असमाल देवड़ा री दवावैत', 'महाराजा लखपत री दवावैत' चावी रैयी।

अभिलेखीय गद्य रै मांय ईंटां, भाटां, धातुपत्रां माथै खुद्योड़ौ गद्य आवै। इण तरै मिळण वाळौ साहित्य राजाज्ञावां, आदेसां, फरमाण, दान–पात्र, सम्मान–पत्र, पट्टा अर परवानां रै रूप में मिलै। औ आदिकाळ में घणौ मिळियौ है। विविध विसयक गद्य मांय आयुर्वेद, ज्योतिष, व्याकरण जैड़ा अलग–अलग विसयां सूं जुड़िया ग्रन्थ जैन अर जैनेतर सैली में मिळै। इणां में ज्योतिष में जन्म पत्रिकावां री भी महताऊ ठौड़ है। इण तरै प्राचीन अर मध्यकालीन राजस्थानी गद्य रौ संसार घणौ लांठो है। मध्यकाळ में राजस्थानी भासा में बत्तौ अर असरदार गद्य रौ सिरजण हुयौ। नांव अर रूप न्यारा–न्यारा रैवता थकां ई कदैई रूपगत अेकता तौ कदैई विसयगत अेकता रै कारण आपस में जुड़ियोड़ी रैयी। फूल री पांखड़ियां ज्यूं जुड़्योड़ी अै विधावां राजस्थानी साहित्य में आपरी सौरम बिखेरी। जूनै राजस्थानी गद्य री आपरी अलायदी ओळख है। दूजी भासावां रा साहित्य में स्यात ई लाधै। इणरै साहित्य भंडार सूं कित्ता–कित्ता ग्रन्थ–रत्नां नै परोटतां इतिहासकारां राजस्थान प्रदेस रै इतिहास रौ रूप संवारियौ अर राजस्थानी साहित्य आपरौ आपौ थापियौ– आं विधावां रै कारण ईज।

राजस्थानी रै आधुनिक गद्य रौ जलम 19वीं सदी सूं ई मानीजै। सन् 1857 री क्रान्ति री बेळा वीर रसावतार सूर्यमल्ल मीसण पद्यात्मक रूप में तौ 'वीर सतसई' री रचना करी, पण आप नूंवी राजनीतिक चेतना अर कर्तव्य पुकार सूं सराबोर कागद ई लिख्या। वां कागदां री भासा में नूंवै राजस्थानी गद्य रा बीज मिळै। सूर्यमल्ल मीसण रा लिख्योड़ा अै कागद नूंवा गद्य री नींव में दिरीज्या, जिण माथै उण बगत रा नामी लेखकां गद्य रूपी म्हैल ऊभौ करता रैया। आज लग उण म्हैल माथै ऊपरो–ऊपरी मेड़ी–माळिया बणता जाय रैया है, जिणरी थाग कोनी। नूंवा गद्य में नूंवै जमानै री दूजी भासावां रै नकल री गद्य विधावां रौ सिरजण राजस्थानी में होवण लाग्यौ। इण बगत में घणकरा प्रवासी राजस्थानी आपरी मायड़भासा रौ मान बधायौ।

शिवचन्द्र भरतिया अेक अैड़ौ नांव है जिका उपन्यास, कहाणी अर नाटक जैड़ी

विधावां री सरुआत राजस्थानी में करी। उण पछै तौ राजस्थानी मांय उपन्यास, कहाणी, नाटक, निबन्ध, अेकांकी, रेखाचित्राम, संस्मरण, बाल–साहित्य जैड़ी विधावां दीठाव में आई। अठै राजस्थानी री आं विधावां री कीं जाणकारी टाबरां नै करावणी चावूं।

राजस्थानी मांय पैलौ उपन्यास 'कनक सुंदर' मान्यौ जावै। सन् 1903 में शिवचन्द्र भरतिया इण उपन्यास में उण बगत री बुरायां रै निवारण खातर सुधारवादी दीठ राखी है। उपन्यासकार इण मांय बालब्याव, दायजौ, अनमेळ ब्याव आद नै पाठकां सांम्ही ल्यावण रौ जतन करियौ है। राजस्थानी रौ दूजौ उपन्यास श्रीनारायण अग्रवाळ रौ 'चम्पा' है जिणमें समाज–सुधार री भावना राखीजी है। इण पछै श्रीलाल नथमल जोशी रा 'आभै पटकी', 'अेक बीनणी दो बीन' अर 'धोरां रौ धोरी' उपन्यास पाठकां सांम्ही आया। अन्नाराम सुदामा रौ 'मैकती काया मुळकती धरती', 'मेवै रा रूंख?', 'आंधी अर आस्था', 'डंकीजता मानवी', 'घर संसार', यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र रा 'हूं गोरी किण पीव री', 'जोग संजोग' अर विजयदान देथा रा 'तीडौ राव', 'मां रौ बदळौ' अर 'आठ राजकंवर' जैड़ा लोक उपन्यास सांम्ही आया।

नूंवै जुग मांय नूंवा विसयां नै लेय'र उपन्यास सांम्ही आया। बी. एल. माली 'अशांत' रा च्यार उपन्यास 'मिनख रा खोज', 'बैजू', 'अबोली' अर 'बुरीगार निजर' सांम्ही आया। मालचन्द तिवाड़ी रौ 'भोळावण', छत्रपति सिंह रौ 'तिरसंकू', पारस अरोड़ा रौ 'खुलती गांठां', दीनदयाल कुंदन रौ 'गुंवारपाठौ', सत्येन जोशी रौ 'कंवळपूजा', भूरसिंह राठौड़ रौ 'राती घाटी', रामनिवास शर्मा रौ 'काळ भैरवी', करणीदान बारहठ रौ 'मंत्री री बेटी', अब्दुल वहीद 'कमल' रौ 'घराणौ' सूं आगै बधेपौ कर उपन्यास साहित्य मांय नूंवा रचाव हुया। इण विधा माथै नूंवा लिखारा भी आपरी कलम सवाई करी, जिणमें सुरेन्द्र अंचल रौ 'सुपना रौ सायबौ', ओमदत्त जोशी रौ 'पाणी पीजै छाण, देवकिशन राजपुरोहित रा 'सूरज', 'कूपत', 'कळंक', 'धाड़वी', 'दातार', देवदास रांकावत रा 'मुळकती मौत कळपती काया', 'धरती रौ सुरग', 'गांव! थारै नांव', नवनीत पाण्डे रौ 'माटी जूण', मधु आचार्य 'आशावादी' रा 'गवाड़', 'अवधूत' अर 'आडा–तिरछा लोग' सांम्ही आवै। इक्कीसवैं सईकै में इण विधा माथै लगोलग काम हुय भी रैयौ है। आज इण विधा नै परोटण री घणी दरकार है।

कहाणी राजस्थानी साहित्य रै नूंवै जुग री देन है। 'बात' परम्परा सूं अळगी हट'र राजस्थानी कहाणी आपरी नूंवी सरुआत करी। बीसवीं सदी सूं कहाणी विधा पेटै काम होवण लाग्यौ। नूंवा विसयां अर सिल्प नै लेय'र कहाणीकार पाठकां सांम्ही पोथ्यां लाया। 1904 में आधुनिक राजस्थानी री पैली कहाणी कलकत्तै सूं निकळण वाळी हिन्दी मासिक पत्रिका 'वैश्योपकारक' में शिवचन्द्र भरतिया री 'विश्रान्त प्रवासी' मानीजै। इणरै पछै गुलाबचन्द नागौरी री 'बडी तीज', 'बेटी की बिकरी' अर 'बहू की खरीदी', शिवनारायण तोसनीवाल री 'विद्यापरं दैवतम्', 'स्त्री शिक्षा को ओनमा', ब्रजलाल बियाणी री 'रामायण' अर भगवती प्रसाद दारूका री 'अेक मारवाड़ी की घटना' अर 'अेक मारवाड़ी की बात' छपी। अै कहाणियां उण बगत रै राजस्थानी समाज री सामाजिक बुरायां नै उजागर करै, इण सारू आं में सुधारवादी सुर दिखै। अै कहाणीकार राजस्थानी समाज मांय रची–पची सामाजिक अबखायां कांनी पाठकां रौ ध्यान खींचण री कोसीस करी। अै कहाणियां जूंनी राजस्थानी बातां सूं घणी'ज न्यारी ही। न तो इणां में कोई अलौकिक पात्र हा अर न ई कोई अलौकिक घटनावां। इणमें किणी भांत रा राजा–राणी या राजकंवर जैड़ा पात्र

नीं हा, आं में फगत जथारथ नै उजागर करीज्यो हो। इण कारण कैय सकां कै आधुनिक राजस्थानी कहाणी री सरुआत प्रवासी राजस्थानी कहाणीकारां करी।

आधुनिक राजस्थानी कहाणी री सरुआत मुरलीधर व्यास सं. 2012 (1955) आपरै कहाणी संग्रै 'बरसगांठ' सूं करी। आधुनिक राजस्थानी कहाणी परम्परा मांय दो धारावां देखी जाय सकै। अेक धारा तौ सुधारवादी सोच लियां दीखै तौ दूजी धारा मांय तत्कालीन सामाजिक जीवण मांय आवता बदळाव अर वां बदळावां रै कारण जीवण–मूल्यां माथै पड़तै प्रभाव नै प्रकट करणै री कोसीस करीजी। राजस्थानी रा आधुनिक कहाणीकार भाव अर सिल्प दोनूं स्तर माथै कहाणियां नै मांजण लाग्या। इणां मांय अन्नाराम सुदामा, मूलचन्द प्राणेश, बैजनाथ पंवार, श्रीलाल नथमल जोशी, नृसिंह राजपुरोहित, मनोहर शर्मा, राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत रौ नांव सिरै ओळी में आवै। आं कहाणियां में 'भूरी', 'कल्गि महातम' (बैजनाथ पंवार), 'बोल म्हारी मछली', 'उतर भीखा म्हारी बारी', 'भारत भाग्य विधाता' (नृसिंह राजपुरोहित), 'माटी री हांडी' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'आंधै नै आंख्यां' (अन्नाराम सुदामा) आवै। लोककथावां री सैली मांय राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत, विजयदान देथा, डॉ. मनोहर शर्मा, नानूराम संस्कर्ता आद रचनाकारां लोक संस्कृति अर लोकचेतना नै लेय'र कहाणियां लिखी।

राजस्थानी कहाणी आपरी जात्रा मांय आज तांई केई पांवडा भरिया है। न्यारा–न्यारा विसयां नै लेय'र कहाणीकारां आपरी कथा–कृतियां पाठकां सांम्ही राखी। इणां में नानूराम संस्कर्ता री 'ग्योही', नृसिंह राजपुरोहित री 'रातवासौ', 'अमर चूनड़ी', 'मऊ चाली माळवै', 'प्रभातियौ तारौ', 'अधूरा सुपना', मूलचन्द प्राणेश री 'उकळता आंतरा : सीळा सांस' अर 'चस्मदीठ गवाह', बैजनाथ पंवार री 'लाडेसर', 'नैणां खूट्यौ नीर', डॉ. मनोहर शर्मा री 'कन्यादान', अन्नाराम सुदामा री 'आंधै नै आंख्यां', श्रीलाल नथमल जोशी री 'परण्योड़ी कंवारी', 'मैंधी, कनीर अर गुलाब', सांवर दइया री 'असवाड़ै–पसवाड़ै', 'धरती कद तांई घूमैली', 'अेक दुनिया म्हारी', भंवरलाल भ्रमर री 'तकादो', 'सातूं सुख', दामोदर प्रसाद शर्मा री 'प्रेतात्मा री पीड़', 'रामेश्वर दयाल श्रीमाळी री 'सळवटां', बी.अेल. माली अशांत री 'किली किली कटकौ', 'राई–राई रेत', मनोहर सिंह राठौड़ री 'रोसनी रा जीव', 'खिड़की', यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र री 'समंद अर थार', मदन सैनी री 'फुरसत', 'भोळी बातां', मालचन्द तिवाड़ी री 'धड़ंद', 'सैलिब्रेसन', मीठेस निरमोही री 'अमावस, अेकम अर चांद', चैनसिंह परिहार री 'चरकास', रामस्वरूप किसान री 'हाडाखोड़ी', 'तीखी धार', सत्यनारायण सोनी री 'घमसांण', भरत ओळा री 'जीव री जात', मदन केवलिया री 'काळी कांठळ', बुलाकी शर्मा री 'हिलोरो', 'साच नै आंच', कमल रंगा री 'सीप्यां अर मोती', रामेसर गोदारा री 'मुकनो मेघवाळ' अर 'वीरे तूं लाहौर वेखण आई', मनोज स्वामी री 'कियां' अर 'इमदाद', मधु आचार्य 'आशावादी' री 'ऊग्यौ चांद ढळ्यौ जद सूरज', 'आंख्यां मांय सुपना', डॉ. मदन गोपाल लढ़ा री 'च्यानण पख' अर राजेन्द्र जोशी री 'अगाड़ी' सांम्ही आयी। राजस्थानी कहाणी री इण जात्रा मांय लुगायां भी आपरी कलम सवाई करी है। आं महिला रचनाकारां मांय डॉ. (श्रीमती) प्रकाश अमरावत री 'हियै रा हरफ', माधुरी मधु री 'केसरिया बालम', 'तिड़कण लाग्या बांस', कुसुम मेघवाल री 'अमंगळी छाया' आद नांव इण कहाणी–जात्रा मांय उल्लेखजोग है।

राजस्थानी गद्य विधावां में **निबन्धां** री महताऊ ठौड़ है। आधुनिक जुग में न्यारा–न्यारा

विसयां माथै निबन्ध लिखीज्या है। निबन्ध विचारं नै, भावां नै अर विसय नै चोखी तरियां बांधण रौ काम करै। राजस्थानी मांय निबन्धां रौ पैलड़ौ सरूप 'मारवाड़ी भास्कर' अर 'मारवाड़ी' जैड़ा पत्रां में प्रकासित हुवण वाळा लेखां में देखण नै मिळै। बृजलाल बियाणी रा निबन्ध 'मोगराकली', 'गुलाबकली', 'बड़ी फजर रौ दीवौ' आद ललित निबन्ध 'पंचराज' में प्रकासित हुया। इण पछै तौ केई निबन्ध सांम्ही आवै। आगीवांण, ओळमों, जलमभोम, मरुवाणी आद पत्र–पत्रिकावां मांय निबन्ध प्रकासित हुया। आधुनिक राजस्थानी साहित्य रा चावा निबन्धा–संग्रहां मांय 'राजस्थानी संस्कृति रा चितराम', 'धर कोसां धर मजलां', 'अर्जुण आळी आंख', (जहूरखां मेहर), 'भल लुवां बाजौ कित्ती', 'लोक रौ उजास' (डॉ. किरण नाहटा), 'पांवडा, पड़ाव अर मंजल' (बी.एल. माली 'अशांत'), 'बळिहारी उण देसड़ै', 'बुगचौ' (मूळदान देपावत), 'डीगा डूंगर द ोळिया' (डॉ. पुरुषोत्तम आसोपा), 'नाक री करामात' (बुद्धिप्रकाश पारीक), 'प्रीत रा पंछी' (अस्तअली खां मलकांण), 'अणभूत दीठ' (नरपतसिंह सिंघवी), 'सोनलिया ओळखांण' (माणक तिवाड़ी 'बन्धु'), 'इतिहास रौ साच' (डॉ. गिरिजाशंकर शर्मा), 'संस्कृति री सौरम' (डॉ. शक्तिदान कविया), 'सुर नर तो कथता भला', 'सूरज कदै विसूंजै कोनी' (सूर्यशंकर पारीक), 'कवि, कविता अर घरवाळी' (बुलाकी शर्मा), 'सिरजण री साख' (डॉ. मदन सैनी), 'मणिमाळ' अर 'रस कळस' (प्रो. कल्याणसिंह शेखावत), 'परख सिरजण' (डॉ. पुरुषोत्तम आसोपा), 'कीरत रा बखाण' (डॉ. नमामीशंकर आचार्य), 'सुण अरजुण' (शंकरसिंह राजपुरोहित) आद रौ नांव सिरै आवै।

राजस्थानी मांय **नाट्य परम्परा** घणी जूनी है। लोकनाट्य रै स्यारै सूं मनोरंजन, शिक्षा अर ग्यान बढावण रौ काम होवतौ। इण लोकनाट्य में ख्याल, स्वांग, रम्मत, रासलीला, फड़, टूंट्या आद लोकचावा है। आधुनिक राजस्थानी नाटकां री सरुआत शिववचन्द्र भरतिया सूं मानी जावै। वांरौ पैलौ नाटक 'केसर विलास' सन् 1900 में प्रकासित हुयौ। इण परम्परा में दूजा नाटकां रौ लेखन अर प्रकासन अलग–अलग रचनाकारां द्वारा करीज्यौ।

जद बात आपां राजस्थानी नाटकां री विसय–वस्तु री करां तौ सरुआती नाटक सामाजिक धरातळ सूं जुड़िया लखावै। आं नाटकां मांय रचनाकार सामाजिक अबखायां नै सांम्ही लावण रौ जतन करियौ। 'केसर विलास' मांय बदळाव रा सुर दिखै। मारवाड़ी समाज री रीति–कुरीतियां रौ वरणाव इण नाटक में घणौ ई हुयौ है। भरतियाजी रा दूजा नाटक 'फाटका जंजाळ' अर 'बुढापै री सगाई' सांम्ही आवै। इण पछै भगवती प्रसाद दारूका रा 'बालविवाह', 'वृद्धविवाह', 'सीठणा सुधार', गुलाबचन्द नागौरी रा 'मारवाड़ी मौसर' अर 'सगाई–जंजाळ', बालकृष्ण लाहोटी रौ 'कन्याबिक्री' अर नारायणदास सारड़ा रौ 'बाल ब्याव को फोर्स' आद नाटक सामाजिक अबखायां नै लेय'र रचीज्या।

इणरै पछै केई नाटककार न्यारा–न्यारा विसयां नै लेय'र नाटक लिख्या। श्रीनारायण अग्रवाळ रा 'कलियुगी कृष्ण रुकमणि नाटक', 'अकल बडी क भैंस', 'महाभारत को श्रीगणेश', 'विद्याउदय नाटक', सूर्यकरण पारीक रौ 'बोळावण', श्रीनाथ मोदी रौ 'गोमा जाट', गिरधारी लाल व्यास रौ 'प्रणवीर प्रताप', डॉ. नारायण विष्णु जोशी रौ 'जागीरदार', बालकृष्ण लाहोटी रौ 'कन्या बिकरी', मदनमोहन सिद्ध रौ 'जयपुर की ज्योणार', आज्ञाचन्द्र भंडारी रौ 'पन्नाधाय', भरत व्यास रौ 'ढोला मरवण', 'रंगीलौ मारवाड़', यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' रौ 'तास रौ घर', बद्रीप्रसाद पंचोली रौ 'पाणी

पैली पाळ', फूलचन्द्र रौ 'बिकाऊ टोरड़ौ', सत्येन जोशी रौ 'मुगती बंधण', अर्जुनदेव चारण रा 'दो नाटक आज रा', 'धरमजुद्ध', 'मुगती गाथा', 'जमलीला', 'जेठवा ऊजळी', 'बोल म्हारी मछली इत्तौ पांणी', 'सत्याग्रह', डॉ. ज्योतिपुंज रौ 'कंकू कबंध', लक्ष्मीनारायण रंगा रा 'बहूरूपियौ', अर 'पूर्णमिद्म' आद नाटकां रौ सिरजण हुयौ।

नाट्यसास्त्र री चावी विधा है– **अेकांकी**। इणरौ चलन पैली पिछमी देसां में रैयौ, पछै भारत में भी आ विधा घणी चावी हुयी। राजस्थानी री पैली अेकांकी शोभाचंद जम्मड़ री 'वृद्ध विवाह विदूषण' मानी जावै। नाटक मांय कथावस्तु मोटी हुवै, पात्रां री संख्या बेसी हुवै जदकै अेकांकी इण सूं छोटी हुया करै। संस्कृत में इणनै रूपक मान्यौ गयौ है। इणमें कथाक्रम, पात्रां री संख्या अर उद्देस्य सरूप भी अपेक्षाकृत मोटौ नीं हुवै। अभिनीयता में भी बगत कमती ही लागै, इण कारण इणनै अेकांकी कैवै। श्रीनाथ मोदी री अेकांकी 'गांव सुधार या गोमा जाट' अर सूर्यकरण पारीक री 'बोळावण' सरुआती दौर री मानी जावै। इणरै पछै 'सामधरमा माजी' (लक्ष्मीकुमारी चूंडावत), 'देस रै वास्तै' (आज्ञाचंद भंडारी), 'जय जलमभोम (धनंजय वर्मा), 'डाक्टर रौ ब्याव' (डॉ. गोविन्दलाल माथुर), 'तोप रौ लाइसेंस' (दामोदर प्रसाद शर्मा), 'रगत अेक मिनख रौ' (सुरेन्द्र अंचल), 'मिनख' (हनुमान पारीक), 'छोरी फेल कियां हुई बैनजी' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'कफन' (नागराज शर्मा) जैड़ी अेकांकियां मांय विसयां री विविधता देखण नै मिलै अर वांरै कारण अै आपरै पाठक रै हियै तांई पूगै।

साहित्यकार आपरी कलम सूं जद सबद चित्राम उकेर'र आपरी भावनावां री अभिव्यक्ति पाठकां सांम्ही करै उणनै **रेखाचित्राम** कैईजै। जिकौ काम अेक चित्रकार आपरी तुलिका अर रंग रै स्सारै सूं करै वौ ईज काम साहित्यकार आपरी कलम अर सबदां सूं करै। रेखाचित्राम नै अंग्रेजी में 'स्केच' कैयौ जावै। रचनाकाल विगत री दीठ सूं राजस्थानी में रेखाचित्राम रचीजण री परम्परा सन् 1946–47 रै लगैटगै हुयी। भंवरलाल नाहटा रौ 'लाभू काकौ' इण विधा री पैली रचना मानीजै। आजादी पछै इण विधा माथै सांतरौ काम हुयौ है। इणरै पछै 'जूंना जीवता चितराम' (मुरलीधर व्यास), 'सबड़का' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'बानगी' (भंवरलाल नाहटा), 'उणियारा', 'ओळखांण', 'मिनखां री माया' (शिवराज छंगाणी), 'अटारवां' (ब्रजनारायण पुरोहित), 'बारखड़ी' (वेद व्यास), 'यादां रा चितराम' (डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत), 'उणियारा ओळूं तणा' (अस्तअली खां मलकांण), आद रेखाचित्रामां री फूठरी परम्परा सांम्ही आयी। ओळूं रै आधार माथै जद रचनाकार आपरी भावनावां अर विचारां नै सहजता सूं पाठकां सांम्ही राखै, तौ उणनै **संस्मरण** रौ नांव देईजै। संस्मरणां रौ आधार मिनख, घटना, जात्रा आद होय सकै। डॉ. नेमनारायण जोशी रौ 'ओळूं री अखियातां', डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत रौ 'ओळूं री आरसी', मनोहर सिंह राठौड़ रौ 'यादां रौ झरोखौ', अन्नाराम सुदामा रौ 'आंगण सूं अर्नाकुलम' अर 'दूर दिसावर' जैड़ा संस्मरण सिरै है।

'रिपोर्ट' रौ विकसित रूप **रिपोर्ताज** साहित्यिक विधा रौ रूप लियौ। कम सूं कम सबदां मांय विवरण प्रस्तुत करणौ रिपोर्ताज री सफळता मानीज्यौ है। राजस्थानी साहित्य मांय रिपोर्ताज विनोद सोमानी हंस रौ 'अेक दिन आपरौ', कुशलकरण रौ 'आवौ हथाई करां', रामनिवास रौ 'तीन बयान', पुरुषोत्तम छंगाणी रौ 'हाथ करींदौ दिल रौ दरियाव', माधव शर्मा रौ 'बजार पट्टै', 'चौड़ै जेब पट्टै', मुरलीधर शर्मा रौ 'नगर मगरै रौ', 'अजबघर मनड़ै रौ' आद आवै।

जीवनी अर आतमकथा रै क्षेत्र मांय राजस्थानी रचनाकारां री कलम सुस्त रैयी।

'**जीवनी**' अर '**आतमकथा**' जैड़ी रचनावां घणी कोनी आयी। 'आपणा बापूजी' (श्रीलाल नथमल जोशी), 'शिवचन्द्र भरतिया' (डॉ. किरण नाहटा), 'देस रा गौरव', 'भारत रा निरमाता' (दीनदयाल ओझा), 'महावीर री ओळखाण' (शान्ता भानावत), 'महापुरसां री जीवणियां' (गोविन्द लाल माथुर), 'भगवान महावीर' (डॉ. नृसिंह राजपुरोहित) जैड़ी रचनावां सांम्ही आयी है। मनोज कुमार स्वामी री आतमकथा 'खेचळ अर खेचळ' आतमकथा रै लेखै नूंवी पहल कैयी जाय सकै।

राजस्थानी मांय टाबरां सारू भी गद्य–साहित्य रौ सिरजण हुयौ है। आज इण सारू घणौ ई काम हो रैयौ है। इण पेटै बात करां तौ राजस्थानी **बाल–साहित्य** री स्थिति ठीकठाक मान सकां। विजयदान देथा री 'बातां री फुलवाड़ी' (भाग–2) में टाबरां सारू पसु–पंखेरुवां री रोचक कथावां है। इणी भांत राणी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत री 'टाबरां री बातां', 'हुंकारौ दो सा', अन्नाराम सुदामा रौ बाल–उपन्यास 'गांव रौ गौरव', यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र, रौ बाल नाटक 'राजा सेखचिल्ली', करणीदान बारहठ री रचना 'झिंडियौ', बी. एल. माली 'अशांत' रा बाल उपन्यास 'बिलाणियौ दादौ' अर 'दूधिया दांत', मनोहर सिंह राठौड़ री कृति 'म्हारी पोथी', दीनदयाल शर्मा री कृति 'बाळपणै री बातां', 'संखेसर रा सींग', सुरेन्द्रसिंह शेखावत री बाल कथाकृति, 'साची सीख' जयन्त निर्वाण री बाल अेकांकी 'खाग्या बाळणजोगा', जेबा रशीद री 'मीठी बातां', डॉ. नीरज दइया री 'जादू रौ पेन', कृष्ण कुमार 'आशु' 'माटी रौ मोल', शिवराज भारतीय री 'रंग रंगीलौ म्हारौ देस' अर 'मुरधर आई बिरखा राणी', हरीश बी. शर्मा रौ बाल नाटक 'सतोळियौ', मदन गोपाल लढ़ा री 'सपनै री सीख', दुलाराम सहारण री 'क्रिकेट रौ कोड', रामजीलाल घोड़ेला रौ 'जादू रौ चिराग,' मनोज स्वामी री 'तातड़ै रा आंसू', कृष्ण कुमार बांदर री 'झगड़ बिलोवणौ खाटी छा', राजूराम बिजारणियां री 'कुचमादी टाबर' अर गौरीशंकर कुलचन्द्र री बालकथा कृति 'पछतावौ' आद कृतियां राजस्थानी बाल–साहित्य नै रातौ–मातौ कर्‍यौ है। इणरै अलावा केई पत्र–पत्रिकावां मांय इण पेटै सिरजण लगोलग हो रैयौ है।

राजस्थानी गद्य रौ विगसाव बगत सारू हुंवतौ रैयौ है। इण बगत गद्य लेखन री परम्परा सांतरी रैयी है। जूनै साहित्य मांय बात अर ख्यात साहित्य मांय खूब लिखीज्यौ है। आजादी रै पछै तौ राजस्थानी रौ आधुनिक काळ घणौ ई सबळ अर सांतरौ हुयौ।

⌘⌘

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1.सत्यप्रकाश जोशी री चावी पोथी कुणसी है–

(अ) मानखौ (ब) रामदूत

(स) राधा (द) लीलटांस

( )

2. 'बादळी' किण कवि री रचना है?

(अ) चन्द्रसिंह बिरकाळी (ब) कन्हैयालाल सेठिया

(स) नानूराम संस्कर्ता (द) कल्याणसिंह राजावत

( )

3. राजस्थानी रौ पैलड़ौ उपन्यास कुणसौ है–

(अ) मेवै रा रूंख (ब) तीडौ राव

(स) कनक सुन्दर (द) धाड़वी ( )

4. राजस्थानी नाटक अर नाटककार कुणसौ सही है–

(अ) तास रौ घर– बद्रीप्रसाद (ब) मुगतीबंधण– बी.एल. माली

(स) जमलीला– यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' (द) धरमजुद्ध– डॉ. अर्जुनदेव चारण

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी री पैली कहाणी अर कहाणीकार कुण है?
2. सबसूं पैली राजस्थानी भासा रौ उल्लेख कुण, किणमें, किण रूप में कर्‌यौ?
3. डॉ. सीताराम लाळस रै मुजब राजस्थानी साहित्य रौ आधुनिक काळ कद सूं मानीजै?
4. राजस्थानी रौ उद्‌भव किण अपभ्रंस सूं मान्यौ जावै?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी प्रकृति काव्य माथै आपरी टीप मांडौ।
2. आधुनिक राजस्थानी काव्य री खास रीतां कांई रैयी, उणरौ खुलासौ करौ।
3. आधुनिक राजस्थानी नाटक परम्परा माथै आपरा विचार राखै।
4. राजस्थानी कहाणी रा प्रमुख कहाणीकारां अर कहाणियां रौ वरणाव करौ।

लेख रूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी भासा रै उद्‌भव अर विकास माथै सांतरौ लेख लिखौ।
2. राजस्थानी गद्य साहित्य री खास–खास विधावां गिणावता थका उणां माथै टीप राखौ।
3. आधुनिक राजस्थानी काव्य री मूल रीतां अर काव्य–रूपां रौ वरणन करौ।

राजस्थानी व्याकरण–रचना

भासा विचारां नै प्रगट करण रौ लूंठौ साधन है। आपरा विचारां नै प्रगट करण रै कारण मिनख सगळी जीवाजूण सूं सिरै मानीजै। मन में विचार आवै कै आखिर भासा ई कठै सूं आई। भासा नै बणावण वाळौ कुण? कांई वैखरी वाणी सूं ईश्वर इणनै बणायौ, कांई सृष्टि सिरजण रै साथै ई मिनख नै वरदान सरूप भासा मिळी? या पछै मिनख खुद उणरौ सिरजण कर्‌यौ। इयूं देखां तौ सगळौ जगत ईस्वर रौ सिरज्योड़ौ है, पण उणनै आगै बधावण में निमित्त तौ मिनख ई बणै। वेदां री भासा सूं लेय'र आज तांई रै भासाई विकसाव रा बड़–रूंख नै निजरां पसार देखां अर सोचां तौ जाणां कै भासा नै बणावण वाळौ मिनख ई है। अर आज तौ भासाई विकसाव में मिनख इतरौ आगै बधग्यौ कै गूंगा–बोळा अर आंधा मिनख ई आपरा विचारां नै घणी इधकाई सूं दूजै लग पूगाय सकै या न्यारी लिपि सूं भासा नै परोट'र पढ–लिख'र दूजां रै बरोबर ऊभा होय सकै। सरीर या काया सूं कमजोर है, पण ग्यान में लारै कोनी रैवै। उणरै कनै भासा री आपरी लिपि है अर औ सगळौ जस–अंजस मिनख री सोच नै जावै। भासा संचार रा साधनां में सबसूं महताऊ साधन है जिणरै पाण मिनख आपरै मन री बातां, आपरा विचारां नै दूजै सांम्ही राख सकै। भासा रै मांय ई वा खिमता है जिणसूं मिनख आपरा ग्यान रौ लेण–देण कर सकै। 'भासा' सबद देववाणी संस्कृत रै 'भाष्' धातू सूं बण्यौ। इणरौ अरथ प्रगटाव या दरसाव है। जिणसूं मिनख आपरा विचारां अर भावां नै दरसावै या प्रगट करै, उणनै भासा कैवै। विचारां नै प्रगट करण रौ लूंठौ साधन है भासा। संस्कृत सबसूं जूनी भासा मानीजै, ज्यूं वेदां सूं जूनां कोई ग्रंथ कोनी। संस्कृत सूं ई पालि, प्राकृत, अपभ्रंस आद भासावां सूं आज री आधुनिक भासावां रौ जलम होयौ उणमें राजस्थानी अेक है। राजस्थानी भासा री आपरी व्याकरण है। व्याकरण सूं भासा री पारख करीजै, कूंत हुवै। भासाई व्याकरण रा आपरा कीं नियम होवै। भासा री पकड़ व्याकरण बिना नीं आवै।

किणी ई भासा रै व्याकरण–ग्रंथां में मोटै रूप सूं तीन तत्त्वां माथै विचार करीजै– वरण, सबद अर वाक्य। राजस्थानी री आपरी वरणमाळा है। सबद अर ध्वनियां है। इण रा व्याकरण ग्रंथां में संज्ञा, सरवनाम, लिंग, वचन, कारक, विसेसण, क्रिया, समास, प्रत्यय, उपसरग, अनेकारथी सबद, विलोम सबद, लोकोक्तियां अर मुहावरां सगळां रौ खुलासौ करीज्यौ है। रामकरण आसोपा अर सीताराम लाळस जैड़ा विद्वानां रा व्याकरण सूं राजस्थानी भासा री खरी कूंत करीजै। पोसाळां में पढण वाळा टाबरां वास्तै राजस्थानी रौ ग्यान घणौ जरूरी है। आ मायड़ भासा है।

पर्यायवाची कै समानारथी सबद

मायड़ भासा री खिमता नै जाणण वास्तै अेक जैड़ा अरथ नै प्रगट करण वाळा कीं समानारथी सबदां री बात अठै करणी चावूं, जिणां नै आज री भासा में पर्यायवाची सबद कैवां। किणी भाव, विचार या वस्तु विसेस रौ ग्यान करावण वास्तै, वरणाव वास्तै, समझावण वास्तै, अेक ई सबद नै न्यारा–न्यारा ढंग सूं बतावण री दरकार पड़ै। वाक्य में हरेक बार उणीज सबद रौ प्रयोग रैय–रैय'र नीं करीजै, उणरै जैड़ौ उणी रै अरथ वाळौ नूंवौ सबद काम में लेवण सूं भासा सिमरथ बणै। भासा री इधकाई अर फूटरापै में बधापौ करै उणरा सबद। अै समानारथी सबद ई पर्यायवाची सबद है। कीं पर्यायवाची सबदां रा दाखला अठै दिरीज रैया है–

आकरौ	–	खारौ, तेज, तातौ, रीसाळू, करड़ौ
अगन	–	आग, वैसनर, हुतासण, पावक, अनळ
आंख	–	नैण, लोचन, चख, नेतर, द्रिग
बकरी	–	छाळी, टाट, अजा, घोनी, बकरड़ी
बादळ	–	जळहर, मेघ, अभ्र, बळाहक, अभ्र
बांदरौ	–	लंगूर, वानर, कपि, माकड़, मरकट
बुद्धि	–	मेधा, मति, समझ, अकल, बुध
भंवरौ	–	भ्रमर, मुधकर, सारंग, चंचरीक, भ्रंग
भालौ	–	नेजो, सेल, त्रभाग, कूंत, बरछौ
चांद	–	चन्द्र, ससि, मयंक, इन्दु, कळानिध
फूल	–	कुसुम, सुमन, पुहुप, पुसप, प्रसून
गढ	–	किलौ, कोट, भुरजाळ, दुरग, रावळौ
गाय	–	गौ, धेन, सुरभि, स्त्रंगणी, गऊ
घर	–	सदन, भवन, गेह, निकेतण, धाम
घोड़ौ	–	पमंग, हैवर, केकांण, हय, पंखाळ
हाथी	–	गज, गैवर, मैंगळ, कुंजर, वयंड
हिरण	–	मिरग, कुरंग, मिरगलौ, ऐण, सारंग
जोधौ	–	सूरमा, भड़, सुभट, वीर, सूर
कटारी	–	धाराळी, त्रिजड़, बाढाळ, जमडाढ, अणियाळी
कमल	–	पदम, अरविंद, पंकज, पुण्डरीक, कुसेसय
किरण	–	रश्मि, मयूख, कर, मरीची, अंसु
मिनख	–	आदमी, मानव, मनुज, म्रितलोकी, नर
मूरख	–	मूढ, मतिमंद, गिंवार, जड़, सठ
मोर	–	मयूर, सारंग, सिखी, कळापी, केकी
नदी	–	तरंगणी, परबतजा, नीझरणी, तटणी, वेणी
पवन	–	बायरो, वायु, मारुत, समीरण, हवा
पहाड़	–	डूंगर, भाखर, परबत, सैल, गिर, अनड़
पंखेरू	–	विहग, खग, दुज, अंडज, पंछी
पाणी	–	नीर, जळ, उदक, पय, सलिल
राजा	–	महीपत, अधपत, भूपाळ, भूप, न्रप
रात	–	निसा, रजनी, तमसा, विभावरी, खिपा
रूंख	–	पेड़, बिरछ, ब्रख, विटप, द्रुम
स्त्री	–	अबला, नार, महिला, तिरिया, वलभा
समुद्र	–	सिंधू, सागर, समदर, उदधि, अरणव
सरप	–	नाग, विखधर, पनंग, व्याळ, फणी
सिंघ	–	सादूळ, केहरी, लंकाळ, म्रगपत, मयंद
सूर	–	डाढाळौ, वाराह, दांतड़ियाळ, अेकल, गिड़

सूरज	–	सूर्य, भांण, पतंग, आदीत, मारतंड, भानु
सेना	–	फौज, दळ, कटक, वाहणी, चतुरंगणी
तरवार	–	क्रपाण, बीजळसार, खाग, करवाळ, चन्द्रहास
तीर	–	सर, बांण, नाराच, पंखाळ, विसिख
ऊंट	–	करहौ, महीयौ, पांगळ, डगरौ, पाकेट
वन	–	अरण्य, जंगळ, अटवी, रोही, कानन

विलोम सबद

रात	–	दिन	डांफर	–	लू
चोखौ	–	भूंडौ	बड़णौ	–	निकळणौ
आभौ	–	पताळ	दोरौ	–	सोरौ
आवणौ	–	जावणौ	आगलौ	–	लारलौ
जलम	–	मरण	सुर	–	असुर
भलौ	–	बुरौ	राग	–	विराग
सांच	–	कूड़	सियाळौ	–	ऊनाळौ
गाय	–	बळद	विजोग	–	संजोग
सैण	–	दुसमी	नैड़ौ	–	अळगौ
बेटौ	–	बेटी	मोड़ौ	–	बेगौ
आंधौ	–	सूझतौ	धणी	–	लुगाई
पूनम	–	अमावस	फूटरौ	–	कोजौ
सूरज	–	चांद	गुण	–	औगुण
काळ	–	सुकाळ	लोक	–	परलोक
रोवणौ	–	हंसणौ	खावणौ	–	पीवणौ
अगुणौ	–	आथुणौ	गाडर	–	मींढौ
धुरावू	–	दिखणाद	निरोगी	–	रोगी
नफौ	–	नुकसाण	पगांथियौ	–	सिरांथियौ
बाळक	–	बूढौ	बिखरणौ	–	जमणौ
आपरौ	–	परायौ	सेवक	–	स्वामी
जाण	–	अजाण	राजा	–	रंक
काळौ	–	धोळौ	अंवळौ	–	संवळौ
अंत	–	आदि	ठमणौ	–	बैवणौ
संगत	–	असंगत	उजास	–	अंधारौ
विस	–	इमरत	दातार	–	कंजूस
खारौ	–	मीठौ	ऊंट	–	सांढ
मान	–	अपमान	आथण	–	दिनूगै
गुण	–	औगुण	रोग	–	निरोग
सुभ	–	असुभ	ख्यात	–	कुख्यात
जस	–	अपजस	जीवण	–	मरण

मुहावरा अर ओखाणां

मुहावरा अर ओखाणा भासा रा प्राण है। अै भासा मांय गागर में सागर रौ काम करै। आं रै मांयनै गैरौ अरथ अर जीवण रा खारा–मीठा अनुभव हुवै। जीवण में घटित घटनावां अर सांची बातां जुगां–जुगां तांई मानखै नै सीख रै रूप में नीति रै रूप में तौ व्यवहार पख नै उजागर करण रा लोक वाक्य, ओखाणा, कैवत रै रूप में लोकचावा होय जावै। आपरी भासा नै असरदार बणावण वास्तै मानखौ आं मुहावरा अर ओखाणां रौ प्रयोग करै। मुहावरौ अरबी भासा रौ सबद है। उर्दू सूं राजस्थानी में अर दूजी भासावां में इणरौ प्रयोग होवण लागौ। अरबी में इणरौ अरथ बोलचाल में काम आवण वाळौ कथन है। मुहावरौ सबदां रौ अैड़ो बंध है जिकौ आपरी खिमता, भावां, बुणगट, सरसता, सहजता, सारगुण, भासा में गति आद गुणां सूं साधारण वाक्य नै असाधारण अर असरदार बणाय देवै।

'ओखाणा' सूं सीधौ अरथ लोक री उक्ति है जिकी मिनख रा हिरदा सूं निकळै अर आगै वाळा रा हिया में ई उणी'ज भांत आपरौ भाव छोडै। भासा मं तीखा बाण रौ काम अै करै। आज आपां आंनै किताबां में पढां अर कंठां ढाळण रा जतन करां जदकै अै तौ पैली सूं ई गांवाई मानखै रै कंठां में आद अनाद काळ सूं जींवती है। वांनै पढ'र याद करण री दरकार कोनी। अै उक्तियां तौ उणां रै जीवण रौ अंग है। भासा में रच्योड़ी–पच्योड़ी है। हरेक कहावत या ओखाणा रै लारै अेक घटना या बात जुड़्योड़ी होवै। ओखाणा अर मुहावरा में कीं भेद है। ओखाणा अपणै आप में पूरण वाक्य है, जदकै मुहावरौ वाक्य रौ अंस है। ओखाणा रौ प्रयोग हरमेस अेक अरथ में हुवै जदकै मुहावरा में क्रिया पदां, क्रियार्थक संज्ञा में बदळाव कस्यौ जाय सकै। ओखाणा अरथ री दीठ सूं आपै ई पूरण होवै जदकै मुहावरा वाक्य माथै आश्रित होवै। वाक्य रै साथै जुड़ण सूं उणरौ रूप अर ठौड़ सवाई होवै। पूरण वाक्य होवण रै कारण ओखाणां में अरथबोध होवै, प्रसंग समेत घटना या व्यक्ति री जांणकारी उणसूं मिळै, पण मुहावरा वाक्यांस होवण रै कारण किणी विसेस अरथ रै रूप में प्रयोग होवै।

ओखाणां रौ रूप मुहावरां सूं बडौ होवै। जीवण री हरेक अंग, प्रक्रति अर घटना रौ वरणाव आं ओखाणां अर मुहावरां में करीज्यौ है। कीं मुहावरा अठै दाखला सरूप दिरीज रैया है–

1. अंग–अंग मुळकणौ	–	घणौ राजी होवणौ
2. जीमणौ हाथ बणणौ	–	मदद रूप में काम आवणौ
3. अकल रौ दुसमी	–	मूरख, बेवकूफ, बिना सोच्यां काम करणौ
4. अकल रा घोड़ा दौड़ाणा	–	सोचण में घणी खैचल करणी, अटकळां लगाणी
5. आंख दिखावणौ	–	डरावणौ, रोब झाड़णौ
6. आंख्यां माथै पड़दौ पड़णौ	–	लोभ रै कारण सांच नीं दीखणौ
7. हाथ रौ मेल होवणौ	–	तुच्छ या त्याग करै जैड़ी वस्तु
8. माथौ मूंडणौ	–	मूरख बणाय'र ठगणौ
9. हाथ पीळा करणा	–	बेटी रौ ब्याव करणौ
10. पाणी–पाणी होवणौ	–	लाजां मरणौ, लजखाणौ पड़णौ
11. पाणी वाळा झाग	–	बेगा ई खतम होवण वाळा, दिखावौ, झूठ
12. घाणी रौ बळद	–	सैंग दिन काम में लाग्योड़ौ रैवणौ

13. जींवती माखी गिटणी – अन्याय सहन करणौ
14. ऊंदरा थड़ी करै – घर में सामान नीं होवणौ, निरधनता होवणी
15. घोड़ा बेच'र सोवणौ – नेहचै री नींद, कीं डर–भौ नीं होवणौ
16. सांप नै दूध पावणौ – दुस्ट रौ उपकार करणौ
17. मिन्नी रै भाग सूं छींकौ टूटणौ – संजोग सूं काम बणणो
18. आभै में फूल उगावणा – डींग मारणौ, कोरी कल्पना करणी
19. कोढ में खाज होवणी – अेक दुख माथै दूजौ दुख आवणौ
20. कूवै भांग पड़गी – सगळां री मत मारीजणी, सब री बुध बावळी होवणी।
21. ठोलै सागै कवौ देवणौ – ताना मार–मार' जीमावणौ
22. रिपियै कवौ खवावणौ – आदर अर अपणायत सूं जीमावणौ
23. मन चंगा तौ कठौती में गंगा– मन साफ होवणौ, निरमळ होवणौ
24. बैठां सूं बेगार भली – ठालां बैठां बिचै कम दाम में कीं काम करणौ
25. दौड़ता चोर री लंगोट ई आछी– नीं मिळै उणसूं मिळै जकौ ई चोखौ
26. मेंडकी नै जुकाम होवणौ – काम करण वास्तै नखरा करणौ
27. मूंडै देखी प्रीत – दिखावटी प्रेम करणौ
28. मूंज बळगी पण बट नीं गयौ– प्रतिष्ठा गयां पछै ई घमंड कायम राखणौ
29. चमड़ी जाय पण दमड़ी न जाय– घणौ कंजूस होवणौ
30. हाथी रा दांत खावण रा और दिखावण रा और – कैवै कीं अर करै कीं
31. बिंधग्या सो मोती – भाग्य सूं जो मिळियौ उणनै मान सूं अंगेजणौ
32. डाकण बेटा लेवै कै देवै – दुस्ट सूं भलांई री आस नीं करणी
33. डूंगर तौ अळगा सूं रळियावणा लागै – मोटा मिनखां सूं काम पड़्यां ठाह लागै
34. बांडी माथै पग देवणौ – दुस्ट सूं राड़ मोल लेवणी, जाण'र मौत बुळावणी
35. बेळा रा बायोड़ा मोती नीपजै – समै पर कर्‍योड़ौ काम आछौ फळ देवै
36. पूत रा पग पालणै दीसै – लखणां रौ पतौ चालणौ
37. ऊंट रै मूंडै में जीरौ – कीं असर नीं होवणौ
38. हाथी लारै कुत्ता भुसता रैवै – परवाह नीं करणी, आपरा हाल में मस्त रैवणौ
39. आंख रौ तारौ – लाडेसर, व्हालौ लागणौ
40. राम प्यारौ होवणौ – सुरगवासी होवणौ
41. कैयां कुंभार गधै नीं चढै – बात नीं मानणी
42. आंधां में काणौ राजा – मूरखां में अल्पबुद्धि वाळै री पूछ होवणी
43. घर रौ भेदू लंका ढावै – आपसरी री फूट में पोल खोलणी
44. नांव मोटा दरसण खोटा – कूड़ौ जस, गुणां री खामी
45. रिपियै बिना बुध बापड़ी – मिनख री समझ रिपियां सूं तौलीजै।
46. दूध रौ दूध–पाणी रौ पाणी – न्याव करणौ
47. धोळौ धोळौ दूध जाणणौ – सबनै आपरै सरीखौ जाणणौ, हरेक रौ विस्वास करणौ
48. दांत भींचणा – दुख नै सहन करणौ
49. बाकौ फाटणौ – अचूम्भौ करणौ
50. आंख्यां फाटणी – विस्वास नीं होवणौ, अचरज होवणौ

51. आप मस्यां जुग परळै – मस्यां पछै कुण देखण नै आवै, लारली चिंता नीं
52. आप मस्यां ई सुरग मिळै – खुद रौ काम खुद नै ई करणौ पड़ै
53. कांणी रौ काजळ काढणौ – स्वारथ नीं पूरीजै
54. काजळ काढणौ – दगौ करणौ, ठगणौ
55. रीत रौ रायतौ करणौ – परम्परा रौ निभाव
56. पोदीनौ बिखेरणौ – झूठी बडाई, अकल बतावणी

ओखाणां री बानगी

1. घणौ हेत टूटण नै मोटी आंख फूटण नै – सब सरोसरी फाबै।
2. मूंडै रा दांत मूंडै में चोखा लागै – आपरी ठौड़ माथै मान रैवै।
3. घणी गई थोड़ी रैयी जिण मांय'ऊ छिन–छिन जाय– सरीर नासवान है।
4. घरै आयौ मां रौ जायौ – घरै आयोड़ा रौ भाई जियां आदर करणौ
5. जागै सो पावै सोवै सो खोवै – सावचेत होवण रौ लाभ अर आळसी होवणौ हा
6. मूळ सूं ब्याज वाल्हौ लागै – मूल स्थिर धन है, ब्याज रकम नै लगोलग बधावै
7. टाबर खावै हाड बधावै,
मोट्यार खावै घणौ कमावै,
बूढौ खावै अेळौ जावै – अवस्था परवाणै खुराक काम आवै
8. बाळकां रौ सी बकरिया चरै – टाबरां नै सरदी नीं लागै, क्यूंकै रमै–कूदै
9. माया थारा तीन नाम फूसो, फरसौ, फरसराम – मिनख रौ मोल पईसां सूं करीजै
10. आई मूंछां किणनै पूछां – मोट्यार होयां टाबर आपरै मन री करै
11. टीटोड़ी समंद उलीचियौ कै परवारां रै पांण – आपरै भाई–सैणां रै साथ सूं थाकल जीव ई मोटौ काम कर सकै। संगळण री बात है।
12. थावर कीजै थापना बुध कीजै वैवार – थरपणा वास्तै शनिवार चोखौ टिकाऊ होवै अर लेण–देण वैवार वास्तै बुधवार
13. आभौ ऊंचौ आंगळी नीं लागै – बस नीं चालै, जोर नीं चालै, परबस होवणौ
14. तेल तौ तिलां सूं निकळसी – पईसौ आसामी कनै ई मिलसी, खिमतावांन सूं खिमता री उम्मीद होवणी।
15. खावणौ मां रै हाथ रौ होवौ भलांई जैर ई
बसणौ भायां बिचाळै होवौ भलांई बैर ई
बैठणौ मौकै री छियां, होवौ भलांई कैर ई
बैवणौ मारग–मारग, होवौ भलांई देर ई – सीख री बात
16. पगां दियोड़ी गांठ हाथां सूं कोनी खुलै – बात–बात में अैड़ौ उळझावणौ कै बात सुळझै ई कोनी।
17. कीं घोड़ां री घटै कीं असवार री घटै – दोनूं पखां रौ भूंडौ लागणौ।
18. पट्टै लिखाई मोठ–बाजरी मांगै चावळ–दाळ – भाग्य में लिख्योड़ौ ई मिळै

19. पंसेरी में पांच सेर री भूल	– सारौ ई गड़बड़ झालौ
20. हियै होवै जिकी होठां आवै	– मन री बात कैयां बिना नीं रैईजै
21. हाथ पोलौ तौ जगत गोलौ	– पईसा खरचणियै री सगळा हाजरी भरै।
22. कुंवारी रै सौ घर सौ वर	– सगपणां री पड़ताळ में निस्चै नीं होवणौ
23. चांच दी वौ चुग्गौ देवै	– ईस्वर सगळां नै पोखै
24. डाकण ही अर ऊंटां चढगी	– अन्याय करण में साधन मिळगौ, हूंस बधगी।
25. धान खावै मांटी रौ, गीत गावै बीरै रा	– अैसान किणी और रौ अर गुण दूजै रा गावणा। कृतघ्न होवणौ।

उल्थै रौ अभ्यास

नीचै लिख्योड़ा गद्यांसां रौ राजस्थानी में उल्थौ करौ–

1. माता के स्नेह में पिता के समान प्रत्युपकार की वासना भी नहीं है। दया मानो देह–धरे सामने आकर खड़ी हो जाती है। टूटी–फूटी झोपड़ी में जब मूसलाधार पानी बरस रहा है। फूस का टाट सब ओर से ऐसा टपकता है कि कहीं तिल–भर भी जगह नहीं बची है। कंगाली के कारण इतना कपड़ा–लत्ता पास नहीं कि आप ओढ़े, आधी से अपने दुधमुँहे बालक को ढांपे माता उसको छाती से लगाए हुए हैं। अपने प्राण और देह की तनिक भी चिन्ता नहीं है। किन्तु वात और वृष्टि से पुत्र की रोगी और अस्वस्थ दशा में पलंग के पास बैठी मनमारे उसका मुँह ताक रही है। रात को नींद और भोजन भी दुष्कर हो गया है। भांति–भांति की मिन्नतें मनाती है। यह माता ही है, जो पुत्र के स्वाभाविक स्नेह में इतने दुःख सहती है।

2. धरती माता की गोद में जो अमूल्य निधियां भरी हैं जिनके कारण वह वसुन्धरा कहलाती है, उससे कौन परिचित न होना चाहेगा। लाखों–करोड़ों वर्षों से अनेक प्रकार की धातुओं को पृथ्वी के गर्भ में पोषण मिला है। दिन–रात बहने वाली नदियों ने पहाड़ों को पीस–पीस कर अनगिनत प्रकार की मिट्टियों से पृथ्वी की देह को सजाया है। हमारे भावी आर्थिक अभ्युदय के लिए इन सब की जाँच–पड़ताल अत्यन्त आवश्यक है। पृथ्वी की गोद में जन्म लेने वाले खड़पत्थर कुशल शिल्पियों से संवारे जाने पर अत्यन्त सौन्दर्य का प्रतीक बन जाते हैं। नाना भांति के अनगढ़ नग विंध्य की नदियों के प्रवाह में सूर्य की धूप से चिलकते रहते हैं।

3. एक राजा शिकार खेलता हुआ जंगल में भटक गया। संगी–साथी पीछे छूट गये। प्यास से व्याकुल राजा एक बुढ़िया की झोपड़ी में गया। बुढ़िया ने अपने खेत के गन्ने का रस निकाल कर कटोरा भरा, उसे राजा को पीने हेतु दे दिया। राजा को वह रस अमृत जैसा लगा। राजा तृप्त होकर चला गया। राजधानी में पहुँच कर गन्ने की खेती पर

उसने भारी कर लगा दिया। संयोग से दूसरी बार भी राजा भटक कर उसी बुढ़िया के पास गया। आज बुढ़िया के गन्ने का रस राजा को उतना मीठा एवं स्वादिष्ट नहीं लगा। राजा ने कारण पूछा तो बुढ़िया ने कहा कि यहाँ के राजा की नीयत खराब हो गई है जिससे रस के मीठास में भी अंतर आ गया है। राजा का सिर लाज से झुक गया।

4. जिनके हृदय में भारत की सेवा के भाव हों या जो भारतभूमि को स्वतंत्र देखने या स्वाधीन बनाने की इच्छा रखते हों, उन्हें उचित है कि ग्रामीण संगठन करके, कृषकों की दशा सुधार कर, उनके हृदय से भाग्य निर्भरता को हटा कर उद्योगी बनाने की शिक्षा दें। कल–कारखाने, रेलवे, जहाज तथा खानों में जहाँ कहीं श्रमजीवी हों, उनकी दशा को सुधारने के लिए श्रमजीवियों के संगठन की स्थापना की जाए, ताकि उनको अपनी अवस्था का ज्ञान हो सके और कारखानों के मालिक मनमाने अत्याचार न कर सकें।
5. बहुमुखी प्रतिभा के धनी रवीन्द्रनाथ ने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि सभी विधाओं में लिखा। वे कुशल चित्रकार भी थे। देश–विदेश में उनके चित्रों की कई प्रदर्शनियाँ भी हुईं। संगीत से उनको गहरा और आत्मीय लगाव था। उनकी संगीत रचनाएँ, अपनी विशिष्टता के कारण बहुत लोकप्रिय हुईं। बंगाल में 'रवीन्द्र संगीत' नाम से एक नई संगीत शैली का प्रादुर्भाव हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में भी वे हमेशा नवीनता के पक्षधर थे।
6. एक सेठ ने हवेली चिनवाई। हवेली तैयार हो जाने पर उसमें भित्ति चित्र बनवाए गए। सेठ का एक परिचित ठाकुर हवेली देखने आया तो हवेली के मुख्यद्वार पर एक हथियारबंद पहरेदार का चित्र देखकर बोला कि यह किसका चित्र है। सेठ ने मजाक में कह दिया कि आपके 'बाबोसा' का है। ठाकुर नाराज होने के स्थान पर बोला कि इसके नीचे उनका नाम भी लिखवा दो। सेठ ने चित्र के नीचे नाम भी लिखवा दिया। ठाकुर कुछ वर्षों बाद पुनः सेठ के पास आया। कुशलक्षेम पूछने के बाद ठाकुर ने कहा कि मैं अपने बाबोसा की नौकरी का हिसाब लेने आया हूँ, सो दिलवा दीजिए। सेठ ने पूछा– कैसी नौकरी? ठाकुर बोला– आपकी हवेली बनी तब से मेरे बाबोसा रात–दिन पहरा दे रहे हैं, तभी कोई चोरी–चकारी या डाका नहीं पड़ा। सेठ ने कहा– मैं चित्र मिटवा देता हूँ। ठाकुर ने कहा– ठीक है, आज तक हिसाब कर दीजिए।

⌘⌘

सवाल

विकळपाऊ पङूत्तर वाळा सवाल

1. 'जळहर' सबद किणरौ समानारथी सबद है?

(अ) बादळ (ब) आंख

(स) अगन (द) चांद

( )

2. ‘आंख रौ तारौ’ मुहावरा रौ अरथ है–
   (अ) सुरगवासी होवणौ (ब) अन्यायी होवणौ
   (स) लाडेसर कै व्हालौ लागणौ (द) रोब झाड़णौ
( )

3. ‘रिपियां बिना बुध बापड़ी’ ओखाणौ किण अरथ में कहीजै?
   (अ) रिपिया अर बुद्ध रौ मेळ कोनी (ब) मूरखां में थोड़ौ समझदार होवणौ
   (स) मिनख री समझ रिपियां सूं तोलीजै (द) रिपियां बिना परबस होवणौ
( )

4. ‘आदि’ सबद रौ विलोम सबद है–
   (अ) आरम्भ (ब) अगवाणी
   (स) अंत (द) निस्सार
( )

साव छोटा पडू़त्तर वाळा सवाल

1. ‘हुतासण’ सबद रा दो पर्यायवाची सबद लिखौ।
2. ‘‘अन्याय करण रौ साधन मिळणौ, हूंस बधगी।’’ इणमें किसौ ओखाणौ कहीजै?
3. ‘‘आप मर्‌यां ई सुरग मिळै’’ मुहावरा रौ वाक्य प्रयोग करौ।
4. ‘कायर’ रौ विलोम सबद कांई होवै?

छोटा पडू़त्तर वाळा सवाल

1. पर्यायवाची सबद किणनै कैवै? ऊंट रा तीन पर्यायवाची सबद लिखौ।
2. मुहावरां रौ भासा में कांई महत्त्व होवै। इणनै दाखला सेती समझावौ।
3. ओखाणाां अर मुहावरां में कांई भेद होवै?
4. नीचै लिख्योड़ा सबदां रा पर्यायवाची सबद लिखौ–
   कमल, घर, गाय, चांद, पाणी, पवन, आंख, फूल, भंवरौ
5. आं सबदां रा विलोम सबद लिखौ–
   काळौ, सांच, अन्याव, रात, अगुणौ, जुलम

लेखरूप पडू़त्तर वाळा सवाल

1. ‘मुहावरा’ रौ अरथ कांई होवै। भासा में इणां रै मैतव अर विसेसतावां रौ वरणाव करौ।
2. भासा सूं आप कांई समझौ। जीवण में भासा रौ महत्त्व अर भासा में व्याकरण रौ मैतव समझावौ।
3. ओखाणां रौ संसार निराळौ है। इणां रौ महत्त्व बतावतां थकां कीं टाळवां ओखाणां सूं आपरी बात पुख्ता करौ।
4. नीचै लिख्योड़ा मुहावरां रा अरथ बतावता थकां इणां रौ वाक्य में प्रयोग करौ।
   (अ) आंख्यां माथै पड़दौ पड़णौ
   (ब) हाथ रौ मैल होवणौ
   (स) घाणी रौ बळद होवणौ
   (द) जींवती माखी गिटणी

(य) कूवै भांग पड़णी
(र) रिपियै कवौ खवावणौ
(ल) आभै में फूल उगावणा
(व) सांप नै दूध पावणौ
(श) कोढ में खाज होवणी
(स) मेंडकी नै जुखाम होवणौ

5. नीचै लिख्योड़ा ओखाणां नै अरथावतां थकां वाक्य प्रयोग करौ–
(अ) मूंडै रा दांत मूंडै ई ओपै।
(ब) जागै सो पावै, सोवै सो खोवै।
(स) बाळकां रौ सी बकरिया चरै।
(द) टीटोड़ी समंद उलीचियौ कै परवारां रै पांण।
(य) आभौ ऊंचौ आंगळी नीं लागै।
(र) तेल तौ तिलां सूं ई निकळै।
(ल) घरै आयौ मां रौ जायौ बाजै।
(व) चोंच देवै जिकौ चुग्गौ ई दे'ई।
(श) डाकण ही अर ऊंटां चढगी।
(स) कंवारी रा सौ घर सौ वर।

राजस्थानी छंद अर अलंकार

छंदसास्त्र री पारिभासिक रूप सूं इधकी–इधकी व्याख्या करीजी है। म्हारी जाण में छंदां रौ जूनौ रूप वेदां री रिचावां मांय अर लौकिक रूप में लोक री जुगां चावी विधा लोकगीतां में निजर आवै। लोकगीतां री भलांई सास्त्रीय परिभासा कोनी, पण लय, सुर, ताल, यति अर गति रै बिना अै गायीजै ई कोनी। काव्यसास्त्र रै मुजब वरण, मात्रा, यति, गति, लय, सुर, तुकबंदी रो विचार करनै जिकी सबद–रचना करी जावै उणनै छंद कैवै। छंद तय कर्‌योड़ा वरणां अर मात्रावां में रच्योड़ी अेक पद्य रचना है। इणरी व्यत्पत्ति संस्कृत रा छद् धातु सूं मानीजै। इणरो अरथ आवृत्त करणो, रक्षित अर राजी करणो हुवै। डिंगळ गीत छंद राजस्थानी छंदसास्त्र री इधकाई है। इणरी मठोट न्यारी निकेवळी है अर इण रा केई भेद–उपभेद है। डिंगळ छंदां री छटा सूं छंदसास्त्र घणौ सिमरध होयौ है।

राजसभावां में राजकवियां री विरुदावली रा छंद, जुद्ध रा मैदान में वीरां री हूंस जगावण खातर वीरता रा छंद अर कीरत रा बखाण कै पछै जस–अपजस नै उजागर करण वाळा छंदां सूं राजस्थानी काव्य भर्‌योड़ौ है। स्तुतिपरक रचना ई छंद कहीजै। स्तुति आपरै इस्ट देवता री हुवौ कै आपरै आश्रयदातावां री, जिणमें उणां रै गुणां रा बखाण करीजै, छंदां री ओळी में आवै।

'राव जैतसी रौ छंद', 'रणमल्ल छंद', 'माताजी रा छंद', 'गोरखनाथजी रौ छंद', 'पाबूजी रौ छंद' आद रचनावां में नायक रै चरितर रो पुरजोर वरणाव हुयौ है। 'पद्य' अर 'छंद' अेक अरथ में ई लिरीजै। छंद रौ अेक दूजौ अरथ बांधणौ (बंधन) ई हुवै। छंदां रै नियमां में बंध'र कविता नै ठैराव, वेग, राग अर फूटरापौ मिळै। नदी जिण भांत आपरै दोय किनारां में बंधियोड़ी वेग रै साथै तौ कदैई उतरती–चढती, मंथर गति सूं तय मारग माथै निरबंध बैवती समुंदर में रळ जावै, उणी'ज भांत छंद आपरी कविता में काव्य साहित्य रूपी महा समुंदर री छौळां में रम जावै।

छंदां रौ महत्त्व

छंदां रै मांय थोड़ा में घणौ कैवण री खिमता है। गूढ अर गैरौ अरथ समझावण री खैचल अै करै। संगीतात्मकता रौ गुण होवण रै कारण सुणण में आछापण लागै। गेयता रै कारण वातावरण नै सरस बणावै। आं छंदां रै मीठास में मानखौ घड़ी भर आपरा दुखड़ा भूल'र सुख री घड़ियां चितारै। केई छंद हियै रा कंवळा, मीठा, निरमळ भावां नै उजागर करण वास्तै बरतीजै। माधुर्य अर प्रसाद गुणां सूं लबालब होयोड़ा आं छंदां री मानखै नै घणी दरकार आज ई है। क्यूंकै इण आरथिक अर भौतिक जुग रौ मिनख सांति चावै। इण अपरोगी दुनिया में अपणायत चावै। अेकलौ बैठौ मिनख रेडिया, टेपरिकारडर सूं अैड़ा छंदां नै सुण'र जीवण री नीरस घड़ियां नै सरस बणाय सकै।

ओज गुणवाळा वीर छंदां नै सुणां तौ आज ई उणियारा माथै वीर–भावां रा सैलाण देख्यां बिना नीं रैवां। छंदां में वा ताकत है, बूतो है कै जिण रस रौ छंद बोलीजै या पढीजै, उठै उणी'ज तरै रै भावां रौ वातावरण बण जावै। राग–रागणियां रौ आं छंदां सूं गैरो जुड़ाव है। सोरठ, मांड, मल्हार, राग रा छंद आपरै हेताळू रै हियै नै जगावण वाळा है। आं छंदां री महिमा बखाण करां जित्ती ई थोड़ी है।

छंदां रा भेद

छंदां रा केई भेद मानीजै, पण मोटै रूप

सूं छंद दोय भेदां में देखीजै–

1. मात्रिक छंद अर 2. वरणिक छंद।

1. मात्रिक छंद

जिण छंद में मात्रावां री गिणती करीजै, वौ मात्रिक छंद मानीजै। मात्रावां री गिणती सूं छंदां री ओळ्यां में यति, गति अर लय नै परोटतां जिकी रचना करीजै, वौ मात्रिक छंद मानीजै। दूहौ, चोपाई, रोला, उल्लाला, छप्पय, गीत, हरिगीतिका आद मात्रिक छंदां रा दाखला है।

2. वरणिक छंद

जिणमें वरणां री गिणती रै मुजब यति, गति बरतीजै अर मात्रावां रै आधार माथै काव्य रचना रौ सिरजण करीजै, उणनै वरणिक छंद कैवै। भुजंगी, भुजंगप्रयात, त्रोटक, सवैया, कवित्त आद वरणिक छंदां रा दाखला है।

आं दोनूं तरै रा छंदां में ई वांरै चरणां री मात्रावां अर वरणां री गिणती मुजब तीन भेद बखाणीज्या है–

(i) सम छंद : जिणमें छंदां रै चरणां में मात्रावां या वरणां री गिणती बराबर होवै। अेक समान मात्रावां या वरणां री गिणती वाळा छंदां नै सम छंद कैवै। चौपाई सम छंद है।

(ii) विसम छंद : जिणमें छंदां रै चरणां री मात्रा या वरण न्यारा–न्यारा होवै, अेक समान नीं होवै वौ विसम छंद है। छप्पय, कुंडळिया विसम छंद है।

(iii) अरधसम छंद : आं छंदां में पैला अर तीजा, दूजा अर चौथा चरणां री मात्रावां या वरणां में समानता होवै। दूहौ अरधसम मात्रिक छंद रौ चावौ दाखला है। आं रै टाळ केई गणबद्ध छंद (भगण, मगण), मुक्तक छंद, साधारण छंद, दंडक छंद रै रूप में ई ओळखीजै। जद छंदां री गैराई सूं व्याख्या करां तो औ रूप ई साम्हीं आवै पण मूळ में छंदां रा दोय भेद है, वै है मात्रिक छंद अर वरणिक छंद।

दूहौ छंद

दूहौ अपभ्रंस साहित्य सूं लेय'र हिन्दी अर राजस्थानी साहित्य रौ सिरमौड़ छंद रैयौ है। दूहै री बडाई में केई दूहा कहीज्या है। दूहै री महिमा कविवर सेठियाजी रै सबदां में इण भांत बखाणीजी है–

देस नीं मरुदेस सो, म्रगमद जिसो न गंध।
सुरसत रै भंडार में, दूहै जिसो न छंद।।

दूहौ अरधसम मात्रिक छंद है। इण रा पांच भेद छंदसास्त्र में बताया जावै– सुद्ध दूहौ, बडौ दूहौ, तुंबेरी दूहौ, सोरठियौ दूहौ अर खोड़ौ दूहौ। राजस्थानी साहित्य में सुद्ध दूहौ अर सोरठियौ दूहौ घणा बरतीजै–

(i) सुद्ध दूहौ : इणरै पैलै अर तीजै (विसम) चरणां में 13–13 मात्रावां अर दूजै अर चौथै (सम) चरणां में 11–11 मात्रावां हुवै। दूजै अर चौथै चरण री तुक पण मिळै। इणरै चरणान्त में गुरु–लघु आवै। दाखलौ–

इळा न देणी आपणी, हालरिया हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बडाई माय।।

(ii) सोरठियौ दूहौ : दूहै रौ उलटफेर सोरठियौ दूहौ कहीजै। इणरै पैलै अर तीजै चरणां में 11–11 मात्रावां अर सम चरणां (2–4) में 13–13 मात्रावां आवै। इण मांय विसम चरणां (1–3) री तुक मिळै। सोरठ (सौराष्ट्र) प्रदेस में घणौ परोटीजण रै कारण इणरौ नाम सोरठौ अर गेयता रै कारण सोरठियौ पड़ियौ। राजस्थानी साहित्य में सम्बोधन काव्य में सोरठां रौ ई घणकरौ प्रयोग हुयौ है। सोरठा रै वास्तै अेक लोकचावौ दूहौ कथीज्यौ है–

सोरठियौ दूहौ भलौ, भल मरवण री बात।
जोबन छाई धण भली, तारां छाई रात।।

सोरठिया दूहा रौ दाखलौ–

बखत जावसी बीत, जासी बात न जगत सूं।
गासी दुनिया गीत, चोखा भूंडा चकरिया।।

अलंकार

छंद–अलंकारां में राजस्थानी साहित्य री निकेवळी ओळखांण रैयी है। राजस्थानी काव्य में सगळा लोकचावा अलंकारां जथा– अनुप्रास, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति, वक्रोक्ति आद रौ भरपूर प्रयोग मिळै। डिंगळ गीत छंदां रै ज्यूं राजस्थानी रौ आपरौ अलंकार वैण–सगाई मौलिक सबदालंकार है, जिणरा केई भेद मिळै। कविता रूपी कामणी रौ सिणगार अलंकार रूपी गैणां–गांठां सूं ई करीजै। अलंकार काव्य रौ गैणौ गिणीजै। इणरै प्रयोग सूं काव्य में इधकाई आवै, काव्य असरदार निजर आवै। काव्य री सोभा बधै। काव्य रूपाळौ लागै। आचार्य भामह, आचार्य दण्डी जैड़ा काव्य– सास्त्री अलंकारवादी सिद्धांत में अलंकारां री थाती नै थिरपत करी है। सार रूप में औ ईज कैयौ जाय सकै कै सबद, अरथ अर अलंकार रै मेळ सूं ई काव्य रौ रूप उजागर हुवै। दूजै सबदां में अलंकार ई काव्य रौ सिरै रूप अर उणरौ फूटरापौ है। इण भांत आछी बातां अपणावण री राजस्थानी साहित्य में रीत रैयी है। इण परम्परा रै कारण अठै अलंकारां री छटा ई अलायदी निजर आवै। राजस्थानी रौ चावौ अलंकार वैण–सगाई अठै रा कवियां री कुसळाई अर कलम री सबळायी बतावै।

वैणसगाई अलंकार

वैणसगाई राजस्थानी रौ मौलिक अर महताऊ अलंकार है। डिंगळ काव्य में इणरौ प्रयोग सगळा काव्यदोसां नै मिटावै। डिंगळ रा चावा–ठावा कवियां इणरौ प्रयोग आपरा काव्य में कर्‌यौ। पारम्परिक छंदां रै साथै नूंवां छंदां में ई वैणसगाई रौ प्रयोग करीजै। काव्य में नाद–सौंदर्य अर मीठास रौ आधार वैणसगाई है। डिंगळ में इणरौ प्रयोग सुभ मानीजै। वैणसगाई रौ अरथ है वरणां रौ सम्बन्ध। अेक जैड़ा सबदां या आखरां रौ संबंध या मेळ। दोय परिवारां रै हाड–बैर नै मेटण वास्तै सगाई सम्बन्ध किया जावता, जिणसूं मेळ–मिळाप व्है जावतौ। उणी'ज भांत वरणां रा संबंध सूं ई काव्य में रस आवै।

'रघुनाथरूपक' जैड़ै ख्यातनाम छंद–सास्त्रीय ग्रंथ रा रचनाकार मंछाराम सेवग रौ वैणसगाई रै वास्तै औ विचार उल्लेख जोग है–

खून कियां जांणै खलक, हाड बैर जो होय।
वयण सगाई वैण तौ, कलपत रहै न कोय।।

वीररसावतार कविवर सूरजमल मीसण आपरी 'वीरसतसई' में वैणसगाई नै रस नै पोखण रौ आधार मानतां थकां वीररस री कविता में दोस निवारण री बूंटी (ओखद) मानै–

वैणसगाई वाळियां, पेखीजै रस पोस।
वीर हुतासण बोल में, दीसै हेक न दोस।।

राजस्थानी काव्य में हर विसय री रचनावां अर हरेक काळ में इणरौ प्रयोग होयौ है। वैणसगाई अलंकार रा केई भेद मिळै। आं में घणचावा तीन भेदां री बात अठै करणी चावूं– 1. आदिमेळ, 2. मध्यमेळ, 3. अंतमेळ।

1. आदिमेळ : किणी छंद या रचना रै चरण रौ पैलौ आखर उणी'ज चरण रै आखरी सबद रै पैलै आखर सूं मेळ खावै तौ उठै आदिमेळ वैणसगाई अलंकार मानीजै। आदि मेळ रौ प्रयोग राजस्थानी काव्य में घणोई होयौ है–

जिण वन भूल न जावता, गैंद गवय गिड़राज।
तिण बन जंबुक ताखड़ा, उधम मंडियौ आज।।

या

रामत चौपड़ राज री, है धिक बार हजार।
धण सूंपी लूंटा धकै, धरमराज धिक्कार।।

2. मध्यमेळ : किणी चरण रै पैलै सबद रौ पैलौ आखर उणीज चरण रै आखरी सबद रै बीचाळै आवै (मध्य में उणी'ज वरण री आव्रति होवै) तौ उठै मध्यमेळ वैणसगाई कहीजै। दाखलौ–

नाम लियां थी मानवां, सरकै कलुष विसाल।
मह जैसे मेटै तिमिर, रसम परस किरमाल।।
(मंछाराम सेवग)

गरज कियां सूं वागरी, कदे न तजै सिकार।
रटै हरी गुण वारता, कटै कळेस विकार।।
(शक्तिदान कविया)

3. अंतमेळ : किणी चरण रौ पैलौ आखर उणी'ज चरण रै छेलड़ै सबद रौ छेहलौ आखर होवै तौ उठै अंतमेळ वैणसगाई बरतीजै। दाखला–

मरद जिकै संसार में, लखजे जीव विसाल।
रात दिवस रघुनाथ रा, लेवै नाम रसाल।।
(मंछाराम सेवग)

या

निरख्यौ इण संसार नै, लुक छिप रांमत खेल।
मिनख भलां री है कमी, लाख मिलै बिगड़ेल।।
(शक्तिदान कविया)

⌘⌘

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. छंदां री व्युत्पत्ति मानीजै–
   (अ) वीर रस सूं (ब) कविता सूं
   (स) कवि री कुसलाई सूं (द) संस्क्रत रा छद् धातु सूं
   ( )

2. छंद री सबसूं महताऊ परिभासा है–
   (अ) स्तुतिपरक काव्य ई छंद है (ब) यति गति रौ जिणमें प्रयोग हुवै वौ छंद है
   (स) वीरता रा बखाण ई छंद है (द) लय, सुर, यति, गति जैड़ा सास्त्रीय नेमां सूं गूंथीज्योड़ी रचना ई छंद है
   ( )

3. अलंकार सूं आप कांई समझौ–
   (अ) काव्य री आत्मा (ब) काव्य रौ धेय
   (स) काव्य री परख (द) काव्य रौ फूटरापौ अर सरसता
   ( )

4. वैणसगाई रौ अरथ कांई है–
   (अ) वरणां रौ मेळ (ब) वरणां री कूंत
   (स) बोलां री सगाई (द) अेक जाति–वरण रै आखरां रौ ओपतौ मेळ
   ( )

5. ''रटै हरिगुण वारता'' में किसौ वैणसगाई बरतीज्यौ है–
   (अ) आखर वैणसगाई (ब) अंत मेळ वैणसगाई
   (स) हरिगुण वैणसगाई (द) मध्य मेळ वैणसगाई
   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. छंद री ओपती परिभासा दिरावौ।
2. राजस्थानी छंदसास्त्रीय चावा ग्रंथां रौ नांव अर रचनाकार रौ नांव लिखौ।
3. छंद रै वास्तै काम आवण वाळा दोय नेमां रौ नांव लिखौ।
4. दूहै रा कित्ता भेद साहित्य में बताईज्या है?
5. अलंकार, काव्य रौ कांई गिणीजै?
6. राजस्थानी रौ विसिस्ट अलंकार किसौ है?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. छंदसास्त्र रौ सरूप आपरै सबदां में समझावौ।
2. वैणसगाई सूं आप कांई समझौ? इणरी ओपती परिभासा दिरावौ।
3. राजस्थानी छंदां में कांई–कांई वरणन मिळै? समझावौ।
4. दूहा अर सोरठा में कांई भेद है? समझावौ।
5. अलंकारां रा मैतव नै समझावौ।

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी छंदसास्त्र रा महत्त्व नै आखरां ढाळौ।
2. राजस्थानी छंदां में दूहै री कांई ठौड़ है? इणरै भेदां रा नांव बतावता थकां दूहै–सोरठै री सास्त्रीय परिभासा दाखला साथै दिरावौ।
3. साहित्य में अलंकारां री कांई विसेसता है? अलंकारां में राजस्थानी रा चावा अलंकार वैणसगाई री रूपगत–भेदगत व्याख्या करौ।